मदनपालनिघण्टु



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

नृपमदनपालविरचितः

मदनपालनिघण्टुः

वैद्यरत्नायुर्वेदोद्धारकवैद्यपश्चाननपंडितरामप्रसादवैद्योपाध्याय-
राजवैद्यपटियालाविरचितभाषातत्त्वप्रकाशिनीनाम-

हिन्दीटीकासहितः

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

संस्करण : मार्च २००८, सम्वत् २०६

मूल्य १०० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

भूमिका

आयुर्वेद की महिमा छिपी नहीं है। आयुर्वेद के गूढ़ाशय समझने से, आयुर्वेद में लिखित वैज्ञानिक प्रक्रियाओं को जानने से जो आनन्द प्राप्त होता है, उसे क्या कोई प्रकाशित कर सकता है? यह जो समस्त संसार आपके सामने है यह जो चींटी से लेकर पशु पक्षी मनुष्य पर्यन्त यावत्प्राणी आप देख रहे हो ये जो जीवित अजीवित वृक्ष मिट्टी पत्थर प्रभृति दुनियां के सकल पदार्थ दृष्टिगोचर हो रहे हैं, इन सबका तत्व यदि किसी को जानना हो तो आयुर्वेद पढ़े। आयुर्वेद पढ़ने से आयुर्वेद का मर्म जानने से मनुष्य एक नई दुनियां में निमग्न हो जाता है। संसारी समस्त पदार्थों के सारासार का उसे ज्ञान प्राप्त हो जाता है, आयुर्वेद का पूर्ण ज्ञाता कालभगवान् को भी अपनी दृष्टि से तुच्छ समझने लगता है।

जिस आयुर्वेद की इतनी अधिक महिमा है, जिस आयुर्वेद की सहायता से मनुष्य काल को भी तुच्छ समझने लगता है, जिस आयुर्वेद की शक्ति को जानकर किसी दिन स्वर्ग के देवता भी ललचाते थे, वह आयुर्वेद अब कहां है? वह आयुर्वेद अब नहीं रहा कि, उस आयुर्वेद के अब ज्ञाता ही नहीं रहे? इस प्रश्न का उत्तर बहुत ही निगूढ़ है, पर पृथिवी किसी पदार्थ के लिये कभी निर्बीज नहीं होती। बड़े–बड़े शास्त्रज्ञ गुणवानों का यह कथन निःसन्देह सत्य है अवश्यही आयुर्वेद का वह महत्व, आयुर्वेद की वह महिमा अब नहीं रही। कालक्रम से आयुर्वेद के अनैक ग्रन्थों का लोप हुआ, समयानुकूल आयुर्वेद के ज्ञाताओं का ह्रास हुआ, कहां तक कहें धीरे–धीरे प्राचीन सभी वातों का परिवर्त्तन होकर एक नवीन युग बन गया, इस नवीन युग में संसार ने इतना अधिक पलटा खाया कि, ईश्वर की सृष्टि ही एक प्रकार उलट पलट हो गई, यह सब इतिहास यदि भूमिका में लिखा जाय तो भूमिका क्या एक नया महाभारत तैयार हो जाय।

कहने का मतलब यह है कि, संसार में अब आयुर्वेद नहीं रहा सो बात नहीं है अथवा दुनिया में अब आयुर्वेद के ज्ञाता-नहीं रहे सो बात भी नहीं है, सब हैं किन्तु विच्छिन्नदशा में हैं। आयुर्वेद का कुछ अंश कहीं है और कुछ अंश कहीं है। आयुर्वेद का किसी अंश का पता लगता है और किसी अंश का कुछ पता ही नहीं चलता। इसी प्रकार आयुर्वेद के ज्ञाताओं का हाल है। कोई आयुर्वेद के किसी अंश का ज्ञाता है और कोई किसी अंशका। जो आयुर्वेद के जिस अंशका ज्ञाता है वह अपनी खास सम्पत्ति समझ अपने निज पुत्र को भी उसे नहीं बतलाना चाहता। योंही आयुर्वेद सम्बन्धी जो

ग्रन्थ जिसके पास हैं वह किसी को दिखलाना तक नहीं चाहता, सर्वसाधारण में प्रकाश करने की बात तो दूर रही, इसी प्रकार आयुर्वेद एवं आयुर्वेद विद्या का ह्रास होता जाता है।

समय बड़ा विलक्षण है। लोग असल को छोड़कर नकल को मजबूती से पकड़ रहे हैं। हम इस बात को भली भांति प्रमाणित कर सकते हैं कि, संसार की समस्त चिकित्साएँ हमारे आयुर्वेद की नकल की हुई हैं। उनकी समस्त विधि व्यवस्था हमारी है, केवल रूपान्तर किया हुआ है। सो भी पूर्णरूप से अन्य देशों में अभी हमारे आयुर्वेद का प्रकाश नहीं हुआ, आयुर्वेद का पूर्ण प्रकाश भारत के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं हो भी नहीं सकता, इसके अनेक कारण है उन सब में सबसे बड़ा कारण तो यह है कि, भारतवर्ष में आयुर्वेदलिखित जितने पदार्थ मिल सकते हैं। उतने किसी भी देश में नहीं मिल सकते, पर जहां तक वैज्ञानिकों ने खींच खांचकर पाया है वहां तक हमारे आयुर्वेद को अपने देशों में प्रचारित करने के लिये कोई कसर नहीं रखी, फिर भी असल असली ही है, आयुर्वेद में जो अधिकार एतद्देशवासियोंको प्राप्त है, वह अन्य देशवासियों को अभी अनेक दिन तक नहीं प्राप्त हो सकेगा। किसी–किसी अंश में तो हम कह सकते है कि, अन्य देशवासियों को कभी अधिकार नहीं प्राप्त होगा।

खैर, यह तो हुई बहुत दूर की बात, आजकल हमारे भारतवर्ष में अस्पताल, दवाखाने, औषधालय, मेडिकलहाल, चिकित्सालय, आरोग्यभवन प्रभृति अनेक नामों से अगणित अस्पताल औषधालय खुले हैं और नित्य नये खुल रहे हैं। दिन पर दिन इन सबकी खूब वृद्धि हो रही है, अस्पताल औषधालय के साथ साथ रोगियों की संख्या बढ़ने में भी कुछ कमी नहीं है, अमीर, गरीब, हकीम, हाकिम, वैद्य, डाक्टर, कहां तक कहें समस्त देश रोगियों से भरा है, ऐसी अवस्था में आयुर्वेद की उन्नति हो रही है अथवा अवनति? इसका भली भांति पता लग सकता है। इसी से कहते हैं कि, असली आयुर्वेद का ह्रास होता जाता है और आयुर्वेद की नकल का दिन पर दिन अधिक प्रसार होता है। जिन दिनों हमारे आयुर्वेद का इस देश में सचमुच प्रचार था उन दिनों किसी एक प्रान्त में एक दो से अधिक आयुर्वेद के ज्ञाताओं की आवश्यकता नहीं होती थी। तब लोग कहते थे कि, वह आयुर्वेदज्ञ कैसा जिसके प्रदेश में किसी रोग का अधिक प्रवेश हो सके, हां, यह अवश्य था कि, आजकल की भांति सार्टीफिकेट पाकर ही आयुर्वेदोद्धारक या आयुर्वेद विद्यानिधि–आदि किसी अंट संट उपाधि की पूंछ लगाकर ही वह लोग आयुर्वेद के ज्ञाता नहीं हो जाते थे। तबके विद्यार्थी आयुर्वेद के मर्म्म को गुरुओं से भलीभांति समझते थे। वर्षों तक जङ्गलो में रहकर जड़ी, बूटी, एवं पत्तियों को भलीभांति पहचानते थे, सब प्रकार की औषधियों को गुरु के सामने स्वयं तैयार करते थे। एक–एक पत्ते के गुण को अनेक प्रकार से अनेक रोगों में व्यवहार करने की विधि जानते थे। कहां तक कहें, इस आयुर्वेद विद्या को भली प्रकार मथकर उसका सार निकाल लेते थे। इतने अनुभव

और परिश्रम से आयुर्वेद विद्या प्राप्तकर जो लोग चिकित्सा करते थे उनकी चिकित्सा से, उनकी औषध से क्या मजाल जो असाध्य से असाध्य रोग में भी आराम न हो जाय। उनके पहुँचते ही रोगी को पूर्ण विश्वास हो जाता था कि, अब हम मरने के नहीं।

पर क्या, उस प्राचीन गौरव को जागृति देने के लिये अब कोई उपाय नहीं रहा? क्या हमारे असली आयुर्वेद का प्रचार इस देश में फिर नहीं हो सकता? इन प्रश्नों के उत्तर में फिर वही कहते हैं, किसी चीज का कभी अभाव नहीं होता। यदि हमारे देशवासी सकल आडम्बरों को छोड़कर आयुर्वेद के असली तत्व को जानने की इच्छा करें एवं आयुर्वेदीय विधि व्यवस्था के अनुकूल चिकित्सा करने का उद्योग करें तो फिर एक बार आयुर्वेद का चमत्कार भारतवर्ष में पूर्ण प्रकार से हो सकता है। यदि देशवासी आंख मीचकर देशी विदेशी जानी बेजानी मिश्रित औषधियों की बिक्री से धन उपार्जन मात्र अपना कर्त्तव्य नहीं समझकर आयुर्वेद के पण्डित बनना, चाहें, एवं देश में विदेश में आयुर्वेद की महिमा का प्रचार करना चाहें तो आयुर्वेदीय ग्रन्थों को संग्रह करें, आयुर्वेद के ग्रन्थों का पाठ करें और आयुर्वेदीथ ग्रन्थों में लिखित जड़ी, बूटी तथा पत्तियों के गुण जानने व उनके पहचानने का अभ्यास करें। जब तक औषधि का परिज्ञान नहीं होगा, तब तक औषधि तैयार करने की प्रक्रिया मालूम नहीं होगी। जब तक निदानपञ्चक द्वारा ठीक ठीक रोग समझ में नहीं आवेगा, तब तक अमृत तुल्य जड़ी बूटियों का संग्रह नहीं होगा, जब तक आयुर्वेद के जिस अंश का जो ज्ञाता है, उस अंश का प्रकाश नहीं करेगा, तबतक आयुर्वेद की जो प्रक्रिकाएँ जिसको मालूम हैं, उन्हें सर्वसाधारण को समझाने की चेष्टा नहीं करेगा, तब तक आयुर्वेद का पुन:प्रचार तब तक आयुर्वेद का पुनर्महत्व इस संसार में नहीं हो सकेगा। इसी से सर्व देशवासियों से निवेदन है कि, जो महानुभाव आयुर्वेद के जिस अंश के अधिकारी हों कृपाकर देशोपकार के लिये आयुर्वेद की पुनर्महिमा स्थापित करने के लिये देश में रोगियों की संख्या कम करने के लिये वह उस अंश को प्रकाश करने में हृदय को संकुचित नहीं करें। साथ ही जिन्हें जो विषय नहीं आता उसके जानने की चेष्टा करने में वह जरा भी नहीं हिचकें।

कहना नहीं होगा, आयुर्वेद की उन्नति के लिये बाहर से कुछ लाकर मिलाने की आवश्यकता नहीं है, इस वेद के भीतर स्वयं इतना अधिक विषय कूटकूट कर भरा है कि, यदि उसके जानने की चेष्टा की जाय और मनुष्य जन्मजन्मान्तर इसका गूढ़ विषय जानता रहे तो भी कभी विषयभण्डार खाली नहीं होवे। जिसकी जैसी निर्मल बुद्धि हो वह उतना ही अधिक विषय रत्न इससे निकालकर संसार को लाभ पहुँचा सकता है, जो संसार को लाभ पहुँचा सकता है उसके स्वयं लाभ की बात तो कहना ही क्या है? आयुर्वेद के गूढ़ रहस्यों को संस्कृत में समझने के लिये अब देश में एक प्रकार पाण्डित्य का अभाव है। वर्तमान समय में विद्या की उन्नति होने पर भी संस्कृत की यथोचित उन्नति नहीं हो सकी, आगे के लिये अभी तक कोई उचित प्रबन्ध

दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। जो हो समयानुकूल संस्कृत जानने वाले एवं केवल हिन्दी जानने वालों के लिये भी बहुत कुछ सुभीता हो गया है।

भगवान् भला करें 'श्रीवेङ्कटेश्वर' प्रेस के स्वत्वाधिकारी श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी का, आपके उद्योग से अन्य संस्कृत ग्रन्थों के साथ साथ आयुर्वेद ग्रंथों का भी बहुत कुछ उद्धार हुआ है, श्रीमान् सेठजी ने बड़े परिश्रम और खर्च से कुछ आयुर्वेद के ग्रंथों को न जाने कहां कहां से मँगवाकर हमें दिया है। हमने अपनी मति गति के अनुसार संशोधन कर सरल हिन्दी भाषा में इनका अनुवाद कर श्रीयुक्त सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी को ही समर्पित किया है। श्रीमान् सेठजी ने सबके कल्याणार्थ इन ग्रन्थों को अपने 'श्रीवेङ्कटेश्वर' स्टीम्–प्रेस में मुद्रित कर प्रकाशित किया है। आयुर्वेद सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों में जो सेठजी से हमें उपलब्ध हुए हैं, उनमें यह 'मदनपालनिघण्टु' भी एक ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ छोटा होने पर भी बहुत उपकारी है। इस ग्रंथ में प्रायः सभी आवश्यक द्रव्यों के नाम व गुणों का वर्णन है। जिनका जानना वैद्यमात्र के लिये अत्यावश्यक है। इस ग्रंथ का अनुवाद करते समय औषधियों के नाम ऐसी सरल और प्रचलित भाषा में लिख दिये गये हैं कि, सामान्य से सामान्य मनुष्य इसको पढ़कर बिना किसी की सहायता से औषधि का परिज्ञान कर सकता है। संस्कृत नहीं जानने वाला केवल भाषा पढ़कर इस ग्रन्थ की सहायता से अच्छे विद्वानों की भांति द्रव्य नाम गुण के विषय में योग्यता प्राप्त कर सकता है। इतना सब विचार रखने पर भी मानुषी बुद्धि के कारण, छापे के कारण, अथवा अन्य किसी कारण से यदि इस ग्रंथ में किसी प्रकार की त्रुटियाँ रह गईं हों तो विद्वज्जन क्षमा करेंगे, एवं त्रुटियों को संशोधित कर अपनी उदारता का परिचय देंगे।

भवदीय– सेवक–

रामप्रसाद–पटियाला

अवश्य ज्ञातव्य

भाषा में लिखे हुए कठिन शब्दों का स्पष्ट अर्थ

यद्यपि हमने भाषा लिखते समय अपनी समझ में ऐसे ही शब्द लिखे हैं जो सर्व साधारण की समझ में आ सकें, तथापि कुछ शब्द वैद्यक के ग्रन्थों की टीका में ऐसे लिखे जाते हैं जिनका हर एक की समझ में आना कठिन है। जैसे–बृंहण, व्यवायी, वृष्य, भेदी, स्रंसन आदि। सो ऐसा विचार कर कठिन कठिन शब्दों का स्पष्ट अर्थ (जो सबकी समझ में आ सके) लिखते हैंः–

१ दीपन–जो द्रव्य आम को न पचावे केवल अग्नि को ही चैतन्य करे उसे दीपन कहते हैं।

२ पाचन–जो द्रव्य आम को पचावे किंतु अग्नि को न बढ़ावे उसे पाचन कहते हैं।

३ दीपनपाचन–जो आम को पचावे तथा अग्नि को भी चैतन्य करे उसे दीपनपाचन कहते हैं।

४ शमन–जो औषधि वातादि दोषों की साम्यावस्था बिगाड़े नहीं और न शोधन करे, किन्तु बढ़े हुए दोषों को साम्यावस्था में करे उसे शमन कहते हैं।

५ अनुलोमन–जो औषधि वातादि दोषों को पाक करके बद्ध हुए मलों को भेदन करके नीचे के मार्गों (गुदा, लिंग) द्वारा निकाले उसे अनुलोमन कहते हैं।

६ स्रंसन–जो द्रव्य पक्व अथवा अपक्व कोष्ठाश्रित मल को नीचे भाग में लाकर गुदा द्वारा निकाले उसे स्रंसन कहते हैं।

७ भेदन–जो औषधि वातादि दोषों करके अबद्ध (न बँधा) अथवा बँधा हुआ या गांठ के समान सूखे हुए मल को भेदन करके गुदा द्वारा नीचे गिरावे उसे भेदन कहते हैं।

८ रेचन–जो औषधि पक्व अथवा अपक्व मल को अथवा वातपित्तादि दोषों को द्रव (पतला) करके गुदा द्वारा नीचे गिरावे उसे रेचन कहते हैं।

९ वामक–जो औषध बिना पके पित्त, कफ को बलपूर्वक मुखद्वारा निकाले अर्थात् छर्दी करावे उसे वामक कहते हैं।

१० संशोधन–जो औषध अपने स्थान में स्थित वातादि दोषों के संचित मलों के उर्ध्व भाग (मुखनासिका आदि) अधोभाग (गुदा लिंग) द्वारा निकाले उसे संशोधन कहते हैं।

११ छेदन–जो औषधि एक में मिले हुए कफ आदि दोषों को फाड़ देवे उसे छेदन कहते हैं।

१२ लेखन–जो औषधि रस आदि धातुओं के मल को अथवा दोषों के मल को सुखाकर और उसको उखाड़कर निकाल डाले उसको लेखन कहते हैं।

१३ ग्राही–जो द्रव्य अग्नि को चैतन्य करे तथा आम को पाचन करे और उष्णवीर्य होने से द्रवरूप (पतले) दोष तथा मल को शोषण करे उसको ग्राही कहते हैं।

१४ स्तम्भन–जो द्रव्य रूखा, शीतल, कषैला, पचने में हलका होने से वायु को उत्पन्न करे और वीर्य तथा मल के वेग को रोक देवे उसको स्तम्भन कहते हैं।

१५ रसायन–जो द्रव्य बुढ़ापे को और रोगों को नष्ट करके आयु को बढ़ावे उसको रसायन और आयुवर्द्धक कहते हैं।

१६ बृंहण–जो द्रव्य मांस को पुष्ट करे उसको बृंहण कहते हैं।

१७ बल्य–जो द्रव्य जीवन, शरीर तथा इन्द्रियों को बल (ताकत) देनेवाला हो उसको बल्य तथा बलवर्द्धक कहते हैं।

१८ जीवन–जो द्रव्य जीवन को बढ़ावे चिरकाल जीता रखे उसको जीवन या जीवनी कहते हैं।

१९ वृष्य–जो द्रव्य वीर्य को पैदा करे उसको वृष्य या वीर्यप्रद तथा शुक्रद कहते हैं।

२० धातुवर्द्धक–जो द्रव्य वीर्य अथवा रसादि धातुओं को बढ़ाने वाला हो उसको धातु वर्द्धक कहते हैं।

२१ धातुचेतन–जो द्रव्य वीर्य अथवा धातुओं को चेतन तथा उत्पन्न करे उसको धातु चेतन कहते हैं।

२२ वाजीकरण–जो द्रव्य वीर्य को बढ़ावे तथा स्त्रीगमन की शक्ति को बलवान् करे उसको वाजीकरण कहते हैं।

२३ व्यवायी–जो द्रव्य पचने से पहिले ही सम्पूर्ण शरीर में व्यापक हो जाय और पीछे पाक को प्राप्त हो उसको व्यवायी कहते हैं और कामोत्पादक द्रव्य को भी व्यवायी कहते हैं।

२४ विकाशी–जो द्रव्य शरीर की सन्धियों के बन्धनों को तथा धातुओं के बल को शिथिल करे वह विकाशी कहा जाता है।

२५ मादक–जो द्रव्य तमोगुणी होने से बुद्धि को नष्ट कर दे उसको मादक या मदकारक कहते हैं।

२६ सूक्ष्म–जो द्रव्य रोमकूपों द्वारा शरीर में प्रवेश कर जाय उसको सूक्ष्म कहते हैं।

२७ आग्नेय–अग्नि से प्रगट हुआ अग्नितत्व वाला आग्नेय कहा जाता है।
२८ प्राणहारक–जो द्रव्य व्यवायी, विकाशी, सूक्ष्म, छेदन, मादक, आग्नेय इन सब गुणों से युक्त होने से जीवन के नष्ट करने वाला हो उसको प्राणहारक अथवा मारक तथा प्राणनाशक कहते हैं।
२९ योगवाही–जो अनेक द्रव्यों के योग से अथवा पृथक् पृथक् अनुपानों से सब रोगों पर दिया जावे उसको योगवाही कहते हैं।
३० प्रमाथी–जो द्रव्य अपने बल से मुख, नाशिकादि छिद्रों से कफ आदि दोषों को दूर करने वाला हो उसको प्रमाथी कहते हैं।
३१ अभिष्यन्दी–जो द्रव्य गाढ़ा और भारी होने से रसवाही नसो को रोककर शरीर को जकड़ देवे उसको अभिष्यन्दी कहते हैं।
३२ पिच्छिल–जो द्रव्य गाढ़ा हो उसको पिच्छिल कहते हैं।
३३ सान्द्र–जिसमें नसों के आकार का मिला हुआ सा गाढ़ा हो उसको सान्द्र कहते हैं।
३४ क्लेदी–जो द्रव्य गिलगिला या गीलापन करने वाला हो उसको क्लेदी कहते हैं।
३५ हृद्य–जो द्रव्य हृदय को बलवान् करता हो उसको हृद्य कहते हैं।
३६ विशद–जो द्रव्य स्पष्ट, स्वच्छ, निर्मल हो उसको विशद कहते हैं।
३७ सर–जो द्रव्य चलायमान होकर निकल जाय तथा दोष को निकाल डाले उसको सर, सारक, दस्तावर कहते है।
३८ वातल–जो द्रव्य वायु को पैदा करे उसको वातल कहते हैं। इसी प्रकार मूत्र को पैदा करने वाले को मूत्रल और शुक्र के उत्पन्न करने वाले को शुक्रल समझना चाहिये।

रामप्रसाद

अथ मदनपालनिघण्टुविषयानुक्रमणिका

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता:

श्रीगणेशाय नमः

मदनपालनिघण्टुः

भाषातत्त्वप्रकाशिनी–

हिन्दीटीकासहितः

बीजं श्रुतीनां सुधनं मुनीनां
जीवं जडानां महदादिकानाम् ।
आग्नेयमस्त्रं भवपातकानां
किञ्चिन्महः श्यामलमाश्रयामि ।।१।।

टीकाकार का मङ्गलाचरण

औषधीज्ञानदातारं प्रणम्य शिवदं शिवम् ।
टीका मदनपालस्य भाषातत्वप्रकाशिनी ।।
मया रामप्रसादेन क्रियते नृहितेच्छया ।
सुलभा अगदा यस्यां देशभेदेन नामभिः ।।

दोहा–बन्दौं प्रथम महेशपद, बुधि बल के दातार ।
जिनकी कृपाकटाक्षसों, ही औषध निर्धार ।
पुनि वंदौं गुरुजन चरण, क्षुद्र हृदय नित धार ।
मदनपाल टीका करौं, रामप्रसाद सुधार ।।
भाषातत्वप्रकाशिनी, भेषज नाम विवेक ।
सुलभ होंहिं जा पठनसे, औषध भेद अनेक ।।

प्रथम ग्रंथकर्ता (राजा मदनपाल) ग्रंथ की निर्विघ्नसमाप्ति के लिये मंगलाचरण करते हुए परमात्मा तथा गणेशजी, सूर्यभगवान् और धन्वन्तरिजी की स्तुति चार श्लोकों में करते हैं और आगे को भी सब लोग ऐसी क्रिया करें, इसलिये ग्रंथ के आदि में लिखते हैं:– वेदों का बीजरूप, मुनियों का सुन्दर धन, महत् आदि जड़पदार्थों का जीवनरूप और संसार के पातकों को नष्ट करने के लिये आग्नेय अस्त्र ऐसे किसी महाप्रकाशयुक्त श्यामवर्णवाले भगवान् का मंगलार्थ आश्रय लेता हूं।।१।।

लुब्धा कपोलमधुवारि मधुव्रताली
कुम्भस्थलीमधुविभूषणलोहिताङ्गी ।
माणिक्यमौलिरिव राजति यस्य मौलौ
विघ्नं स धूनयतु विघ्नपतिः सदा नः ।।२।।

कपोलों पर से गिरते हुए मद के पानी पर लुभाई हुई तथा कुम्भस्थल के मद की शोभा से लाल हो रहे हैं अंग जिसके, ऐसी भ्रमरों की पंक्ति उत्तम मणियों के समान जिसके मुकुट पर शोभायमान हो रही है, वे गणेशजी सब काल में हमारे विघ्नों को नष्ट करें।।२।।

यो ध्वान्तसन्ततिगभीरपयोधिमध्या–
न्निष्कासयत्यशरणं भुवनं निमज्जत् ।
दत्त्वा जगत्त्रयहितः स्वकरावलम्बं
वाञ्छां स वो दिनकरः सफलीकरोतु ।।३।।

जो भगवान् अंधकारमय गंभीर समुद्र के मध्य से शरणरहित और डूबते हुए संसार को अपने हाथ (किरण) का अवलंबन (सहारा) देकर निकालते हैं और जगत्त्रय के हितकारक हैं वे दिन के कर्ता (सूर्यनारायण) तुम्हारी कामना सफल करें।।३।।

मिथ्याशनादिकृतदोषचयेन कोपा-
न्नद्यम्बुवर्द्धित उपद्रवनक्रभीमे ।
रोगाम्बुधौ भवजनस्य निमज्जतो यः
पोतः प्रयच्छतु शुभानि स काशिराजः ।।४।।

अनुचित रीति से किये हुए तथा असात्म्य जो आहार विहार उनसे संचित हुए दोषों के कोपरूप नदियों के पानी से बढ़ा हुआ है वेग जिसका और उपद्रवरूपी मगरमच्छों से भयानक ऐसे रोगरूपी समुद्र में डूबते हुए संसार के मनुष्यों के बचानेवाले जहाजरूप काशिराज (धन्वंतरि) हमको कल्याण के देनेवाले होवें।।४।।

केचित्सन्ति निघण्टवोऽतिलघवः केचिन्महान्तः परे
केचिद्दुर्गमनामकाः कतिपये भावाः स्वभावोच्छ्रिताः ।
तस्मान्नातिलघुर्न चातिविपुलः ख्याताभिनामा सतां
प्रीत्यै द्रव्यगुणान्वितोऽयमधुना ग्रन्थो मया बध्यते ।।५।।

कोई निघंटु अत्यंत छोटे हैं इस कारण उनसे कुछ औषधज्ञान हो नहीं सकता और कोई निघंटु अत्यंत बड़े होने से साधारण जन देख नहीं सकते हैं कोई नहीं जाने जा सकें, ऐसे नामोंवाले हैं और कोई निघंटु स्वभाव से बड़े हैं इसलिए न बहुत छोटा और न बहुत बड़ा और जो समझेजा

सकें नाम ऐसे नाम, द्रव्य और गुणों से युक्त यह निघंटु ग्रंथ में सत्पुरुषों की प्रीति के अर्थ रचता हूं।।५।।

सर्वं कायेन संसाध्यं तस्यायुः स्थितिकारणम् ।
आयुर्वेदोपदेशस्तु कस्य न स्यात्फलावहः ।।६।।

धर्मादि संपूर्णपदार्थ शरीर द्वारा ही साधित हो सकते हैं और उस शरीर की स्थिति का कारण आयु है। आयु के संबंध के हित और अहित का ज्ञान आयुर्वेद से हो सकता है। इसलिये आयुर्वेद का उपदेश किसको शुभ फलदायक नहीं हो सकता अर्थात् सभी को हो सकता है।।६।।

तत्रापि पूर्वं ज्ञातव्या द्रव्यनामगुणागुणाः ।
अतस्त एव वक्ष्यन्ते तज्ज्ञाने हि क्रियाक्रमः ।।७।।

और उस आयुर्वेद में भी प्रथम द्रव्य के गुण और दोष जानने योग्य हैं। इस कारण प्रथम उनको ही कहते हैं उनके जानने में ही क्रियाक्रम है अर्थात् पहले द्रव्यादि जानने पर ही आयुर्वेदसम्बन्धी क्रिया का आरंभ हो सकता है।।७।।

हरीतकीप्रशंसा तद्भेदाश्च

हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः ।
हारयेत्सर्वरोगांच तेन प्रोक्ता हरीतकी ।।८।।

हर (महादेव) के स्थान में उत्पन्न हुई और स्वभाव से हरे रंगवाली तथा संपूर्ण रोगों को हर लेती है इस कारण यह हरीतकी कही जाती है।।८।।

जीवन्ती पूतना पश्चादमृता विजयाऽभया ।
रोहिणी चेतकी सप्त भेदभिन्ना हरीतकी ।।९।।

जीवन्ती, पूतना, अमृता, विजया, अभया, रोहिणी, चेतकी इन सात भेदों से हरीतकी सात प्रकार की है।।९।।

जीवन्ती जीवनोद्योगात्पावनात्पूतना मता ।
सुधावदमृता ज्ञेया विजया विजयप्रदा ।।१०।।

जीवन में उद्योग के करनेवाली होने से जीवंती कही जाती है। दुष्ट मलों को दूर कर शरीर को पवित्र करने से पूतना कही जाती है, अमृत के समान जीवनदाता होने से अमृत जाननी चाहिये, विजया रोगों को जीतकर विजय को देती है।।१०।।

नृणामभयदा यस्मादभया तत् प्रकीर्त्तिता ।
रोहिणी तु गुणारोहाच्चेतनाच्चेतकी मता ।।११।।

मनुष्यों को रोगों से अभय कर देती है इससे अभया कही है, आरोग्य जनक अनेक गुणों को उपजाने से रोहिणी है और आलस्य आदि दूर कर शरीर को चेतना रखने

से चेतकी कही है।।११।।

जीवन्ती स्वर्णवर्णाभा पूतनाऽस्थिमती मता ।
अमृता त्रिदला प्रोक्ता विजया तुम्बरूपिणी ।।१२।।

सुवर्ण के वर्ण के समान कांतिवाली जीवन्ती होती है, छोटी गुठली वाली को पूतना कहते हैं, तीन दलों वाली अमृता कही है, और तूंबे के समान रूपवाली विजया होती है।।१२।।

पञ्चाङ्गी त्वभया ज्ञेयाऽमृता वृत्ता तु रोहिणी ।
त्र्यङ्गी तु चेतकी ज्ञेया कर्म तासामथोच्यते ।।१३।।

पांच रेखा वाली अभया होती है और जो गोल हो वह रोहिणी होती है तथा तीन रेखा वाली चेतकी होती है। अब उनका जिन जिन कामों में मुख्यतः बर्ताव करना चाहिये वह कहते हैं।।१३।।

सर्वरोगेषु जीवन्ती प्रलेपे पूतना हिता ।
शुद्ध्यर्थममृता प्रोक्ता विजया सर्वरोगहृत् ।।१४।।

सम्पूर्ण रोगों में जीवन्ती हितकारक है, लेप में पूतना हित है, विरेचन में अमृता का प्रयोग हित है और विजया सब रोगों को हरने वाली है।।१४।।

अक्षिरोगेऽभया शस्ता रोहिणी व्रणरोहिणी ।
चेतकी चूर्णयोगे स्यात्सप्तधैव प्रकीर्तिता ।।१५।।

नेत्ररोग में अभया श्रेष्ठ है, रोहिणी घाव को पूरती है और चूर्ण के योग में चेतकी डालना हित है, ऐसे सात प्रकार की हरीतकी (हरड) कही है।।१५।।

नवा स्निग्धा घना वृत्ता गुर्वी क्षिप्ता च याऽम्भसि ।
निमज्जेत्सा प्रशस्ता स्याद्रोगघ्न्यतिगुणप्रदा ।।१६।।

नवीन, चिकनी, करडी और गोल तथा भारी हो जो पानी में गिराने से डूब जावे वह हरड़ उत्तम होती है तथा रोगों को नष्ट करती और बहुत गुणों को देने वाली है।।१६।।

शोणा च्छिन्ना गुडनिभा किंचिदल्पा कषायिणी ।
स्थूलत्वक् सरसा स्वल्पबीजा गुर्वी हरीतकी ।।१७।।

लाल रंग की, तोड़ने में गुड़ के समान टूटनेवाली, किंचित् छोटी, कषैले स्वादवाली, मोटी छालवाली, अधिक रसवाली, छोटी गुठलीवाली और भारी ऐसी हरड़ उत्तम होती है।।१७।।

चर्विता वर्द्धयत्यग्निं पेषिता मलशोधिनी ।
स्विन्ना सङ्ग्राहिणी प्रोक्ता भृष्टा पथ्यान्नदोषनुत्।।१८।।

हरड चावकर खाने से अग्नि को बढ़ाती है, पीसकर खाई हुई हरड मल को शोधन करती है, पकाई हुई हरड मल को बांध देती है और भूनकर खाई हुई हरड अन्न के दोष को नष्ट करती है।।१८।।

ग्रीष्मे तुल्यगुडां सुसैन्धवयुतां मेघावृते ह्यम्बरे
तुल्यां शर्करया शरद्यमलया शुण्ठ्या तुषारागमे ।
पिप्पल्या शिशिरे वसन्तसमये क्षौद्रेण संयोजितां
राजन् प्राप्य हरीतकीमिव रुजो नश्यन्तु ते शत्रवः ।।१९।।

ग्रीष्म ऋतु में (ज्येष्ठ आषाढ़ में) समभाग गुड़ के संग, श्रावण और भाद्रपद में सेंधेनिमक के संग, आश्विन और कार्तिक में खांड़ के संग, मार्गशीर्ष और पौष में सोंठ के संग, माघ और फाल्गुन में पीपल के संग, चैत्र और वैशाख में शहद के संग इस प्रकार सेवन से जैसे हरड को प्राप्त हो रोग नष्ट होते हैं वैसे ही हे राजन्! आपके शत्रु भी नष्ट हो जाँय।।१९।।

हरीतकीनामगुणाः

शिवा हरीतकी पथ्या चेतकी विजया जया ।
प्रपथ्या* प्रथमाऽमोघा कायस्था प्राणदाऽमृता ।।२०।।
जीवनीया हेमवती पूतना वृतनाऽभया ।
वयस्था नन्दिनी ज्ञेया श्रेयसी रोहिणी तथा ।।२१।।

शिवा, हरीतकी, पथ्या, चेतकी, विजया, जया, प्रपथ्या, प्रमया, अमोघा, कायस्था, प्राणदा, अमृता, जीवनीया, हेमवती, पूतना, वृतना, अभया, वयस्था, नंदिनी, श्रेयसी, रोहिणी ये हरड़ के नाम हैं।।२०–२१।।

हरीतकी पञ्चरसाऽलवणा तुवरोत्कटा ।
रूक्षोष्णा दीपनी मेध्या स्वादुपाका रसायनी ।।२२।।

हरड़ में मीठा, कडुवा, कषैला तथा चरपरा यह पांच रस हैं। हरड़ में नमकीन रस नहीं है और बहुत कषैली है तथा रूखी,और गर्म है, अग्नि को जगाती है और शुद्धि को करती है, पचने में स्वादु है, रसायनी है अर्थात् अवस्था को स्थापन करती है।।२२।।

सरा बुद्धिप्रदा वृष्या चक्षुष्या बृंहणी लघुः ।
श्वासकासप्रमेहार्शः कुष्ठशोफोदरान् कृमीन् ।।२३।।

दस्तावर है, बुद्धि को देने वाली है, आयु को बढ़ाती है, नेत्रों को हितकारक है, बल

---

*प्रमथ्या इति केचित् ।

को बढ़ाने वाली है, हलकी है और श्वास, खांसी, प्रमेह, बवासीर, कुष्ठ, शोजा, उदररोग, कृमिरोग।।२३।।

वैस्वर्य्यग्रहणीदोषविबन्धविषमज्वरान् ।
गुल्माध्मानव्रणच्छर्दिहिक्काकण्डूहृदामयान् ।।
कामलां शूलमानाहं प्लीहानं चापकर्षति ।।२४।।

स्वरभेद, (आवाज का बिगड़ना) ग्रहणीरोग, विबंध, विषमज्वर, गुल्म, आध्मान, घाव, छर्दि, हिचकी, खाज, हृद्रोग, कामला, शूल, अफारा, तिल्लीरोग इनको दूर करती है।।२४।।

मधुराम्लतया वातं कषायस्वादुभावतः ।
पित्तं हन्ति कफं हन्ति कटुकेन हरीतकी ।।२५।।

हरड़ मीठे रस और खट्टे रस से वात विकार को हरती है, कषैला और स्वादुपन से पित्त को हरती है, चरपरे रस से कफ को हरती है।।२५।।

आमलकनामगुणाः

धात्रीफलाऽमृतफलाऽऽमलकं श्रीफलं शिवम् ।
तद्वद्धात्रीफलं वृष्यं विशेषाद्रक्तपित्तजित् ।।२६।।

धात्रीफल, अमृतफल, आमलक, श्रीफल, शिव ये नाम आमले के हैं, आमले का फल आयु को बढ़ाता है और वाजीकरण है विशेष करके रक्तपित्त के विकारों को जीतता है।।२६।।

अम्लत्वात्पवनं हन्ति पित्तं माधुर्य्यशैत्यतः ।
कफं रूक्षकषायत्वात्तस्मात्किमधिकं फलम् ।।२७।।

खट्टेरस से वायु को नष्ट करता है, मधुरता और शीतलता से पित्त को नष्ट करता है, रूखेपन से तथा कषैलेपन से कफ को नष्ट करता है। ऐसे आमलकी फल से अधिक और कौन फल हो सकता है अर्थात् कोई भी नहीं।।२७।।

बिभीतकनामगुणाः

बिभीतकः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ।
वासन्तोऽक्षो वृद्धजातः संवर्त्तस्तिलपुष्पकः ।।२८।।

बिभीतक, कर्षफल, भूतावास, कलिद्रुम, वासन्त, अक्ष, वृद्धजात, संवर्त, तिल पुष्पक ये नाम बहेड़े के हैं।।२८।।

बिभीतकः स्वादुपाकः कषायः कफपित्तनुत् ।
उष्णवीर्यो हिमस्पर्शो भेदनः कासनाशनः ।।२९।।

बहेडा पाक में स्वादिष्ठ है, कषैला है, कफ और पित्त को नष्ट करता है, उष्णवीर्य है,

स्पर्श में शीतल है, भेदन है और खांसी को नष्ट करता है।।२९।।

रूक्षो नेत्रहितः केश्यो मज्जातो मदकारकः ।।३०।।

रूखा है, नेत्रों को हित है, बालों को बढ़ानेवाला है और इसकी गिरी मदकारक है।।३०।।

त्रिफलानामगुणाः

हरीतक्यास्त्रयो भागाः शिवा द्वादशभागिका ।
षड्भागाः स्युर्बिभीतस्य त्रिफलेयं प्रकीर्तिता ।।३१।।

हरड ३ भाग, आमला १२ भाग, बहेड़ा ६ भाग, इन तीनों को मिलाने से त्रिफला कही जाती है। यह भागशब्द फलों की गणना का वाचक है तोल की वाचक नहीं; भावमिश्रतो तीनों की समभाग छाल का ही प्रयोग मानते हैं।।३१।।

पित्तं माधुर्य्यशैत्याभ्यां कफं रूक्षकषायतः ।
त्रिफलैतत्त्रयेण स्याद्वरा श्रेष्ठा फलोत्तमा ।।३२।।

त्रिफला मीठेपन और शीतलता से पित्त को नष्ट करती है तथा रूखेपन और कषैलेपन से कफ को हरती है। त्रिफला, वरा, श्रेष्ठा, फलोत्तमा ये त्रिफला के चार नाम हैं।।३२।।

त्रिफला कुष्ठमेहार्शः कफपित्तविनाशिनी ।
चक्षुष्या रोपणी हृद्या वयसः स्थापिनी परा ।।३३।।

त्रिफला कुष्ठ को प्रमेह को बवासीर को कफ को पित्त को नष्ट करती है, नेत्रों को परम हित है, घाव को रोपण करने वाली है, हृदय को हितकारी है और अवस्थाको विशेषकर स्थापित करने वाली है।।३३।।

भूधात्रीनामगुणाः

भूधात्री बहुपत्री स्यादमृताऽऽमलकी शिवा ।
भूधात्री वातकृत्तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ।
पिपासाकासपित्तास्रकृमिपाण्डुक्षतापहा ।।३४।। ।

भूधात्री, बहुपत्री, अमृता, ःआमलकी॰ शिला ये नाम भूमि आमला के हैं, भूमि, आमला वायु को करता है, कडुवा, कषैला और मीठा तथा शीतल है। तृषा, खांसी रक्तपित्त, कृमि और पाण्डु तथा क्षयरोग इनको नष्ट करता है।।३४।।

प्राचीनामलकीनामगुणाः

प्राचीनामलकी प्राची नागरं रक्तकं मतम् ।
तत्पक्वं पित्तकफकृदुष्णं गुरु समीरजित् ।।३५।।

प्राचीन आमलकी, प्राची, नागर रक्तक ये नाम पानी आंवला के हैं। इसका पका

हुआ फल पित्त और कफ को करता है, गर्म है और भारी है और वात को जीतता है।।३५।।

अटरूषकनामगुणा:

अरूषकेणाववासा वृषा सिंहमुखी भिषक् ।
सिंहपर्णी वृषो वासा सिंहकोत्पाटरूषक: ।।३६।।

अरूषक, इणाववासा, वृषा, सिंहमुखी, (सिंहानना) भिषक् सिंहपर्णी, वृष, वासा, सिंहक, उत्पाटरूषक ये नाम वासा के हैं। अडूसा के नाम से सब जगह प्रसिद्ध है। इसको अडूसा, बसूटा, बांसा भी कहते हैं। इसके ऊपर सफेद फूल होते हैं उनमें से मीठा रस बन्दर और लड़के भी चूसा करते हैं शिमले के तर्फ कालका के नजदीक बहुत और प्राय: सब देशों में होता है और इसको लोक बसूटी कहते हैं।।३६।।

वासको वातकृत्सर्य्यः कफपित्तास्रनाशन: ।
श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापह: ।।३७।।

वांसा वात को करता है, सर है, कफ और रक्तपित्त को नाशता है। यह श्वास, खांसी, ज्वर, छर्दि (उलटी), मेह, कोढ़ और क्षय को दूर करता है।।३७।।

गुडूची (गिलोय) नामगुणा:

गुडूची कुण्डली छिन्ना वयस्थाऽमृतवल्लरी ।
छिन्नोद्भवा छिन्नरुहाऽमृता ज्वरविनाशिनी ।।३८।।
वत्सादनी चन्द्रहासा जीवन्ती चक्रलक्षणा ।
गुडूची कटुका लघ्वी स्वादुपाका रसायनी ।।३९।।
संग्राहिणी कषायोष्णा बल्या तिक्ताऽग्निदीपनी ।
कामलाकुष्ठवातास्रज्वरपित्तकृमीन् जयेत् ।।४०।।

गुडूची, कुण्डली, छिन्ना, वयस्था, अमृतवल्लरी, छिन्नोद्भवा, छिन्नरुहा, अमृता, ज्वरविनाशनी, वत्सादनी, चन्द्रहासा, जीवन्ती, चक्रलक्षणा ये नाम गिलोय के हैं। इसकी बेल होती है। गिलोय, गुच, गुडूची इन नामों से प्राय: सब जगह मिल सकती है। गिलोय तीक्ष्ण, हलकी, पाक में स्वादिष्ठ और रसायन है, मल को बांधती है, कषैली है, गर्म है, बल को बढ़ाती है, कडुवी है, अग्नि को जगाती है और कामला, कुष्ठ, वातरक्त, ज्वर, पित्त तथा कृमिरोग इनको जीतती है।।३८–४०।।

घृतेन वातं सगुडा विबन्धं पित्तं सिताढ्या मधुना कफं च ।
वातास्रमुग्रं रुबुतैलमिश्रा शुण्ठ्यामवातं शमयेद्गुडूची।।४१।।

गिलोय घृत के संग वात को गुड़ के संग विबन्ध को मिश्री के संग पित्त को शहद के संग कफ को अँरडी के तेल के संग भयंकर वातरक्त को और सोंठ के संग आमवात

को शमन करती है।।४१।।

विल्वनामगुणाः

बिल्वः शलाटुः शैलूषो मालूरश्च सदाफलः ।
लक्ष्मीफलो गन्धगर्भः शाण्डिल्यः कण्टकी मतः ।।४२।।

बिल्व, शलाटु, शैलूष, मालूर, सदाफल, लक्ष्मीफल, गन्धगर्भ, शाण्डिल्य, कंटकी ये नाम बेलफल के हैं बिल, बेल, बिल्व इन नामों से सब जगह प्रसिद्ध है।।४२।।

बिल्वं ग्राहि कषायोष्णं कटु दीपनपाचनम् ।
हृद्यं बालं लघु स्निग्धं तिक्तं वातकफापहम् ।।४३।।

कच्ची बेलगिरी मल को बांधती है, कषैली और गर्म है, चर्परी, दीपन और पाचन है, हृदय को हितकारी है। बेल की गिरी हलकी , चिकनी, कड़वी और वात तथा कफ को नष्ट करती है।।४३।।

वृष्यं गुरु त्रिदोषं स्याद्दुर्जरं पूतिमारुतम् ।
विदाहि विष्टम्भकरं मधुरं बह्निमान्द्यकृत् ।।४४।।

पक्का बिल वीर्य को बढ़ाता है, भारी है और तीन दोषों को उपजाने वाला है पाचन देर में होता है और दुर्गंध वातवाला है विशेषकर दाह और विष्टम्भ करता है। यह मीठा है और अग्नि को मन्द करता है।।४४।।

ग्रहणीकफवातामशूलघ्नी बिल्वपेषिका ।।४५।।

कोमल बेलफल ग्रहणी कफ वात, आम और शूल को नाशता है।।४५।।

अरणिनामगुणाः

अग्निमन्थो मथः केतुररणिर्वैजयन्तिका ।
अग्निमन्थः श्वयथुहृद्वीर्य्योष्णः कफवातनुत् ।।४६।।

अग्निमन्थ, मथ, केतु अरणि, वैजयन्तिका, (हविर्मय, कर्णिका, गवेथु, श्रीपर्णी) ये नाम अरनीके हैं। यह अरनी और अग्निमंथ इन दो नामों से प्रसिद्ध है। इसके वृक्ष में फूल सफेद होते हैं, फल करौंदेके समान होते हैं। अरनी सूजन को हरती है, वीर्य में गर्म है और कफवात को नाशती है।।४६।।

पाटलानामगुणाः

पाटला कामदूतिः स्यात्कुम्भिका कालवृन्तिका ।
स्वल्पमेधा मधोर्दूती ताम्रपुष्पाम्बुवासिनी ।।४७।।
अन्या फलेरुहा श्वेता कुम्भिका कृष्णपाटला ।
पाटलाऽरुचिशोथार्शः श्वासतृट्छर्दिनाशिनी ।।४८।।

पाटला, कामदूति, कुम्भिका, कालवृन्तिका, स्वल्पमेधा, मधोर्दूती, ताम्रपुष्पा,

अम्बुवासिनी और फलेरुहा, श्वेता, कुम्भिका, कृष्णपाटला ये नाम कृष्णपाटला के हैं। पाटला अरुचि सूजन, बवासीर, श्वास, तृषा और छर्दि इनको नाश करती है।।४७–४८।।

अत्युष्णं तुवरं स्वादु तत्पुष्पं कफरक्तनुत् ।
पित्तातिसारदाहघ्नं फलं हिक्कास्रपित्तनुत् ।।४९।।

यह अत्यन्त गर्म है, कषैली और स्वादिष्ठ है, इसका फूल कफ और रक्त के विकार को नष्ट करता है तथा पित्त, अतिसार, दाह इनको नष्ट करता है और इसका फल हिचकी और रक्तपित्त को नष्ट करता है।।४९।।

काश्मरीनामगुणाः

काश्मरी सर्वतोभद्रा श्रीपर्णी कृष्णवृन्तिका ।
काश्मारी कश्मरी हीरा काश्मर्य्या भद्रपर्णिका ।।५०।।

काश्मरी, सर्वतोभद्रा, श्रीपर्णी, कृष्णवृंतिका, कश्मारी, कश्मरी, हीरा, काश्मर्या, भद्रपर्णिका यह नाम कंभारी के हैं।।५०।।

काश्मरी ज्वरशूलघ्नी वीर्य्योष्णा मधुरा गुरुः ।
तत्पुष्पं वातलं ग्राहि पित्तासृक्प्रदरापहम् ।।५१।।

कंभारी ज्वर और शूल को नष्ट करने वाली है, वीर्य में गरम है, मीठी और भारी है। कंभारी का फूल वात को उपजाता है, मल को बांधता है रक्तपित्त को और प्रदर को हरने वाला है।।५१।।

फलं रसायनं केश्यं बृंहणं शुक्रलं गुरु ।
वातपित्तक्षयतृषारक्तशूलविबन्धनुत् ।।५२।।

कंभारी का फल रसायन है, बालों को बढ़ाता है, शरीर को पुष्ट करता है, वीर्य को बढ़ाता है, भारी है और वात, पित्त, क्षय, तृषा, रक्तविकार, शूल तथा विबन्ध इनका नाश करता है। इसके वृक्ष पीपल के समान होते हैं। छिलका मोटा होता है, कालका के नजदीक टकसाल ग्राम में इसको घमार का वृक्ष कहते हैं यह कौशिल्या नदी के किनारे के पहाड़ों में अधिकता से होता है।।५२।।

श्योनाक (टंटू) नामगुणाः

श्योनाकः पृथुशिम्बिः स्याच्छुकनासः कुटन्नटः ।।५३।।
भूतवृक्षश्च कट्वङ्गष्टुण्टुकः शल्लकोऽरलुः ।
मयूरजङ्घो भल्लूकः प्रियजीवः कटम्भरः ।।५४।।

श्योनाक, पथुशिम्बि, शुकनास, कुटन्नट, भूतवृक्ष, कट्वंग, टुण्टुक, शल्लक, अरलु

मयूरजंघ, भल्लूक, प्रियजीव, कटम्भर ये नाम शोनापाठा के हैं।।५३–५४।।

श्योनाको दीपनः पाके कटुस्तुवरको हिमः ।
ग्राही तिक्तोऽनिलश्लेष्मपित्तकासविनाशनः ।।५५।।

शोनापाठा दीपन है पाक में चर्परा है, कषैला और शीतल है, मल को बान्धता है, कडुवा है और वात, कफ, पित्त तथा खांसी को नष्ट करता है।।५५।।

टुण्टुकस्य फलं बालं रूक्षं वातकफापहम् ।
हृद्यं कषायमधुरं लघु रोचनदीपनम् ।।५६।।

शोनापाठा का कोमल फल रूखा है, वात कफ को नाशता है, हृद्य है, कषैला, मीठा और हलका है, रोचक और दीपन है। टकसाल में इसको टाटमडंगा कहते हैं उसमें तलवार के समान बड़ी फली लगती है।।५६।।

महत्पञ्चमूलगुणाः

बिल्वादिभिः पञ्चभिरेभिरेतत्स्यात्पञ्चमूलं महदग्निकारि ।
लघूष्णतिक्तं रसतः कषायं मेदः कफश्वाससमीरहारि ।।५७।।

बिल्व, अरनी, पाटला, कंभारी और श्योनाक इन पांचों को मिलाने से बृहत्पञ्चमूल होता है। यह अग्नि को बढ़ाता है। तथा हलका गर्म कडुआ और कषैला है। मेद कफ श्वास और वात इनको हरता है।।५७।।

गोक्षुरनामगुणाः

त्रिकण्टकः कण्टफलो गोक्षुरः स्वादुकण्टकः ।
गोकण्टको भक्ष्यटकस्त्रिकण्टो व्यालदंष्ट्रकः ।।
श्वदंष्ट्रा स्थूलभृङ्गाटः षडङ्गः क्षुरकस्त्रिकः ।।५८।।

त्रिकण्टक, कण्टफल, गोक्षुर, स्वादुकण्टक, गोकण्टक, भक्ष्यटक त्रिकण्ट, व्यालदंष्ट्रक, श्वदंष्ट्रा, स्थूलशृङ्गाट, षडङ्ग, क्षुरक, त्रिक ये नाम गोखरू के हैं।।५८।।

गोक्षुरः शीतलः स्वादुर्बलकृद्वस्तिशोधनः ।।५९।।
प्रमेहश्वासकासास्रकृच्छ्रहृद्रोगवातजित् ।।६०।।

गोखरू शीतल और स्वादिष्ठ है, बल को करता है तथा वस्ति को शोधता है। प्रमेह, श्वास, खांसी रक्तपित्त, हृद्रोग और वात इनको जीतता है। अंबाले के जिले में बहुत होते हैं, किसान लोग इनको भाखड़ा या भौंखड़ा कहते हैं, इसके प्रसर जमीन पर सूख जाने से इसके फल जमीन में गिर जाते हैं फल कांटेदार होते हैं। गरीबों के नंगे पावों में चुभ जाते हैं हस्तचिंघाड़ या गोखरू नाम से सब जगह मिल सकते हैं।।५९–६०।।

शालपर्णीनामगुणा:

शालपर्णी ध्रुवा सौम्या त्रिपर्णी पीतनी स्थिरा ।
विदारिगन्धाऽतिगुहा दीर्घमूलांशुमत्यपि ॥६१॥

शालपर्णी, ध्रुवा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीतनी, स्थिरा, विदारिगन्धा, अतिगुहा, दीर्घमूला, अंशुमती ये नाम शालपर्णी के हैं॥६१॥

शालपर्णी गुरुश्छर्दिज्वरश्वासातिसारनुत् ।
शोषदोषत्रयहरा बृहत्युष्णा रसायनी ॥६२॥

शालपर्णी भारी है और छर्दि, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष और तीनों दोषों को हरती है, बहुत गर्म और रसायन है॥६२॥

पृष्ठपर्णीनामगुणा:

पृष्ठपर्णी क्रोष्टुपुच्छा धावनी कलशारुहा ।
शृगालवृत्ताऽहितिला पृथक्पर्णी च पर्णिका ॥६३॥

पृष्ठपर्णी, क्रोष्टुपुच्छा, धावनी, कलशारुहा, शृगालवृत्ता, अहितिला, पृथक्पर्णी, पर्णिका ये पृष्ठपर्णी के नाम हैं॥६३॥

पृष्ठपर्णी लघुर्वृष्या मधुरोष्णा विनाशयेत् ।
रक्तातिसारतृड्दाहदोषत्रयवमिज्वरान् ॥६४॥

पृष्ठपर्णी हलकी है, आयु को बढ़ाती है, मीठी तथा गर्म है और रक्तातिसार, तृषा, दाह, तीनों दोष छर्दि, ज्वर इनका नाश करती है, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी ये दोनों टकसाल के नजदीक के पहाड़ों पर अधिकता से होती हैं इनके छोटे छोटे क्षुप बारहों महीने रह सकते हैं ऊपर मंजरीसी निकलती है॥६४॥

बृहत्कण्टकीनामगुणा:

बृहती स्थूलभण्टाकी विषदा च मदोत्कटा ।
वृन्ताकी महती सिंही कण्टकी राष्ट्रिकाकुली ॥६५॥

बृहती, स्थूलभंटाकी, विषदा, मदोत्कटा, वृन्ताकी, महती, सिंही, कण्टकी, राष्ट्रकाकुली, ये बृहती, बड़ी कटेली के नाम हैं॥६५॥

बृहती ग्राहिणी हृद्या पाचनी कफवातजित् ।
उष्णा कुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमान्द्यजित् ॥६६॥

बड़ी कटेली मल को बांधती है, हृदय की हितकारी और पाचनी है। कफ वात को जीतती है, गर्म है और कुष्ठ, ज्वर, श्वास, शूल, खांसी, मंदाग्नि इनको जीतती है, इसके पेड़ बैंगन के पेड़ के समान होते हैं, गोल फल होते हैं, पकने पर पीले हो जाते हैं, प्राय: सब जगह सुलभ है॥६६॥

कण्टकारीश्वेतकण्टकारीनामगुणाः

कण्टारिका कण्टिकिनी कण्टकारी निदग्धिका ।
दुःस्पर्शा धावनी क्षुद्रा स्याद् व्याघ्री दुष्प्रदर्शिनी ।।
सिता क्षुद्रा चन्द्रहासा लक्ष्मणा स्वेददूतिका ।।६७।।

कण्टारिका, कण्टिकिनी, कण्टकारी, निदग्धिका दुःस्पर्शा धावनी क्षुद्राव्याघ्री दुष्प्रदर्शिनी सिता, क्षुद्रा, चन्द्रहासा, लक्ष्मणा, स्वेददूतिका ये कटेली के और सफेद कटेली के नाम हैं, कटेली छक्कमहोली, छवकमहोली इन नामों से प्रसिद्ध है।।६७।।

कण्टकारी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघुः ।।६८।।

कटेली सारक, कडुवी, चर्परी, दीपनी और हलकी है।।६८।।

रूक्षोष्णा पाचनी कासश्वासज्वरकफानिलान् ।।६९।।
निहन्ति पीनसं पार्श्वपीडाकृच्छ्रहृदामयान् ।
तद्वत्प्रोक्ता सिता क्षुद्रा विशेषाद्गर्भकारिणी।।७०।।

यह रूखी, गर्म और पाचनी तथा खांसी, श्वास, ज्वर, कफ, वात, पीनस पसली के शूल, मूत्रकृच्छ्र और हृद्रोग इनको नाश करती है। सफेद कटेली के भी येही गुण हैं परन्तु विशेष करके गर्भको करती है, इसमें सफेद फल आते हैं, इसको घर में रखना महापुण्य है। नीच जाति की छाया पड़ने से नष्ट हो जाती है, रुद्रयामलतंत्र में इसकी बड़ी प्रशंसा की है।।६९–७०।।

लघुपञ्चमूलगुणाः

ह्रस्वाख्यं पञ्चमूलं स्यात्पञ्चभिर्गोक्षुरादिभिः ।
बल्यं पित्तानिलहरं नात्युष्णं स्वादु बृंहणम् ।।७१।।

गोखरू, शरिवन, पिठवन दोनों कटेली इन पांचों के मिलाने से लघुपंचमूल कहाता है। यह बल को करता है, पित्त और वायु को हरता है, अधिक गर्म नहीं है, स्वादु है और वीर्य को बढ़ाने वाला है।।७१।।

दशमूलगुणाः

एताभ्यां पञ्चमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ।
दोषत्रयश्वासकासशिरःपीडापतन्त्रकान् ।।७२।।
तन्द्रास्वेदज्वरानाहारुचिपार्श्वरुजो जयेत् ।।७३।।

इन दोनों पञ्चमूलों को मिलाने से दशमूल कहा जाता है। यह दशमूल त्रिदोष, श्वास, खांसी, शिर की पीड़ा, अपतंत्रक, वात, तन्द्रा, पसीना, ज्वर, आफरा, अरुचि और पसली का शूल इनको जीतता है। इसका अर्क प्रसूता की बीमारियों में अधिक गुणकारी है।।७२–७३।।

ऋद्धिवृद्धिनामगुणः

ऋद्धिः सुखंयुगं लक्ष्मीः सिद्धिः सर्वजनप्रिया ।
ऋषिसृष्टा रथाङ्गं स्यान्माङ्गल्यं श्रावणी वसुः ।।७४।।
योग्यं युग्या तुष्टिराशिर्वृद्धिरप्येतदाह्वया ।
ऋद्धिर्बल्या त्रिदोषघ्नी शुक्रला मधुरा गुरुः ।।७६।।

ऋद्धि, सुखंयुग, लक्ष्मी, सिद्धि, सर्वजनप्रिया, ऋषिसृष्टा, रथांग, मांगल्य, श्रावणी, वसु, योग्य, युग्या, तुष्टिराशि, यह ऋद्धि के और वृद्धि के नाम हैं। ऋद्धि बल को करती है। त्रिदोष को नाश करती है, वीर्य को बढ़ाती है तथा मीठी और भारी है।।७४–७५।।

वृद्धिर्गर्भप्रदा शीता वृष्या कासक्षयास्रनुत् ।।७६।।

वृद्धि गर्भप्रद है, शीतल है, आयु को बढ़ाती है और खांसी, क्षय, रक्तविकार इनको नाश करती है, इन दोनों के अभाव में वाराही कंद डालना चाहिये।।७६।।

काकोलीक्षीरकाकोलीनामगुणाः

काकोली मधुरा वीरा कायस्था क्षीरशुक्लिका ।
ध्वांक्षोली वायसोली स्यात्स्वादुमांसी पयस्विनी ।।७७।।

काकोली, मधुरा, वीरा, कायस्था, क्षीरशुक्लिका, ध्वांक्षोली, वायसोली, स्वादुमांसी, पयस्विनी ये काकोली के नाम हैं।।७७।।

द्वितीया क्षीरकाकोली सुराह्वा क्षीरिणी मता ।
पीवरः सदृशस्कन्धः सक्षीरः ससुगन्धकः ।
क्षीरकाकोलिका ख्यातः पित्तदोषज्वरापहः ।।७८।।

क्षीर काकोली, सुराह्वा, क्षीरिणी, पीवर, सदृशस्कन्ध, ससुगन्धक क्षीरकाकोलिका ये क्षीर काकोली के नाम हैं। यह पित्तदोष और ज्वर को दूर करने वाली है।।७८।।

काकोलीयुगलं शीतं शुक्रलं मधुरं गुरु ।
जयेत्समीरदाहास्रपित्तशोषतृषाज्वरान् ।।७९।।

दोनों काकोली शीतल हैं, वीर्य को देती हैं, मीठी और भारी हैं तथा वात, दाह, रक्तपित्त, शोष, तृषा, ज्वर इनका नाश करती हैं, इनके न मिलने पर असगन्ध डालना चाहिये।।७९।।

मेदामहामेदानामगुणाः

मेदा ज्ञेया शालपर्णी वृष्या मेदोभवा धरा ।
महामेदा वसुच्छिद्रा त्रिदन्ता दैवतामणिः ।।८०।।

मेदा, शालपर्णी, वृष्या, मेदोभवा, धरा ये मेदा के नाम हैं। महामेदा, वसुच्छिद्रा, त्रिदन्ता, दैवतामणि ये नाम महामेदा के हैं॥८०॥

मेदायुगं गुरु स्वादु वृष्यं स्तन्यकफापहम् ।
बृंहणं शीतलं रक्तं पित्तक्षयसमीरनुत् ॥८१॥

दोनों मेदा भारी हैं, स्वादु हैं आयु को बढ़ाती हैं, स्तनों के रोगों को दूर करती हैं, कफ को नाश करती हैं, वीर्य को बढ़ाती हैं, शीतल हैं और रक्तपित्त, क्षय, वात, इनका नाश करती हैं, इनके अभाव में शतावर लेना चाहिये॥८१॥

जीवकर्षभकनामगुणाः

जीवको मधुरः श्रृङ्गी ह्रस्वाङ्गः कूर्चशीर्षकः ।
ऋषभो वीर इन्द्राक्षो विषाणी दुर्द्धरो वृषः ॥८२॥

जीवक, मधुर, श्रृङ्गी, ह्रस्वाङ्ग, कूर्चशीर्षक ये जीव के नाम हैं, ऋषभ, वीर, इन्द्राक्ष, विषाणी, दुर्धर, वृष ये ऋषभक के नाम हैं॥८२॥

जीवकर्षभकौ बल्यौ शीतौ शुक्रकफप्रदौ ।
हरतः पित्तदाहास्रकासवातक्षयामयान् ॥८३॥

ये दोनों बल को करती हैं, शीतल हैं, वीर्य को और कफ को बढ़ाती हैं और पित्त, दाह, खांसी, वात, क्षय इन रोगों का नाश करती हैं, इनके न मिलने पर विदारीकन्द डालना चाहिये॥८३॥

अष्टवर्गनामगुणाः

अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैरेतैः शीतोऽतिशुक्रलः ।
बृंहणः पित्तदाहास्रशोषघ्नः स्तन्यगर्भकृत् ॥८४॥

ऋद्धि आदि आठ औषधियों को मिलाने से अष्टवर्ग होता है। यह अष्टवर्ग शीतल और अत्यन्त वीर्यप्रद है, आयु को बढ़ाता है तथा पित्त, दाह, रक्त शोष इनको नाश करता है, दूध को पैदा करता है और गर्भ को करने वाला है॥८४॥

जीवन्तीनामगुणाः

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया यशस्करी ।
शाकश्रेष्ठा जीवभद्रा माङ्गल्या जीववर्द्धनी ॥८५॥

जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, यशस्करी, शाकश्रेष्ठा, जीवभद्रा, मांगल्या, जीववर्द्धनी ये जीवन्ती के नाम हैं॥८५॥

जीवन्ती शीतला स्वादुः स्निग्धा दोषत्रयापहा ।
रसायनी बलकरी चक्षुष्या ग्राहिणी लघुः ॥८६॥

जीवन्ती शीतल है, स्वादु चिकनी, त्रिदोष का नाश करने वाली, रसायनी और बल

बढ़ाने वाली है। यह नेत्रों को हित है, मल को बांधती है और हलकी है। जीवन्ती दो तीन प्रकार की होती है, इसकी छोटी छोटी बेल होती हैं उनमें पीले रंग के फूल आते हैं, इसको तर्कारी भी कहते हैं।।८६।।

मधुयष्टीनामगुणाः

मधुयष्टी क्लीतनकं यष्टीमधु मधूलिका ।
यष्टचाह्वं मधुकं यष्टिमधूकं जलजा मधुः ।
मधुयष्टी गुरुः शीता बल्या तृट्छर्दिपित्तजित् ।।८७।।

मधुयष्टी, क्लीतनक, यष्टीमधु, मधूलिका, यष्टचाह्व, मधूक, यष्टिमधूक, जलजा, मधु ये मुलहटी के नाम हैं। मुलहटी भारी, शीतल बल को बढ़ानेवाली और तृषा, छर्दि पित्त इनको नाश करती है। मुलहटी के नाम से सर्वत्र सुलभ है।।८७।।

माषपर्णीमुद्गपर्णीनामगुणाः

माषपर्णी कृष्णवृन्ता काम्बोजी हयपुच्छिका ।
मांसमाषा सिंहमुखी स्वादुमाषा महासहा ।।८८।।

माषपर्णी, कृष्णवृन्ता, काम्बोजी हयपुच्छिका, मांसमाषा, सिंहमुखी, स्वादुमाषा, महासहा ये नाम माषपर्णी के हैं।।८८।।

मुद्गपर्णी क्षुद्रसहा सूर्यपर्णी कुरङ्गिणी ।
वनजा रिङ्गिणी शिम्बी सिंही मार्जारगन्धिका ।।८९।।

मुद्गपर्णी, क्षुद्रसहा, सूर्यपर्णी, कुरङ्गिणी, वनजा, रिङ्गिणी, शिंबी, सिंही, मार्जारगन्धिका ये नाम मूंगपर्णी के हैं। माषपर्णी को जंगली उड़द भी कहते हैं। माषपर्णी बिल्कुल उड़द (माष) के क्षुप के समान ही होती है, ऐसे ही मुद्गपर्णी भी मुद्ग (मूंग) के आकार का क्षुप होता है। यह जंगल में वर्षात की मौसम में स्वयं उत्पन्न होती है जो माषपर्णी और मुद्गपर्णी ठंडे पहाड़ों पर होती है उसकी जड़ मूली के समान सफेद और विदारीकन्द के समान मीठी होती है।।८९।।

माषपर्णी हिमा तिक्ता रूक्षा शुक्रबलासकृत् ।
मधुरा ग्राहिणी शोषवातपित्तज्वरास्रनुत् ।
तद्वद्भवेन्मुद्गपर्णी तृड्दोषार्शोहरा लघुः ।।९०।।

माषपर्णी शीतल, कडुवी, रूखी, वीर्य को पैदा करती है और कफकारक है, मीठी है, मल को बांधती है और शोष, वात, पित्त, पित्तज्वर, रक्तविकार इनको दूर करती है। इन्हीं गुणोंवाली मूंगपर्णी है, तृषादोष और बवासीर को हरती है और हलकी है।।९०।।

जीवनीयगणनामगुणाः

जीवन्ती मूषपर्णीयुक् काकोल्यौ जीवकर्षभौ ।
मेदे यष्टीति मधुरो जीवनीयगणो गुरुः ।।९१।।
शुक्रकृद् बृंहणः शीतः स्तन्यगर्भकफप्रदः ।
रक्तपित्ततृषाशोषज्वरदाहक्षतापहः ।।९२।।

जीवन्ती, सूपपर्णी, मूंगपर्णी, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक्, मेदा, महामेदा, मुलहटी, ये जीवनीयगण हैं। जीवनीयगण मीठा है, भारी है, वीर्य को पैदा करता है और पुष्ट करता है, शीतल है, दूध को बढ़ाता है, गर्भदायक है, कफवर्द्धक है और रक्तपित्त, तृषा, शोष, ज्वर, दाह, क्षत इनको नाश करता है।।९१।।९२।।

एरण्डरक्तैरण्डनामगुणाः

एरण्डो दीर्घदण्डः स्यात्तरुणो वर्द्धमानकः ।
चित्रः पञ्चाङ्गुलो व्याघ्रपुच्छो गन्धर्वहस्तकः ।।९३।।

एरण्ड, दीर्घदण्ड, तरुण, वर्द्धमानक, चित्र, पञ्चांगुल, व्याघ्रपुच्छ, गन्धर्वहस्तक ये नाम अरंड के हैं।।९३।।

रक्तैरण्डो हस्तिकर्णो व्याघ्रो व्याघ्रतरो लघुः ।
उत्तानपत्र उरबुर्वातवैरी च चुञ्चुला ।।९४।।

रक्तैरण्ड, हस्तिकर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रतर, लघु, उत्तानपत्र, उरबु, वातबैरी और चुञ्चुला यह नाम एरण्ड के हैं।।९४।।

एरण्डयुग्मं मधुरमुष्णं गुरु विनाशयेत् ।
शूलशोफकटीबस्तिशिरः पीडोदरज्वरान् ।।९५।।
ब्रध्नश्वासकफानाहकासकुष्टाममारुतान् ।
तत्फलं भेदनं स्वादु क्षारमुष्णं समीरजित् ।।९६।।

दोनों एरण्ड मीठे हैं, गर्म हैं, भारी हैं और शूल, शोजा, कटिपीड़ा, उदररोग, ज्वर, बध्न (वध) श्वास, कफ, अफारा, खांसी, कुष्ठ आमवात इनको नाश करता है, सब एरण्डों के फल भेदन हैं, स्वादु हैं, खारी हैं, गर्म हैं और वात को जीतते हैं। एरण्ड सर्वत्र सुलभ है, इसके बीजों का तेल निकलता है, वह प्रायः विरेचनार्थ दिया जाता है। इसी तेल को डाक्टर लोग "कैष्ट्रायल" कहते हैं।।९५।।९६।।

श्वेतशारिवाकृष्णशारिवागुणाः

शारिवा शारदाऽऽस्फोता गोपकन्या प्रतानिका ।
गोपाङ्गना गोपवल्ली लताह्वा काष्ठशारिवा ।।९७।।

शारिवा, शारदा, आस्फोता, गोपकन्या, प्रतानिका, गोपांगना, गोपवल्ली, लताह्वा,

काष्ठशारिवा ये नाम (काष्ठशारिवा) श्वेतशारिवा के हैं।।९७।।

शारिवाऽन्या कृष्णमूली भद्रचन्दनशारीवा ।
भद्रा चन्दनगोपा च चन्दना कृष्णवल्ल्यपि ।।९८।।

दूसरे प्रकार का शारिवा, कृष्णमूली, भद्रचन्दनशारिवा, भद्रा, चंदनगोपा, चन्दना, कृष्णवल्ली ये नाम कृष्णशारिवा के हैं, "इसी को गोरीसर, साऊ, गौरैया, कालीसर" भी कहते हैं।।९८।।

शारिवायुगलं स्वादुली स्निग्धं शुक्रकरं गुरु ।
अग्निमान्द्यारुचिश्वासवामिकासतृषापहम् ।
दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् ।।९९।।

दोनों शारिवा स्वादु हैं, चिकनी हैं, वीर्य को करती हैं, भारी हैं और मन्दाग्नि, अरुचि, श्वास, छर्दि, खांसी, विष, त्रिदोष, रक्त, पैर, ज्वर अतिसार इनको नाश करती हैं। दोनों शारिवाओं की बेलें होती हैं। इनके पत्ते जामुन के पत्र समान होते हैं, तोड़ने से दूध निकलता है, बेल में दो जुड़े हुए सींग से लगते हैं जब वे सूख जाते हैं, उनमें से आक या सींबल की रुई के समान रुई सी उड़ती है, शिमला प्रांत में इसकी बेल अधिक होती है, इसके पत्रों की बालकों को नस्य (नसवार) भी देते हैं। पहाड़ीलोग इसको दूध की बेल कहते हैं, इसको बैलों के चारे में भी लाते हैं।।९९।।

यवासधन्वयासनामगुणाः

यासो मरुद्भवोऽनन्तो दीर्घमूलो यवासकः ।
बालपत्रः समुद्रान्तो दूरमूलोऽतिकण्टकः ।।१००।।
धन्वयासस्ताम्रमूली दुःस्पर्शा स्याद्दुरालभा ।
यासकः कच्छुरा ताम्रमली धन्वयवासकः ।।१०१।।

यास, मरुद्भव, अनन्त, दीर्घमूल, यवासक, बालपत्र, समुद्रान्त, दूरमूल, अतिकण्टक, धन्वयास, ताम्रमूली, दुःस्पर्शा, दुरालभा ये नाम जवासा के हैं। यासक कच्छुरा ताम्रमूली, धन्वयवासक नाम धमासा के हैं।।१००।।१०१।।

यासः स्वादुरसस्तिक्तो हिमः पित्तहरो लघुः ।
हंति रक्तकफभ्रान्तीस्तद्वद्धन्वयवासकः ।।२।।

जवासा स्वादु और रसवाला है, कड़ुवा है, शीतल है, पित्त को हरता है, हलका है और रक्त, कफ, भ्रम इनको हरता है और धमासा में भी ये ही गुण हैं। जवासा धमासा अंबाले के जिले में बहुत ही होता है। इसके छोटे छोटे पेड़ खेतों में अपने आप पैदा होते हैं। इसकी सब टहनियों में कांटे होते हैं। कांटे और टहनी दोनों पत्रों के

समान हरे होते हैं, किसानलोग इसको झ्वांहां झ्वांसा कहते हैं, गर्मी में खश की समान इसकी भी टट्टियें बनाई जाती हैं। अंबाले जिले में इसको आम लोग जानते हैं॥२॥

मुण्डीनामगुणाः

मुण्डी भिक्षुः परिव्राजी पावनी स्यात्तपोधना ।
श्रावणी श्रीमती मुण्डी तिक्ता श्रावणशीर्षका ॥३॥

मुण्डी, भिक्षु, परिव्राजी, पावनी, तपोधना, श्रावणी, श्रीमती, मुण्डी, तिक्ता, श्रावणशीर्षका ये नाम मुण्डी के हैं॥३॥

मुण्डी तिक्ता कटुः पाके वीर्ये च मधुरा लघुः ।
मेध्या गण्डापचीकृच्छ्रकृमियोन्यर्तिपाण्डुजित् ॥४॥

मुण्डी कडुवी है, पाक में चर्परी है, वीर्य में मधुर है, हलकी है, बुद्धि को बढ़ाती है और गलगण्ड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, योनिरोग, पाण्डु इनको जीतती है॥४॥

महामुण्डीभूमिकदम्बनामगुणाः

महामुण्डी लोभनीया छिन्नग्रन्थिनिका स्मृता ।
भूतवृक्षःकुलहलो लम्बुशालूः कदम्बकः ।
कदम्बपुष्पमुण्डीवद्गुणैर्भूमिकदम्बकः ॥५॥

महामुंडी, लोभनीया,छिन्नग्रंथिनिका ये नाम महामुंडी के हैं, भूतवृक्ष, कुलहल, लम्बुशालू, कदम्बक ये नाम भूमिकदंव हैं। गुणों करके भूमिकदंब, कदंब का फूल और मुंडी सब समान हैं। मुंडी, गोरखमुंडी, मुंडली, मुंदली, इन नाम से सब जगह मिलती है। अंबाले के जिले में रानी के रायपुर में हमने बहुत देखी है॥५॥

अपामार्गनामगुणाः

अपामार्गस्तु शिखरी किणही खरमञ्जरी ।
अधःशल्यः शैखरिकः प्रत्यक्पुष्पी मयूरका ॥६॥

अपामार्ग, शिखरी, किणही, खरमंजरी, अधःशल्य, शैखरिक, प्रत्यक्पुष्पी, मयूरका ये नाम ऊंगा (अमामार्ग) के हैं॥६॥

अपामार्गः सरस्तीक्ष्णो दीपनः कफवातजित् ।
निहन्ति दद्रुसिध्मार्शः कण्डुशूलोदरारुचीः ॥७॥

ऊंगा सारक है, तेज है, कफ वात को जीतता है और दाद, सिध्म (छींम), बवासीर, खाज, शूल, उदररोग, अरुचि इनको नाश करता है॥७॥

रक्तापामार्गनामगुणाः

अन्यो रक्तो वृन्तफलो वशिरः कपिपिप्पली ।
अपामार्गोऽरुणो वातविष्टम्भी कफनाशनः ।
ऊनः पूर्वगुणै रूक्षस्तत्पत्रं रक्तपित्तनुत् ।।८।।

रक्तापामार्ग, वृंतफल, वशिर, कपिपिप्पली ये नाम लाल ऊंगा (अपामार्ग) के हैं। लाल ऊंगा वात और विष्टंभ को करता है और कफ को नाशता है। ऊंगा के गुणों से इसमें कम गुण हैं, यह रूखा है, लाल ऊंगा का पत्ता रक्तपित्त को नाश करता है। ऊंगा, वांगा, मांगा, आधाझारा, पुठकंडा, पुठखंडा, अपामार्ग, इन नामों से सर्वत्र सुलभ हैं। प्रायः सब देशों में होता है। हमने बंबई, पेशावर, काशी, सिमला आदि सर्वस्थान में देखा है और इन्हीं नामों से सुना है।।८।।

काम्पिल्यनामगुणाः

काम्पिल्यो रेचनो रक्तचूर्णको व्रणशोधनः ।
लोहितो रक्तशमनो रेची रञ्जनको मतः ।।९।।

काम्पिल्य, रेचन, रक्तचूर्ण, व्रणशोधक, लोहित, रक्तशमन, रेची, रञ्जनक ये नाम कमीला के हैं।।९।।

काम्पिल्या कफपित्तास्रक्रमिगुल्मोदरव्रणान् ।
हन्ति रेची कटूष्णं च तच्छाकं ग्राहि शीतलम् ।।११०।।

कमीला कफ, रक्तपित्त, क्रमि, गुल्म, उदररोग, घाव इन्हीं को नाशता है, जुलाब लगाता है, चर्परा है, गर्म है, कमीला का शाक मल को बांधता है और शीतल है। पहले रोज थोड़ा गुड़ खिलाकर दूसरे रोज कमीले को दही में मिलाकर पिलाने से पेट के और मलाशय के क्रमि दस्त द्वारा निकल जाते हैं। इसके वृक्ष शिमला प्रांत में अधिक होते हैं, इसके फलों पर लाल रंग का चूर्ण सा लगा रहता है। उसी को कमीला या कबीला कहते हैं। पहाड़ी लोग इसके वृक्ष को कामल कहते हैं, इसके पत्ते गौ भैंसों को भी खिलाते हैं।।११०।।

दन्तीनामगुणाः

दन्ती गुणप्रिया नागदन्ती शीघ्रानुकूलकः ।
उपचित्राऽनुकुम्भी स्याद्विशल्योदुम्बरच्छदा ।।१११।।
आखुपर्णी वृषैरण्डा द्रवन्ती सर्वरी मता ।
मूषकाह्वा सुतश्रेणी प्रत्यक्श्रेणी च फञ्जिका ।।१२।।

दन्ती, गुणप्रिया, नागदंती, शीघ्रानुकूलक, उपचित्रा, अनुकुम्भी, विशल्या, उदुम्बरच्छदा, आखुपर्णी, वृषैरंडा, द्रवन्ती, सर्वरी, मूषकाह्वा, सुतश्रेणी, प्रत्यक्श्रेणी और

फञ्जिका ये नाम दोनों तरह के जमालगोटे की जड़ के हैं।।११।।१२।।

दन्तीद्वयं सरं पाकरसयोः कटु दीपनम् ।
तीक्ष्णोष्णं हन्ति पित्तासृक्कफशोफोदरान्कृमीन् ।।१३।।

दोनों प्रकार की दंती सारक हैं, पाक में और रस में चर्परी हैं, दीपन हैं, गर्म हैं और पित्त, रक्त, कफ, शोजा, उदररोग, कृमि इनको नाश करती हैं। दंती जमालगोटे की जड़ को कहते हैं। जमालगोटा प्रसिद्ध है इसके दो भेद हैं, एक बड़ा एक छोटा। छोटा जमालगोटा दक्षिण देश में अधिक होता है। इसके गूलर के पत्र समान पत्र होते हैं। इसके फल जमालगोटे के नाम से सब देश में मिलते हैं। बड़ा जमालगोटा एरंड के पत्रोंवाला होता है। इसके बीज भी एरंड के बीज के से होते हैं। कालका के समीप टकसाल में इसको बुलबुला कहते हैं। इसके फलों से लड़के खेलते हैं। इसके दूध के हवा में बुलबुल उड़ते हैं। इसकी जड़ उत्तम दंती होती है, इसका दूध भी थोहर के दूध के समान दस्तावर है।।१३।।

जयपालनामगुणाः

जयपालो दन्तिबीजं ख्यातं तत्तित्तिरीफलम् ।
जयपालो गुरुः स्निग्धो रेची पित्तकफापहः ।।१४।।

जयपाल, दन्तिवीज, तित्तिरीफल ये नाम जमालगोटे के हैं। जमालगोटा भारी है, चिकना है, जुलाब लगाता है पित्त को और कफ को नाश करता है। बड़ा जमालगोटा तीक्ष्णता में इससे न्यून है, दोनों जमालगोटे बिना शोधन किये वे युक्ति देने से विष के समान हानिकारक हैं। युक्ति से अमृत के समान के गुण कारक़ हैं।।१४।।

श्वेतत्रिवृन्नामगुणाः

त्रिवृत्कुम्भोऽरुणा त्र्यस्रभण्डी कूटरवाहिनी ।
सर्वानुभूतिस्त्रिवृता त्रिपुटा सरला सिता ।।१५।।

त्रिवृत् , कुम्भ, अरुणा, त्र्यस्रभंडी, कूटरवाहिनी, सर्वानुभूति, त्रिवृता, त्रिपुटा, सरला, सिता ये नाम सफेद निशोत के हैं।।१५।।

त्रिवृत्तिक्ता सरा रूक्षा स्वादुरुष्णा समीरकृत ।
कटुः पाके ज्वरश्लेष्मपित्तशोफोदरापहा ।।१६।।

सफेद निशोत कड़ुवी है, सर है, स्वादु है, रूखी है, गर्म है, वात को जीतती है, पाक में चर्परी है और ज्वर, कफ, पित्त, शोजा, उदररोग इनको जीतती है, रेचन कराने में इसकी जड़ का चूर्ण प्रयोग किया जाता है।।१६।।

कृष्णत्रिवृन्नामगुणाः

त्रिवृत्काला कालमेषी कालपर्ण्यर्द्धचन्द्रिका ।
सुखेना स्यान्मालविका मंसूर विदलान्विता ।।१७।।

त्रिवृत्काला, कालमेषी, कालपर्णी, अर्धचन्द्रिका, सुखेना, मालविका, मसूराविदेला ये काली निशोत के नाम हैं।।१७।।

त्रिवृत्काला हीनगुणा तस्यास्तीव्रविरेचिनी ।
मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिवान्तिकर्षणकारिणी ।।१८।।

कालीनिशोत सफेद निशोत से कम गुणोंवाली है परन्तु जुलाब तेज लगाती है और मूर्च्छा, दाह, मद, भ्रम, छर्दि इनको दूर करती है, दोनों प्रकार के निशोथ की बेलें जंगल में होती हैं, फल गोल गोल होते हैं, पत्ते नोकदार गोल से होते हैं, तिरवी, तुर्वत्, निशोथ, निसोत, त्रिवृत, इन नामों से सब जगह मिल सकती है।।१८।।

इन्द्रवारुणीनामगुणाः

इन्द्रवारुण्यथेन्द्राह्वं वृषभाक्षी गवादिनी ।
ऐन्द्रवारु क्षुद्रफला विशालेन्द्री वृषादिनी ।।१९।।

इन्द्रवारुणी, इन्द्राह्व, वृषभाक्षी, गवादिनी, ऐंद्रवारु, क्षुद्रफला, विशाला, ऐंद्री, वृषादिनी ये नाम इंद्रायण के हैं।।१९।।

अन्येन्द्रवारुणी

अन्येन्द्रवारुणी चित्रफला चित्रमहाफला ।
आत्मरक्षा नागदन्ती त्रपुषी गजचिर्भटी ।।२०।।
श्वेतपुष्पी मृगाक्षी च तथा पक्षसुरा मता ।
मरुद्भवा कृमिगुहा चित्रदेवी च कीर्तिता ।।२१।।

अन्येन्द्रवारुणी, चित्रफला, चित्रमहाफला, आत्मरक्षा, नागदन्ती, त्रपुषी, गजचिर्भटी, श्वेतपुष्पी, मृगाक्षी, पक्षसुरा, कृमिगुहा, चित्रदेवी, ये नाम दूसरी इंद्रायण के हैं।।१२०-१२१।।

ऐन्द्रवारुद्वयं तिक्तं कटु पाके सरं लघु ।
वीर्योष्णं कामलापित्तकफप्लीहोदरापहम् ।।२२।।

दोनों इंद्रायन कडुवी हैं, पाक में चर्परी हैं, दस्तावर हैं, हलकी हैं, वीर्य में गरम हैं और कामला, पित्त, कफ, तिल्लीरोग इन्हीं को नाशती हैं इसके फल का गूदा अथवा जड़ जुल्लाब के लिये दिये जाते हैं, इन्द्रायण की बेल खीरे की बेल से कुछ कुछ मिली जुली होती है। इसके पीले फूल होते हैं, इसके फल में अजवायन को डालकर लोग सुखाया करते हैं। वह अजवायन उदरविकारों को दूर करती है। कहीं इसके फल को बसलुंभा, कहीं कड़ुवा, तुंबा, फरफेंदु, गडतुंबा, हिंजल ऐसे ऐसे नामों से कहते हैं, यह

प्राय: सब जगह मिल सकता है।।२२।।

आरग्वधनामगुणाः

आरग्वधो राजवृक्षः शम्याकः कृतमालकः ।
व्याधिघातः कर्णिकारः प्रगहश्चतुरङ्गुलः ।।२३।।
अरोग्यशिम्बी स्वर्णाटः कर्णो दीर्घफलो मतः ।
कुण्डली हिमपुष्पा च कलिख्यातो नृपद्रुमः ।।२४।।
स्वर्णशेफालिका श्यावा कुष्ठसूदननाम तत् ।
स्वर्णस्थाल्पा पित्तला च सुवर्णद्रुम ईरितः ।।२५।।

आरग्वध, राजवृक्ष, शम्याक, कृतमालक, व्याधिघात, कर्णिकार, प्रग्रह, चतुरंगुल, आरोग्यक्षिंबी, स्वर्णाट, कर्ण, दीर्घफल, कुण्डली, हिमपुष्पा, कलिख्यात, नृपद्रुम, स्वर्णशेफालिका, श्यावा, कुष्ठसूदन, स्वर्णस्थाल्पा, पित्तला, सुवर्णद्रुम ये नाम अमलतास के हैं।।२३-२५।।

आरग्वधो गुरुः स्वादुः शीतलो मृदुरेचनः ।
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलजित् ।।२६।।

अमलतास भारी है, स्वादु है, मृदुविरेचनकारक है और ज्वर, हृद्रोग, रक्तपित्त, वात, उदावर्त, शूल, इन्हीं को जीतनेवाला है।।२६।।

तत्पुष्पं वातलं ग्राहि तिक्तं पित्तकफापहम् ।
तन्मज्जा मधुरः पाके तिक्तः पित्तसमीरजित् ।।२७।।

अमलतास का फूल वात को करता है, मल को बांधता है, कड़ुवा है, पित्त और कफ को नाशता है, अमलतास की गिरी पाक में मीठी है, कड़ुवी है और वात को जीतती है, अमलतास के वृक्ष कालका के पहाड़ पर बहुत होते हैं, उस जगह के लोग इसको गुललकड़ी कहते हैं। इसके वृक्ष बगीचों में प्रायः सब जगह देखे हैं। आरग्वध, अमलतास इन नामों से सर्वत्र सुलभ है। इसके फूलों का गुलकंद उत्तम दस्तावर होता है।।२७।।

नीलिनी (कालादाना) नामगुणाः

नीलिनी नीलिका ग्राम्या श्रीफला भारवाहिनी ।
रञ्जनी कलिका मेला तूणी रूक्षा विशोधिनी ।।२८।।

नीलिनी, नीलिका, ग्राम्या, श्रीफला, भारवाहिनी, रंजनी, कलिका, मेला, तूणा, रूक्षा, विशोधिनी ये नाम नीलिनी के हैं।।२८।।

नीलिनी रेचनी तिक्ता केश्या मोहभ्रमापहा ।
उष्णा हन्त्युदरप्लीहवातपित्तकफानिलान् ।।२९।।

नीलिनी जुलाब लगाती है, कड़वी है, बालों को बढ़ाती है, मोह और भ्रम को नाशती है, गर्म है और उदररोग, तिल्ला, वातपित्त, कफ, वात इन्हीं को नाशती है। नीलिनी की बेल होती है, इसके नीले फूल होते हैं, इसके बीज कालादाना या काहलियाके नाम से प्रसिद्ध हैं।।२९।।

कटुकीनामगुणाः

कटुकी रोहिणी तिक्ता चक्राङ्गी कटुरोहिणी ।
मत्स्यपित्ता पाण्डुरुहा कृष्णभेदा द्विजाङ्गिका ।।
अशोका रोहिणी मत्स्या सुकुला सकुलादिनी ।।१३०।।

कटुकी, रोहिणी, तिक्ता, चक्रांगी, कटुरोहिणी, मत्स्यपिता, पाण्डुरुहा, कृष्णभेदा, द्विजाङ्गिका, अशोका, रोहिणी, मत्स्या, सुकुला, सकुलादिनी ये नाम कुटकी ये है।।१३०।।

कटुकी कटु पाके च तिक्ता रूक्षा सरा लघुः ।
हिमा हन्ति वमिश्वासदाहपित्तकफज्वरान् ।।३१।।

कुटकी पाक में चरपरी है, कडुवी है, रूखी है, दस्तावर है, हलकी है, शीतल है और कृमि, श्वास, दाह, पित्त, कफ, ज्वर इनको नाश करती है। कटुकी ठंडे पहाड़ों पर बहुत होती है। कुडकी, कड, गठियाकड इन नामों से सर्वत्र सुलभ है।।३१।।

अंकोल्लकनामगुणाः

अङ्कोल्लकस्ताम्रफलः पीतसारो निरोचकः ।
गुप्तस्नेहो विरेची स्याद्भूषितो दीर्घकीलकः ।।३२।।

अंकोल्लक, ताम्रफल, पीतसार, निरोचक, गुप्तस्नेह, विरेची, भूषित, दीर्घकीलक ये नाम अंकोलकके हैं।।३२।।

अङ्कोल्लकः कटुः स्निग्धस्तीक्ष्णोष्णस्तुवरो लघुः ।
रेचनः कृमिशूलामशोफश्लेष्मविषापहः ।।३३।।

अंकोल चर्परा है, चिकना है, गर्म है, कषैला है, तेज है, हलका दस्त लगाता है और कृमि, शूल, आम, शोजा, कफ, विष इन्हों को नाशता है।।३३।।

तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेष्मलं बृंहणं गुरु ।
बल्यं विरेचनं वातपित्तदाहक्षयास्रजित् ।।३४।।

अंकोल का फल शीतल है, स्वादु है, कफ को करता है, पुष्टि को करता है, बलकारी है, जुलाब लगाता है और वात, पित्त, दाह, क्षय, रक्त इन्हों को जीतता है। अंकोल के वृक्ष प्रायः जंगलों में होते हैं पत्र लम्बे लम्बे होते हैं, फल कच्चे नीले पककर लाल हो जाते हैं। वृक्षपर कांटे भी होते हैं। इसके वृक्ष को दिल्ली प्रान्त में ढेरेका वृक्ष कहते

हैं।।३४।।

सेहुंडनामगुणाः

सेहुण्डो वज्रतुण्डस्तु गाण्डीरो वज्रकण्टकः ।
स्नुही च समदुग्धोऽसिपत्रो वज्री महातरुः ।।३५।।

सेहुण्ड, वज्रतुण्ड, गांडीर, वज्रकंटक, स्नुही, समदुग्ध, असिपत्र, वज्री, महातरु, ये नाम थूहर के हैं।।३५।।

सेहुण्डो रेचनस्तीक्ष्णो दीपनः कटुको गुरुः ।
शूलामाष्ठीलिकाध्मानगुल्मशोफोदरानिलान् ।
हन्ति दूषीविषप्लीहकुष्ठोन्मादाश्मपाण्डुताः ।।३६।।

थूहर जुलाब लगाता है, तेज है, दीपन है, चर्परा है, भारी है और शूल, आम, अष्ठीलिका, आध्मान, गुल्म, शोजा, उदररोग, वात, दूषीविष, तिल्लीरोग, कुष्ठ, उन्माद, पथरी, पांडुरोग इन्हों को नाश करता है, यह प्रायः सब देशों में होता है। थोहर, डण्डाथोहर, सुरो, वज्री, सेहुण्ड इन नामों से सब जगह मिल सकता है, शिमला प्रांत में इसके कोमल, नये भाग का रायता बनाकर खाते हैं, वह सब रायतो में उत्तम होता है।।३६।।

निम्बनामगुणाः

निम्बो नियमनो नेताऽरिष्टः स्यात्पारिभद्रकः ।
सुतिक्तः सर्वतोभद्रः पिचुमन्दः प्रभद्रकः ।।
कुष्ठहा देवदत्तश्च रविसन्निभसूर्यकौ ।।३७।।

निंब, नियमन, नेता, अरिष्ट, पारिभद्रक, सुतिक्त, सर्वतोभद्र, पिचुमन्द, प्रभद्रक, कुष्ठहा, देवदत्त, रविसन्निभ, सूर्य के ये नाम नीम के हैं।।३७।।

निम्बः शीतो लघुर्ग्राही कटुपाकोऽग्निवातकृत् ।।३८।।
व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहृल्लासमेहनुत् ।
निम्बपत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत् ।।३९।।

नीम्ब शीतल है, हलका है, मल को बांधता है, पाक में चर्परा है, अग्निवर्धक और वातकारक है। घाव, पित्त, कफ, छर्दि, कुष्ठ, उवकाई, प्रमेह इन्हों को दूर करता है। नीम्ब का पत्ता नेत्रों को हितकरता है, कृमि, पित्त, विष को नष्ट करता है।।३८–३९

तत्फलं भेदनं स्निग्धमुष्णं कुष्ठहरं लघु ।
अपक्वं पाचयेन्निम्बः पक्वं च परिशोषयेत् ।।४०।।

नीब का फल भेदन है, चिकना है, गर्म है, कुष्ठ को हरता है, हलका है, नीब आम को

पकाता है और पके हुए को शोषता है, नीम दिल्ली प्रांत में सब जगह होते हैं।।४०।।

महानिंबनामगुणाः

महानिम्बो निम्बकरः कामुको विषमुष्टिकः ।
रम्यको गिरिकोऽद्रेकः क्षारः स्यात् केशमुष्टिकः ।।४१।।

महानिम्ब निम्बकर, कामुक, विषमुष्टिक, रम्यक, गिरिक, अद्रेक, क्षार, केशमुष्टिक ये नाम बकायन के हैं।।४१।।

महानिम्बो हिमो रूक्षस्तिक्तो ग्राही कषायकः ।
कफपित्तकृमिच्छर्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित् ।।४२।।

बकायन शीतल है, रूखा है, कड़ुवा है, मल को बांधता है, कषैला है और कफ, पित्त, कृमि, छर्दि, कुष्ठ, थुकथुकी, रक्त इन्हों को जीतता है। इसके वृक्ष होते हैं। बकायन या डेक नाम से प्रसिद्ध है।।४२।।

किराततिक्तनामगुणाः

किराततिक्तः कैरातो भूनिम्बो रामसेनकः ।
किरातकोऽन्यो नैपालो नाडीतिक्तो ज्वरान्तकः ।
कण्डुतिक्तोऽर्द्धतिक्तः स्यान्निद्रारिः सन्निपातहा ।।४३।।

किराततिक्त (तिक्तक, तिक्ता), कैरात (किरात) भूनिम्ब, रामसेनक, किरातक और नैपाल, नाडीतिक्त, ज्वरान्तक, कण्डुतिक्त, अर्द्धतिक्त, निद्रारि, सन्निपातहा ये चिरायता के नाम हैं।।४३।।

किरातो वातलो रूक्षः शीतलस्तिक्तको लघुः ।
सन्निपातज्वरश्वासकासपित्तास्रदाहनुत् ।।४४।।

चिरायता वात को करता है, रूखा है, शीतल है, कड़ुवा है, हलका है और सन्निपात, ज्वर, श्वास, खांसी, पित्त, रक्तविकार, दाह इन्हों को दूर करता है। चिरायता देश भेद से हमने तीन प्रकार का देखा है। प्रायः सब जगह मिल सकता है। सिर्मौर, नैपाल, शिमला प्रांत आदि पहाड़ों पर अधिक होता है।।४४।।

कुठजनामगुणाः

कुटजो मल्लिकापुष्पः कलिङ्गो गिरिमल्लिका ।
वत्सकः कुटजः कोटिवृक्षकः शक्रभूरुहः ।।४५।।

कुटज, मल्लिकापुष्प, कलिङ्ग, गिरिमल्लिका, वत्सक, कुटज कोटिवृक्षक, शक्रभूरुह ये नाम कूडाके हैं।।४५।।

कुटजः कटुको रुक्षो दीपनस्तुवरो लघुः ।
अर्शोऽतिसारपित्तास्त्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ।
तत्पुष्पं वातलं शीतं तिक्तपित्तातिसारजित् ॥४६॥

कूडा चर्परा है, रूखा है, अग्नि को जगाता है, कषैला है, हलका है और बवासीर, अतिसार, रक्तपित्त, कफ, तृषा, आम, कुष्ठ, इन्हों को जीतता है। कुटजवृक्ष प्रायः पहाडों पर देखे हैं। टकसाल में इसको कोयड कहते हैं। इसके वृक्ष में से दूध निकलता है, इसकी फलियों में से इन्द्रजौ, निकलते हैं, कूडा कोयड इस नाम से सब जगह मिल सकता है ॥४६॥

इन्द्रयवनामगुणाः

ऐन्द्रयवस्तस्य फलं कालिङ्गः कौटजो मतः ।
शक्राह्वः पुरुहूतश्च प्रोक्तो भद्रयवस्तथा ॥४७॥

ऐंद्रयव, ऐंद्रफल, कालिंग, कौटज, शक्राह्व, पुरुहूत, भद्रयव ये नाम इन्द्रजव के हैं॥४७॥

ऐन्द्रयवस्त्रिदोषघ्नः संग्राही शीतलः कटुः ।
ज्वरातिसाररक्तार्शः कृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ॥४८॥

इन्द्रजव त्रिदोष को नाशता है, मल को बांधता है, शीतल है, चरपरा है और ज्वर, अतिसार, रक्तविकार, बवासीर, कृमि, विसर्प, कुष्ठ इन्हों को नष्ट करता है। इन्द्रजव, कडुवे इन्द्रजव–नामों से प्रायः सब जगह मिलते हैं ये कुडावृक्ष के बीज हैं॥४८॥

मदननामगुणाः

मदनश्छर्दनः पिण्डीराठः पिण्डान्तकं फलम् ।
करहाटश्च तगरः शल्यको विषपुष्पकः ॥४९॥

मदन, छर्दन, पिण्डीराठ, पिंडातक, फल, करहाट, तगर, शल्यक, विषपुष्पक ये नाम मैनफलक हैं॥४९॥

मदनो वमनस्तिक्तो वीर्योष्णो लेखनो लघुः ।
रुक्षः कुष्ठकफानाहशोफगुल्मव्रणापहः ॥५०॥

मैनफल छर्दि लाता है, कडुवा है, वीर्य में गर्म है, लेखन है, हलका है, रूखा है और कुष्ठ, कफ, अफारा, शोजा, गुल्म, घाव इन्हों को दूर करता है। मैनफल के वृक्ष प्रायः जंगलों में होते हैं। इसके वृक्ष में कांटे भी होते हैं, फल छोटे अमरूद से होते हैं, और गोल होते हैं। प्रायः मैनफल नाम से सर्वत्र सुलभ है, टकसाल में इसको राडा कहते हैं॥५०॥

कंकुष्ठनामगुणाः

कङ्कालकुष्ठं कङ्कुष्ठं रेचनं रङ्गनामकम् ।
शोधनं पुलहं हासं वराङ्गं कुञ्जवालुकम् ॥५१॥

कंकालकुष्ठ, कंकुष्ठ, रेचन, रङ्गनामक, शोधन, पुलह, हास, वरांग, कुञ्जवालुक (मुर्दाशंख, मुर्दासिंग) ये नाम कंकुष्ठ के हैं॥५१॥

कङ्कुष्ठं रेचनं तिक्तं कटूष्णं वर्णकारकम् ।
कृमिशोफोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥५२॥

कंकुष्ठ, दस्त लगाता है, कडुवा है, चर्परा है, गर्म है, वर्ण को करता है और कृमि, शोजा, उदररोग, आध्मान, गुल्म, अफारा, कफ इन्हों को नाशता है। ये हिमालय से उत्पन्न हुआ उपधातु विशेष है, दिल्ली प्रान्त में मुर्दासिङ्ग नाम से मिलता है॥५२॥

चोषनामगुणाः

हेमाह्वा कनकक्षीरी हेमपुष्पी हिमावती ।
क्षीरिणी काञ्चनक्षीरी कटुपर्णी चिकर्षणी ।
तिक्तदुग्धा हैमवती पीतदुग्धा हिमाद्रिका ॥५३॥

हेमाह्वा, कनकक्षीरी, हेमपुष्पी, हिमावती, क्षीरिणी, काञ्चनक्षीरी, कटुपर्णी, चिकर्षणी, तिक्तदुग्धा, हैमवती, पीतदुग्धा, हिमाद्रिका ये नाम चोषके हैं॥५३॥

हेमाह्वा रेचनी तिक्ता मन्दाग्न्युत्क्लेदकारिणी ।
कृमिकण्डुकफानाहविषकुष्ठविनाशिनी ॥५४॥

चोष दस्त लगाती है, कडुवी है, मंदाग्नि और ग्लानि को करती है और कृमि, खाज, कफ, अफारा, विष, कुष्ठ इन्हों को नाश करती है। चोष के क्षुप जिला अंबाला में हमने अधिक देखे हैं, इसको पीले दूध की कटेली या सत्यानासी भी कहते हैं, इसके फूल पीले रंग के होते हैं, पत्तों में टहनी में सब जगह काँटे होते हैं, इसको तोड़ने से पीले रंग का दूध निकलता है, फल सूखने पर कांटेयुक्त छोटे गिलास के से होते हैं, इनमें से काले काले दाने बारूद के समान निकलते हैं, इसकी जड़ को चोष कहते हैं॥५४॥

सातलानामगुणाः

सातला विरला सारी तत्फला बहुफेनका ।
चर्मसाह्वा चर्मकासा फेना दीप्ता च नालिका ॥५५॥

सातला, विरला, सारी, सत्फला, बहुफेन का, चर्मसाह्वा, चर्मकासा, फेना, दीप्ता और नालिका ये नाम सातलाके हैं॥५५॥

सातला कटुका पाके वातला शीतलो लघुः ।
तिक्ता शोथकफानाहपित्तोदावर्त्तरक्तजित् ॥५६॥

सातला पाक में चर्परी है, यात को करती है, शीतल है, हलकी है, कड़ुवी है और शोजा, कफ, अफारा, पित्त, उदावर्त, रक्त इन्हों को जीतती है, सातलाको सतवन या सप्तपर्ण भी कहते हैं, इसके वृक्ष छोटे सींबल के समान होते हैं, इसके वृक्षपर एक दंड़ी में प्रायः सातपत्ते होते हैं इसमें से दूध भी निकलता है वह थोहर के दूध के समान रेचक है, टकसाल से ऊपर कटाहे के घाट में नदी के किनारे और कौशिल्या के किनारे हमने इसे देखा है॥५६॥

अश्मन्तकनामगुणाः

अश्मन्तो मालुकापात्रो युग्मपत्रोऽम्लपत्रकः ।
श्लेक्ष्णत्वगश्वयोनिः स्यात्कुशली पापनाशनः ॥५७॥

अश्मन्त, मालुकापात्र, युग्मपत्र, अम्लपत्रक, श्लेक्ष्णत्वक्, अश्वयोनि, कुशली, पापनाशन ये अश्मंतक के नाम हैं॥५७॥

अश्मन्तस्तुवरो ग्राही शीतोष्णः कफवातजित् ।
निहन्ति गण्डमालास्रगलगण्डगलामयान् ।
तत्फलं लेखनं ग्राहि गुरु श्लेष्मानिलापहम् ॥५८॥

अश्मंतक कषैला है, मल को बांधता है, शीतल है, गर्म है, कफवात को जीतता है और गण्डमाला, रक्त–गलगण्ड, गलरोग इन्हों को नाशता है। अश्मन्तकका फल लेखन है, मल को बांधता है, भारी है, कफवात को जीतता है। अश्मंतक के पत्र खटाईदार होते हैं, सामने सामने दो दो होते हैं॥५८॥

काञ्चनारनामगुणाः

काञ्चनारः काञ्चनकः पाकारी रक्तपुष्पकः ।
कोविदारोऽस्य भेदः स्यात्कुद्दालः कुहली कुली ।
आस्फोतो दालकः स्वल्पकेसरश्चमरी मता ॥५९॥

काञ्चनार, काञ्चनक, पाकारी, रक्तपुष्पक ये नाम कचनार के हैं, इसी का भेद कोविदार होता है। कुद्दाल, कुहली, कुली, आस्फोत, दालक, स्वल्पकेसर, चमरी ये कोविदार के नाम हैं॥५९॥

काञ्चनारो हिमो ग्राही तुवरः श्लेष्मपित्तनुत् ।
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः ॥६०॥
कोविदारोऽपि तद्वत्स्यात्पुष्पं शीतं तयोर्लघु ।
रूक्षं संग्राहि पित्तास्रप्रदरक्षतकासनुत् ॥६१॥

कचनार शीतल है, मल को बांधता है, कषैला है, कफपित्त को जीतता है। कृमि, कुष्ठ, कांच निकलना, गंडमाला, घाव इन्हों को नाशता है, कोविदार में भी यही गुण हैं। दोनों का फूल शीतल है, हलका है, रूखा है, मल को बांधता है और पित्तरक्त, प्रदर, क्षत और खांसी इन्हों को दूर करता है। कांचनार के वृक्ष सड़कों पर, बगीचों में, पहाडों पर प्रायः होते हैं। इसकी कलियों की भाजी भी बनती है, कराल या कचनार के नाम से प्रसिद्ध है।।६१।।

निर्गुण्डीद्वयनामगुणाः

निर्गुण्डी श्वेतकुसुमः सिन्दुकः सिन्दुवारकः ।
भूतकेश्यपरो नीलसिन्दुकः पुष्पनीलकः ।।
शेफालिका शीतभीरुर्वनकोऽनिलमञ्जरी ।।६२।।

निर्गुण्डी, श्वेतकुसुम, सिन्दुक, सिंदुवार ये नाम संभालू के हैं और भूतकेशी, नीलसिंदुक, पुष्पनीलक, शेफालिका, शीतभीरु, वनक, अनिलमञ्जरी ये नाम दूसरे संभालू के हैं।।६२।।

निर्गुण्डी स्मृतिदा तिक्ता कषाया कटुका लघुः ।।६३।।

संभालू स्मृति को देता है, कडुवा है, चर्परा है, कषैला है, हलका है।।६३।।

केश्या नेत्रहिता हन्ति शूलशोथाममारुतान् ।
कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मव्रणान् नीलाऽपि तद्विधा ।।६४।।

यह बालों को बढ़ाता है, नेत्रों को हित करता है और शूल, शोजा, आमवात, कृमि, कुष्ठ, अरुचि, कफ, घाव इन्हों को नाश करता है और नीले संभालू के भी यही गुण हैं। संभालू नाम से प्रसिद्ध है।।६४।।

मेषशृङ्गीनामगुणाः

मेषशृङ्गी मेषवल्ली सप्तष्ट्राऽजशृङ्गिका ।
अन्या तु दक्षिणवर्त्ता वृश्चिकाली विषाणिका ।।६५।।

मेषशृंगी, मेषवल्ली, सप्तदंष्ट्रा, अथशृंगिका और दूसरी के दक्षिणावर्ता वृश्चिकाली विषाणिका ये नाम हैं।।६५।।

मेषशृंगी रसे तिक्ता वातला कासनाशिनी ।
रूक्षा पाके कटुः पित्तव्रणश्लेष्माक्षिशूलनुत् ।।६६।।

मेढ़ाशिंगी रस में कड़वी है, वात को करती है, खांसी को नाशती है, पाक में रूखी है, चर्परी है और पित्त, घाव, कफ, नेत्रशूल इन्हों को दूर करती है, मेढ़ाशिंगी नाम से प्रसिद्ध है।।६६।।

पुनर्नवाद्वयनामगुणाः

पुनर्नवा श्वेतमूला पृथ्वीको दीर्घपत्रकः ।
विषाददीर्घो वर्षाभूः पुनर्भूर्मण्डलच्छदा ।।६७।।

पुनर्नवा, श्वेतमूला, पृथ्वीक, दीर्घपत्रक, विषाददीर्घ, वर्षाभू, पुनर्भू, मण्डलच्छदा ये नाम सांठी के हैं।।६७।।

पुनर्नवा वरा तिक्ता रुक्षोष्णा मधुरा कटुः ।
पुनर्नवाऽरुणा तिक्ता रक्तपुष्पा कटिल्लका ।।६८।।

सांठी सर है, कडुवी है, रूखी है गर्म है, मीठी और चर्परी है, पुनर्नवा, अरुणा, तिक्ता, रक्तपुष्पा, कटिल्लका।।६८।।

क्रूरकः क्षुद्रवर्षाभूर्वर्षाकेतुः शिवाटिका ।
शोफानिलव्रणश्लेष्महरा रुच्या रसायनी ।।६९।।

क्रूरक, क्षुद्रवर्षाभू, वर्षाकेतु, शिवाटिका ये नाम लाल सांठी के हैं। यह शोजा वात, घाव, कफ इन्हों को हरती है, रुचि को उपजाती है, रसायन है।।६९।।

पुनर्नवा वरा तिक्ता कटुपाका हिमा लघुः ।
वातला ग्राहिणी श्लेष्मरक्तपित्तविनाशिनी ।।१७०।।

उत्तम सांठी कड़वी है, पाक में चर्परी है, शीतल है, हलकी है, वात को करती है, मल को बांधती है और कफ रक्त पित्त इन्हों को नाश करती है, पुनर्नवा सांठी सठ्ठी इस नाम से प्रसिद्ध है, इसका प्रसर जमीन पर छाया रहता है, प्रायः सब जगह मिलती है, टकसाल में बहुत होती है, लोग इसको सठ्ठी कहते हैं।।१७०।।

रास्नानामगुणाः

रास्ना रम्या युक्तरसा रसना गन्धमाकुली ।
सुगन्धमूलाऽतिरसा श्रेयसी सुवरा सरा ।।७१।।

रास्ना, रम्या, युक्तरसा, रसना, गन्धमाकुली, सुगन्धमूला, अतिरसा, श्रेयसी, सुवरा, सरा, ये नाम रास्ना के हैं।।७१।।

रास्नाऽऽमपाचनी तिक्ता गुरूष्णा श्लेष्मवातजित् ।
शोफश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ।।७२।।

रास्ना अर्थात् रायसन आम को पकाती, कडुवी, भारी, गर्म है और कफ, वात को जीतती है। यह शोजा, श्वास, वातरक्त, वातशूल और उदररोग इन्हों को नाशती है। रास्ना, रायसन इन नामों से प्रसिद्ध है।।७२।।

अश्वगन्धानामगुणाः

अश्वगन्धा तुरङ्गाह्वा गोकर्णश्चावरोहकः ।

वराहकर्णी वरदा बल्या वाजीकरी वृषा ।।७३।।

अश्वगन्धा, तुरंगाह्वा, गोकर्ण, अवरोहक, वराहकर्णी, वरदा, बल्या, वाजीकरी, वृषा, ये असगन्ध के नाम हैं।।७३।।

अश्वगंधाऽनिलश्लेष्मशोफश्वित्रक्षयापहा ।
बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णाऽतिशुक्रला ।।७४।।

असगन्ध, वात, कफ, शोजा, श्वित्रकुष्ठ और क्षय इन्हों को नाशती है, बल करती है, रसायनी है, कड़ुवी, कषैली, गर्म और अत्यंत वीर्य को उपजाती है। असगन्ध प्रसिद्ध है, प्रायः सब जगह मिलती है, इसके छोटे छोटे पेड़ होते हैं, फल डोडियों के समान लगते हैं, पकने पर लालरंग की लालडीसी उस डोडी में निकलती हैं।।७४।।

प्रसारणीनामगुणाः

प्रसारणी राजबला चारुपर्णी प्रतानिका ।
शरणी सारणी भद्रपर्णी सुप्रसरा सरा ।।७५।।

प्रसारणी, राजबला, चारुपर्णी, प्रतानिका शरणी, सारणी, भद्रपर्णी, सुप्रसरा, सरा ये नाम प्रसारणी के हैं।।७५।।

प्रसारणी गुरुर्वृष्या सन्धानबलकृत्सरा ।
वीर्योष्णा वातनुतिक्ता वातरक्तकफापहा ।।७६।।

प्रसारणी अर्थात् खींप विशेष भारी है, आयु को बढ़ाती है, टूटे को जोड़ती है, बल को करती है, दस्तावर है, वीर्य में गर्म है, वात को दूर करती है, कड़ुवी है, वातरक्त और कफ को नाशती है, पञ्जाव में खीय नाम से प्रसिद्ध है।।७६।।

शताबरीनामगुणाः

शतावरी द्वीपिशत्रुर्द्विपका धरकण्टका ।
नारायणी शतपदी शतपाद्बहुपत्रिका ।।७७।।

शतावरी, द्वीपिशत्रु, द्विपका, धरकण्टका, नारायणी, शतपदी, शतपात् बहुपत्रिका ये शतावर के नाम हैं।।७७।।

शतावरी गुरुः शीता स्वादुः स्निग्धा रसायनी ।
शुक्रस्तन्यकरा बल्या वातपित्तास्रशोफजित् ।।७८।।

शतावरी भारी है, शीतल है, स्वादु है, चिकनी है, रसायनी अर्थात् बुढ़ापे को दूर करती है, वीर्य और दूध को करती है, बल को उपजाती है और वात, पित्त, रक्त, शोजा इन्हों को जीतती है।।७८।।

महाशतावरीनामगुणाः

शतावर्यूर्ध्वकण्ठाऽन्या पीवरी धीवरी वरी ।

अभीरुर्बहुपत्रा च महापुरुषदन्तिका ॥७९॥

शतावरी, ऊर्ध्वकंठा, पीवरी, धीवरी, वरी, अभीरु, बहुपत्रा महापुरुषदन्तिका॥७९॥

सहस्रवीर्या केशी स्यात्तुङ्गिनी सूक्ष्मपत्रिका ।
महाशतावरी मेध्या हृद्या वृष्या रसायनी ॥८०॥

सहस्रवीर्या, केशी, तुंगिनी, सूक्ष्मपत्रिका ये नाम महाशतावरी के हैं। महाशतावरी बुद्धि को देती है, हृदय को हित करती है, वीर्य बढ़ाती है, रसायन अर्थात् आयु को बढ़ाती है॥८०॥

शीतवीर्या निहन्त्यर्शोग्रहणीनयनामयान् ।
तदङ्कुरस्त्रिदोषघ्नो लघुरर्शःक्षयापहः ॥८१॥

वीर्य में शीतल है और बवासीर, ग्रहणी, नेत्ररोग इन्हों को नष्ट करती है। महासतावरी का अंकुर त्रिदोष को नाश करता है, हलका है, बवासीर और क्षय को हरता है, इसके छोटे छोटे पेड़ पहाड़ी जंगलों में होते हैं, पत्र बारीक बारीक हरे रेशम के समान दीखते हैं, इसकी जड़ें शतावर शतावरी नाम से सब जगह मिल सकती हैं॥८१॥

बलानामगुणाः

बला वटयालकः शीतपाकी वाटयोदराह्वया ।
भद्रौदनी समङ्गा स्यात्समांसा खरयष्टिका ॥८२॥

बला, वटयालक, शीतपाकी, वाटयोदराह्वया, भद्रौदनी, समंगा, समांसा, खरयष्टिका ये खरैंहटी के नाम हैं॥८२॥

सहदेवीनामगुणाः

महाबला वीरपुष्पी सहदेवी बृहद्बला ।
वाटयायनी देवसहा वाटया स्यात्पीतपुष्पिका ॥८३॥

महाबला, वीरपुष्पी, सहदेवी, बृहद्बला, वाटयायनी, देवसहा, वाटया, पीतपुष्पिका ये सहदेई के नाम हैं॥८३॥

पिटारिणीनामगुणाः

बलाकाऽतिबला भारवाजी स्याद् वृक्षगन्धिनी ॥८४॥

बलाका , अतिबला, भारवाजी, वृक्षगन्धिनी, ये नाम बलिकाके हैं॥८४॥

गंगेरुकीनामगुणाः

गङ्गेरुकी नागबला विश्वदेवा गवेधुका ॥८५॥

गंगेरुकी, नागबला, विश्वदेवा, गवेधुका ये नाम गंगेरन के हैं॥८५॥

बलाचतुष्टयनामगुणाः

बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकान्तिकृत् ।
स्निग्धं ग्राहि समीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ।।८६।।

खरैंहटी आदि चारों शीतल हैं, मीठी हैं, बल और कांति को करती हैं, चिकनी हैं, मल को बांधती हैं और वात, अम्लपित्त, रक्त, क्षत इन्हों को नाशती हैं इन चारों को बलाचतुष्टय कहते हैं।।८६।।

आसां बृहद्बला कृच्छ्रं हन्ति वातानुलोमनी ।
गुर्वी नागबला वृष्या विशेषाद्रक्तपित्तजित् ।।
बल्या रसायनी पुंस्त्ववर्धिनी बृंहणी तथा ।।८७।।

इन्हों में सहदेई मूत्रकृच्छ्र को नाशती है, वात को अनुलोमित करती हैं, गंगेरन भारी है, वीर्य को उपजाती है, विशेष करके रक्तपित्त को जीतती है, बल को करती हैं, रसायन है, पुरुषपने को बढ़ाती है और आयु को बढ़ाती है।।८७।।

तस्याः फलं हिमं स्वादु स्तम्भनं गुरु लेखनम् ।
विबन्धाध्मानजननं रक्तपित्तविवर्द्धनम् ।।८८।।

गंगेरन का फल शीतल, स्वादु, स्तंभन, भारी और लेखन है, यह विबन्ध और आध्मान को उपजाता है, रक्तपित्त को बढ़ाता है। बला नाम खरैंहटी का है। खरैंहटी, खरेटी, बीजवंद इन नामों से सर्वत्र सुलभ है, इसी का भेद सहदेई गंगेरन कंघी है। इन चारों में कंघी का पेड़ ऊंचा होता है और फल आरेदार चक्राकार होता है, फूल चारों के ही पीले होते हैं, अंबाले आदि स्थानों में चारों के ही पीले होते हैं, अंबाले आदि स्थानों में चारों किस्म की देखी हैं। सहारनपुर में दिल्ली में प्रायः बहुत होती है टकसाल के किले की खाई में भी इसके पेड़ होते हैं।।८८।।

ज्योतिष्मतीनामगुणाः

ज्योतिष्मती वह्निरुचिः कंगुणी कटुभी तथा ।
ज्योतिष्मती कटुस्तिक्ता सरा कफसमीरजित् ।
अत्युष्णा वामनी तीक्ष्णा वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ।।८९।।

ज्योतिष्मती, वह्निरुचि, कंगुणी, कटुभी ये नाम मालकांगनी के हैं। मालकांगनी चर्परी, कडुवी और दस्तावर है, कफ और वात को जीतती है, अत्यंत गर्म है, छर्दि उपजाती है, तेज है और अग्नि, बुद्धि, स्मृति इन्हों को देती है, फल पकने पर केशर के रंग के मोती से होते हैं। इसकी बेलें पहाडों पर होती हैं, मालकांगनी नाम से प्रसिद्ध है।।८९।।

तेजवतीनामगुणाः

तेजस्विनी तेजवती तेजिन्या लघुवल्कला ।
महौजसी पारिजाता शीता तिक्ताऽतितेजिनी ।।९०।।

तेजस्विनी, तेजवती, तेजिन्या, लघुवल्कला, महौजसी, पारिजाता, शीता, तिक्ता अतितेजिनी ये नाम तेजवल के हैं।।९०।।

तेजस्विनी कफश्वासकासशूलामवातजित् ।
पाचन्युष्णा कटुस्तिक्ता रुचिवह्निप्रदीपनी ।।९१।।

तेजबल कफ, श्वास, खांसी, शूल, आमवात इन्हों को जीतती और पकाती है, गर्म है, चर्परी है, कडुवी है, रुचि और अग्नि को जगाती है, तेजबल के वृक्ष पहाड़ों में होते हैं। इसके वृक्ष में कांटे भी होते हैं। लोग इसकी दाँतन भी करते हैं, इसकी लकड़ी के सोटे (डंडे) दवाई रगड़ने या नमक मिर्च पीसने के लिये नाभापटियाला के लोग शिमले के पहाड़ से लाया करते हैं। इसके गोल मिर्च के समान फल लगते हैं, फलों में और वृक्ष की लकड़ी में और त्वचा में सब जगह चरचराहट होता है।।९१।।

देवदारुनामगुणाः

देवदारु सुराह्वं स्याद्भद्रदारु सुरद्रुमः ।
भद्रकाष्ठं स्नेहवृक्षः कृमिलं शक्रदारु च ।।९२।।

देवदारु, सुराह्व, भद्रदारु, सुरद्रुम, भद्रकाष्ठ, स्नेहवृक्ष, कृमिल, शक्रदारु ये देवदारु के नाम हैं।।९२।।

देवदारु कटु स्निग्धं तिक्तोष्णं लघु नाशयेत् ।
आध्मानज्वरशोथामहिक्काकाण्डुकफानिलान् ।।९३।।

देवदारु, चर्परा, चिकना, कडुवा, गर्म और हलका है तथा आध्मान, ज्वर, शोजा, आम, हिचकी, खाज, कफ, वात इनको नाश करता है। देवदारु के वृक्ष ठंड़े पहाड़ों पर होते हैं प्रायः शिमला के पहाड़ पर भी होते हैं।।९३।।

सरलनामगुणाः

सरलो नन्दनो व्रीडा नमेरुर्द्विकवृक्षकः ।
पीतदारुः पीतवृक्षो महादीर्घः कलिद्रुमः ।।९४।।

सरल, नन्दन, व्रीडा, नमेरु, द्विकवृक्षक, पीतदारु, पीतवृक्ष, महादीर्घ, कलिद्रुम ये नाम सरल के हैं।।९४।।

सरलः कटुकः पाकरसयोर्मधुरो लघुः ।
उष्णः स्निग्धः समीराक्षिकण्ठकर्णामयापहः ।।९५।।

सरल चर्परा है, पाक और रस में मीठा हैं, गर्म है, चिकना है और वात, नेत्ररोग,

कण्ठरोग, कर्णरोग इनको नाशता है। सरल का वृक्ष ठण्डे पहाड पर होता है।।९५।।

पुष्परमूलनामगुणाः

पौष्कराह्वं पद्मपत्रं पौष्करं पुष्कराह्वकम् ।
काश्मीरं पुष्करजटा मूलवीरं सुगन्धिकम् ।।९६।।

पौष्कराह्व, पद्मपत्र, पौष्कराह्वक, काश्मीर, पुष्करजटा, मूलवीर, सुगंधिक ये पुहकर मूल के नाम हैं।।९६।।

पौष्करं कटुकं तिक्तमुष्णवातकफज्वरान् ।
हन्ति शोफारुचिश्वासान् विशेषात्पार्श्वशूलजित् ।।९७।।

पोहकरमूल चर्परा और कडुवा है, उष्णवात, कफ, ज्वर, शोजा, अरुचि, श्वास, विशेषकर पसलीशूल इन्हों को जीतता है। पोहकरमूल नाम से प्रसिद्ध है।।९७।।

कुष्ठनामगुणाः

कुष्ठं रोगाह्वयं दिव्यं कौबेरं पारिभद्रकम् ।
पारिहार्यं पारिभाव्यमुत्पलं पारिभद्रकम् ।।९८।।

कुष्ठ, रोगाह्वय, दिव्य, काबर, पारिभद्रक, पारिहार्य, पारिभाव्य, उत्पल, पारिभद्रक ये कूठ के नाम हैं।।९८।।

कुष्ठमुष्णं कटु स्वादु तिक्तं शुक्रप्रदं लघु ।
हन्ति वातास्रवीसर्पकुष्ठकासमरुत्कफात् ।।९९।।

कूठ गर्म है, चर्परा है, स्वादु है, कडुवा है, वीर्य को देता है, हलका है और वातरक्त, विसर्प, कुष्ठ, खांसी, वात, कफ, इनको नाशता है। कूठ, कूट, इन नामों से प्रसिद्ध है। यह कडुवा और मीठा दो प्रकार का होता है।।९९।।

कर्कटशृङ्गीनामगुणाः

शृङ्गी कुलीरशृंगी स्याद्वक्रा कर्कटशृंगिका ।
कर्कटाक्षा महाघोषा, शृंगनाम्नी नताङ्ग्यपि ।।२००।।

शृंगी, कुलीरशृंगी, वक्रा, कर्कटशृंगिका, कर्कटाक्षा, महाघोषा, शृंगनाम्नी, नतांगी ये नाम काकड़ाशिंगी के हैं।।२००।।

शृंगी कषायतिक्तोष्णा हन्ति हिक्कावमिज्वरान् ।
वृष्या वमिकफश्वासक्षयकासोर्ध्वमारुतान् ।।१।।

काकड़ाशिंगी, कषैली, कडुवी, और गर्म है। हिचकी, छर्दि, ज्वर, कफ, श्वास, क्षय, खांसी, ऊर्ध्ववात इनको नाशती है, वीर्य को बढ़ाती है। काकड़ाशिंगी के वृक्ष टकसाल में बहुत हैं, इसके वृक्ष की टहनियों में सींग से लगते हैं, उनको काकड़ाशिंगी कहते हैं।

इसके वृक्ष को ककड़ों का वृक्ष कहते हैं, काकड़ाशिंगी नाम से सर्वत्र सुलभ है।।१।।

कट्फलनामगुणाः

कट्फलं कुमुदा कुम्भी श्रीपर्णी लोमपादपः ।
सोमकल्को महाकुम्भी भद्रा भद्रवती शिवा ।।२।।

कट्फल, कुमुदा, कुंभी, श्रीपर्णी, लोमपादप, सोमवल्क, महाकुंभी, भद्रा, भद्रवती, शिवा ये नाम कायफल के हैं।।२।।

कट्फलं तुवरं तिक्तं कटु वातकफज्वरान् ।
हन्ति श्वासप्रमेहार्शः कासकण्ठामयारुचीः ।।३।।

कायफल कोला, कडुवा, और चर्परा है तथा वात–कफज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर, खांसी, कंठरोग, अरुचि इनको नाशता है। कायफल के वृक्ष वघाट स्टेटके, पहाड़ों में हमने अधिक देखे हैं, ज्येष्ठ के महीने में इनमें फल पकते हैं, उनको कायफल ही कहते हैं। औषधियों में प्रायः इसके वृक्ष का छिलका डालते हैं, इसके छिलके की नसवार भी होती है।।३।।

रोहिषनामगुणाः

रोहिषं कत्तृणं भूतिर्भूतिकं सरलं तृणम् ।
श्यामलं युग्मकं पौरं व्यापकं देवगन्धकम् ।।४।।

रोहिष, कत्तृण, भूति, भूतिक, सरल, तृण, श्यामल, युग्मक, पौर, व्यापक, दैवगंधक ये रोहिषतृण के नाम हैं।।४।।

रोहिषं कटुकं पाके तिक्तोष्णं तुवरं जयेत् ।
हन्ति मारुतपित्तास्रक्षणाच्छ्वासकफज्वरान् ।।५।।

रोहिषतृण पाक में चर्परा है, कडुवा है, गर्म है, कषैला है और वात, पित्त, रक्त, श्वास, कफज्वर इनको नष्ट करता है, रोहेडा घास नाम से प्रसिद्ध है।।५।।

भार्ङ्गीनामगुणाः

भार्ङ्गी भृगुभवा पद्मा कासघ्नी गन्धपर्वणी ।
खरशाकं शुक्रमाता भञ्जी ब्राह्मणयष्टिका ।।६।।

भार्ङ्गी, भृगुभवा, पद्मा, कासघ्नी, गंधपर्वणी, खरशाक, शुक्रमाता, भञ्जी, ब्राह्मणयष्टिका यह भारंगी के नाम हैं।।६।।

भार्ङ्गी रूक्षा कटुस्तिक्ता रुच्योष्णा पाचनी जयेत् ।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।।७।।

भारंगी रूखी चर्परी और कडुवी है, रुचि को उपजाती है, गर्म है, पकाती है, और

शोजा, खांसी, कफ, श्वास, पीनस, ज्वर, वात इनको जीतती है, भाडंगी, भारंगी, भार्ङ्गी, ब्रह्मणेढी इन नामों से प्रसिद्ध है।।७।।

पाषाणभेदनामगुणाः

पाषाणभेदः पाषाणोऽश्मरीभेदोऽश्मभेदकः ।
शिलाभेदो दृषद्भेदो नागभिन्नोऽङ्गभेदनः ।।८।।

पाषाणभेद, पाषाण, अश्मरीभेद, अश्मभेदक, शिलाभेद, दृष्टद्भेद, नागभिन्न अंगभेदन ये पाषाणभेद के नाम हैं।।८।।

पाषाणभेदस्तुवरः शीतलो बस्तिशोधनः ।
सरस्तिक्तः प्रमेहार्शः कृच्छ्राश्मरिरुजो जयेत् ।।९।।

पाषाणभेद कषैला है, शीतल है, बस्ति को शोधता है, दस्तावर है, कडुवा है और प्रमेह, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, पथरी इनको जीतता है, पाषाणभेद नाम से प्रसिद्ध है।।९।।

मुस्तनामगुणाः

मुस्तं वारिधरो मुस्ता मेघाख्यः कुरुविन्दकः ।।१०।।
वराहोऽब्दो घनो भद्रमुस्तं राजकसेरुकः ।
पिण्डमुस्तं विषध्वंसी नागरोऽन्यः प्रकीर्तितः ।।११।।

मुस्त, वारिधर, मुस्ताह्व, मेघाख्य, कुरुविन्दक, वराह, अब्द, घन, भद्र मुस्त, राजकसेरुक, पिण्डमुस्त, विषध्वंसी, नागर ये नाम नागरमोथा के हैं।।१०–११।।

मुस्तं कटु हिमं ग्राहि तिक्तं दीपनपाचनम् ।
कषायं कृमिपित्तासृक्कफतृष्णाज्वरापहम् ।।१२।।

नागरमोथा चर्परा है, शीतल है, मल को बांधता है, कडुवा है, दीपन है, पाचन है, कषैला है, और कृमि, रक्त पित्त, कफ, तृषा, ज्वर, इन्हों को नाशता है। नागरमोथा 'डीला' नाम घास विशेष की जड़ें हैं, नागरमोथा नाम से प्रसिद्ध है सर्वत्र सुलभ है।।१२।।

धातकीनामगुणाः

धातकी कुञ्जरा सिन्धुपुष्पी प्रमदिनी मदा
पार्वतीया ताम्रपुष्पी सुभिक्षा मेघवासिनी ।।१३।।

धातकी, कुञ्जरा, सिंधुपुष्पी, प्रमदिनी, मदा, पार्वतीया, ताम्रपुष्पी, सुभिक्षा, मेघवासिनी ये धावे के नाम हैं।।१३।।

धातकी कटुका शीता मन्दोष्णा तुवरा लघुः ।
तृष्णातीसारपित्तास्रविषक्रिमिविसर्पजित् ।।१४।।

धातकी चर्परी है, शीतल है, अल्पगर्म है, कषैली है, हलकी है, तृषा, अतिसार, रक्तपित्त, विष, क्रमि विसर्प इन्हीं को जीतती है। धावी के वृक्ष, पहाड़ों पर बहुत होते हैं, इनकी पत्तियों को गौएं खाती हैं। इसके फूल दवाइयों में काम आते हैं, धावड़ों, धौ, धाय, धावा, धावी इन नामों से प्रसिद्ध हैं।।१४।।

अम्बष्ठानामगुणाः

माचिका बालिकाऽम्बष्ठा शठी दन्तशठाऽम्बिका ।
अम्बष्ठकी सूचिमुखी कषाया साकण्ठमुखी ।।१५।।

माचिका, बालिका, अम्बष्ठा, शठी, दंतशठा, अम्बिका, अम्बष्ठकी, सूचिमुखी, कषाया, साकंठमुखी, ये नाम मांइया के हैं।।१५।।

माचिकोष्णा रसे पाके कषाया शीतला लघुः ।
पक्वातीसारपित्तास्रकफकण्ठामयापहा ।।१६।।

मांई गर्म है, रस में और पाक में कषैली है, शीतल है, हलकी है और पका हुआ अतिसार, रक्तपित्त, कफ, कंठरोग इनको नाशती है, यह फ्रांह नामक वृक्ष में लगती है मांई नाम से प्रसिद्ध है।।१६।।

विदारीकन्दद्वयनामगुणाः

विदारिका वृक्षवल्ली वृक्षकन्दा विदालिका ।
शृंगालिका कन्दवल्ली स्वादुकन्दा फलाशका ।।१७।।

विदारिका, वृक्षवल्ली, वृक्षकन्दा, विदालिका, शृंगालिका, कन्दवल्ली, स्वादुकन्दा, फलाशका ये नाम विदारीकंद के हैं, विदारीकंद सिमला प्रान्त में अधिक होता है, इसकी बेल को सराली की बेल कहते हैं, इसकी बेल में ढाक की समान एक एक डंडी में तीन तीन पत्र होते हैं इसकी बेल घोड़ों को भी खिलाई जाती हैं, एक वर्ष के कंद को सराली कहते हैं और पुराने को पहाड़ी लोग भलार कहते हैं। इसकी बेल की गाँठ से जमीन में जड़ सी लगकर कंद हो जाता है, उसी का नाम सराली है, उसी कंद को विदारीकन्द कहते हैं।।१७।।

अन्या शुक्ला क्षीरशुक्ला क्षीरवल्ली पयस्विनी ।
इक्षुवल्ली महाश्वेता क्षीरकन्देक्षुगंधिका ।।१८।।

शुक्ला, क्षीरशुक्ला, क्षीरवल्ली, पयस्विनी, इक्षुबल्ली, महाश्वेता, क्षीरकन्दा, इक्षुगन्धिका ये नाम क्षीरविदारीकंद के हैं।।१८।।

विदारी मधुरा स्निग्धा बृंहणी स्तन्यशुक्रदा ।
गुरुः पित्तास्रपवनदाहान् हंति रसायनी ।।१९।।

विदारीकंद, मीठा है, चिकना है, पुष्टि करता है, दूध और वीर्य को देता है, भारी है,

रक्तपित्त, वात, दाह इनको नाशता है और रसायन है। क्षीरविदारी दूसरे प्रकार की होती है, इसकी जड़ में ही कंद होता है, उसमें से दूध निकलता है। पत्र प्रायः तर्बूज की बेल के पत्रों के समान होते हैं, इसमें लाल रंग का फूल भी लगता है।।१९।।

वाराहीकन्दनामगुणाः

वाराही माधवी गृष्टिः शीकरी वनमालिका ।
तस्याः कंदः किटिः क्रोडनामा संवरकंदकः ।।२२०।।

वाराही, माधवी, गृष्टि, शीकरी, वनमालिका, वाराहीकंद, किटि, क्रोडनाम, संवरकन्दक ये नाम वाराहीकंद के हैं।।२२०।।

वाराही मधुरा कंदे कटुस्तिक्ताऽतिशुक्रला ।
बल्या शुक्रकरा वातकफमेहकृमीञ्जयेत् ।।२२१।।

वाराहीकन्द मीठा है, चर्परा है, कड़ुवा है, बहुत वीर्य को उपजाता है, बल और पुष्टि को करता है तथा वात कफ, प्रमेह, कृमि इनको जीतता है। वाराहीकंद की भी बेल होती है, पत्र नागरपान के समान होते हैं। पहाड़ी लोग इसकी बेल को भेवर की बेल कहते हैं। नीचे से कंद निकलता है, कोई कित्थे की जड़ को भी वाराहीकंद कहते हैं परन्तु कित्था कोलकंद का नाम है, वाराहीकन्द भेवर के कन्द का ही नाम है। यह टकसाल के समीप कौशिल्यानदी के किनारों पर बहुत होता है।।२२१।।

पाठानामगुणाः

पाठाऽम्बष्ठा बृहत्तिक्ता प्राचीनाऽम्बष्ठका सरा ।
वरा तिक्ता पापचेली श्रेयसी वृद्धकर्णिका ।।२२२।।

पाठा, अम्बष्ठा, बृहतिक्ता, प्राचीना, अम्बष्ठका, सरा, वरा, तिक्ता, पापचेली, श्रेयसी, वृद्धकर्णिका ये पाठा के नाम हैं।।२२२।।

पाठोष्णा कटुका तीक्ष्णा वातश्लेष्महरा लघुः ।
हंति शूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ।
दाहकण्डूविषश्वासकृमिगुल्मगरव्रणान् ।।२२३।।

पाठा, गर्म है, चर्परी है, तेज है, वातकफ को हरती है, हलकी है और शूल, ज्वर, छर्दि, कुष्ठ, अतिसार, हृद्रोग, दाह, खाज, विष, श्वास, कृमि, गुल्म, कृत्रिमविष, घाव इनको नाश करती है। पाठा की बेल होती है, टकसाल में इसको बटौवे की बेल कहते हैं। पाटला, पाढ़ इन नामों से सब जगह मिलती है।।२२३।।

मूर्वानामगुणाः

मूर्वा देवी मधुरसा देवश्रेणी मधुस्रवा ।
स्निग्धपर्णी पृथक्पर्णी मोरटी पीलुपर्णिका ।।२२४।।

मूर्वा, देवी, मधुरसा, देवश्रेणी, मधुस्रवा, स्निग्धपर्णी, पृथक्पर्णी, मोरटी, पीलुपर्णिका ये नाम मुरहरी के हैं। मुरहरी सर है, भारी है, मीठी है, तेज है और पित्तरक्त, प्रमेह, त्रिदोष, तृषा, हृद्रोग, खाज, कुष्ठ, ज्वर, पित्त, बात इनको जीतती है। पुष्ठ है, कफ को करती है। दिल को ताकत देती है, मल को बांधती है और गोले को नाशती है। मूर्वा की जगह आजकल लोग मरोड़फली डालते हैं।।२४।।

मंजिष्ठानामगुणाः

मंजिष्ठा विजया रक्ता रक्ताङ्गी कालमेषिका
रक्तयष्टी ताम्रवल्ली समङ्गा वस्त्रभूषणा ।।
मंजुला विकशा भङ्गी छद्मिका ज्वरनाशिनी ।।२५।।

मजिष्ठा, विजया, रक्ता, रक्तांगी, कालमेषिका, रक्तयष्टी, ताम्रवल्ली, समङ्गा, वस्त्रभूषणा, मंजुला, विकशा, भंगी, छद्मिका, ज्वरनाशिनी ये नाम मंजीठ के हैं।।२५।।

मञ्जिष्ठा मधुर तिक्ता कषाया स्वर्णवर्णकृत् ।
गुरुरुष्णा विषश्लेष्मशोफयोन्यक्षिशूलनुत् ।।२६।।
रक्तातीसारकुष्ठास्रवीसर्पव्रणमेहजित् ।
तच्छाकं दीपनं स्वादु स्निग्धं पित्तानिलापहम् ।।२७।।

मंजीठ मीठी है, कडुवी है, कषैली है, सोने समान रंग को करती है। भारी है, गर्म है, विष, कफ, शोजा, योनिशूल, नेत्रशूल, रक्तातिसार , कुष्ठ, रक्त, विसर्प, घाव, प्रमेह इनको जीतती है। मंजीठ का शाक दीपन है, स्वादु है, चिकना है, पित्त और वात को जीतता है। मंजीठ की पहाड़ में बेलें होती हैं। इसकी जड़ प्रायः प्रयोग में आती है यह मंजीठनाम से सब जगह मिलती है।।२६।।२७।।

हरिद्रानामगुणाः

हरिद्रा रजनी गौरी रञ्जिनी वरवर्णिनी ।
पिण्डा पीता वर्णवती निशा वर्णा विलासिनी ।।२८।।

हरिद्रा, रजनी, गौरी, रंजनी, वरवर्णिनी, पिंडा, पीता, वर्णवती, निशा, वर्णा, विलासिनी ये नाम हलदी के हैं।।२८।।

हरिद्रा कटुका तिक्ता रूक्षोष्णा श्लेष्मपित्तनुत् ।
वर्ण्या त्वग्दाहमेहास्रशोफपाण्डुव्रणापहा ।।२९।।

हलदी, चर्परी, कडुवी, रूखी और गर्म है, कफ–पित्त को दूर करती है, रंग को निखारती है, त्वचारोग, दाह, प्रमेह, रक्त, शोजा, पांडु, घाव इन्हीं को नाशती है। हलदी सब जगह प्रसिद्ध है।।२९।।

दारुहरिद्रानामगुणाः

दार्वी दारुहरिद्राऽन्या पीतदारु च पञ्चधा ।
कटङ्कटेरी पित्तद्रुः स्वर्णवर्णा कटङ्कटी ।
दार्वी तद्वद्विशेषातु नेत्रकर्णास्यरोगनुत् ॥२३०॥

दार्वी, दारुहरिद्रा, पीतदारु, पञ्चधा, कटंकटेरी, पितद्रु, स्वर्णवर्णा, कटंकटी ये नाम दारुहलदी के हैं। दारुहलदी में सब गुण हलदी के हैं, परन्तु विशेषकर नेत्ररोग, कर्णरोग, मुखरोग, इनको हरती है, दारुहलदी शिमले के प्रांत में बहुत होती है, पहाड़ीलोग इसको कशमल का झाड़ कहते हैं, इसके फल काले रंग के होते हैं, इसकी लकड़ी के काढ़े को अफीम के समान पकाने से रसांजन (रसौंत) होती है॥२३०॥

प्रपुन्नाट (पनवाड) नामगुणाः

प्रपुन्नाटस्त्वेडगजश्चक्रमर्दः प्रपुन्नटः ।
दद्रुघ्नो मर्दको मेघकुसुमः कुष्ठकृन्तनः ॥३१॥

प्रपुन्नाट, एडगज, चक्रमर्द, प्रपुन्नट, ददुघ्न, मर्दक, मेधकुसुम, कुष्ठकृंतन ये नाम पुवाड़, पमार, पनवाड़ के हैं॥३१॥

प्रपुन्नाटो लघुः स्वादू रूक्षः पित्तानिलापहः ।
हृद्यो हिमकफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीञ्जयेत् ॥३२॥

पनवाड़ हलका है, स्वादु है, रूखा है, पित्त-वात को नाशता है, हृद्य है, गर्म है, कफ, श्वास, कुष्ठ, दद्रु, क्रिमि इनको जीतता है॥३२॥

हन्त्युष्णं तत्फलं कुष्ठकण्डूदद्रुविषानिलान् ।
वातरक्तापहं तस्याः शाकं कफकरं लघु ॥३३॥

पुवाड़ का फल गर्म है, कुष्ठ, खाज, दाद, वात इनको जीतता है, पुवाड़ का शाक वातरक्त को हरता है, कफकारक है, हलका है, इसके छोटे छोटे पेड़ होते हैं, प्रायः वर्षात में सब जगह होते हैं। इसके पत्रोंको भाजी भी करते हैं, इसकी फलियों में से कुछ तिरछे से मोठ से बड़े बीज निकलते हैं॥३३॥

वाकुचीनामगुणाः

बाकुची चन्द्रिका सोमवल्ली पूतिफला वरा ।
सोमराजी कृष्णफला वल्गुजा कालमेषिका ।
चन्द्रलेखा तथा सोमः कुष्ठघ्नी सा मता परा ॥३४॥

बाकुची, चन्द्रिका, सोमपल्ली, पूतिफला, वरा, सोमराजी, कृष्णफला, वल्गुजा, कालमेषिका, चन्द्रलेखा, सोम, कुष्ठघ्नी, ये नाम बावची के हैं॥३४॥

बाकुची मधुरा तिक्ता कटुपाका रसायनी ।
विष्टम्भिनी हिमा रुच्या सरा हृद्याऽस्रपित्तनुत् ।।३५।।
रूक्षा हन्तिकफश्वासकुष्ठमेहज्वरक्रिमीन् ।
तत्फलं पित्तकृच्छ्रेण कुष्ठवातकफापहम् ।।३६।।

बावची मीठी है, कडुवी है, पाक में चर्परी है, रसायन है, विष्टंभ करती है, शीतल है, रुचि को उपजाती है, दस्तावर है, हृदय को हित है, रक्तपित्त को दूर करती है, रूखी है, कफ, श्वास, कुष्ठ, प्रमेह, ज्वर, कृमि इन्हीं को नाश करती है, बावची का फल पित्तकृच्छ्र, कुष्ठ, वात, कफ इनको नाशता है, बावचीनाम से प्रसिद्ध है।।३५।।३६।।

भृङ्गराजनामगुणाः

भृङ्गराजो भेकराजो मार्कवः केशरञ्जकः ।
अङ्गारको भृङ्गिराजो भृङ्गाह्वः सूर्यवल्लभः ।।३७।।

भृंगराज, भेकराज, मार्कव, केशरञ्जक, अंगारक, भृंगिराज, भृंगाह्व, सूर्यवल्लभ ये नाम भांगरी के हैं।।३७।।

भृङ्गराजः कटुस्तिक्तो रूक्षोष्णः कफवातकृत् ।
दन्त्यो रसायनस्त्वच्यः कुष्ठनेत्रशिरोऽर्तिजित् ।।३८।।

भांगरा, चर्परा, कडुवा, रूखा और गर्म है, कफ-वात को करता है, बल को करता है, रसायन है, रुचि को उपजाता है, कुष्ठ, नेत्ररोग, शिरोरोग इनको जीतता है, भृंगराज भांगरा प्रसिद्ध नाम है। प्रायः सब जगह होता है, इसके छोटे छोटे क्षुप सजलभूमि में जल के किनारे होते हैं।।३८।।

पर्पटनामगुणाः

पर्पटः कवचो रेणुः पित्तहा वरकण्टकः ।
वरतिक्तः पर्पटकः पृथ्विकश्चर्मकण्टकः ।।३९।।

पर्पट, कवच, रेणु, पित्तहा, वरकण्टक, वरतिक्त, पर्पटक, पृथ्विक, चर्मकण्टक ये पित्तपापड़ा के नाम हैं।।३९।।

पर्पटो हन्ति पित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ।
संग्राही शीतलस्तिक्तो दाहनुद्वातलो लघुः ।।२४०।।

पित्तपापड़ा, पित्तरक्त, भ्रम, तृषा, कफज्वर, इनको नाश करता है, मल को बांधता है, शीतल है, कड़वा है, दाह को दूर करता है, वात को उत्पन्न करता है और हलका है।।२४०।।

रक्तपुष्पोऽतिसारस्य वारको ज्वरनाशनः ।
पर्पटः पित्तहृद्दाहज्वरजिच्छ्लेष्मशोषणः ।

तिक्तशीतौ ज्वरहरौ लघू भूनिम्बपर्पटौ ।।४१।।

लाल फूलोंवाला, पित्तपापड़ा, अतिसार को दूर करता है, ज्वर को नाशता है, पित्तपापड़ा, पित्त, हृद्रोग, दाह, ज्वर इनको जीतता है, कफ को शोखता है। चिरायता और पित्तपापड़ा कड़ुवा है, शीतल है, ज्वर को हरता है, हलका है, पित्तपापड़ा कनक (गेहूं) के खेतों में बहुत होता है। पंसारियों की दुकान से सब जगह मिलता है, इसको श्याहतरा भी कहते हैं।।४१।।

शणपुष्पीनामगुणाः

शणपुष्पी माल्यपुष्पी धावनी शणघण्टिका ।
बृहत्पुष्पी स्वल्पघण्टा घण्टाशब्दा तु पुष्पिका ।।
शणपुष्पी कटुः पित्तश्लेष्मजिच्छर्दिकारिणी ।।४२।।

शणपुष्पी, माल्यपुष्पी, धावनी, शणघंटिका, बृहस्पुष्पी, स्वल्पघंटा, घंटाशब्दा, पुष्पिका ये नाम शणपुष्पी के हैं। शणपुष्पी रस में कटु है, पित्तकफ को जीतती है और वमनकारक है।।४२।।

त्रायमाणानामगुणाः

त्रायमाणा सुहृत्त्राणा त्रायन्ती गिरिसानुजा ।
बलभद्रा कृतत्राणा वार्षकं त्रायमाणिका ।
त्रायमाणा सरा पित्तज्वरश्लेष्मास्रशूलजित् ।।४४।।

त्रायमाणा, सुहृत्त्राणा, त्रायंती, गिरिसानुजा, बलभद्रा, कृतत्राणा, वार्षक, त्रायमाणिका ये नाम त्रायमाण के हैं। त्रायमाणा-सर है, पित्तज्वर, कफ, रक्तशूल इनको जीतती है। आजकल त्रायमाणा की जगह लोग वनफंसा डालते हैं परन्तु घास के समान छोटे छोटे पेड़ त्रायमाणा के शीतल पहाड़ों पर मिल सकते हैं।।४४।।

महाजालनिकानामगुणाः

महाजालनिका चर्मरङ्गः स्यात्तिलपुष्पिका ।
आवर्त्तकी बिन्दुकिनी विभाण्डी रक्तपुष्पिका ।।४५।।

महाजालनिका, चर्मरङ्ग, तिलपुष्पिका, आवर्तकी, बिंदुकिनी, विभाण्डी, रक्तपुष्पिका ये नाम जाल के हैं।।४५।।

महाजालनिका तिक्ता रेचनी कफपित्तजित् ।
हन्ति दाहोदरानाहशोफकुष्ठक्रिमिज्वरान् ।।४६।।

महाजालनी कड़ुवी है, जुलाब लगाती है, कफ पित्त को जीतती है, दाह, उदररोग, अफारा, शोजा, कुष्ठ, कृमि, ज्वर इनको नाशती है, कड़ुवी तोरी को महाजालनी

कहते हैं।।४६।।

अतिविषानामगुणाः

अतिविषा शुक्लकन्दा विषा प्रतिविषाऽपरा ।
श्यामकन्दा शिता भृङ्गी भङ्गुरोपविषाणिका ।
विषौष्णा पाचनी तिक्ता श्लेष्मपित्तातिसारजित्।।४७।।

अतिविषा, शुक्लकन्दा, विषा, प्रतिविषा, श्यामकन्दा, शिता, भृंगी, भंगुरा, उपविषाणिका ये अतीस के नाम हैं। अतीस गर्म है पाचन है, कडुवी है, कफ पित्त और अतिसार इनको जीतती है।।४७।।

श्यामकन्दा चोपविषा सा विज्ञेया चतुर्विधा ।
रक्ता श्वेता भृशं कृष्णा पीतवर्णा तथैव च ।।४८।।

श्यामकन्दा और उपविषा–लाल, श्वेत, काली पीली इन भेदों से अतीस चार प्रकार की है।।४८।।

यथापूर्वं च विज्ञेया बल्या श्रेष्ठा गुणोत्तमा ।
सर्वदोषहराऽग्र्यत्वाल्लेपाच्छ्वयथुनाशिनी ।
श्लेष्मजान् विंशतिं रोगान् सद्यो हन्याद्रसायनी ।।४९।।

इसमें पूर्व पूर्वक्रमसे बलदायक श्रेष्ठ और उत्तम गुणोंवाली जाननी जैसे पीली से काली, काली से श्वेत, श्वेत से लाल उत्तम होती है। उत्तमपने से सब दोषों को हरती है, लेप से शोभा को नाश करती है, कफ के बीस रोगों को शीघ्र नष्ट करती है, रसायन है, अतीस, अतिविष नाम से प्रसिद्ध है।।४९।।

काकमाची (मकोह) नामगुणाः

काकमाची ध्वांक्षमाची कामची जघनी फला ।
रसायनवरा सर्वतिक्ता स्यात्काकिनी कटुः ।।२५०।।

काकमाची, ध्वांक्षमाची, कामची, जंघनी, फला, रसायनवरा, सर्वतिक्ता, काकिनी, कटु ये मकोह के नाम हैं।।२५०।।

काकमाची त्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा ।
हृद्या रसायनी शोफकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् ।।५१।।

मकोय त्रिदोष को नाशती है, चिकनी है, गर्म है, स्वर और वीर्य को देती है, हृदय में सुख देती है, रसायन है, शोजा, कुष्ठ, बवासीर, ज्वर, प्रमेह इनको जीतती है। मकोह प्रायः सर्वत्र सुलभ है, इसके क्षुप होते हैं, उनमें हरे रङ्ग के फलों के गुच्छे लगते हैं, फूल छोटे छोटे सफेद होते हैं, पकने पर काले या लाल हो जाते हैं, छोटे छोटे लड़के इनको खाते भी हैं। टकसाल में काली भंबोल कहते हैं।।५१।।

काकजङ्घानामगुणाः

काकजंघा नदीकान्ता काकतिक्ता सुलोमजा ।
पारावतपदी काका मदाऽन्या छर्दिकारिणी ।
काकजङ्घा हिमा हन्ति रक्तपित्तकफज्वरान् ।।५२।।

काकजंघा, नदीकान्ता, काकतिक्ता, सुलोमजा, पारावतपदी, काक, मदा, छर्दिकारिणी ये नाम काकजंघा के हैं। काकजंघा शीतल है, रक्तपित्त और कफज्वर इनको नाशती है। काकजंघा प्रायः सब देशों में होती है, इसकी गांठ बालकों के पसली के दर्द और अफारा रोग में देते हैं। जड़ दन्तशूल को दूर करती है।।५२।।

लोध्रद्वयनामगुणाः

लोध्रस्तिरीटः कानीनस्तिलकः संततोद्भवः ।
अन्यो घनत्वक्सरकः श्वेतलोध्रोऽक्षिभेषजम् ।।५३।।

लोध्र, तिरीट, कानीन, तिलक, सन्ततोद्भव ये लोध के नाम हैं। मोटे छिलकेवाला, सरक, श्वेतलोध्र, अक्षिभेषज ये नाम दूसरे प्रकार के लोध के हैं।।५३।।

रोध्रो विरेचकः शीतश्चक्षुष्यः कफपित्तनुत् ।
कषायो रक्तशोफासृग्ज्वरातीसारनाशनः ।
तत्पुष्पं मधुरं ग्राहि सतिक्तं श्लेष्मपित्तजित् ।।५४।।

लोध-जुलाब लगाती है, शीतल है, नेत्रों को हित है, कफपित्त को दूर करती है, कषैली है, रक्त, शोजा, रक्तज्वर, अतिसार इनको नाशती है, लोध का फूल मीठा है, मल को बांधता है, कडुवा है, कफ पित्त को जीतता है, लोध के वृक्ष प्रायः पहाड़ों पर होते हैं, इसके छिलके को उपयोग में लाते हैं। लोध (लोद) पठानीलोद इन नामों से सब जगह मिलता है।।५४।।

वृद्धदारुद्वयनामगुणाः

वृद्धदारुर्महाश्यामा छगली जीर्णवल्कलः ।
अन्या कोटरपुष्पी स्यादावेगी छागलान्यपि ।।५५।।

वृद्धदारु, महाश्यामा, छगली (छगलांत्री) जीर्णवल्कल ये नाम विधारा के हैं। कोटरपुष्पी, आवेगी, छागलानी ये दूसरे विधारा के नाम हैं।।५५।।

वृद्धदारुः कषायोष्णः सरस्तिक्तो रसायनः ।
वृष्यो वातामवातास्रशोफमेहकफाञ्जयेत् ।।५६।।

विधारा कषैला है, गर्म है सर है, कडुवा है, रसायन है, वीर्य को करता है। वात, आमवात, रक्त, शोजा, प्रमेह, कफ इनको जीतता है। विधारा या विधायरा अथवा

विदारा इन नामों से सब जगह मिलता है। शिमला प्रांत के पहाड़ी जंगलो में हमने इसकी बेल देखी है। पहाड़ी लोग इसकी बेल को बुडलकी बेल कहते हैं। इसके पत्र नीचे से सफेद और पीपल के पत्र के से आकार के होते हैं परन्तु नम्र होते हैं॥५६॥

देवदालीनामगुणाः

देवदाली वृत्तकोशी देवताण्डो गरागरी ।
जीमूतस्तारका वेणी जालिन्यायुर्विषापहा ॥५७॥

देवदाली, वृत्तकोशी, देवताण्ड, गरागरी, जीमूत, तारका, वेणी, जालिनी, आयु, विषापहा ये देवदाली के नाम हैं॥५७॥

देवदाली रसे तिक्ता कफार्शः शोफपाण्डुताः ।
नाशयेद्वामनी तीक्ष्णा क्षयहिक्काकृमिज्वरान् ।
देवदाली च कटुका प्रमेहकामलापहा ॥५८॥

देवदाली रस में कडुवी है, छर्दि को करती है, तेज है, कफ, बवासीर, शोजा, पांडुरोग, क्षय, हिचकी, ज्वर इनको नाशती है। देवदाली चर्परा है, प्रमेह और कामला को नाशती है, देवदाली बंदालकी बेल को कहते हैं। इसके फल को बंदाल या बंदालडोडा कहते हैं॥५८॥

हंसपादीनामगुणाः

हंसपादी हंसपदी रक्तपादी त्रिपादिका ।
प्रह्लादिनी कीटमारी कीटमाता मधुस्त्रवा ॥५९॥

हंसपादी, हंसपदी, रक्तपादी, त्रिपादिका, प्रह्लादिनी, कीटमारी, कीटमाता, मधुस्रवा, ये हंसपादी के नाम हैं। कोई कोई लोग हंसराज को हंसपदी कहते हैं॥५९॥

हंसपादी गुरुः शीता हंति रक्तविषव्रणान् ।
विसर्पदाहांतीसारलूताभूतांश्च रोपणी ॥२६०॥

हंसपादी भारी है, शीतल है, रक्त, विष, घाव, विसर्प, दाह, अतिसार, लूता, भूत इनको नष्ट करती है॥२६०॥

सोमवल्लीनामगुणाः

सोमवल्ली यज्ञनेता सोमक्षीरी द्विजप्रिया ।
सोमवल्ली त्रिदोषघ्नी कटुस्तिक्ता रसायनी ॥६१॥

सोमवल्ली, यज्ञनेता, सोमक्षीरी, द्विजप्रिया ये नाम सोमवल्ली के हैं। सोमवल्ली अर्थात् चांदबेल त्रिदोष को नाशती है, चर्परी है, कडुवी है, रसायन है। सोमवल्ली

का वर्णन, सुश्रुतसंहिता और यदुर्वेद में अधिक है। यह प्रायः हिमालय के पर्वतों पर होती है, इसमें शुक्लपक्ष में प्रतिदिन एक एक पत्र निकल आता है। कृष्णपक्ष में कम होता जाता है।।६१।।

आकाशवल्लीनामगुणाः

आकाशवल्ली तु बुधैः कथिताऽमरवल्लरी।
खवल्ली ग्राहिणी तिक्ता पिच्छिलाख्यामयापहा ।।६२।।

आकशवल्ली, अमरवल्ली (निराधार बेल) ये नाम आकाशबेल के हैं। आकाशबेल मल को बांधती है, कडुवी है, वातकफ के रोग को नाश करती है। अमरबेल आकाशबेल निराधार अफतिमुन इन नामों से सब जगह मिलती है, इसकी बेल वृक्षों पर होती है। इस बेल की जड़ नहीं होती, वृक्ष के झाड़ियों के ऊपर ही छाई हुई होती है।।६२।।

नाकुलीनामगुणाः

नाकुली समहा सर्पगंधिनी गन्धनाकुली ।
नकुलेष्टा महासर्पनेत्रा रोचकपत्रिका ।।६३।।

नाकुली, समहा, सर्पगंधिनी, गन्धानाकुली, नकुलेष्टा, महासर्पनेत्रा, रोचकपत्रिका ये नाम नाकुली के हैं।।६३।।

नाकुली तुवरा तिक्ता कटुकोष्णा विनाशयेत् ।
विषलूतावृश्चिकाखुसर्पाणां च कृमिव्रणान् ।।६४।।

नाकुली कषैली, कडुवी और गर्म है। मकड़ी, बीछू, सर्प, कृमि इनके विषों को नाशती है। नाकुली के पेड़ बदरीनारायण के रास्ते में और शिमला पहाड़ में बिलकुल सांप के आकार के गंदले से निकलते रहते हैं। इसके नीचे कंद के आकार का छोटा सा कंद निकलता है, टकसाल में इसको गोहका आदा कहते हैं, इसका कंद जागैला होता है।।६४।।

वटपत्रीनामगुणाः

वटपत्री मोहिनी स्याद्दीपनी रेचनी मता ।
वटपत्री योनिगदान्कषायोष्णा विनाशयेत् ।
तत्फलं स्तम्भनं शीतं वातलं कफपित्तजित् ।।६५।।

वटपत्री, मोहिनी, दीपनी, रेचनी ये वटपत्री के नाम है। वटपत्री कषैली और गर्म है तथा योनि रोगों को नाशती है। वटपत्री का फल स्तंभन है, शीतल है, वात को उपजाता है, कफ–पित्त को जीतता है। वटपत्री को लोग पाषाण भेद की जाती ही मानते हैं, इसके पत्र वटपत्र के समान होते हैं।।६५।।

लज्जालुनामगुणाः

लज्जालुर्मोहिनी स्पृक्का खदिरी गंधकारिणी ।
नमस्कारी शमी पत्रीसमङ्गा रक्तपादिका ।।६६।।

लज्जालु, मोहिनी, स्पृक्का, खदिरी, गंधकारिणी, नमस्कारी, शमी, पत्री, समंगा, रक्तपादिका ये लज्जालू के नाम हैं।।६६।।

लज्जालुः शीतला तिक्ता कषाया श्लेष्मपित्तजित् ।
रक्तपित्तमतीसारं योनिरोगान् विनाशयेत् ।।६७।।

लज्जावन्ती शीतल है, कड़ुवी है, कषैली है, कफपित्त को जीतती है और रक्तपित्त, अतीसार, योनिरोग इनको नाशती है। लाजवन्ती प्रायः बगीचा में लगाई हुई होती है, मनुष्य की छाया या हाथ लगनेसे मुरझा जाती है इसको लोग छुई मुई भी कहते है।।६७।।

मुसलीनामगुणाः

मुसली खलनी तालपत्री कांचनपुष्पिका ।
महावृक्षा वृक्षकन्दः खजूरी तालमूलिका।।६८।।

मुसली, खलनी, तालपत्री, कांचपुष्पिका, महावृक्षा, वृक्षकंद, खर्जूरी, तालमूलिका ये मुसली के नाम है।।६८।।

मुसली मधुरा वृष्या वीर्योष्णा बृंहणी गुरुः ।
तिक्ता रसायनी हंति गुदजाननिलं तथा ।।६९।।

मुशली, मीठी है, वीर्य को उपजाती है, पराक्रम में गरम है, धातु को पुष्ट करती है, भारी है, कड़ुवी है, रसायन है और गुदा के रोगों को तथा वात को नाश करती है। यह सफेद मुसली के नाम से सब जगह मिलती है।।६९।।

कपिकच्छूनामगुणाः

कपिकच्छूः स्वयंगुप्ता कण्डूला दुरवग्रहा ।
चण्डाऽत्मगुप्ता लांगूली मर्कटी स्यात्प्रहर्षणी ।।७०।।

कपिकृच्छू, स्वयंगुप्ता, कण्डूला, दुरवग्रहा, चण्डा, आत्मगुप्ता, लांगूली, मर्कटी, प्रहर्षणी यह कौंच के नाम हैं।।७०।।

कपिकच्छूः परं वृष्या मधुरा बृंहणी गुरुः ।
तद्बीजं वातशमनं वाजीकरणमुत्तमम् ।।७१।।

कौंच बहुत वीर्य को करती है, मीठी है धातु को पुष्ट करती है और भारी है। कौंच का बीज वात को शान्त करता है और उत्तम वाजीकरण अर्थात् भोग में स्त्री को सुख देता है, वीर्य को पैदा करता है, कौंच की बेल सब देशों में होती है, इसके बीज

कौंच के बीज कहने से सब जगह मिलते हैं इसकी फली के ऊपर का रोंगटा शरीर में लगने से तीक्ष्ण खाज पैदा करता है।।७१।।

पुत्रजीवनामगुणाः

पुत्रजीवो गर्भकरो यष्टीपुत्रोऽर्थसाधनः ।
पुत्रजीवो गुरुर्वृष्यो गर्भदः श्लेष्मवातजित् ।।७२।।

पुत्रजीव, गर्भकर, यष्टीपुत्र, अर्थसाधन, ये जीयापोता के नाम हैं। जीयापोता भारी है, वीर्य को उपजाती है, गर्भ को देती है, कफ वात को जीतती है। जीयापोता के वृक्ष कहीं कहीं सब प्रांतों में मिलते हैं। टकसाल के समीप कौशल्या नदी के किनारे बहुत हैं।।७२।।

वंध्यानामगुणाः

वन्ध्या कर्कोटकी देवी कुमारी विषनाशिनी ।
मनोज्ञा नागदमनी वन्ध्या योगीश्वरी मता ।।७३।।

(वंध्याकर्कोटकी) वंध्या, कर्कोटकी, देवी, कुमारी, विषनाशिनी, मनोज्ञा, नागदमनी, वंध्या, योगीश्वरी ये बांझककोड़ी के नाम हैं।।७३।।

वन्ध्याकर्कोटकी लघ्वी कफनुद्व्रणशोधनी ।
सर्पदंशहरा तीक्ष्णा वीसर्पविषनाशिनी ।।७४।।

बांझककोड़ी हलकी है, कफ को दूर करती है, घाव को शोधती है, सांप के डसे हुए को आरोग्य करती है, तेज है, विसर्प और विष को नाशती है। बांझककोड़ी की बेल करेले की सी छोटी होती है, फूल तो आते हैं परंतु फल कुछ नहीं लगता इसी से वन्ध्या इसका नाम हुआ। इसके नीचे कंद होता है प्रायः सब देशों में मिलता है।।७४।।

विष्णुक्रांतानामगुणाः

विष्णुक्रान्ता नीलपुष्पी जया वश्याऽपराजिता ।
विष्णुक्रान्ता कटुर्मेध्या कृमिव्रणकफाञ्जयेत् ।।७५।।

विष्णुक्रांता, नीलपुष्पी, जया, वश्या, अपराजिता ये नाम विष्णुक्रांता के हैं। विष्णुक्रांता चर्परी है, बुद्धि को बढ़ाती है, कृमि, घाव, कफ इन्हीं को जीतती है।।७५।।

शंखपुष्पीनामगुणाः

शङ्खपुष्पी शङ्खनाम्नी किरीटी कम्बुमालिनी ।
शंखाहुली स्मृतिहिता मेध्या वर्णविलासिनी ।।७६।।

शंखपुष्पी, शंखनाम्नी, किरीटी, कंबुमालिनी, शंखाहुली, स्मृतिहिता, मेध्या,

वर्णविलासिनी ये शंखपुष्पी के नाम हैं।।७६।।

शंखपुष्पी सरा मेध्या मता चेतोविकारिणी ।
रसायनी कषायोष्णा स्मृतिदा मोहनाशिनी ।।७७।।

शंखपुष्पी सर है, बुद्धि को बढ़ाती है, चित्त को सुख देती है, रसायन कषैली और गर्म है, स्मृति को देती है और मोहं को नाशती है। शंखपुष्पी, संखावली, संखाहुली इन नामों से मिलती है, अंबाले जिले में इसके छोटे छोटे प्रसर हमने बहुत देखे हैं।।७७।।

दुग्धिकानामगुणाः

दुग्धिका मधुपर्णी स्यात्क्षीरिणी स्वादुपुष्पिका ।
दुग्धिकोष्णा गुरू रूक्षा वातला गर्भकारिणी ।
स्वादुर्विष्टम्भिनी वृष्या कफकुष्ठकृमीञ्जयेत् ।।७८।।

दुग्धिका, मधुपर्णी, क्षीरिणी, स्वादुपुष्पिका ये दूधी के नाम हैं। दूधी–गर्भ, भारी और रूखी है, वात को उपजाती है, गर्भ को करती है, स्वादु है, विष्टभ करती है, वीर्य को करती है। कफ, कुष्ठ, कृमि, इनको जीतती है, यह तीन चार किस्म की होती है, परंतु जिसको छोटी दूधी कहते हैं वह लाल पत्तोंवाली दूधली अधिकतर ली जाती है।।७८।।

अर्कपुष्पीनामगुणाः

अर्कपुष्पी क्रूरकन्दा जलकामाऽभिरण्डिका ।
अर्कपुष्पी कृमिश्लेष्ममेहपित्तविकारजित् ।।७९।।

अर्कपुष्पी, क्रूरकंदा, जलकामा, अभिरंडिका ये नाम अर्कपुष्पी के हैं। अर्कपुष्पी–कृमि, कफ, प्रमेह, पित्त विकार इनको नाशती हैं, अर्कपुष्पी की बेल वर्षात में होती है, पत्र गुरु व पत्रों के समान होते हैं, फूल गोल होते हैं, तोड़ने से दूध निकलता है।।७९।।

भल्लातकनामगुणाः

भल्लातको नभोवल्ली वीरवृक्षोऽग्निवक्त्रकः ।
आरुष्करस्तथा रूक्षस्तपनोऽग्निमुखी धनुः ।।८०।।

भल्लातक्र, नभोवल्ली, वीरवृक्ष, अग्निवक्रक, आरुष्कर, रूक्ष, तपन, अग्निमुखी, धनुष ये भिलावे के नाम हैं।।२८०।।

भल्लातकः कषायोष्णः शुक्लो मधुरो लघुः ।
वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीगदान् ।
हन्ति गुल्मज्वरश्वित्रवह्निमान्द्यकृमिव्रणान् ।।८१।।

भिलावा–कषैला है, गर्म है, वीर्य को उपजाता है, मीठा है, हलका है, वातकफ,

उदररोग, अफारा, कुष्ठ, बवासीर, ग्रहणीरोग, गुल्म, ज्वर, श्वित्रकुष्ठ, मंदाग्नि, कृमि और व्रण इन्हों को नाशता है। भिलावा प्रसिद्ध विष हैं, सब जगह पंसारी की दुकान में मिलता है, इसके वृक्ष के नीचे जाने से या इसकी हवा लगने से शरीर में सूजन आ जाती हैं।।८१।।

चरपोटानामगुणाः

चरपोटा दीर्घपत्री कुन्तली तिक्तका मता ।
चरपोटा हिमा रूक्षा भेदिनी श्वासकासजित् ।।८२।।

चरपोटा, दीर्घपत्री, कुन्तली, तिक्तता ये नाम रिपोटन के हैं। चिरपोटन शीतल है, रूखी है, भेदन है, श्वास और खांसी को जीतती है, इसके क्षुप होते हैं, फल कच्चे कड़ुवे और पकने पर खट्टे मीठे होते हैं।।८२।।

द्रोणपुष्पीनामगुणाः

द्रोणपुष्पी श्वसनकः पालिन्दी कुंभयोनिका ।
छत्राणी छत्रको द्रोणा कौण्डिन्यो वृक्षसारकः ।।८३।।

द्रोणपुष्पी, श्वसनक, पालिंदी, कुंभयोनि का, क्षत्राणी, छत्रक, द्रोणा, कौंडिन्य,वृक्षसारक ये द्रोणपुष्पी के नाम हैं।।८३।।

द्रोणपुष्पी गुरू रुक्षा स्वादूष्णा वातपित्तनुत् ।
भेदिनी कामलाशोफकफक्रिमिहरा कटुः ।।८४।।

द्रोणपुष्पी भारी है, रूखी है, स्वादु है, गर्म है, वातपित्त को दूर करती है, भेदन है, कामला, शोजा, कफ, कृमि इनको हरती है, चर्परी है, द्रोणपुष्पी, गूंमा, दड़घल इन नामों से सब जगह मिलती है, टकसाल में इसको गुम्मा कहते हैं।।८४।।

ब्राह्मींब्राह्ममडूकीनामगुणाः

ब्राह्मी सरस्वती सोमा सत्याह्वा ब्रह्मचारिणी ।
मण्डूकपर्णी माण्डूकी त्वष्टी दिव्या महौषधिः ।।
कपोतविटका मुनिका लावण्या सोमवल्लरी ।।८५।।

ब्राह्मी, सरस्वती, सोमा, सत्याह्वा, ब्रह्मचारिणी ये ब्राह्मीके नाम हैं और मण्डूपर्णी, माण्डूकी, त्वष्टी, दिव्या, महौषधि, कपोतविटका, मुनिका, लावण्या, सोमवल्लरी ये नाम ब्रह्ममण्डूकी के हैं।।८५।।

ब्राह्मी हिमा सरा स्वादुर्लघुर्मेध्या रसायनी ।।८६।।
स्वर्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपाण्डुमेहास्रकासजित् ।
विषशोफज्वरहरा तद्वन्मण्डूकपत्रिणी ।।८७।।

ब्राह्मी–शीतल है, सर है, स्वादु है, हलकी है, बुद्धि को देती है, रसायन, स्वर को

देती है, स्मृति को देती है, कुष्ठ, पाण्डु, प्रमेह, रक्त, खांसी इन्हों को जीतती है, विष, शोजा, ज्वर, इनको हरती है, ये ही सब गुण मण्डूकी में हैं। ब्राह्मी नहरों के किनारे हमने बहुत देशों में देखी है परन्तु शिमिला प्रांत में बहुत ही देखी है, तर भूमि में जल के किनारे बहुत होती है, ब्राह्मी नाम से प्रसिद्ध है॥८६-८७॥

ब्रह्मसुवर्चलानामगुणाः

सुवर्चलाऽर्ककान्ता स्यात्सूर्यभक्ता सुखोद्भवा ।
सूर्यावर्त्ता रविप्रीता त्वन्या ब्रह्मसुवर्चला ॥८८॥

सुवर्चला, अर्ककान्ता, सूर्यभक्ता, सुखोद्भवा, सूर्यावर्ता, रविप्रीता, और दूसरी ब्रह्मसुवर्चला ये नाम सौंचली ब्रह्मसौंचली के हैं॥८८॥

सुवर्चला गुरुः शीता मूत्रला कफवातजित् ।
अन्योष्णा कुष्ठमेहाश्मकृच्छ्रज्वरहरा लघुः ॥८९॥

सौंचली–भारी है, शीतल है, मूत्र को उपजाती है, वात कफ को जीतती है, ब्रह्मसौंचली गर्म हैं, कुष्ठ, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर इनको हरती है और हलकी है, हुलहुल नाम से प्रसिद्ध है, इसके क्षुप होते हैं उनमें ऊपर की खड़ी खड़ी फलियें लगती हैं॥८९॥

मत्स्याक्षीनामगुणाः

मत्स्याक्षी बालिका मत्स्यगन्धी मत्स्यादनी तथा ।
मत्स्याक्षी ग्राहिणी शीता कुष्ठपित्तकफास्रनुत् ॥९०॥

मत्स्याक्षी, बालिका, मत्स्यगन्धी, मत्स्यादनी, ये नाम मत्स्याक्षी के हैं। मत्स्याक्षी मल को बांधती है, शीतल है, कुष्ठ, पित्त, कफ, रक्तविकार इनको जीतती है, मत्स्याक्षी के छोटे छोटे क्षुप होते हैं, पत्र छोटे होते हैं इसको मछेली भी कहते हैं॥९०॥

जलपिप्पलीनामगुणाः

तोयपिप्पल्यम्बुवल्ली पलूरः कञ्चटस्तथा ।
जलपिप्पलिका हृद्या चक्षुष्या शुक्रला लघुः ।
संग्राहिणी हिमा रूक्षा रक्तदाहव्रणापहा ॥९१॥

तोयपिप्पली, अंबुवल्ली, पलर, कंचट ये जलपीपल के नाम हैं। जलपीपल हृदय में सुख देती है, नेत्रों में हित करती है, वीर्य को उपजाती है, हलकी है, मल को बांधती है, शीतल है, रूखी है, रक्त, दाह, घाव इनको नाशती है। जलपीपल प्रायः सजलभूमि में होती है। जलपीपल नाम से मिल सकती है॥९१॥

गोजिह्वानामगुणाः

गोजिह्वा गोजिका गोभी दार्विका स्वरपर्णिनी ।

गोजिह्वा वातला शीता ग्राहिणी कफपित्तनुत् ।
हृद्या प्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरा लघुः ॥९२॥

गोजिह्वा, गोजिका, गोभी, दार्विका, स्वरपर्णिनी ये गोभी के नाम हैं। गोभी वात को करती है, शीतल है, मल को बांधती है, कफ–पित्त को दूर करती है, हृदय में गुण करती है, प्रमेह, खांसी, रक्त, घाव ज्वर इनको हरती है और हलकी है। यह जंगल में होती है कुछ लोग इसको गाजुवाँ कहते हैं।।९२।।

नागदमनीनामगुणाः

नागाह्वा दमनी नागगन्धा भुजगपर्णिनी ।
स्यान्नागदमनी वर्ण्या लूतासर्पविषापहा ॥९३॥

नागाह्वा, दमनी, नागगन्धा, भुजगपर्णिनी ये नागदौन के नाम हैं। नागदौनी वर्ण को निखारती है, मकड़ी और सर्प के विष को हरती है। नागदौन नाम से प्रसिद्ध है।।९३।।

गुञ्जानामगुणाः

गुञ्जा शिखण्डिका ताम्रा रक्तिका काकनासिका ।
श्वेताऽन्या चक्रिका चूडा दुर्मुखा काकपीलुका ॥९४॥

गुञ्जा, शिखंड़िका, ताम्रा, रक्तिका, काकनासिका ये नाम लालचिरमिटी के हैं और श्वेता, चक्रिका, चूड़ा, दुर्मुखा, काकपीलुका ये नाम सुपेद चिरमिटी के हैं।।९४।।

गुञ्जा केश्या बलकरा त्वच्या पित्तकफापहा ।
नेत्रामयहरा वृष्या हन्ति कण्डूग्रहव्रणान् ।
कृमीन्प्रलुप्तकुष्ठानि तच्छ्वेतापि च शस्यते ॥९५॥

चिरमिटी बालों को बढ़ाती है, बल को करती है, त्वचा में सुख देती है, पित्तकफ को हरती है,नेत्रकेरोगोंको हरती है, वीर्य को देती है, खाज, ग्रहदोष, घाव, कृमि, बालों का उड़ना, कुष्ठ इन्हों को दूर करती है। श्वेत चिरमिटी में भी यही गुण हैं। चिरमिटी, रक्तक, घुंघुची, गुञ्जा इन नामों से सब जगह मिलती है। इसकी बेल होती है उसमें अमली के से पत्र लगते हैं, फलियों का गुच्छा सूख जाने पर फली खिल जाती है, उसमें से गुञ्जा निकलती हैं, यह सर्राफों के यहां सोना तोलने में भी काम आती है इसको रत्ती कहते हैं।।९५।।

वेल्लन्तरनामगुणाः

वेल्लन्तरो दीर्घपत्रो वीरद्रुर्बहुवारकः ।
वेल्लन्तरोऽश्मनुद् ग्राही कफकृच्छ्रानिलार्तिजित् ॥९६॥

वेल्लंतर, दीर्घपत्र, वीरद्रु, बहुवारक ये बेलि के नाम हैं। बेलि पथरी को दूर करती

है, मल को बांधती है, कफ, मूत्रकृच्छ्र, वातरोग इनको नाश करती है, वेल्लंतर के वृक्ष नर्मदा के किनारे अधिकता से होते हैं, इनमें कांटे भी होते हैं, आकार प्रायः खैर के वृक्षकासा होता है, इसको वीरतरु भी कहते हैं॥९६॥

वन्दानामगुणाः

वन्दाकः स्याद् वृक्षरुहा शेखरी कामवृक्षकः ।
वृक्षादनी कामतरुः कामिन्यापदरोहिणी ।
वन्दाकः कण्ठवातास्त्रशोफव्रणविषापहः ॥९७॥

वंदाक, वृक्षरुहा, शेखरी, कामवृक्षक, वृक्षादनी, कामतरु, कामिनी, आपदरोहिणी ये वंदा के नाम हैं। वंदा—कंठरोग, वातरक्त, शोजा, घाव, विष इनको नाशता है यह अन्य वृक्ष के टहने में पैदा होता है, वंदानाम से प्रसिद्ध है॥९७॥

पिण्डारनामगुणाः

पिण्डारः करहाटः स्यात्तीक्ष्णकालः कुरङ्गकः ।
पिण्डारो मधुरः शीतः शोथपित्तकफापहः ॥९८॥

पिंडार, करहाट, तीक्ष्णकाल, कुरंगक ये पिंडार के नाम हैं। पिंडार मीठा और शीतल है। शोजा, पित्त, कफ इनको नाश करता है॥९८॥

छिक्किकानामगुणाः

छिक्किका क्षवकः क्रूरो नासा संवेदना पटुः ।
छिक्किका पित्तला कुष्ठक्रिमिवातकफापहा ॥९९॥

छिक्किका, क्षवक, क्रूर, नासा, संवेदना, पटु ये नकछींकनी के नाम हैं। नकछींकनी पित्त को उपजाती है। और कुष्ठ, कृमि, वात, कफ इनको नाशती है इसके बहुत छोटे क्षुप होते हैं नकछींकनी नाम से प्रसिद्ध है॥९९॥

रोहितवृक्षनामगुणाः

रोहितो दाडिमीपुष्पो रोहितः कूटशाल्मलिः ।
प्लीहारी रोहिणी रोही रक्तघ्नः पारिजातकः ।
रोहितकः सरो गुल्मयकृत्प्लीहोदरापहः ॥३००॥

रोहित, दाडिमीपुष्प, रोहिताह्व, कूटशाल्मलि, प्लीहारी, रोहिणी, रोही, रक्तघ्न, पारिजातक ये नाम रोहित के हैं। रोहित सर है, गुल्म, यकृत्, प्लीहोदर इनको हरता है॥३००॥

मोचरसनामगुणाः

मोचकः स्यान्मोचरसः शाल्मलीवेष्टकः स्मृतः ।
मोचनिर्यासकः पिच्छा मोचास्रावी च वेष्टकः ॥१॥

मोचक, मोचरस, शाल्मलीवेष्टक, मोचनिर्यासक, पिच्छा, मोचास्रावी, वेष्टक ये मोचरस के नाम हैं॥१॥

मोचकः शीतलो ग्राही गुरुर्वृष्योऽतिसारजित् ।
प्रवाहकासपित्तास्रकफदाहनिबर्हणः ॥२॥

मोचरस शीतल है, मल को बांधता है, भारी है, धातु को पुष्ट करता है, अतिसार को जीतता है और प्रवाहिका, खांसी, रक्तपित्त, कफ, दाह इनको दूर करता है। मोचरस सींबल के गोंद का नाम है, कोई मोखावृक्ष के गोंद को मोचरस मानते हैं। मोचरस नाम से प्रसिद्ध है॥२॥

अजगन्धानामगुणाः

अजगन्धा बस्तगन्धा कबरी पूतवर्वरः ।
अजगन्धा लघू रुच्या हृद्या तु कफवातनुत् ॥३॥

अजगंधा, बस्तगंधा, कवरी, पूतवर्वर ये अजगंधा के नाम हैं। अजगंधा हलकी है, रुचि उपजाती है, हृदय में हित है और कफवात को जीतती है, अजगंधा, जंगली अजमोद नाम से प्रसिद्ध है॥३॥

सहचरनामगुणाः

सौरेयकः सहचरः सौरेयः किङ्करातकः ।
दासीसहचरः किण्टी शैर्षको मृदुकण्टकः ॥४॥

सौरेयक, सहचर, सौरेय, किंकरातक, दासीसहचर, किंटी, शैर्षक, मृदुकण्टक ये पियावासा के नाम हैं॥४॥

रक्तपुष्पः कुरुवकः पीतो ज्ञेयः कुरण्टकः ।
नील आर्त्तगलः प्रोक्तो बाणा गोदनपाक्यपि ॥५॥

रक्तपुष्प, कुरुवक, ये पीत कुरंट के नाम हैं। आर्तगल, बाणा, गोदनपाकी ये नाम नीलकुरंटा के हैं॥५॥

सौरेयः कुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः ।
तिक्तोष्णो मधुरः केश्यः सुस्निग्धः केशरञ्जनः ॥६॥

पीयावासा और सब प्रकार का कुरंटा—कुष्ठ, वातरक्त, कफ, खाज, विष इनको नाशता है, यह कडुवा है, गर्म है, मीठा है, बालों को उपजाता हैं, सुंदर चिकना है, बालों को रंगता है। ये पुष्प के रंग के भेद से चार प्रकार का होता है। इसके पेड़ में काँटे भी होते हैं, पीयाबांसा, कालाबांसा इन नामों से प्रसिद्ध है॥६॥

कटभीनामगुणाः

श्वेतस्यन्दा श्वेतपुष्पा कटभिर्गिरिकर्णिका ।

सिताऽपराजिता श्वेता विषघ्नी मेहनाशिनी ॥७॥

श्वेतस्यंदा, श्वेतपुष्पा, कटभी, गिरिकर्णिका, सिता, अपराजिता, श्वेता, विषघ्नी मेहनाशिनी ये कटभी के नाम हैं॥७॥

नीलस्यन्दा व्यक्तगन्धा नीलपुष्पा गवादिनी ।
श्वेतस्यन्दाद्वयं शीतं ग्रहघ्नं दृष्टिकुण्ठकृत् ।
कुष्ठशूलत्रिदोषामशोफव्रणविषापहम् ॥८॥

नीलस्यंदा, व्यक्तगंधा, नीलपुष्पा, गवादिनी ये नाम श्वेतस्यंदा के हैं। ये दोनों कटभी शीतल हैं, ग्रहदोष को नाशती हैं, दृष्टि को कुंठित करती हैं, कुष्ठ, शूल, त्रिदोष, आम, शोजा, घाव, विष इनको नाशती हैं, कटभी नाम से प्रसिद्ध है॥८॥

इक्षुरनामगुणाः

इक्षुरः क्षुरमेधाण्डः कोकिलाक्षः क्षुर स्मृतः ।
तैलकण्डस्तिक्षरिक्षुर्बालिकाचेक्षुगन्धिका ।
इक्षुरः शीतलो वृष्यो गुरुर्वातकफास्रजित् ॥९॥

इक्षुर, क्षुरमेधाण्ड, कोकिलाक्ष, क्षुर, तैलकंड, तिक्षरिक्षु, बालिका, इक्षुगंधिका ये तालमखाने के नाम हैं। तालमखाना शीतल है, धातु को उपजाता है, भारी है, वातकफरक्त को जीतता है, तालमखाने के नाम से सब जगह प्रसिद्ध है॥९॥

कार्पासनामगुणाः

कार्पासः पटशूलश्छादवनी वादरः पिचुः ।
कार्पासको लघुः कोष्णो मधुरो वातनाशनः ।
तद्बीजं स्तन्यदं वृष्यं स्निग्धं कफकरं गुरु ॥१०॥

कार्पास, (नन्दन वन) पटशूल, छादवनी, वादर, पिचु ये नाम कपास के हैं कपास हलका है, कुछ गर्म है, मीठा है, वात को नाशता है। कपास का बीज अर्थात् विनोला दूध को देता है, धातु को पुष्ट करता है, चिकना है, कफ को करता है, भारी है, कपास की रुई होती है, सो सब जगह प्रसिद्ध है॥१०॥

आरामशीतलानामगुणाः

आरामशीतला देवी गन्धा कुक्कुरमर्दनः ।
आरामशीतला शीता कटु पित्तकफास्रजित् ॥११॥

आरामशीतला, देवी, गन्धा, कुक्कुरमर्दन ये नाम आरामशीतलाके हैं।आरामशीतला शीतल और चर्परी है, पित्त, कफ, रक्त इनको जीतती है। इसके पत्रों में गन्ध होती है, इसको गन्धपत्री और गन्धपलासी भी कहते हैं॥११॥

कुक्कुरद्रुनामगुणाः

कुक्कुरद्रुस्ताम्रचूडः सूक्ष्मपत्रो मृदुच्छदः ।
कुक्कुरद्रुः कटुस्तिक्तो ज्वररक्तकफापहः ।।१२।।

कुक्कुरद्रु, ताम्रचूड़, सूक्ष्मपत्र, मृदुच्छद ये नाम कुकरोंदाके हैं,। कुकरोंदा चर्परा और कडुवा है, ज्वर, कफ इनको नाशता है। इसके जंगलों में लम्बे लम्बे क्षुप होते हैं, इसको कुकरोंदा कहते हैं। पत्र तमाखू के से होते हैं ऊपर लाल शिखा होती है।।१२।।

वामीनामगुणाः

वामी शंखधरा वारिब्राह्मी च हिलमोचिका ।
वामी शोफहरा कुष्ठपित्तश्लेष्मानिलापहा ।।१३।।

वामी, शंखधरा, वारिब्राह्मी, हिलमोचिका ये वामी के नाम हैं। वामी शोजाका हरती है, कुष्ठ, पित्त, कफ, वात इनको दूर करती है। इसको हुलहुलशाक भी कहते हैं ये ब्राह्मी की जाति का ही क्षुप हैं, प्रायः जल के किनारे में होती है।।१३।।

शरपुंखानामगुणाः

शरपुंखा कालशाकं प्लीहारिः कालका मता
शरपुंसा यकृत्प्लीहदुष्टव्रणविषापहा ।
तिक्ता कषाया कासास्रश्वासज्वरहरा लघुः ।।१४।।

शरपुखा, कालशाक, प्लीहारि, कालका ये शरपुंखा के नाम हैं। शरपुंखा यकृत् तिल्लीरोग, दुष्टघाव, विष इनको नाशती है, कषैली और कडुवी है, खांसी, रक्त, श्वास, ज्वर इनको हरती है तथा हलकी है, सरफोका सरपुंखा नाम से प्रसिद्ध है।।१४।।

बलामोटानामगुणाः

बलामोटा जया सूक्ष्मपत्रा ज्ञेयाऽपराजिता ।
बलामोटा विषश्लेष्मकृच्छ्रनुद्विजयप्रदा ।।१५।।

बलामोटा, जया, सूक्ष्मपत्रा, अपराजिता ये बलामोटा के नाम हैं। बलामोटा विष, कफ, कृच्छ्र इनको दूर करती है और विजय को देती है नागदमन का ही भेद बलामोटा होती है, इसके और नागदमन के गुण भी एक से ही हैं।।१५।।

सुदर्शनानामगुणाः

सुदर्शना सोमवल्ली चक्राङ्का मधुपर्णिका ।
सुदर्शना स्वादुरुष्णा कफशोफास्रवातजित् ।।१६।।

सुदर्शना, सोमवल्ली, चक्रांका, मधुपर्णिका ये नाम सुदर्शना के हैं। सुदर्शना स्वादु

और गर्म है, कफ, शोजा, रक्तवात इनको जीतता है कोई सुदर्शन को सुदर्शना कहते है, और गुण भी प्राय: इसमें सुदर्शन के ही हैं।।१६।।

मयूरशिखानामगुणा:

मयूराह्वा शिखा ज्ञेया साहस्री मधुकच्छदा ।
मयूराह्वा शिखा लघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित् ।।१७।।

मयूराह्वा, शिखा, साहस्री, मधुकच्छदा ये नाम मोरशिखा के हैं। मोरशिखा हलकी है, पित्त, कफ, अतिसार इनको जीतती है, इसके क्षुप प्राय: पक्के तालावों के किनारे देखे हैं, पत्ते कटीली से होते हैं, ऊपर मोर की सी शिखा होती है इसलिए इसको मोरशिखा कहते हैं।।१७।।

लक्ष्मणानामगुणा:

लक्ष्मणा पुत्रदा रक्ता बिन्दुपत्रा च नागिनी ।
गोक्षीरसदृशं पुष्पं रोमवल्लिसमन्वितम् ।।१८।।

लक्ष्मणा, पुत्रदा, रक्ता, बिंदुपत्रा, नागिनी ये नाम लक्ष्मणा के हैं। गौ के दूध के समान सफेद फूल हो रोम और बेल से युक्त हो।।१८।।

रक्तबिंदुश्च पत्रेषु लक्ष्मणाकारमुच्यते ।
लक्ष्मणा गर्भदा शीता सरा वृष्या त्रिदोषनुत् ।।१९।।

लालबून्द के समान पत्रों पर लाल लाल छीटे के से होते हैं, यह लक्ष्मणा का आकार कहा है, लक्ष्मणा गर्भ देती है, शीतल है, सर है, धातु को पुष्ट करती है, त्रिदोष को दूर करती है। लक्ष्मणा की बेल होती है, इसमें बारीक बारीक रोम होते हैं, फूल सफेद होते हैं, इसमें से दूध भी निकलता है। नीचे सफेद कन्द होता है, इसको पुत्रदा भी कहते हैं। इसके अभाव में सफेद फूल की कटेली लेना चाहिये, दर्भंगा की ओर अन्य कन्द को लक्ष्मणा मानते हैं विहार के वैद्य उसी को लेते हैं।।१९।।

मांसरोहिणीनामगुणा:

मांसरोहिण्यतिरुहा वृत्ता चर्मकसा कसा ।
स्यान्मांसरोहिणी वृष्या सरा दोषत्रयापहा ।।२०।।

मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकसा, कसा ये नाम रोहिणी के हैं। मांसरोहिणी धातु को बढ़ाती है, सर है त्रिदोष को हरती है।।२०।।

अस्थिसंहारकनामगुणा:

अस्थिसंहारको वज्रवल्लरी क्रोष्टुघण्टिका ।
वज्राङ्गी ग्रंथिमान्वज्रप्रोक्ता स्यादस्थिशृंखला ।
अस्थिसंहारक: शीतो वृष्यो वातहरोऽस्थियुक् ।।२१।।

अस्थिसंहारक, वज्रवल्लरी, क्रोष्टु–घटिका, वज्रांगी, ग्रंथिमान्, वज्रप्रोक्ता, अस्थिश्रृंखला ये नाम हड़संहारी के हैं। हड़संहारी शीतल है, धातु को पुष्ट करती है, वात को हरती है और हड्डी को जोड़ती है। इसकी बेल होती है, थोड़ी थोड़ी दूर पर सौंगल की सी गांठ होती है।।२१।।

अर्कनामगुणा

अर्कः सूर्याह्वयः क्षीरी सदापुष्पो विकीरणः ।
मन्दारो वसुकोऽलर्को राजाह्वो दीर्घपत्रकः ।।२२।।

अर्क, सूर्याह्वय, क्षीरी, सदापुष्प, विकीरण, मन्दार, वसुक, अलर्क राजाह्व दीर्घपत्रक ये नाम आक के हैं, यह लाल और श्वेत भेद से दो प्रकार का होता है।।२२।।

अर्कद्वयं शंखवातकुष्ठकण्डू विषव्रणान् ।
निहंति प्लीहगुल्मार्शोयकृच्छ्लेष्मोदरक्रिमीन् ।।२३।।

दोनों आक शंखवात, कुष्ठ, खाज, विष, घाव, तिल्लीरोग, गुल्म बवासीर, यकृत् कफ, उदररोग, कृमि इनको नाशते हैं। आक, मदार इन नामों से प्रसिद्ध है।।२३।।

करवीरनामगुणाः

करवीरोऽश्वहा श्वेतपुष्पा स्याच्छतपुष्पकः ।
रक्तपुष्पोऽपरश्चण्डो लगुडः करवीरकः ।।२४।।

करवीर, अश्वहा, श्वेतपुष्पा, शतपुष्पक, ये नाम सफेद कनेर के हैं। रक्तपुष्प चंड़, लगुड़, करवीरक ये नाम लाल कनेर के हैं।।२४।।

करवीरद्वयं नेत्रशोफकण्डूव्रणापहम् ।
लघूष्णं कृमिकण्डूघ्नं भक्षितं विषवन्मतम् ।।२५।।

दोनों कनेर नेत्ररोग, शोजा, खाज, घाव इनको नाशते हैं, हलके हैं, गर्म हैं, कृमि और खाज को हरते हैं, खाने में विष के समान माने हैं, कनेर प्रसिद्ध है।।२५।।

धत्तूरनामगुणाः

धत्तूरः कितवो धूर्तो देवता मदनः शठः ।
उन्मत्तो मातलस्तूरी तरकः कनकाह्वयः ।।२६।।

धत्तूर, कितव, धूर्त, देवता, मदन, शठ उन्मत्त, मातल, तूरी, तरक, कनकाह्वय ये नाम धतूरा के हैं।।२६।।

धत्तूरो मदवर्णाग्निवान्तिकुञ्जरकुष्ठनुत् ।
उष्णो गुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः ।।२७।।

धतूरा–मद, वर्ण, अग्नि, छर्दि, हस्तिकुष्ठ इनको दूर करता है, गर्म है, भारी है, घाव,

कफ, खाज, कृमि, विष इनको नाशता है, धतूरा सब जगह प्रसिद्ध है।।२७।।

कलिकारीनामगुणाः

कलिकारी वह्निमुखी लाङ्गली गर्भपातिनी ।
विशल्या हलिनी शीरी प्रभाता शुक्लपुष्पिका ।।२८।।
विद्युदुल्काऽग्निजिह्वा च कथिता पुष्पसी भरा ।
वह्निशिखाऽग्निका ज्ञेया नलरन्ध्री च सा स्मृता ।।२९।।

कलिकारी, वह्निमुखी, लांगली, गर्भपातिनी, विशल्या, हलिनी, शीरी, प्रभाता, शुक्लपुष्पिका, विद्युत; उल्का, अग्निजिह्वा, पुष्पसी, भरा, वह्निशिखा, अग्निका, नलरंध्री ये कलहारी के नाम हैं।।२८-२९।।

कलिकारी सरा कुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित् ।
तीक्ष्णोष्णा कृमिनुल्लघ्वी पित्तला गर्भपातिनी ।।३३०।।

कलहारी सर है, कुष्ठ, शोजा, बवासीर, घाव, शूल इनको नाशती है, तेज और गर्म है, कृमि को दूर करती है, हलकी है, पित्त को उपजाती है, गर्भ को गिराती है। कलिहारी, लांगलीकंद, अग्निशिखा, इन नामोंसे प्रसिद्ध है।हलदी केरू पत्तोंवाली लंबी पूँछ सी जमीन से निकलती है, नीचे से हलदी की सी गांठों का गुच्छा निकलता है, ऊपर अग्नि की लाट के रंग का फूल निकलता है। टकसाल में इसको नगरौडी कहते हैं।।३३०।।

कुमारीनामगुणाः

कुमारी मण्डला माता गृहकन्याऽतिपिच्छला ।
रसायनी कटिकिनी सवराऽन्या वनोद्भवा ।।३१।।

कुमारी मंडला, माता, गृहकन्या, अतिपिच्छला, रसायनी, कटिकिनी, सवरा और वनोद्भवा यै कुँवारपट्ठा के नाम हैं।।३१।।

कुमारी भेदनी शीता यकृत्प्लीहकफज्वरान् ।
निहन्ति ग्रन्थिविस्फोटपित्तरक्तत्वगामयान् ।।३२।।

कुँवारपट्ठा भेदन और शीतल है, यकृत, प्लीहरोग, कफ, ज्वर इनको नाशता है और ग्रंथि, विस्फोट, रक्तपित्त, त्वचारोग इनको दूर करता है, घीकुँवार या गुवाँरपाठे के नाम से प्रसिद्ध है।।३२।।

भङ्गानामगुणाः

भङ्गाऽङ्गजा मातुलानी मोहिनी विजया जया ।
भङ्गा कफहरा तिक्ता ग्राहिणी दीपनी लघुः ।
तीक्ष्णोष्णा पित्तलानाहमदकृच्चाग्निवर्द्धिनी ।।३३।।

भंगा, अंगजा, मातुलानी, मोहिनी, विजया, जया ये भांग के नाम हैं। भांग कफ को हरती है, कडुवी है, मल को बांधती है, अग्नि को जगाती है। हलकी है, तेज है, गर्म है, पित्त को उपजाती है, अफारा और मद को करती है, अग्नि को बढ़ाती है, भांग सब जगह प्रसिद्ध है।।३३।।

काञ्चनीनामगुणाः

काञ्चनी शोणफलिनी काकायुः काकवल्लरी ।
काञ्चनी स्तन्यदा मूर्द्धव्यथादोषत्रयापहा ।।३४।।

कांचनी, शोणफलिनी, काकायु, काकवल्लरी ये कांचनी के नाम हैं। कांचनी दूध बढ़ाती है, शिर की पीड़ा, त्रिदोष इनका नाश करती है।।३४।।

दूर्वानामगुणाः

दूर्वा शस्या शीतकरी गोलोमी शतपर्विका ।
अन्या श्वेता श्वेतदण्डा भार्गवी दुर्मता रुहा ।
दूर्वा हिमा विसर्पास्रतृट्पित्तकफदाहजित् ।।३५।।

दूर्वा, शस्या, शीतकरी, गोलोमी, शतपर्विका ये दूबके नाम हैं। श्वेता, श्वेतदंडा, भार्गवी, दुर्मता, रुहा, ये श्वेतदूर्वा के नाम हैं। दूब शीतल है, विसर्प , रक्त, तृषा, पित्त, कफ दाह इनको जीतती है।।३५।।

गण्डदूर्वानामगुणाः

गण्डदूर्वा मत्स्यगन्धा मत्स्याक्षी शकुलादनी ।
गण्डदूर्वा हिमा लोहद्राविणी ग्राहिणी लघुः ।
दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा ।।३६।।

गंडदूर्वा, मत्स्यगंधा, मत्स्याक्षी, शकुलादनी ये गंडदूब के नाम हैं। गंडदूब शीतल है, लोहा को तावती है, मल को बांधती है, हलकी है, दाह, तृषा, कफ, रक्त, कुष्ठ, पित्तज्वर इनको दूर करती है, गांडर दूब मोटे किस्म की दूब होती है।।३६।।

काशनामगुणाः

काशः सुकाण्डः काशेक्षुर्ऋषीकः श्वेतवासरः ।
इक्ष्वारिकेक्षुकाशश्च स चैवेक्षुरसः स्मृतः ।
कासकृच्छ्राश्मदाहास्रपित्तक्षयकरो हिमः ।।३७।।

काश, सुकांड, काशेक्षु, ऋषीक, श्वेतवासर, इक्ष्वारिका, इक्षुकाश, इक्षुरस ये नाम कास के हैं। कास, मूत्रकृच्छ्र, दाह रक्तपित्त, क्षय इनको नष्ट करता है और शीतल है, नदियों में होता है, कास नाम से प्रसिद्ध है।।३७।।

कुशनामगुणाः

दर्भो बर्हिः कुशस्तीक्ष्णः सूच्यग्रो यज्ञभूषणः ।
दर्भः कृच्छ्राश्मतृट्पित्तवस्तिनुत्कफरक्तजित् ॥३८॥

दर्भ, वर्हि, कुश, तीक्ष्ण, सूच्यग्र, यज्ञभूषण ये डाभ के नाम हैं। डाभ मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, पित्त, बस्तिरोग इनको दूर करती है और कफ रक्त को जीतती है, कुशा प्रसिद्ध है।।३८।।

मुञ्जनामगुणाः

मुञ्जः क्षुरा स्थूलदर्भो बाणाह्वो ब्रह्ममेखलः ।
मुञ्जोऽनुष्णो विसर्पास्रमूत्रवस्त्यक्षिरोगजित् ॥३९॥

मुञ्ज, क्षुरा, स्थूल, बाणाह्व, ब्रह्ममेखल ये नाम मूंज के हैं, गर्म नहीं है, विसर्प, रक्त, मूत्ररोग, बस्तिरोग, अक्षिरोग इनको नाशती है, मूंज प्रसिद्ध है।।३९।।

नलनामगुणाः

नलो रन्ध्री पुष्पमृत्युर्दमनोऽनन्तकः पिटः ।
नलो मूत्रार्तिदाहास्रकफपित्तविसर्पजित् ॥३४०॥

मल, रंध्री, पुष्पमृत्यु, दमन, अनंतक पिट ये नरसल के नाम हैं, नरसल मूत्ररोग, दाह, रक्त, कफ, पित्त, विसर्प इनको जीतता है, नरसल (नड़ा) प्रसिद्ध है।।३४०।।

वंशो वेणुः कीचकः स्यात्कर्मारस्त्वचिसारकः ।
वंशः सरो हिमः पित्तकफदाहास्रशोफजित् ॥४१॥

वंश, वेणु, कीचक, कर्मार, त्वचिसारक, ये बांस के नाम हैं। बांस सर और शीतल है, पित्त, कफ, दाह, रक्त, शोजा इनको जीतता है। बांस बेणु प्रसिद्ध है।।४१।।

तत्करीरो गुरुर्भेदी श्लेष्मलो वातपित्तजित् ।
(तथा च भेदकोऽत्युष्णः कफघ्नो वातपित्तजित् ॥४२॥)

बांस का अंकुर भारी है, भेदी है, कफ को उपजाता है और वातपित्त को जीतता है। (तथा भेदक है, अत्यन्त गर्म है, कफ को नाशता है और वातपित्त को जीतता है)।।४२।।

पारसीकजवानीनामगुणाः

जवानी जवनी तीव्रा तुरुष्का मदकारिणी ।
जवानी जीवनी रूक्षा ग्राहिणी मादिनी गुरुः ॥४३॥

जवानी, जवनी, तीव्रा, तुरुष्का, मदकारिणी ये पारसीकयवानि का नाम अजवायन के है। अजवायन जीवन है, रूखी है, मल को बांधती है, मद करती है और भारी है,

खुरासानीजवायन के नाम से प्रसिद्ध है।।४३।।

खसतिल (फीमदाना) नामगुणाः

तिलभेदाः खसतिलः शुभ्रपुष्पो लसत्फलः ।
वृष्यो बल्यः खसतिलः श्लेष्मलो वातजिद्गुरुः ।।
वल्कलस्तत्फलोद्भूतो रूक्षो ग्राही विशेषतः ।।४४।।

तिलभेद (खसखस) खसतिल, शुभ्रपुष्प, लसत्फल ये पोस्त के नाम हैं। पोस्त बल करता है, धातु को बढ़ाता है, कफ करता है, वात को जीतता है और भारी है। पोस्ता का छिलका रूखा है, विशेषकर मल को बांधता है।।४४।।

अहिफेन (अफीम) नामगुणाः

आफूकं तद्रसोद्भूतमहिफेनं सफेनकम् ।
आफूकं शोषणं ग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तलम् ।।४५।।

आफूक, तद्रसोद्भूत, अहिफेन, ये अफीम के नाम हैं। अफीम शोषक है, मल को रोकती है, कफ को नाशती है, वात पित्त को करती है।।४५।।

छिलिहिण्ठनामगुणाः

छिलिहिण्ठो महामूलः पातालो गरुडाह्वयः ।
छिलिहिण्ठः परं वृष्यः श्लेष्मलः पवनापहः ।।४६।।

छिलिहण्ठ, महामूल, गरुड़ाह्वय ये छिलहिण्ठ के नाम हैं। छिलिहिण्ठ उत्तम पुष्टि कर्त्ता है, कफ और वात को नाशता है। छिरहटा नाम से प्रसिद्ध है।।४६।।

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लः
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णो
वर्गोऽयं ललितपदाङ्कितोऽभयादिः ।।३४७।।

इति श्रीमदनपालनिघण्टावभयादिवर्गः प्रथमः ।।१।।

राजाओं में मस्तक के तिलक समान (प्रधान) कटारमल्ल (कटार की लड़ाई का योद्धा) उस मदनराजा के रचे हुए इस मदन विनोद नामक ग्रंथ में ललितपदोंसे अंकित हुआ अभयादि वर्ग पूर्ण हुआ।।३४७।।

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ पं० रामप्रसादवैद्यरत्न विरचित भाषातत्त्व प्रकाशिनी हिन्दीटीकायामभयादिवर्गः प्रथमः ।।१।।

ॐ तद्रविराजितमन्यमनन्तं श्रीरुचिरं परमक्षरमेकम् ।
श्रीमदनक्षितिनाथ सदा ते विष्णुपदं विपदं विनिहन्तु ।।१।।

मदनराजा के नाम से ग्रन्थ लिखनेवाला पण्डित मदनराजा को संबोधन देकर कहता है—हे मदनराजा! दूसरे सूर्यवत् प्रकाशित लक्ष्मीकी शोभा से शोभायमान अनंत परम कभी क्षय न होनेवाला विष्णुपद तुम्हारी विपत्तियों को नष्ट करे।।१।।

शुंठीनामगुणाः

शुण्ठी विश्वौषधं विश्वं कटुभद्रं कटूत्कटम् ।
महौषधं शृङ्गवेरं नागरं विश्वभेषजम् ।।२।।

शुंठी, विश्वौषध, विश्व, कटुभद्र, कटूत्कट, महौषध, शृंगवेर, नागर, विश्वभेषज, ये शुंठी के नाम हैं।।२।।

शुण्ठी रुच्याऽऽमवातघ्नी पाचनी कटुका लघुः ।
स्निग्धोष्णा कटुका पाके कफवातविबन्धनुत् ।।३।।

सोंठ रुचि को उपजाती है, आमवात को नाशती है, पाचन है, चर्परी है, हलकी है, चिकनी है, गर्म है, पाक में चर्परी है। यह कफ, वात, विबन्ध इनको दूर करती है।।३।।

वृष्या स्वर्या वमिश्वासकासशूलहृदामयान् ।
हन्ति श्लीपदशोफार्शआनाहोदरमारुतान् ।।४।।

सोंठ-पुष्ट करती है, स्वर को बढ़ाती है, छर्दि, श्वास, खांसी, शूल, हृद्रोग, श्लीपद, शोजा, बवासीर, अफारा, उदररोग, वातरोग इनको नाश करती है।।४।।

आर्द्रकनामगुणाः

आर्द्रकं शृङ्गवेरं तन्महौषधमुदाहृतम् ।
आर्द्रकं नागरगुणं भेदनं दीपनं गुरु ।।५।।

आर्द्रक, शृंगवेर, महौषध ये अदरक के नाम हैं। अदरक में सोंठ के सब गुण हैं। भेदन है, दीपन है और भारी है, अदरक प्रसिद्ध है। इसी को छीलकर सुखा देने से सोंठ हो जाती है।।५।।

कटूष्णं दीपनं वृष्यं रुच्यमार्द्रकनागरम् ।
श्वासकासवमीहिक्कवातश्लेष्मविबन्धनुत् ।।६।।

अदरक-चर्परा है, अग्नि को जगाता है, धातु को पुष्ट करता है, रुचि को उपजाता है और श्वास खांसी, छर्दि, हिचकी, वात, कफ, विबन्ध इनको दूर करता है।।६।।

पाचनं रोचनं वृष्यं कटूष्णं वह्निदीपनम् ।
वातप्रकोपशमनं पाचनं शोथहृत्परम् ।।७।।

पकाया अदरक-रोचन है, वीर्य को देता है, चर्परा है, गर्म है, अग्नि को दीपन करता है, वात के कोप को शान्त करता है, पाचन है और शोजा को हरता है।।७।।

भोजनादौ सदा पथ्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम् ।
अव्यक्तरसवीर्यत्वात्तत्परं तु कफापहम् ।।८।।

भोजन के आदि में सदा पथ्य है, जीभ को और कंठ को शोधन करता है, अव्यक्तरस वीर्यवाला होने से कफ को नष्ट करता है।।८।।

काञ्जिकार्द्रं सलवणं दीपनं पाचनं परम् ।
वातप्रकोपशमनं हर्षणं लवणार्द्रकम् ।।९।।

कांजी और नमक सहित अदरक अग्नि को जगाता है, पाचन है, नमकसहित अदरक वात के कोप को शांत करता है, जिह्वा को हर्षित करता है।।९।।

मरीचनामगुणाः

मरिचं वल्लिजं तीक्ष्णं मलिनं श्यामभूषणम् ।
मरिचं कटुकं तीक्ष्णं दीपनं कफवातनुत् ।
उष्णं पित्तकरं रूक्षं श्वासशूलकृमीञ्जयेत् ।।१०।।

मरिच, वल्लिज, तीक्ष्ण, मलिन, श्यामभूषण ये मिरच के नाम हैं। मिरच चर्परी है, तेज है, दीपन है, कफ-वात को दूर करती है, गर्म है, पित्त को करती है, रूखी है और श्वास, शूल, कृमि इनको जीतती है।।१०।।

तदार्द्रं मधुरं पाके नात्युष्णं कटुकं गुरु ।
किञ्चित्तीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम् ।।११।।

गीली मिरच पाक में मीठी है, अत्यन्त गर्म नहीं है, चर्परी है, भारी है, कुछ तेज गुणवाली है, कफ को निकासती है। पित्त को नहीं करती है। गोल मिरच काली मिरच इन नामों से प्रसिद्ध है।।११।।

पिप्पलीनामगुणाः

पिप्पली चपला कृष्णा मागधी मगधा कणी ।
विश्वोपकुल्या वैदेही शौण्डी स्यात्तीक्ष्णतण्डुला ।।१२।।

पिप्पली, चपला, कृष्णा, मागधी, मगधा, कणा, विश्वा, उपकुल्या, वैदेही, शौंडी, तीक्ष्णतण्डुला ये पीपल के नाम हैं।।१२।।

पिप्पली दीपनी वृष्या स्वादुः पाके रसायनी ।
अत्युष्णा कटुका स्निग्धा कफवातहरा लघुः ।।१३।।

पीपल अग्नि को जगाती है, वीर्य को बढ़ाती है, पाक में स्वादु है, बुढ़ापे को दूर करती है, अत्यन्त गर्म है, चर्परी है, चिकनी है, कफवात को हरती है और हलकी है।।१३।।

पित्तला रेचनी हंति श्वासकासोदरज्वरान् ।

कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शः प्लीहशूलाममारुतान् ।
आर्द्रा कफप्रदा स्निग्धा शीतला मधुरा गुरुः ।।१४।।

पिप्पली पित्त को उपजाती है, दस्त लगाती है, श्वास, खांसी, उदररोग, ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, बवासीर, तिल्लीरोग, शूल, आमवात इनको दूर करती है, गीली पीपल कफ को देती है, चिकनी है, मीठी है, भारी है, पीपल मधुपीपल नाम से प्रसिद्ध है।।१४।।

त्र्यूषणचतुरूषणनामगुणाः

विश्वोपकुल्यामरिचैस्त्र्यूषणं कटुकं कटु ।
व्योषं कटुत्रयं तत्स्यात्सग्रन्थि चतुरूषणम् ।।१५।।

सोंठ, पीपल, मिरच, इन तीनों को मिलाने से त्रिकुटा होता है। त्र्यूषण, कटुक, कटु, व्योप, कटुत्रय ये नाम त्र्यूषण के हैं और पीपलामूल मिलाने से चतुरूपण होता है।।१५।।

त्र्यूषणं दीपनं हंति श्वासकासत्वगामयान् ।
गुल्ममेहकफस्थौल्यमेहश्लीपदपीनसान् ।।१६।।

त्र्यूषण अग्नि को जगाता है, खांसी, श्वास, त्वचारोग, गुल्म, प्रमेह, कफ, बुढ़ापा, श्लीपद, पीनस इनको दूर करता है।।१६।।

कणामूलं कटुग्रंथिः पिप्पलीमूलमूषणम् ।
षड्ग्रंथो ग्रंथिकं मूलं मागधं चटिकाशिरः ।।१७।।

कणामूल, कटु, ग्रन्थि, पीप्पलीमूल, ऊषण, षड्ग्रन्थ, ग्रन्थिक, मूल, मागध, चटिकाशिर ये नाम पीपलामूल के हैं।।१७।।

दीपनं पिप्पलीमूलं कटूष्णं पाचनं लघु ।
रूक्षं पित्तकरं भेदि कफवातोदरापहम् ।।१८।।

पीपलामूल अग्नि को जगाता है, गर्म है, चर्परा है, पाचक है, हलका है, रूखा है, पित्त को करता है, भेदी है और कफ, वात, उदररोग इनको नाशता है, पीपलामूल नाम से प्रसिद्ध है।।१८।।

चव्यनामगुणाः

चव्यं चवणमुच्छिष्टं चविका कोलवल्लिका ।
पिप्पलीमूलवत्तत्स्याद्विशेषाद्गुदजापहम् ।
चव्यपुष्पं गरश्वासकासक्षयविनाशनम् ।।१९।।

चव्य, चवण, उच्छिष्ट, चविका, कोलवल्लिका ये नाम चव्य के हैं। इसमें पीपलामूल के समान गुण हैं। विशेष करके गुदा के रोग को नाशता है। चव्यफूल कृत्रिमविष, श्वास, खांसी,

क्षय इनको नाशता है, चव्य प्रसिद्ध है।।१९।।

गजपिप्पलीनामगुणाः

तत्फलं श्रेयसी हस्तिमागधा गजपिप्पली ।
गजकृष्णा कटुर्वातश्लेष्मनुद्वह्निवर्द्धिनी ।
उष्णा निहन्त्यतीसारं श्वासकण्ठामयक्रिमीन् ।।२०।।

जायफल श्रेयसी, हस्तिमागधा, गजपिप्पली, गजकृष्णा ये नाम गजपीपल के हैं। गजपीपल चर्परी है, वात कफ को नाशती है, अग्नि को जगाती है, गर्म है और अतीसार, श्वास, कण्ठरोग, कृमि इनको नाशती है।।२०।।

चित्रकनामगुणाः

चित्रको हुतभुग् व्यालो दारुणो दहनोऽरुणः ।
अग्निमाली हविःपाची वह्निनामा विशेषतः ।।२१।।

चित्रक, हुतभुक्, व्याल, दारुण, दहन, अरुण, अग्निमाली, हविःपाची और विशेष करके जितने अग्नि के नाम हैं सब चित्रक के जानने ।।२१।।

चित्रकः कटुकः पाके वह्निकृत्पाचनो लघुः ।
रूक्षोष्णो ग्रहणीकुष्ठशोफार्शः कृमिकासजित् ।
श्लेष्मानिलहरो ग्राही तच्छाकं श्लेष्मवातनुत् ।।२२।।

चीता पाक में चर्परा है, अग्नि को करता है, रोचन है, हलका है, रूखा है, गर्म हैं और ग्रहणी, कुष्ठ, शोजा, बवासीर, कृमि, खांसी इनको नाशता है, कफ वात को हरता है और मल को बांधता है, चीते का शाक कफ वात को दूर करता है, चीता सब जगह प्रसिद्ध है।।२२।।

पञ्चकोलषड्‌ूषणनामगुणाः

पिप्पलीमगधामूलचव्यनागरचित्रकैः ।
पञ्चकोलं कफानाहगुल्मशूलारुचीर्जयेत् ।
मरिचेभयुतं तत्तु षड्‌ूषणमुदाहृतम् ।।२३।।

पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठ, चीता इन पांचों को मिलाने से पञ्चकोल होता है। पंचकोल कफ, अफारा, गुल्म, शूल, अरुचि इनको जीतता है। मिरच, सोंठ, चव्य, चीता, पीपलामूल, पीपल इन छहों को मिलाने से षड्‌ूषण कहाता है।।२३।।

शतपुष्पानामगुणाः

शतपुष्पा शतव्योषा शताह्वा कारवी मिशिः ।
अवाक्पुष्पी त्वचिच्छित्रा शेतिका मागधी परा ।।२४।।

शतपुष्पा, शतव्योषा, शताह्वा, कारवी, मिशि, अवाक्पुष्पी, त्वचिच्छत्रा ये सौंफ के

नाम हैं, शेतिका मागधी ये नाम दूसरे प्रकार की सौंफ के हैं।।२४।।

शतपुष्पा लघुस्तीक्ष्णा पित्तकृद्दीपनी कटुः ।
उष्णा ज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगजित् ।
शेतिका तद्गुणा प्रोक्ता विशेषाद्योनिशूलहृत् ।।२५।।

सौंफ हलकी है, तेज है, पित्त को करती है, अग्नि को जगाती है, चर्परी है, गर्म है, ज्वर, वात, कफ, घाव, शूल, नेत्ररोग इनको जीतती है। शेतिका में भी यही गुण हैं, विशेषकर योनिशूल को हरती है।।२५।।

मिश्रेया (सोया) नामगुणाः

मिश्रेया मिशिशालीनौ शाली शीतशिवा मता ।
मिश्रेया दीपनी हृद्या बद्धविट् कृमिशुक्रनुत् ।
रूक्षोष्णा तत्फलं कासवमिश्लेष्मानिलाञ्जयेत् ।।२६।।

मिश्रेया, मिशि, शालीन, शाली, शीतशिवा ये सोया के नाम हैं। सोया अग्नि को जगाता है, हृद्य है, विबंध, कृमि, वीर्यरोग इनको दूर करता है, यह रूखा और गर्म है, सोया का फल, खांसी, छर्दि, कफ, वात इनको जीतता है, सोया नाम से प्रसिद्ध है।।२६।।

मेथिकानामगुणाः

मेथिका बस्तिका शेलुरोहित्यौ वनमेथिका ।
रोहित्योऽल्पगुणस्तस्माद्वाजिनां स तु पूजितः ।।२७।।

मेथिका, बस्तिका, शेलु, रोहिती, वनमेथिका, ये नाम मेथी और रानी मेथी के हैं। मेथी अग्नि को जगाती है, दिल को ताकत देती है, विष्ठा के कृमि को दूर करती है। यह शूल वीर्यरोग, गोला, वायशूल इनको नाशती है और कफ को दूर करती है, रानीमेथी में इससे कम गुण हैं परंतु घोड़ों को गुण देती है।।२७।।

अजमोदानामगुणाः

अजमोदाऽत्युग्रगन्धा मोदा हस्तिमयूरकः ।
खराह्वा कारवी वल्ली बस्तमोदा च मर्कटः ।।२८।।

अजमोदा, अत्युग्रगंधा, मोदा, हस्तिमयूरक, खराह्वा, कारवी, वल्ली, बस्तमोदा मर्कट ये अजमोदा के नाम हैं।।२८।।

अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफवातनुत् ।
उष्णा विदाहिनी हृद्या वृष्या बद्धमला लघुः ।
नेत्रामयक्रिमिच्छर्दिसिध्मवस्तिरुजो जयेत् ।।२९।।

अजमोदा चर्परा है, तीक्ष्ण है, अग्नि को जगाता है, कफवात को दूर करता है, गर्म है,

दाह करता है, हृद्य है, पुष्टि करता है, मल को बांधता है, हलका है और नेत्ररोग, कृमि, छर्दि, सींप, बस्तिरोग इनको जीतता है। पहाड़ी अजवायन को अजमोद कहते हैं।।२९।।

श्वेतजीरकश्यामजीरकस्थूलाजाजीनामगुणाः

जीरकं दीर्घकं शुक्लमजाजी कणजीरकम् ।
जीरकं जरणं कृष्णं वर्षाकालसुगन्धिकम् ।।३०।।

जीरक, दीर्घक, शुक्ल, अजाजी, कणजीरक ये सफेद जीरा के नाम हैं। जीरक जरण, कृष्ण, वर्षाकाल, सुगंधिक, ये काले जीरे के नाम हैं।।३०।।

कलिका बाष्पिका कुञ्चिः कारवी चोपकुञ्चिका ।
पृथ्वीका सुषवी पृथ्वी स्थूलाजाज्युपकालिका ।।३१।।

कलिका, बाष्पिका, कुंचि, कारवी, उपकुंचिका, पृथ्वीका, सुषवी, पृथ्वी, स्थूलाजाजी, उपकालिका ये कलौंजी के नाम हैं।।३१।।

जीरकत्रितयं रूक्षं कटूष्णं दीपनं लघु ।
संग्राहि पित्तलं मेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ।
चक्षुष्यं पवनाध्मानगुल्मच्छर्दिबलासजित् ।।३२।।

तीनों जीरे रूखे हैं, चर्परे हैं, गर्म हैं, अग्नि को जगाते हैं, मल को बांधते हैं, पित्त को करते हैं, बुद्धि को बढ़ाते हैं, गर्भाशय को शोधते हैं, नेत्रों में सुख देते हैं और वात, आध्मान, गुल्म, छर्दि, कफ इनको जीतते हैं।।३२।।

यवानीनामगुणाः

यवानी दीप्यको दीप्यो दीपनीया यवानिका ।
यवसाहोग्रगन्धा स्याद्यवाह्वा भूकदम्बकः ।।३३।।

यवानी, दीप्यक, दीप्य, दीपनीया, यवानिका, यवसाहा, उग्रगंधा, यवाह्वा, भूकदम्बक ये अजवायन के नाम हैं।।३३।।

जवानी पाचनी रुच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः ।
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मशूलक्रिमीञ्जयेत् ।।३४।।

अजवायन पाचक है, रुचि को उपजाती है, गर्म है, चर्परी है, हलकी है और वात कफ, उदररोग, अफारा, गुल्म, शूल, कृमि इनको नाश करती है, अजवायन देशी प्रसिद्ध है।।३४।।

चौहारनामगुणाः

यवानीया यवानी स्याच्चौहारो जन्तुनाशनः ।
चौहारस्तद्गुणः प्रोक्तो विशेषात्कृमिनाशनः ।।३५।।

यवानीया, यवानी, चौहार, जन्तुनाशन, ये चौहारके नाम हैं, चौहार अजवायन में अजवायन के गुण हैं। विशेष करके कृमियों को नष्ट करती है इसको पाकाजमोद भी कहते हैं।।३५।।

अजगन्धानामगुणाः

अजगन्धा पूतिकीटा वर्वरी पूतिवर्वरः ।
कारवी खरपुष्पा च तुङ्गी पूतिमयूरकः ।।३६।।

अजगन्धा, पूतिकीटा, वर्वरी, पूतिवर्वर, कारवी, खरपुष्पा, तुंगी, पूतिमयूरक ये अजगन्धा ने नाम हैं।।३६।।

अजगन्धा कटुस्तीक्ष्णा रूक्षा हृद्याऽग्निवर्द्धिनी ।
दृष्टिमान्द्यप्रदा लघ्वी शुक्रवातकफापहा ।।३७।।

अजगन्धा चर्परी है, तेज है, रूखी है, हृद्य है, अग्नि को बढ़ाती है, दृष्टि को मन्द करती है, हलकी है और वीर्य, वात, कफ इनको नाश करती है, अजगन्धा वन अजवायन का भेद है।।३७।।

बचानामगुणाः

वचोग्रगन्धा गोलोमी षड्ग्रन्था जटिला मता ।
जटिला शतपर्वाऽन्या लोमशा हेमवत्यपि ।।३८।।

वचा, उग्रगन्धा, गोलोमी, षड्ग्रन्था, जटिला, ये वच के नाम हैं। जटिला, शतपर्वा, लोमशा, हेमवती ये नाम दूसरी वच के हैं।।३८।।

वचोष्णा कटुका तिक्ता वामनी स्वरवह्निकृत् ।
अपस्मारकफोन्मादभूतशूलानिलाञ्जयेत् ।।३९।।

वच गर्म है, चर्परी है, कड़वी है, छर्दि लाती है, स्वर और अग्नि को करती है। ये मृगीरोग, कफ, उन्माद, भूतदोष, शूल वात इनको जीतती है।।३९।।

हपुषानामगुणाः

हपुषा वपुषा विश्वा विगंधा विश्वगंधिका ।
हपुषा दीपनी तिक्ता कटूष्णा तुवरा गुरुः ।।४०।।

हपुषा वपुषा, विश्वा, विगन्धा, विश्वगन्धिका ये हाऊबेर के नाम हैं। हाऊबेर अग्निको जगाता है, कडुवा है, चर्परा है, गर्म है, कषैला और भारी है।।४०।।

पित्तोदरसमीरार्शोग्रहणीशोफगुल्मजित् ।।४१।।

पित्त, उदररोग, वात, बवासीर, ग्रहणी, शोजा, गुल्म इनको नाशता है।।४१।।

विडंगनामगुणाः

विडङ्गं जन्तुहननं कृमिघ्नं क्षुद्रतण्डुला ।

भूतघ्नी तण्डुला घोषा कराला मृगगामिनी ॥४२॥

विडंग, जंतुहनन, कृमिघ्न, क्षुद्रतण्डुला, भूतघ्नी, घोषा, कराला,मृगगामिनी, ये वायविडंग के नाम हैं।।४२।।

विडङ्गं कटु तिक्तोष्णं रूक्षं वह्निकरं लघु ।
गुल्माध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ॥४३॥

वायविडंग चर्परी है, कडुवी है, गर्म है, रूखी है, अग्नि को करती है, हलकी है, गुल्म, आध्मान, उदररोग, कफ, कृमि, वात, विबन्ध इनको दूर करती है।।४३।।

धान्या (धनियां) नामगुणाः

धान्याकं धान्यकं धान्यं धानेयं च वितुन्नकम् ।
कुस्तुम्बुरु तदार्द्रं तु धानीधानेयकालुकाः ॥४४॥

धान्याक, धान्यक, धानेय, वितुन्नक, कुस्तुंबुरु ये नाम धनियां के हैं। धानी, धानेय, कालुका ये नाम गीले धनियां के हैं।।४४।।

धान्यकं तुवरं स्निग्धमवृष्यं मूत्रलं लघु ।
हृद्यं रूक्षं बद्धविट्कं स्वादु पाके त्रिदोषनुत् ॥४५॥

धनियाँ कषैला है, चिकना है, वीर्य को नहीं बढ़ाता है, मूत्र को उपजाता है, हलका है, हृदय को हितकारक है, रूखा है, विष्ठा को बांधता है, पाक में स्वादु और त्रिदोष को दूर करता है।।४५।।

पाचनं श्वासकासास्रतृष्णामार्शः कृमीञ्जयेत् ।
आर्द्रीका तद्गुणा स्वादुर्विशेषात्पित्तनाशिनी ॥४६॥

धनियाँ–पाचन है और श्वास, खांसी, रक्त, तृषा, आम, बवासीर, कृमि इनको जीतता है, गीले धनिया में भी यही गुण हैं परन्तु विशेष करके पित्त को नाशता है।।४६।।

हिंगुपत्रीनामगुणाः

हिंगुपत्री पृथुस्तन्वी पृथ्वीका चारुपत्रिका ।
बाष्पिका कारवी तन्वी बिल्विका दीर्घिका तथा ॥४७॥

हिंगुपत्री, पृथुस्तन्वी, पृथ्वीका, चारुपत्रिका, बाष्पिका, कारवी, तन्वी, बिल्विका, दीर्घिका ये हिंगुपत्री के नाम हैं।।४७।।

हिंगुपत्री परा वेणुपत्री हिंगुशिवाटिका ।
जन्तुका रामठी नाडी पिण्डा हिंगुफला मता ॥४८॥

हिंगुपत्री, वेणुपत्री, हिंगुशिवाटिका, जंतुका, रामठी, नाड़ी, पिंड़ा, हिंगुफला ये दूसरी हिंगुपत्री के नाम हैं।।४८।।

हिंगुपत्रीद्वयं हृद्यं तीक्ष्णोष्णं पाचनं कटु ।
हृद्वस्तिरुग्विबन्धार्शः श्लेष्मगुल्मानिलापहम् ॥४९॥

दोनों हिंगुपत्री हृदय को हित करता है, तेज हैं, गर्म हैं, पाचन हैं, चर्परी है और हृद्रोग, बस्तिरोग, विबन्ध, बवासीर, कफ, गुल्म, वात इनको नाशती हैं॥४९॥

हिंगुनामगुणाः

हिंगु वाह्लीकमत्युग्रं रामठं भूतनाशनम् ।
अगूढगंधा जरणं जन्तुघ्नं सूपभूषणम् ॥५०॥

हिंगु, वाह्लीक, अत्युग्र, रामठ, भूत नाशन, अगूढ़गंधा, जरण, जंतुघ्न, सूपभूषण ये हींग के नाम हैं॥५०॥

हिंगूष्णं पाचनं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं कफवातनुत् ।
शूलगुल्मोदरानाहकृमिजित्पित्तवर्द्धनम् ॥५१॥

हींग गर्म है पाचन है, रुचि को उपजाती है, तेज है, कफवात को दूर करती है, शूल, गुल्म, उदररोग, अफारा, कृमि इनको जीतती है, पित्त को बढ़ाती है॥५१॥

वंशलोचननामगुणाः

वंशजा वैणवी क्षीरी त्वक्क्षीरी वंशरोचना ।
तुगाक्षीरी तुगा वंशी वंशक्षीरी शुभा सिता ॥५२॥

वंशजा, वैणवी, क्षीरी, त्वक्क्षीरी, वंशरोचना, तुगाक्षीरी, तुगा, वंशी, वंशक्षीरी, शुभा, सिता ये वंशलोचन के नाम हैं॥५२॥

वंशजा बृंहणी वृष्या शीतला मधुरा जयेत् ।
तृष्णाक्षयज्वरश्वासकासपित्तास्रकामलाः ॥५३॥

वंशलोचन पुष्टि करता है, वीर्य को बढ़ाता है, शीतल है, मीठा है, तृषा, क्षय, ज्वर, श्वास, खांसी, रक्तपित्त, कामला इनको जीतता है॥५३॥

सैन्धवनामगुणाः

सैन्धवं सिन्धुजं शुद्धं माणिमन्थं पटूत्तमम् ।
सैन्धवं मधुरं हृद्यं दीपनं शीतलं लघु ।
चक्षुष्यं पाचनं स्निग्धं वृष्यं दोषत्रयापहम् ॥५४॥

सैन्धव, सिंधुज, शुद्ध, माणिमन्थ, पटूत्तम ये सेंधानमक के नाम हैं। सेंधानमक मीठा है, हृद्य है, अग्नि को उपजाता है, शीतल है, हलका है, नेत्रों में गुण करता है, पाचन है, चिकना है, धातु को पुष्ट करता है और त्रिदोष का नाश करता है॥५४॥

सौवर्चल (संचर) नामगुणाः

सौवर्चलं सुगन्धाख्यं रुच्यकं हृद्यगन्धकम् ।

सौवर्चलं वह्निकरं कटूष्णं विशदं लघु ।
उद्गारशुद्धिदं सूक्ष्मं विबन्धानाहशूलजित् ।।५५।।

सौवर्चल, सुगंधाख्य, रुच्यक, हृद्यगन्धक ये काले नमक के नाम हैं। कालानमक अग्नि को करता है, चर्परा है, गर्म है, हृद्य है, हलका है, डकारों को शुद्ध करता है, महीन है और विबंध, अफारा, शूल इनको जीतता है।।५५।।

बिडनानगुणाः

विडं कृत्रिमकं पाक्यं धूर्त्तं द्राविडमासुरम् ।
बिडं लघूष्णं विष्टम्भि शूलहृद्गौरवारुचीः ।
हन्त्यानाहकफौ शूलमधोवातानुलोमनम् ।।५६।।

बिड, कृत्रिमक, पाक्य, धूर्त, द्राविड़, आसुर ये मनियारी नमक के नाम हैं। मनियारी नमक हलका है, गर्म है, विष्टंभ करता है, शूल, हृद्रोग, भारीपन अरुचि, अफारा, कफ इनको नाशता है और अधोवात को अनुलोमित करता है।।५६।।

सामुद्रकलवणनामगुणाः

सामुद्रं वारिसम्भूतमक्षीवं चासुरं तथा ।
सामुद्रं दीपनं स्वादु नात्युष्णं भेदनं कटु ।
श्लेष्मलं वातनुत्तिक्तमरूक्षं नातिपित्तलम् ।।५७।।

सामुद्र, वारिसंभूत, अक्षीव, आसुर ये नाम सामुद्रकनमक के हैं। सामुद्रकनमक अग्नि को जगाता है, स्वादु है, अत्यन्त गर्म नहीं हैं, भेदन है, चर्परा है, कफ को दूर करता है, वात को दूर करता है, कड़वा है, रूखा नहीं है और अत्यन्त पित्त को नहीं करता है।।५७।।

औद्भिदनामगुणाः

औद्भिदं भूमिजं भौमं पार्थिवं पृथिवीभवम् ।
औद्भिदं रक्तलं सूक्ष्मं लघु वातानुलोमनम् ।।५८।।

औद्भिद, भूमिज, भौम, पार्थिव, पृथिवीभव ये नाम रेहनमक के हैं। रेहनमक–रक्त उपजाता है, महीन है, हलका है, वात को अनुलोमित करता है।।५८।।

गण्डनामगुणाः

गण्डाख्यं रोमलवणं रोम शाकम्भरीभवम् ।
गण्डाख्यं लघु वातघ्नमत्युष्णं भेदि मूत्रलम् ।।५९।।

गंडाख्य, रोमलवण, रोम, शाकंभरीभव यह रोमकनमक के नाम हैं। रोमकनमक हलका है, वात को नाशता है, अत्यन्त गर्म है, भेदन है और मूत्र को उपजाता है।।५९।।

क्षारनामगुणाः

क्षारं पांसुभवं त्वौषमौषरं पांसवं वसु ।
क्षारं गुरु कटु स्निग्धं श्लेष्मलं वातनाशनम् ।।६०।।

क्षार, पांसुभव, औष, औषर, पांसव, वसु ये खारी नमक के नाम हैं। खारी नमक–भारी है, चर्परा है, चिकना है, कफ को करता है और वात को नाशता है।।६०।।

काचलवणनामगुणाः

काचं त्रिकूटं पाक्याह्वं लवणं काचसम्भवम् ।
काचं दीपनमत्युष्णं रक्तपित्तविवर्द्धनम् ।।६१।।

काच, त्रिकूट, पाक्याह्व, लवण, काचसंभव ये काचनमक के नाम हैं। काचनमक अग्नि को जगाता है, अत्यन्त गर्म है, और रक्तपित्त को बढ़ाता है।।६१।।

यवक्षारस्वर्जिकाक्षारयोर्नामगुणाः

यवक्षारः शूकपाक्यो यावशूको यवाग्रजः ।
स्वर्जिका स्वर्जिकापाक्यः सुखपाक्यः सुवर्चिका ।।६२।।

यवक्षार, शूकपाक्य, यावशूक, यवाग्रज ये जवाखार के नाम हैं। स्वर्जिका स्वर्जिकापाक्य, सुखपाक्य, सुवर्चिका ये सज्जी के नाम हैं।।६२।।

यवक्षारोऽग्निकृद्वातश्लेष्मश्वासगलामयान् ।
आमार्शोग्रहणीगुल्मयकृत्प्लीहरुजो जयेत् ।।६३।।

जवाखार, अग्नि को करता है, वात, कफ, श्वास, गलरोग, बवासीर, ग्रहणी, गुल्म, यकृत्, तिल्लीरोग इनको जीतता है।।६३।।

स्वर्जिकाऽल्पगुणा तस्माद्विशेषाद्गुल्मशूलनुत् ।।६४।।

सज्जी में यवाखार से अल्प गुण हैं, विशेषकर गुल्म और शूल को दूर करती है, सज्जी प्रसिद्ध है।।६४।।

टंकणनामगुणाः

टंकणो मालतीजातो द्रावी लोहविशुद्धिदः ।
टंकणोऽग्निकरो रूक्षः कफघ्नो वातपित्तजित् ।।६५।।

टंकण, मालतीजात, द्रावी, लोहविशुद्धिद ये सुहागे के नाम हैं। सुहागा–अग्नि को करता है, रूखा है, कफ को नाशता है और वात पित्तं को जीतता है।।६५।।

सुधाक्षार (थोहरखार) नामगुणाः

सुधाह्वयं सुधा सौधभूषणं कटुशर्करा ।
सुधाक्षारोऽग्निसंकाशः पाकी क्लेदी विदारणः ।।६६।।

सुधाह्वय, सुधा, सौधभूषण, कटुशर्करा ये थोहरखार के नाम हैं। थोहरखार–अग्नि के समान है, पकाता है, क्लेदी है और फाड़ने वाला है।।६६।।

सर्वक्षारनामगुणाः

पलाशतिलनामश्वदंष्ट्रकाकदलीभवाः ।
अपामार्गार्कसेहुण्डमोक्षकादिसमुद्भवाः ।।६७।।

सब खार टेशू, तिलकनाम, गोखरू, केला, ऊंगा, आक, थोहर विशेष, मोखा, आदि से उपजते हैं।।६७।।

क्षारा वह्निसमाः सर्वे पाचना भेदिदारुणाः ।
लघवः क्लेदिनस्तीक्ष्णाः शुक्रला दृष्टिनाशनाः ।।६८।।

खार अग्नि के समान हैं, पाचन हैं, भेदन हैं, फाड़ने वाले हैं, हलके हैं, क्लेद करते हैं, तेज हैं, वीर्य देते हैं, दृष्टि को नाशते हैं।।६८।।

रक्तपित्तकरा घ्नन्ति विबंधानाहपीनसान् ।
यकृत्प्लीहबलासामगुल्मार्शोग्रहणीकृमीन् ।।६९।।

खार–रक्तपित्त को करते हैं, विबन्ध, अफारा, पीनस, यकृत, तिल्लीरोग, कफ, आम, गुल्म, बवासीर, संग्रहणी, कृमि इनको नाशते हैं।।६९।।

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल–
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णः
शुण्ठ्यादिः खलु भिषजां हिताय वर्गः ।।७०।।
इति मदनपालनिघण्टौ शुंठ्यादिवर्गो द्वितीयः ।।२।।

राजाओं में अत्यंत प्रधान जो कटारमल्ल हुआ उसी मदन राजा के रचे हुए मदनविनोद नामक इस ग्रंथ में वैद्यों के हित के अर्थ शुंठ्यादि वर्ग पूर्ण हुआ।।७०।।

इति श्रीमदनपालनिघंटौ टकसालनिवासिवैद्यरत्न पं०–रामप्रसादवैद्योपाध्यायविर–चितहिन्दीतत्वप्रकाशिनीटीकायां शुंठ्यादिर्नाम द्वितीयो वर्गः ।।२।।

******

आरोप्य पाणौ नववल्लवीभिर्बालं विनोदात्परिचुम्बितास्यम् ।
ओष्ठं पिबन्तं प्रतिबद्धदन्तमाश्चर्ययुक्तं हरिमाश्रयामि ।।१।।

हाथ पर आरोपितकर नवीन गोपिकाओं ने आनंद से चुंबन किया है मुख जिसका और ओष्ठ को पीता हुआ प्रतिबद्ध हुए दंतोंवाला आश्चर्य से युक्त बालरूप हरि के मैं आश्रित होता हूं।।१।।

कर्पूरनामगुणाः

कर्पूरः स्फटिकश्चन्द्रः सिताभ्रो हिमवालुकः ।
हिमोपलः शीतरजो भूतिकस्तु हिमाह्वयः ।
हिमाभ्रो घनसारश्च चन्द्राह्वश्चापि गीयते ॥२॥

कर्पूर, स्फटिक, चन्द्र, सिताभ्र, हिमवालुक, हिमोपल, शीतरज, भूतिक, हिमाह्वय, हिमाभ्र, घनसार, चन्द्राह्व ये कपूर के नाम हैं॥२॥

कपूरः शीतलो वृष्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः ।
कफदाहास्यवैरस्यमेदः शोथविषापहः ॥३॥

कपूर–शीतल है, धातु को पुष्ट करता है, नेत्रों में हित करता है, लेखन है, हलका है और कफ, दाह, मुख का विरसपना, मेदोरोग, शोजा, विष इनको दूर करता है। मुश्ककपूर नाम से प्रसिद्ध है॥३॥

कस्तूरिकाद्वयनामगुणाः

कस्तूरिका मृगमदो वेदमुख्या मृगाण्डजः ।
मृगनाभिरथान्या स्याल्लताकस्तूरिका मता ॥४॥

कस्तूरिका, मृगमद, वेदमुख्या, मृगांडज, मृगनाभि ये नाम कस्तूरी के हैं, दूसरी लताकस्तूरी होती है॥४॥

कस्तूरी शुक्रला गुर्वी कटुका कफशीतजित् ।
उष्णा हन्ति विषच्छर्दिशोफदौर्गन्ध्यमारुतान् ॥५॥

कस्तूरी वीर्य को देती है, भारी है, चर्परी है, कफ और शीत को जीतती है, गर्म है, विष, छर्दि, शोजा, दुर्गंध, वातरोग इनको नाशती है। कस्तूरी बर्फ में रहने वाले मृगों की नाभी में से निकलती है॥५॥

लताकस्तूरिका तद्वन्नेत्र्या शीता लघुस्तथा ॥६॥

लताकस्तूरी में भी येही गुण हैं परन्तु नेत्रों में हित करती है, शीतल है और हलकी है। लताकस्तूरी की बेल होती है, कोई लोग इसको मुश्कदाना भी कहते हैं॥६॥

मार्जारीनामगुणाः

मार्जारी पूतिका पूतिकचा स्याद्गन्धचेलिका ।
मार्जारी वान्तिमाधत्ते चक्षुष्या कफवातजित् ॥७॥

मार्जारी, पूतिका, पूतिकचा, गंधचेलिका, ये मार्जारी कस्तूरी के नाम हैं, मार्जारी कस्तूरी–छर्दि को उपजाती है, नेत्रों में हित है और कफवात को जीतती है इसको मुश्कविलाइ भी कहते हैं॥७॥

चन्दननामगुणाः

चन्दनं तिलपर्णं स्यान्महार्हं श्वेतचन्दनम् ।
भद्रश्रियं मलयजं गोशीर्षं गन्धसारकम् ।।८।।

चन्दन, तिलपर्ण, महार्ह, श्वेतचन्दन, भद्रश्रिय, मलयज, गोशीर्ष, गन्धसारक ये चन्दन के नाम हैं।।८।।

चन्दनं शीतलं रूक्षं तिक्तमाह्लादनं लघु ।
हृद्यं वर्ण्यं विषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहजित् ।।९।।

चन्दन, शीतल है,रूखा है, कडुवा है, आनंद करता है, हलका है, हृदय में गुण करता है, वर्ण को निखारता है और विष, कफ, तृषा, पित्त, रक्त, दाह इनको जीतता है।।९।।

रक्तचन्दननामगुणाः

रक्तचन्दनमुद्दिष्टं लोहितं क्षुद्रचन्दनम् ।
ताम्रसारं रक्तसारं ज्योतिः सोमं च रञ्जनम् ।।१०।।

रक्तचन्दन, उद्दिष्ट, लोहित, क्षुद्रचन्दन, ताम्रसार, रक्तसार, ज्योतिः सोम, रंजन ये लालचन्दन के नाम हैं।।१०।।

रक्तं शीतं गुरु स्वादु च्छर्दितृष्णास्रपित्तनुत् ।
तिक्तं नेत्रहितं वृष्यं ज्वरघ्नं च विषापहम् ।।११।।

लालचन्दन, शीतल है, भारी है, स्वादु है और छर्दि, तृषा, रक्तपित्त इनको दूर करता है। यह कडुवा है, नेत्रों में हित करता है, धातु को पुष्ट करता है, ज्वर को नाशता है और विष को दूर करता है।।११।।

कृष्णचन्दननामगुणाः

कालीयकं पीतसारं पीतं नारायणप्रियम् ।
कालीयकं रक्तगुणं विशेषात्पवनापहम् ।।१२।।

कलीयक, पीतसार, पीत, नारायणप्रिय, ये मलयागिरि चन्दन के नाम हैं। मलयागिरि चन्दन में लालचन्दन के सब गुण हैं, विशेषकर वात को नाशता है।।१२।।

कृष्णागुरु (अगर)नामगुणाः

कृष्णागुरु स्यादगुरु राजार्हं विश्वरूपकम् ।
जोङ्गकं शीतमलिनं कृमिजघ्नमनरक्तकम् ।
कृष्णागुरूष्णं कर्णाक्षिरोगनुत्पित्तलं लघु ।।१३।।

कृष्णागुरु, अगुरु, राजार्ह, विश्वरूपक, जोङ्गक, शीतमलिन, कृमिजघ्न, अनक्तक ये

कृष्ण अगर के नाम हैं। कृष्णागुरु गर्म हैं, कानरोग, नेत्ररोग इनको दूर करता है, पित्त को उपजाता है और हलका है।।१३।।

कुंकुम (केशर) नामगुणाः

कुङ्कुमं चारु बाह्लीकं वर्ण्यमग्निशिखं वरम् ।
काश्मीरं पीतमभ्राह्वं सङ्कोचं पिशुनांशुकम् ।।१४।।

कुंकुम, चारु, बाह्लीक, वर्ण्य अग्निशिख, वर, काश्मीर, पीत, अभ्राह्व, संकोच, पिशुन, अंशुक ये केशर के नाम हैं।।१४।।

कुङ्कुमं कटुकं सिध्मशिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
उष्णं हास्यकरं बल्यं व्यङ्गदोषत्रयापहम् ।।१५।।

केशर–चर्परी है, यह सींप, शिर का शूल, घाव, कृमि इनको जीतती है, गर्म है, हांसी को करती है, बल को उपजाती है, व्यंग और त्रिदोष को नाशती है।।१५।।

सिह्लकनामगुणाः

सिह्लकः कपिजो धूम्रस्तुरुष्कः पिण्डितः कपिः ।
सिह्लकः कुष्ठकण्डूघ्नः स्निग्धोष्णः शुक्रकान्तिकृत् ।।१६।।

सिह्लक, कपिज, धूम्र, तुरुष्क, पिण्डित, कपि ये शिलारस के नाम हैं, सिह्लक अर्थात् शिलारस (लोबान) कुष्ठ और दाद को नाशता है, चिकना है, गर्म है,वीर्य और कांति को करता है, कोई कोई लोबान को सिह्लक कहते हैं।।१६।।

एलवालुकनामगुणाः

एलवालुकमेल्वालु वालुकं हरिवालुकम् ।
एल्वालु शीतलं हन्ति कण्डूकुष्ठकफक्रिमीन् ।
तृट्छर्दिकफपित्तास्रहृन्मूत्रगदजिल्लघु ।।१७।।

एलवालुक, एल्वालु, वालुक हरिवालुक ये एलवालु के नाम हैं। एल्वालु–शीतल है, खाज, कुष्ठ, कफ, कृमि इनको नाशता है, तृषा, छर्दि, कफ, पित्तरक्त, मूत्ररोग इनको जीतता है और हलका है।।१७।।

जातीफलनामगुणाः

जातीफलं जातिसृतं शलूकं मालतीसुतम् ।
जातीफलं लघु स्वर्यं हृद्यं दीपनपाचनम् ।।१८।।

जातीफल जातिसृत, शलूक, मालतीसुत ये जायफल के नाम हैं। जायफल हलका है, स्वर में हित है, हृदय को हित है, अग्नि को जगाता है और पाचन है।।१८।।

उष्णं कफानिलच्छर्दिकृमिपीनसकासजित् ।।१९।।

यह गर्म है, कफ, वात, छर्दि, कृमि, पीनस, खांसी इनको जीतता है।।१९।।

जातीपत्रीनामगुणाः

जातीपत्री जातिपर्णा मालतीपत्रिका तथा ।
जातीपत्री लघूष्णा स्यात्कफक्रिमिविषापहा ।।२०।।

जातीपत्री, जातिपर्णा, मालतीपत्रिका ये जावित्री के नाम हैं। जावित्री–हलकी और गर्म है, यह कफ, कृमि, विष इनको नाशती है।।२०।।

लवङ्गनामगुणाः

लवङ्गं शिखरं दिव्यं लवं चन्दनपुष्पकम् ।
श्रीपुष्पं देवकुसुमं भृङ्गारं वारिसम्भवम् ।।२१।।

लवंग, शिखर, दिव्य, लव, चन्दनपुष्पक, श्रीपुष्प, देवकुसुम, भृङ्गार, वारिसंभव ये लौंग के नाम हैं।।२१।।

लवङ्गं लघु चक्षुष्यं हृद्यं दीपनपाचनम् ।
शूलानाहकफश्वासकासच्छर्दिक्षयापहम् ।।२२।।

लौंग हलका है, नेत्रों को हित है, हृद्य है, अग्नि को जगाता है, पाचन है, यह शूल, अफारा, कफ, श्वास, खांसी, छर्दि, क्षय इनको नाश करता है।।२२।।

कंकोलनामगुणाः

कङ्कोलं कटुकं कोलं मारीचं माधवोषितम् ।
कङ्कोलमुष्णं हृद्रोगकफवाताग्निमान्द्यजित् ।।२३।।

कंकोल, कटुक, कोल, मारीच, माधवोषित ये कंकोल के नाम हैं। कंकोल गर्म है और हृद्रोग, कफ, वात, मन्दाग्नि इनको जीतता है।।२३।।

एला (छोटी इलायची) नामगुणाः

एला त्रुटिश्चन्द्रवाला बहुला निष्कुटिस्त्विष ।
कपोतवर्णा सूक्ष्मैला कुनटी द्राविडी मता ।
एला सूक्ष्मा कफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रनुत् ।।२४।।

एला, त्रुटि, चन्द्रवाला, बहुला, निष्कुटि, त्विषा, कपोतवर्णा, सूक्ष्मैला, कुनटी, द्राविडी, ये छोटी इलायची के नाम हैं। छोटी इलायची कफ, श्वास, खांसी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र इनको दूर करती है।।२४।।

स्थूलैला (बड़ी इलायची) नामगुणाः

स्थूलैला त्रिपुटा कन्या भद्रैला त्रिदिवोद्भवा ।
स्थूलैला रोचनी तीक्ष्णा लघूष्णा कफपित्तजित् ।।२५।।
हृल्लासविषबस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासुनत् ।।२६।।

स्थूलैला, त्रिपुटा, कन्या, भद्रा, एला, त्रिदिवोद्भवा, ये बड़ी इलायची के नाम हैं, बड़ी

इलायची–रुचि को उपजाती है, तेज है, हलकी और गर्म है, कफपित्त को जीतती है और जीमचलाना, विष, बस्तिरोग, मुखरोग, शिरोरोग, छर्दि, खांसी, इनको दूर करती है॥२५–२६॥

त्वच (दालचीनी) नामगुणाः

त्वचं वराङ्गं सकलं त्वक्कोचं तनुकं वरम् ।
लाटपर्ण्यं घनं भृङ्गं गुरुत्वक् स्वर्णभूमिकम् ॥२७॥

त्वच, वरांग, सकल, त्वक्कोच, तनुक, वर, लाटपर्ण्य, घन, भृंग, गुरुत्वक्, स्वर्णभूमिक ये दालचीनी के नाम हैं॥२७॥

त्वचं लघूष्णं कटुकं विषदं[1] स्वादु पित्तलम् ।
हृद्बस्तिरोगवातार्शः पीनसक्रिमिशुक्रनुत् ॥२८॥

दालचीनी हलकी है, गर्म है, चर्परी है, विष को नाशती है, स्वादु है, पित्त को उपजाती है और हद्रोग, बस्तिरोग, वात, बवासीर, पीनस, क्रिमि, वीर्यरोग इनको नाशती है। तज भी दालचीनी को ही कहते हैं॥२८॥

तेजपत्रनामगुणाः

पत्रं दलाह्वं तामूमं तमालं रोम रोमशम् ।
पत्रमुष्णं लघु श्लेष्महृल्लासार्शोऽनिलापहम् ॥२९॥

पत्र, दलाह्व, तामूम, तमाल, रोम, रोमश ये तेजपात के नाम हैं। तेजपात–गर्म और हलका है, कफ, सूखी रद्द, बवासीर, वात इनको नाश करता है॥२९॥

नागकेशरनामगुणाः

नागकेशरकं नागं चाम्पेयं केशरं गजम् ।
नागकेशरकं रुक्षमुष्णं लघ्वामपाचनम् ।
दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ॥३०॥

नागकेशरक, नाग, चांपेय, केशर, गज ये नागकेशर के नाम हैं, नागकेशर रुखी और गर्म है, हलकी है, आम को पकाती है और दुर्गंध, कुष्ठ, विसर्प, कफ, पित्त, विष इनका नाश करती है॥३०॥

त्रिजातचतुर्जातनामगुणाः

एलादित्रिभिरुद्दिष्टं त्रिजातं त्रिसुगंधकम् ।
चतुर्जातं सनागं तद्द्वयं वातकफापहम् ॥३१॥

इलायची, दालचीनी, तेजपात इन तीनों को मिलाने से त्रिजात होता है। इसी का नाम त्रिसुगंध है, इलायची, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर इन चारों का नाम

---

१ विषं द्यति खण्डयतीति विषदम् । दो अवखंडने धातुः ।

चतुर्जात है। त्रिजात और चतुर्जात वात कफ को नाश करते हैं।।३१।।

तालीसपत्रनामगुणाः

तालीसपत्रं तालीसं धात्रीपत्रं सकोदनम् ।
अपरं ग्रंथिकापत्रं पत्राढ्यं तुलसीछदम् ।।३२।।

तालीसपत्र, तालीस, धात्रीपत्र, सकोदन, अपर, ग्रंथिका, पत्र, पत्राढ़्य, तुलसीछद ये तालीसपत्र के नाम हैं।।३२।।

तालीसं लघु तीक्ष्णोष्णं श्वासकासकफानिलान् ।
निहंति रुच्यं गुल्मामवह्निमान्द्यक्षयामयान् ।।३३।।

तालीसपत्र–हलका है, तेज और गर्म है, श्वास, खांसी, कफ, वात, आम, गुल्म, मन्दाग्नि, क्षय इनको नाशता है और रुचि को उपजाता है।।३३।।

सरलनामगुणाः

सरलो मदनश्चण्डो नमेरुः पीतवृक्षकः ।
सरलः कण्ठकर्णाक्षिगदघ्नोष्णो लघुः कटुः ।।३४।।

सरल, मदन, चण्ड, नमेरु, पीतवृक्षक ये सरल के नाम हैं। सरल कंठरोग कानरोग नेत्ररोग इनको नाशता है; यह हलका और चर्परा है।।३४।।

श्रीवासानामगुणाः

श्रीवासो वेष्टको दासी श्रीनिवासः कलिद्रुमः ।
श्रीवासः कफमूर्द्धाक्षिरोगवातहरः सरः ।।३५।।

श्रीवास, वेष्टक, दासी, श्रीनिवास, कलिद्रुम ये श्रीवास के नाम हैं। श्रीवास कफ, शिरोरोग, नेत्ररोग, वात इनको हरता है और दस्तावंर है, श्रीवास धूप के लिये ज्वालाजी के पहाड़ो से आता है।।३५।।

वालकनामगुणाः

वालकं वारि ह्रीबेर पिङ्गमाचमनं कचम् ।
उदीच्यं वज्रमन्थाह्वं वरिष्ठं गन्धमूलकम् ।।३६।।

वालक, वारि, ह्रीबेर, पिंग, आचमन, कच, उदीच्य, वज्र, मन्थाह्व, वरिष्ठ, गन्धमूलक ये सुगन्धवाला के नाम हैं।।३६।।

वालकं शीतलं रूक्षं लघु दीपनपाचनम् ।
रक्तपित्तज्वरश्लेष्मदाहतृष्णाव्रणापहम् ।।३७।।

सुगन्धवाला–शीतल है, रूखा है, हलका है अग्नि को जगाती है, पाचन है, रक्तपित्त, ज्वर, कफ, दाह, तृषा, घाव इनका नाश करती है।।३७।।

मांसी (बालछड़) नामगुणाः

मांसी जटा भूतकेशी क्रव्यादानलदं शिखा ।
कृष्णाऽन्या पूतनाकेशी गन्धमांसी पिशाचिका ।
मांसी हिमा त्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठजित् ।।३८।।

मांसी, जटा, भूतकेशी, क्रव्याद, अनलद, शिखा ये जटामांसी के नाम हैं और कृष्णा, पूतनाकेशी, गन्धमांसी, पिशाचिका ये बालछड़के नाम हैं। बालछड़ शीतल है, त्रिदोष, रक्तपित्त, दाह, विसर्प, कुष्ठ इनको जीतती है।।३८।।

उशीरनामगुणाः

उशीरमभयं सेव्यं वीरं वीरणमूलिका ।
उशीरं पाचनं शीतं स्तम्भनं कफपित्तजित् ।
तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् ।।३९।।

उशीर, अभय, सेव्य, वीर वीरण मूलिका ये खसके नाम हैं। खस पाचन है, शीतल है,स्तंभन है, कफपित्त को जीतता है। ये तृषा, रक्त, विष, विसर्प, दाह, मूत्रकृच्छ्र, घाव इनको नाश करता है। खसपन्ही (जो नदियों में होती है) कांस की जड़ों को कहते हैं। गर्मी में इसकी टट्टियें बनाई जाती हैं। इन पर पानी छिड़काने से सुगंधित शीतल हवा आती है।।३९।।

रेणुकानामगुणाः

रेणुका कपिला कौन्ती पाण्डुपत्री हरेणुका ।
रेणुका पित्तला मेध्या वह्निकृद्गर्भपातिनी ।।४०।।

रेणुका, कपिला, कौंती, पांडुपत्री, हरेणुका ये रेणुका के नाम हैं। रेणुका पित्त को करती है, बुद्धि को बढ़ाती है, अग्नि को करती और गर्भ को गिराती हैं, इसकी जगह आजकल सँभालू के बीज डालते हैं।।४०।।

प्रियंगुनामगुणाः

प्रियङ्गुः फलिनी श्यामा कान्ताह्वा नन्दनी लता ।
प्रियङ्गुः शीतला वान्तिदाहपित्तज्वरास्रजित् ।
सुखकान्तिप्रजननी गात्रदौर्गन्ध्यनाशिनी ।।४१।।

प्रियंगु, फलिनी, श्यामा, कांताह्वा, नन्दनी, लता ये नाम प्रियंगु के हैं। प्रियंगु शीतल है, छर्दि, दाह, पित्तज्वर, रक्त इनको जीतती है, सुख और कांति को उपजाती है, और शरीर की दुर्गंधि को नाशती है। लोग इसकी जगह मेहँदी के बीज डालते हैं। प्रियंगु गोंदिनी के बीजों को भी कहते हैं। एक लता प्रियंगु अलग होती है परन्तु इस जगह गोंदिनी के फल लेना चाहिये। प्रियंगुधान्य कंगुनी को कहते हैं परन्तु वह ये

प्रियंगु नहीं।।४१।।

पारिपेलनामगुणाः

पारिपेलं प्लवं वन्यं शुकाह्वं परिपेलकम् ।
पारिपेलं हिमं कण्डूकुष्ठास्त्रकफपित्तजित् ।।४२।।

पारिपेल, प्लव, वन्य, शुकाह्व, (परिपेलक कैवर्तीमुस्तक) ये पारिपेल के नाम हैं। पारिपेल शीतल है, खाज, कुष्ठ, रक्त, कफ, पित्त इनको जीतती है। केवटीमोथा नाम से प्रसिद्ध है। इसकी भी नागरमोथे की समान जड़ होती है, इनमें सुगंधि भी होती है।।४२।।

शैलेयनामगुणाः

शैलेयं स्थविरं वृद्धं शिलापुष्पं शिलोद्भवम् ।
शैलेयं शीतलं हृद्यं कफपित्तहरं लघु ।।४३।।

शैलेय, स्थविर, वृद्ध, शिलापुष्प, शिलोद्भव ये छरीला के नाम हैं। छरीला–शीतल है, हृद्य है, कफ पित्त को हरता है और हलका है, भूरिछरीला पत्थर का फूल इन नामों से प्रसिद्ध है।।४३।।

लामज्जकनामगुणाः

लामज्जकं जलाधारं दीर्घमूलं जलाशयम् ।
इष्टकापथकं शीघ्रममृणालं सुनालकम् ।
लामज्जकं हिमं कृच्छ्रदाहदोषत्रयास्त्रजित् ।।४४।।

लामज्जक, जलाधार, दीर्घमूल, जलाशय, इष्टकापथक, शीघ्र, अमृणाल, सुनालक ये खस भेद के नाम हैं। लामज्जक–शीतल है, मूत्रकृच्छ्र, दाह, त्रिदोष, रक्त इनको जीतता है। लामज्जक कांस विशेष की जड़ है, यह भी खस का भेद है, खस जरा छोटी होती है यह बड़ी होती है।।४४।।

कुन्दुरुनामगुणाः

कुन्दुरुर्मेचकः कुन्दः खपुरो भीषणो बली ।
कुन्दुरुः स्वेदपवनश्लेष्मब्रध्नज्वरापहः ।।४५।।

कुंदुरु, मेचक, कुंद, खपुर, भीषण, बली ये कुंदुरु गूंद के नाम हैं। कुंदुरु–पसीना, वात, कफ, ब्रध्नरोग, ज्वर इनको नाशता है, नलकुन्दरु नाम से प्रसिद्ध है, ये शल्लकी वृक्ष का गोंद होता है।।४५।।

गुग्गुलुनामगुणाः

गुग्गुलुः कालनिर्यासो महिषाक्षः पलङ्कषः ।
जटायुःकौशिको धूर्त्तो देवधूपः शिवः पुरः ।।४६।।

गुग्गुलु, कालनिर्यास, महिषाक्ष, पलंकष, जटायु, कौशिक, धूर्त, देवधूप, शिव, पुर ये गूगुलके नाम हैं।।४६।।

गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तो वीर्योष्णो मधुरः सरः ।
भग्नसन्धानकृद् वृष्यः सूक्ष्मः स्वर्यो रसायनः ।।४७।।

गुग्गुलु रस आदि को साफ करके फैलाने वाला है, चर्परा है, वीर्य में गर्म है, मीठा है, दस्तावर है, टूटे को जोड़ने वाला है, धातु को पुष्ट करता है, सूक्ष्म है, स्वर में हित है और रसायन है।।४७।।

दीपनः पिच्छलो बल्यः कफवातव्रणापचीः ।
मेदोमेहास्रवातास्रक्लेदकुष्ठामभारुतान् ।।४८।।

गुग्गुल–अग्नि को जगाता है, पिच्छल है बलदायक है और कफ, वात, घाव, अपची, मेदरोग, प्रमेह, रक्तवात, रक्तस्वेद, कुष्ठ आमवात।।४८।।

पिटिकाग्रन्थिशोफार्शोग्रन्थिगण्डक्रिमीञ्जयेत् ।
स नवो बृंहणो वृष्यः पुराणस्त्वतिलेखनः ।।४९।।

पिटिका, ग्रंथि, शोजा, बवासीर, गलगंड, क्रमि इनको जीतता है। नया गूगुल वीर्य को बढ़ाता है, धातु को पुष्ट करता है, पुराणा गूगुल अत्यंत लेखन है, गूगुल प्रसिद्ध है।।४९।।

रालानामगुणाः

राला सर्जरसो यक्षधूपः सर्जोऽग्निवल्लभः ।
क्षणकः सालनिर्यासो लाक्षा स्याल्ललनो वरः ।।५०।।

राला, सर्जरस, यक्षधूप, सर्ज, अग्निवल्लभ, क्षणक, सालनिर्यास, लाक्षा, ललन, वर ये राल के नाम हैं।।५०।। .

राला हिमा गुरुस्तिक्ता कषाया ग्राहिणी जयेत् ।
ग्रहास्रस्वेदवीसर्पविषव्रणविपादिकाः ।।५१।।

राल, शीतल है, भारी है, कडुवी है, कषैली है, मल को बांधती है, और ग्रहदोष, रक्त, पसीना, विसर्प, विष, घाव, विपादिका इनको जीतती है, राल सर्जवृक्ष से निकलती है, राल नाम से प्रसिद्ध है।।५१।।

स्थौणेयकनामगुणाः

स्थौणेयकं बहिश्चूडं शुकवर्णं शुकच्छदम् ।
स्थौणेयं शीतलं वृष्यं मेध्यं दोषत्रयास्रजित् ।।५२।।

स्थौणेयक, बहिश्चूड, शुकवर्ण, शुकच्छद ये थुनेरा के नाम हैं। थुनेरा–शीतल है धातु को पुष्ट करता है, बुद्धि को बढ़ाता है, त्रिदोष और रक्त को जीतता है, यह

सुगंधितद्रव्य है, ग्रंथिपर्ण (गठिवन) का भेद है।।५२।।

चौरकनामगुणाः

चौरकः कितवश्चन्द्रो द्रुष्पुत्रः शङ्कितो रिपुः ।
चौरः स्वादुर्लघुः शीतः कुष्ठवातकफास्रजित् ।।५३।।

चौरक, कितव, चन्द्र, दुष्पुत्र, शंकित, रिपु ये चौरक के नाम हैं। चौर के स्वादु है, हलका है, शीतल है और कुष्ठ, वात, कफ, रक्त इन्हों को जीतता है यह भी गठिवन जातिविशेष है, इसमें भी सुगंधि होती है, चौराभटेउर इन नामों से पर्वतों में मिलता है।।५३।।

मुरानामगुणाः

मुरा गन्धवती दैत्या गन्धाढ्या सुरभिः कुटिः ।
मुरा शीता लघुः कुष्ठग्रहपित्तानिलास्रजित् ।।५४।।

मुरा, गन्धवती, दैत्या, गंधाढ्या, सुरभि, कुटि ये नाम मुराके हैं। मुरा शीतल है, हल्की है और कुष्ठ, ग्रहदोष, पित्त, वातरक्त इनको जीतती है।।५४।।

कर्चूरनामगुणाः

कर्चूरो द्राविडो गन्धमूलको दुर्लभः शटी ।
कर्चूरो दीपनो रुच्यः कुष्ठार्शोव्रणकासजित् ।
उष्णो लघुर्जयेच्छ्वासगुल्मवातकफक्रिमीन् ।।५५।।

कचूर, द्राविड, गन्धमूलक, दुर्लभ, शटी ये कचूर के नाम हैं। कर्चूर अग्नि को जगाता है, रुचि को उपजाता है और कुष्ठ, बवासीर, घाव, खांसी इनको जीतता है। यह गर्म है, हलका है और गुल्म, श्वास, वात, कफ, कृमि इनको जीतता है, कचूर हलदी के खेतों में से सफेद गांठ सी निकलती है।।५५।।

शटी (दूसरी जात का कचूर) नामगुणाः

शटी पलाशी षड्ग्रन्था सुव्रता गन्धमूलिनी ।
शटी शीता ज्वरामास्रकासजिद् ग्राहिणी लघुः ।।५६।।

शटी, पलाशी, षड्ग्रन्था, सुव्रता, गन्धमूलिनी ये नाम शटी के हैं। शटी-शीतल है और ज्वर, आम, रक्त, खांसी इनको जीतती है। यह मल को बांधती है, हलकी है, शटी कचूर का ही भेद है।।५६।।

स्पृक्कानामगुणाः

स्पृक्का स्पृग् ब्राह्मणी देवी निर्माल्या कुटिका वधूः ।
स्पृक्का स्वादुर्हिमा वृष्या कुष्ठालक्ष्मीत्रिदोषनुत् ।।५७।।

स्पृक्का, स्पृक्, ब्राह्मणी, देवी, निर्माल्या, कुटिका, वधू ये नाम स्पृक्का के हैं, स्पृक्का

स्वादु है, शीतल है, वीर्य को बढ़ाती है और कुष्ठ, फीकापन, त्रिदोष इनको जीतती है, असवर्ग नाम से प्रसिद्ध है।।५७।।

ग्रन्थिपर्णनामगुणाः

ग्रन्थिपर्णो नीलपुष्पः शुकपुष्पं शुकच्छदम् ।
ग्रन्थिपर्णो लघुस्तिक्तो रुच्योष्णः कफवातजित् ।।५८।।

ग्रन्थिपर्ण, नीलपुष्प, शुकपुष्प, शुकच्छद यह गठौना के नाम हैं। गठिवन हलका है, कडुवा है, रुचि को उपजाता है, गर्म है और कफवात को जीतता है। गठिवन गठौना इन नामों से प्रसिद्ध है।।५८।।

नलिकानामगुणाः

नलिका नर्त्तकी शून्या निर्मला धमनी नटी ।
नली पित्तास्रजिच्छीता चक्षुष्या कुष्ठकृच्छ्रजित् ।।५९।।

नलिका, नर्तकी, शून्या, निर्मला, धमनी, नटी ये नाम नलिका के हैं। नलिका पित्तरक्त को जीतती है, शीतल है, नेत्रों में हित है, कुष्ठ और मूत्रकृच्छ्र को जीतती है, मलिका (नालि) जल के किनारे बहुत होता है।।५९।।

पद्मनामगुणाः

पद्मकं मलयश्चारुः पीतरक्तश्च सुप्रभः ।
पद्मकं दाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तहृत् ।
गर्भसंस्थापनं शीतं तृष्णावीसर्पदाहजित् ।।६०।।

पद्मक, मलय, चारु, पीतरक्त, सुप्रभ ये पद्मक के नाम हैं। पद्मक—दाह, विस्फोट, कुष्ठ, कफ, रक्तपित्त इनको हरता है, गर्भ को स्थित करता है, शीतल है, तृषा, विसर्प, दाह इनको जीतता है। यह पद्माख, ब्रह्मकाष्ठ इन नामों से प्रसिद्ध है। इसके वृक्ष हमने शिमलाप्रांत में अधिक देखे हैं, पहाड़ीलोग इसको पाज्जा कहते हैं।।६०।।

प्रपुण्डरीकनामगुणाः

प्रपुण्डरीकः पौण्ड्राह्वः शतपुष्पं सुपुष्पकम् ।
पुण्ड्राह्वं शुक्रलं शीतं चक्षुष्यं श्लेष्मपित्तजित् ।।६१।।

प्रपुंडरीक, पौंड्राह्व, शतपुष्प, सुपुष्पक ये प्रपुंडरीक के नाम हैं। पुंडरीक वीर्य को उपजाता है, शीतल है, नेत्रों में हित करता है और कफपित्त को जीतता है, यह सुगंधित वृक्ष होता है, इसका रस भी नेत्रों में डालते हैं, कोई इसको पंड्याराही कहते हैं।।६१।।

तगरनामगुणाः

तगरं बर्हिणं जिह्वं वक्राह्वं नहुषं नतम् ।

अपरं पिण्डतगरं चीनं कटु महोरगम् ॥६२॥

तगर, बर्हिण, जिह्व, वक्त्राह्व, नहुष, नत ये तगर के नाम हैं। पिंडतगर, चीन, कटु, महोरग ये दूसरे तगर के नाम हैं॥६२॥

तगरं मधुरं स्निग्धं तिक्तोष्णं लघु भूतजित् ।
विषापस्मारमूर्द्धाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ॥६३॥

तगर मीठा है, चिकना है, कडुवा है, गर्म है, हलका है, भूतबाधा को जीतता है और विष, मृगीरोग, शिरोरोग, नेत्ररोग, त्रिदोष इनको नाश करता है, तगर प्रसिद्ध है॥६३॥

गोरोचनानामगुणाः

गोरोचना रुचिर्गौरी रोचना पिङ्गला मता ।
मङ्गल्या गोतमी मेध्या वन्ध्या गोपित्तसम्भवा ॥६४॥

गोरोचना, रुचि, गौरी, रोचना, पिंगला, मंगल्या, गोतमी, मेध्या, वंध्या, गोपित्तसंभवा ये गोरोचना के नाम हैं॥६४॥

रोचना शीतला वश्या गर्भस्रावग्रहास्रजित् ॥६५॥

गोरोचन शीतल है, वश करता है, गर्भस्राव, ग्रहदोष, रक्त इनको जीतता है॥६५॥

नखद्वयनामगुणाः

नखाह्वो नखरः शुक्तिहनुर्नागहनुः खरः ।
शुक्तिशङ्खो व्याघ्रनखमन्यव्व्याघ्रतलं पदम् ॥६६॥

नखाह्व, नखर, शुक्तिहनु, नागहनु, खर, शुक्तिशंख, व्याघ्रनख, ये नख के नाम हैं, व्याघ्रतल, पद ये दूसरे नख के नाम हैं॥६६॥

नखद्वयं ग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठजित् ।
लघूष्णं शुक्रलं बल्यं हृद्यं स्वादु विषापहम् ॥६७॥

दोनों नख-ग्रहदोष, कफ, वातरक्त, ज्वर, कुष्ठ इनको जीतते हैं, हलके हैं, गर्म हैं, वीर्य को उत्पन्न करते हैं, बलदायक हैं, दिल को ताकत देते हैं, स्वादु हैं और विश को नाश करते हैं, नख नाम से प्रसिद्ध हैं॥६७॥

पतङ्गनामगुणाः

पतङ्गं पटरागं स्याद्रक्तकाष्ठं कुचन्दनम् ।
सुरङ्गकं जगत्याह्वं पत्तूरं पटरञ्जकम् ।
पतङ्गमधुरं शीतं पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ॥६८॥

पतंग, पटराग, रक्तकाष्ठ, कुचंदन, सुरंगक, जगत्याह्व, पत्तूर, पटरंजक ये नाम पतंग

के हैं। पतंग-मीठा है, शीतल है और पित्त, कफ, घाव, रक्त इनको जीतता है, पतंग लालचंदन की समान लकड़ी होती है।।६८।।

लाक्षानामगुणाः

लाक्षा निर्मत्सरो रक्ता द्रुमव्याधिः पलङ्कषा ।
कृमिजा जतु दीप्ताह्वा जावको लवको मतः ।।६९।।

लाक्षा, निर्मत्सर, रक्ता, द्रुमव्याधि, पलंकषा, कृमिजा, जतु, दीपाह्वा, जावक और लवक ये लाख के नाम हैं।।६९।।

लाक्षा वर्ण्या हिमा बल्या स्निग्धा श्लेष्मास्रपित्तजित् ।
व्रणोरः क्षतवीसर्पकृमिकुष्ठग्रहापहा ।
अलक्तक, गुणैस्तद्वद्विशेषाद्व्यङ्गनाशनः ।।७०।।

लाख वर्ण को निखारती है, शीतल है, बल को करती है, चिकनी है तथा कफ, रक्त, पित्त इनको जीतती है। यह घाव, छाती का फूटना, विसर्प, कृमि, कुष्ठ ग्रहदोष इनको नाश करती है। अलक्तक में भी ये ही गुण हैं, विशेषकरके व्यंग को नाश करती है।७०।।

पर्पटीनामगुणाः

पर्पटी रजनी कृष्णा जातका जननी जनी ।
पर्पटी वर्णदा शीता कफपित्तास्रकुष्ठजित् ।।७१।।

पर्पटी, रजनी, कृष्णा, जातका, जननी, जनी ये पापड़ी के नाम हैं। पापड़ी वर्ण को देती है, शीतल है और कफ, पित्त, रक्त, कुष्ठ इनको जीतती है। इसके वृक्ष मालवदेश में प्रसिद्ध हैं।।७१।।

पद्मिनीकैरविणीनामगुणाः

पद्मिनी बिसिनी ज्ञेया नलिनी सूर्यवल्लभा ।
कुमुद्वती कैरविणी कुमुदिन्युडुपप्रिया ।।७२।।

पद्मिनी, बिसिनी, नलिनी, सूर्यवल्लभा ये पद्मिनी के नाम हैं। कुसुद्वती, कैरविणी, कुमुदिनी, उडुपप्रिया ये कुमोदिनी के नाम हैं।।७२।।

पद्मिनी शीतला गुर्वी पित्तश्लेष्मविषास्रजित् ।
रूक्षा विष्टम्भिनी स्वादुस्तद्वत्कुमुदिनी मता ।।७३।।

पद्मिनी-शीतल है, भारी है और पित्त, कफ, विष, रक्त इनको जीतती है, रूखी है, विष्टंभ को करती है और स्वादु है, ये ही गुण कुमोदिनी में है, भंबूल नाम से प्रसिद्ध है।।७३।।

पद्मचारिणीनामगुणाः

पद्मचारिण्यतिचरा पद्माह्वा चारटी मता ।
पद्मा हिमा लघुः श्लेष्मकृच्छ्रजित् स्तनदाहकृत् ॥७४॥

पद्मचारिणी, अतिचरा, पद्माह्वा, चारटी ये पद्मचारिणी के नाम हैं। पद्मचारिणी शीतल है, हलकी है, कफ और मूत्रकृच्छ्र को जीतती है, स्तनों में दाह करती है॥७४॥

श्वेतकमलनामानि

कमलं श्वेतमम्भोजं सारसं सरसीरुहम् ।
सहस्रपत्रं श्रीगेहं शतपत्रं कुशेशयम् ।
पङ्केरुहं तामरसं राजीवं पुष्कराह्वयम् ॥७५॥
अब्जमम्भोरुहं पद्मं पुण्डरीकं च पङ्कजम् ।
नलं सरोजं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥७६॥

कमल, श्वेत, अंभोज, सारस, सरसीरुह, सहस्रपत्र, श्रीगेह, शतपत्र, कुशेशय, पंकेरुह, तामरस, राजीव, पुष्कराह्वय, अब्ज, अंभोरुह, पद्म, पुंडरीक, पंकज, नल, सरोज, नलिन, अरविन्द, महोत्पल, ये सुपेद कमल के नाम हैं॥७५॥७६॥

रक्तोत्पलं कोकनदं हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥७७॥

रक्तोत्पल कोकनद, हल्लक, रक्तसंध्यक ये लाल कमल के नाम हैं॥७७॥

नीलोत्पलनामानि

नीलोत्पलं कुवलयं भद्रमिन्दीवरं मतम् ।
एतदेव सितं किञ्चित्कुमुदं कैरवं कुमुद् ॥७८॥

नीलोत्पल, कुवलय, भद्र, इन्दीवर ये नीलकमल के नाम हैं, यही किंचित् सफेद हो तो कुमुद, कैरव इन नामोंवाला कुमुद कहाता है॥७८॥

कमलादिगुणाः

कमलं शीतलं वर्ण्यं मधुरं कफपित्तजित् ।
तृषादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ।
तस्मादल्पगुणं किञ्चिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम् ॥७९॥

कमल-शीतल है, वर्ण को निखारता है, मीठा है, कफ पित्त को जीतता है और तृषा, दाह, रक्तविकार, विस्फोटक, विष, विसर्प इनको नाश करता है और लाल कमल आदिकों में इसमें किंचित् कम गुण हैं॥७९॥

कल्हारनामगुणाः

कल्हारं ह्रस्वपाथोजं सौम्यं सौगंधिकं महत् ।

कह्लारं ग्राहि विष्टम्भि कोमलं गुरु शीतलम् ॥८०॥

कह्लार, ह्रस्वपाथोज, सौम्य, सौगंधिक, महत् ये कल्हार के नाम हैं। कह्लार मल को बांधता है, विष्टंभ को करता है, कोमल है, भारी है और शीतल है॥८०॥

किञ्जल्कनामगुणाः

किञ्जल्कः केशरं गौरमापीतं काञ्चनाह्वयम् ।
किञ्जल्कः शीतलो ग्राही रक्तार्शः कफपित्तजित्॥८१॥

किंजल्क, केशर, गौर, आपीत, कांचनाह्वय ये कमलकेशर के नाम हैं। कमलकेशर शीतल है, मल को बांधती है, रक्तविकार, बवासीर, कफ, पित्त इनको जीतती है॥८१॥

पद्मबीजनामगुणाः

पद्मबीजं तु कालेयं पद्माक्षं पद्मकर्कटी ।
पद्मबीजं हिमं स्वादु गर्भसंस्थापनं गुरु ।
कफवातहरं बल्यं ग्राहि पित्तास्रदाहजित् ॥८२॥

पद्मबीज, कालेय, पद्माक्ष, पद्मकर्कटी ये कमलबीज के नाम हैं। कमलबीज (कमलगट्टे) शीतल हैं, स्वादु हैं, गर्भ को स्थिर करते हैं, भारी हैं, कफवात को हरते हैं, बलदायक हैं, मल को बांधते हैं और पित्त, रक्त, दाह इनको जीतते हैं॥८२॥

मृणाल (मिस) नामगुणाः

मृणालं बिसमम्भोजं नालयं च नलिनीरुहम् ।
पद्मादिमूलं शालूकं शालीनं करहाटकम् ॥८३॥

मृणाल, बिस, अंभोज, नल, नलिनीरुह, पद्मादिमूल, शालूक, शालीन करहाटक ये जल में रहनेवाली कमल की भिस के नाम हैं॥८३॥

मृणालं शीतलं वृष्यं पित्तदाहास्रजिद्गुरु ।
संग्राहि मधुरं रूक्षं शालूकमपि तद्गुणम् ॥८४॥

कमल की भिस शीतल है, वीर्य को बढ़ाती है और पित्त, दाह, रक्त इनको जीतती है, भारी है, मल को बांधती है और रूखी है, शालूक में भी ये ही गुण हैं। शालूक, कमल की जड़ के नीचे के हिस्से को कहते हैं और मृणाल डंडी की ओर का हिस्सा होता है। इसको भिस कहते हैं, इसका शाक भी बनाया जाता है॥८४॥

जाती (चमेली) नामगुणाः

जाती प्रियंवदा राज्ञी मालती सुमना मता ।
पीता सत्यपरा पीतपुष्पा काञ्चनपुष्पिका ।
जाती लघूष्णा मूर्द्धाक्षिदन्तार्तिव्रणरक्तजित् ॥८५॥

जाती, प्रियंवदा, राज्ञी, मालती, सुमना, पीता, सत्यपरा, पीतपुष्पा, कांचनपुष्पिका ये चमेली के नाम हैं, चमेली हलकी है, गर्म है और मस्तकरोग, नेत्ररोग, दन्तरोग, घाव, रक्तविकार इनको जीतनेवाली है।।८५।।

मल्लिका (मालती) नामगुणाः

मल्लिका मोदिनी मुक्तबन्धना मदयन्तिका ।
मल्लिकोष्णा लघुर्वृष्या वातपित्तास्त्ररोगजित् ।।८६।।

मल्लिका मोदिनी, मुक्तबन्धना, मदयन्तिका ये मालती के नाम हैं। मालती गर्म है, वीर्य में हित है और वात, पित्त, रक्त इनको जीतती है।।८६।।

यूथिका (जूही)

यूथिका हरिणी बाला पुष्पगन्धा शिखण्डिनी ।
स्वर्णयूथाऽपरा पीता गणिका स्वर्णपुष्पिका ।
यूथी हिमाऽस्त्रमूर्द्धाक्षिरोगजित्कफवातकृत् ।।८७।।

यूथिका, हरिणी, बाला, पुष्पगंधा, शिखंडिनी, स्वर्णयूथा ये नाम जूही के हैं। पीता गणिका स्वर्ण पुष्पिका ये पीले फूल की जूही के नाम हैं। जूही शीतल है, रक्त, विकार, शिरोरोग, नेत्र रोग इनको जीतती है और कफवात को उत्पन्न करती है।।८७।।

कुब्जका (सेवती) नामगुणाः

कुब्जका भद्रतरुणी बृहत्पुष्पा महासहा ।
शतपत्री तरुण्युक्ता कर्णिका चारुकेशरा ।
रक्ताऽपरा रक्तपुष्पा लाक्षापुष्पाऽतिमञ्जुला ।।८८।।

कुब्जका (कूजो), भद्रतरुणी, बृहत्पुष्पा, महासहा, शतपत्री, (गुलाब) तरुणी, कर्णिका, चारु केशरा ये नाम कूजो (गुलाब) और सेवती के हैं, रक्ता, रक्तपुष्पा, लाक्षापुष्पा, अतिमंजुलाः ये नाम लाल फूल की सेवती के हैं।।८८।।

शतपत्री हिमा हृद्या ग्राहिणी शुक्रला लघुः ।
दोषत्रयास्त्रजिद्वर्ण्या कुब्जकोऽपि च तद्गुणः ।।८९।।

सेवती और गुलाब शीतल हैं, दिल को ताकत देते हैं, मल को बांधते हैं, वीर्य को देते हैं, हलके हैं, त्रिदोष रक्त इनको जीतते हैं तथा वर्ण को निखारते हैं। कुब्जा (कूजो) में भी यही गुण है।।८९।।

केतकीसुवर्णकेतकीनामगुणाः

केतकी सूचिकापुष्पो जम्बूकः क्रकचच्छदः ।
सुवर्णकेतकी चान्या लघुपुष्पा सुगन्धिनी ।

केतकी कटुका स्वादुर्लघुस्तिक्ता कफापहा ।।९०।।

केतकी (केवड़ा) सूचिकापुष्प, जंबूक, क्रकचच्छद ये केतकी के नाम हैं, और सुवर्ण केतकी, लघुपुष्पा, सुगंधिनी ये सुवर्ण केतकी के नाम हैं, केतकी–चर्परी है, स्वादु है, हलकी है, कड़ुवी है, कफ को नाशती है।।९०।।

वासन्तीनामगुणाः

वासन्ती सारणी कुन्दा प्रहसन्ती वसन्तजा ।
वासन्ती शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयास्रनुत् ।।९१।।

वासन्ती, सारणी, कुन्दा, प्रहसन्ती, वसंतजा ये वासंती के नाम हैं। बासंती–शीतल है, कड़ुवी है, हलकी है और त्रिदोष को दूर करती है।।९१।।

नैपालीनामगुणाः

नैपाली ग्रैष्मिका लूता लापिनी वनमल्लिका ।
वार्षिकी त्रिपुटा त्वन्या श्रीमती षट्पदप्रिया ।।९२।।

नैपाली, ग्रैष्मिका, लूता, लापिनी, वनमल्लिका, ये नैपाली के नाम हैं और वार्षिकी, त्रिपुटा, श्रीमती षट्पदप्रिया ये वार्षिकी बेला के नाम हैं।।९२।।

नैपाली शीतला तिक्ता लघ्वी दोषत्रयापहा ।
कर्णाक्षिमुखरोगघ्नी तद्गुणा वार्षिकी मता ।।९३।।

नैपाली-शीतल है, कड़ुवी है, हलकी है, त्रिदोष को हरती है और कानरोग, नेत्ररोग, मुखरोग इनको नाशती है। नैपाली नीले फूल की छोटी जाति की प्रसर होती है, इसके फूल ग्रीष्मऋतु में खिलते हैं। इस पर भ्रमर अधिक बैठते हैं, बेला में भी ये ही गुण है। बेला मोतिया प्रसिद्ध है।।९३।।

माधवीनामगुणाः

माधवी मण्डपः कामी पुष्पेन्द्रोऽभीष्टगन्धकः ।
माधवी मधुरा शीता लघुर्दोषत्रयापहा ।।९४।।

माधवी, मण्डप, कामी, पुष्पेन्द्र, अभीष्टगन्धक ये माधवी के नाम हैं। माधवी मीठी है, शीतल है, हलकी है और त्रिदोष को हरती है। माधवी की बेल होती है, इसके पत्र चम्पा के से होते हैं और फूलों के गुच्छे लगते हैं, फूल तिल के फूलों के समान होते हैं।।९४।।

चम्पक (चम्पा) नामगुणाः

चम्पकः काचरो रम्यश्चाम्पेयः सुरभिश्चलः ।
चम्पकः शीतलः कृच्छ्रकफपित्तास्रवातजित् ।।९५।।

चंपक, काचर, रम्य, चांपेय, सुरभि, चल ये चम्पा के नाम हैं। चंपा-शीतल है, कृच्छ्र,

कफ, पित्त, रक्तवात इनको जीतता है। चंपक का वृक्ष आम के वृक्ष समान होता है, पत्र भी आम के से होते हैं। फूल पीले होते हैं, इसको चम्पा भी कहते हैं।।९५।।

पुन्नागनामगुणाः

पुन्नागः पाटलीपुष्पः केशरी षट्पदालयः ।
पुन्नागो मधुरः शीतो रक्तपित्तकफापहः ।।९६।।

पुन्नाग, पाटलीपुष्प, केशरी, षट्पदालय ये पुन्नाग के नाम हैं। पुन्नाग-मीठा है, शीतल है, रक्तपित्त और कफ को दूर करता है। पुन्नाग की कली को नागकेसर कहते हैं।।९६।।

बकुल (मौलसिरी) नामगुणाः

बकुलः केशरो मध्यगन्धः सिंहो विशारदः ।
बकुलः शीतलः श्लेष्मपित्तदन्तमदापहः ।
तत्फलं वातलं ग्राहि कफपित्तहरं हिमम् ।।९७।।

बकुल, केशर, मध्यगन्ध, सिंह, विशारद ये मौलसिरी के नाम हैं। मौलसिरी शीतल है, कफ, पित्त, दन्तरोग, मद इनका नाश करती है, मौलसिरी का फल वात को करता है, मल को बांधता है, कफपित्त को हरता है और शीतल है।।९७।।

वुष (वृद्ध) मौलसिरीनामगुणाः

वुषो वुकः स्थूलपुष्पो वसुकश्शिवशोधकः ।
वुषः शीतो विश्लेष्मपित्तकृच्छ्राश्मदाहहृत् ।।९८।।

वुष, वुक, स्थूलपुष्प, वसुक, शिवशोधक ये बड़ी मौलसिरी के नाम हैं। बड़ी मौलसिरी–शीतल है, विष, कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह इनको हरती है, जिसमें फल आते हैं वह मौलसिरी है जिसमें फल नहीं आते वह वृद्ध मौलसिरी होती है।।९८।।

कुन्दनामगुणाः

कुन्दः शुक्लः सदापुष्पो भृङ्गबन्धुर्मनोरमः ।
कुन्दः शातो लघुः श्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तजित् ।।९९।।

कुन्द, शुक्ल, सदापुष्प, भृंगबंधु, मनोरम ये कुंद के नाम हैं। कुंद शीतल और हलका है, कफ, शिर का रोग, विष, पित्त इनको जीतता है। कुन्द के छोटे छोटे वृक्ष होते हैं, फूल सफेद होते हैं, कोई लोग इसे चादनी कहते हैं।।९९।।

मुचुकुन्दनामगुणाः

मुचुकुन्दः क्षेत्रवृद्धश्चिबुकः प्रतिविप्लुषः ।
मुचुकुन्दः शिरः पीडापित्तास्रमुखनाशनः ।।१००।।

मुचुकुन्द, क्षेत्रवृद्ध, चिबुक, प्रतिविप्लुष ये मुचुकुन्द के नाम हैं। मुचुकुन्द शिर की पीड़ा, रक्तपित्त, मुखरोग इनको नाशता है, इसका वृक्ष होता है, पत्र अखरोट के समान होते हैं, फूल बड़ा और सुगंधित होता है, फल लम्बे गोल काष्ठ से होते हैं, औषधि में इसके फूल डालते हैं॥१००॥

भूमण्डली (रायबेल) नामगुणाः

भूमण्डली विचच्छिन्नो द्विपदाऽष्टपदी तथा ।
शीतो लघुर्विचच्छिन्नः कफपित्तविषापहः ॥१॥

भूमंडली, विचच्छिन्न, द्विपदा, अष्टपदी, ये रायबेल के नाम है। रायबेल–शीतल और हलका है, कफ, पित्त तथा विष को हरता है॥१॥

तिलकनामगुणाः

तिलकः क्षुरकः श्रीमान् विचित्रो मुखमण्डनः ।
तिलकः कफनुत्कुष्ठहरोऽत्युष्णो रसायनः ॥२॥

तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, विचित्र, मुखमंडन ये तिलक के नाम हैं। तिलक–कफ को दूर करता है, कुष्ठ को हरता है, गर्म है और रसायन है। तिलक वृक्ष के फूल तिल के फूल के से होते हैं, फल पीपल के समान लगते हैं॥२॥

गणेरुक (गेंदा) नामगुणाः

गणेरुकः कर्णिकारः कर्णश्च गणकारिका ।
गणेरुः शोधनः शोफश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठनुत् ॥३॥

गणेरुक, कर्णिकार, कर्ण, गणकारिका ये गेंदा के नाम हैं, गेंदा–शोधन है और शोजा, कफ, रक्त, घाव, कुष्ठ इनको दूर करता है॥३॥

बन्धूक (दुपहरिया) नामगुणाः

बन्धुजीवः शरत्पुष्पो बन्धुर्बन्धूकरक्तकौ ।
बन्धूकः कफकृद् ग्राही वातपित्तहरो लघुः ॥४॥

बंधुजीव, शरत्पुष्प, बंधु, बंधूक, रक्तक ये दुपहरिया के नाम हैं। दुपहरिया कफ को करता है। मल को बांधता है, वात पित्त को हरता है और हलका है, दुपहरिया सफेद, सिंदूरी, लाल तीन चार जात का होता है और दुपहर में खिलता है, इसीलिये इसको दुपहरिया कहते हैं॥४॥

जपापुष्पनामगुणाः

जपापुष्पं जपारक्तं त्रिसन्ध्या त्वरुणाऽसिता ।
जपा संग्राहिणी केश्या त्रिसन्ध्या कफपित्तजित् ॥५॥

जपापुष्प, जपारक्त, त्रिसंध्या, अरुणा, असिता ये नाम जपा के हैं। जपा मल को

बांधती और बालों को बढ़ाती है। त्रिसंध्या—कफ, पित्त इनको जीतती है, इसमें लाल रंग के सुगंधित पुष्प लगते है। वृक्ष छोटा होता है, दिल्ली प्रांत में इसको गुडहल ओडहुल कहते हैं, इसी को जवापुष्प भी कहते हैं।।५।।

सिन्दूरीनामगुणाः

सिन्दूरी रक्तबीजा स्याद्रक्तपुष्पा सुकोमला ।
सिन्दूरी कफपित्तास्रतृष्णावान्तिहरा हिमा ।।६।।

सिंदूरी, रक्तबीजा, रक्तपुष्पा, सुकोमला ये सिंदूरी के नाम हैं। सिंदूरी—कफ, पित्त, रक्त, तृषा, छर्दि इनको हरती है, और शीतल है, सिंदूरिया के क्षुप बगीचों में होते हैं। फूल लाल सिंदूर के रंग के होते हैं, जल में डालने से जल भी लाल हो जाता है।।६।।

तुलसीनामगुणाः

तुलसी सुरसा गौरी भूतघ्नी बहुमञ्जरी ।
तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णा दाहपित्तकृत्[1] ।
दीपनी कुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ।।७।।

तुलसी, सुरसा, गौरी, भूतघ्नी, बहुमंजरी ये तुलसी के नाम हैं। तुलसी चर्परी है, कडुवी है, दिल को ताकत देती है, गर्म है, दाह पित्त को हरती (करती) है, अग्नि को जगाती है और कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्त, पसलीशूल, कफ, वात इनको नष्ट करती है।।७।।

मरुनामगुणाः

मरुर्मरुवकस्तीक्ष्णः खरपुष्पः फणिज्जकः ।
मरुरग्निप्रदो हृद्यस्तीक्ष्णोष्णः पित्तलो लघुः ।
वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठक्रिमीञ्जयेत् ।
रुधिरादिभवं शोथं नाशयेच्च प्रलेपनात् ।।८।।

मरु, मरुवक, तीक्ष्ण, खरपुष्प, फणिज्जक ये मरुवा के नाम हैं, मरुआ बहुत अग्नि देता है, दिल को ताकत देता है, तेज है, गर्म है, पित्त को उत्पन्न करता है, हलका है और बीछू आदि का विष, कफ, वात, कुष्ठ कृमि इनको जीतता है, रुधिरादि से होने वाली सूजन को लेप करने से नाश करता है।।८।।

मदननामगुणाः

मदनो मदना दान्तो दमो मुनिसुतो मुनिः ।

---

१ दाहपित्तजित् इत्येव पाठो गरीयान् ।

गन्धोत्कटो मदनको विनीता कुलपुत्रकः ।
मदनोऽक्षिप्रकुष्ठास्रमेदः कण्डूत्रिदोषजित् ॥९॥

मदन, मदना, दांत, दम, मुनिसुत, मुनि, गंधोत्कट, मदनक, विनीता, कुलपुत्रक ये मदन के नाम हैं। मदन–नेत्ररोग, कुष्ठ, रक्त, मेद, खाज त्रिदोष इनको जीतता है। मदना भी मरुवेका ही भेद है, इसको दौना भी कहते हैं॥९॥

वर्वरीत्रयनामगुणाः

वर्वरी वर्जकः कुण्ठो वैकुंठः स्यात्कुठेरकः ।
कपित्थार्जक इत्यन्यो वटपत्रः कटिञ्जरः ।
कृष्णार्जकः कालमासः करालः कृष्णमल्लिकः ॥११०॥

वर्वरी, वर्जक, कुंठ, वैकुंठ, कुठेरक, कपित्थार्जक, वटपत्र, कटिंजर, कृष्णार्जक, कालमास, कराल, कृष्णमल्लिका ये वनतुलसी और कालामरुवा के नाम हैं॥११०॥

वर्वरीत्रितयं रुक्षं शीतं कटु विदाहि च ।
पित्तलं कफवातास्रदद्रुक्रिमिविषापहम् ॥१११॥

तीनों प्रकार की वनतुलसी–रूखी है, शीतल है, चर्परी है, दाह को करती है, पित्त को करती है और कफ, वात, रक्त, दाह, कृमि, विष इनको नाशती है॥१११॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेणनिर्मितेऽत्र ।
ग्रंथेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णः कर्पूरप्रभृतिसुगंधिद्रव्यवर्गः॥११२॥

इति मदनपालनिघंटौ सुगंधिद्रव्यवर्गस्तृतीयः ॥३॥

राजाओं में जो मुख्य और माना हुआ तथा कटार युद्ध का मल्ल है उसी मदन राजा के रचे हुए इस मदनविनोद नामक ग्रंथ में कर्पूर आदि सुगंधिद्रव्यवर्ग पूर्ण हुआ॥११२॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ वैद्यरत्न पं०–रामप्रसाद विरचित भाषातत्वप्रकाशिनी–
हिन्दीटीकायां कर्पूरादिसुगंधिद्रव्यवर्गस्तृतीयः ॥३॥

यद्वाञ्छया विश्वकृतोऽपि देवा ब्रह्मादयो यान्ति मुहुर्भवन्ति ।
अचिन्त्यकृत्यं पुरुषं पुराणं गोपत्वमाप्तं तमुपाश्रयामि॥१॥

जिसकी इच्छा से जगत् के रचने वाले ब्रह्मा आदि देवता वारंवार उत्पन्न और नष्ट होते हैं उस अचिंत्यकृत्य वाले पुराण पुरुष और गोपजाति को प्राप्त हुए परमेश्वर के आश्रित होता हूं॥१॥

सुवर्णनामगुणाः

सुवर्णं काञ्चनं हेम हाटकं तप्तकांचनम् ।
चामीकरं शातकुम्भं तपनीयं च रुक्मकम् ।
जाम्बूनदं हिरण्यं च स्वरलं जातरूपकम् ॥२॥

सुवर्ण, कांचन, हेम, हाटक, तप्तकांचन, चामीकर, शातकुम्भ, तपनीय, रुक्मक, जांबूनद, हिरण्य, स्वरल, जातरूपक ये सुवर्ण के नाम हैं॥२॥

सुवर्णं शीतलं वृष्यं बल्यं गुरु रसायनम् ॥३॥
कान्तिप्रदं विषोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ।
कषायं तिक्तमधुरं सुवर्णं गुरु लेखनम् ॥४॥

सोना–शीतल है, वीर्यवर्द्धक है, बल के देनेवाला है, भारी है, आयु को बढ़ाता है, कांतिकारक है और विष, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर, शोष इनको जीतने वाला, कषैला, कड़ुवा, मीठा और अत्यन्त लेखन है॥३–४॥

रूप्य (चांदी) नामगुणाः

रूप्यकं रजतं रूप्यं तारं श्वेतं वसूत्तमम् ।
रूप्यं शीतं सरं वातपित्तहारि रसायनम् ॥५॥

रूप्यक, रजत, रूप्य, तार, श्वेत, वसूत्तम ये चांदी के नाम है। चांदी–शीतल है, दस्तावर है वातपित्त को हरती है, रसायन है॥५॥

लेखनं च कषायाम्लं विपाके चापरं सरम् ।
वयसः स्थापनं स्निग्धं धातूनां हितमुच्यते ॥६॥

चांदी–लेखन है, कषैली है, पाक में खट्टी है। दूसरी चांदी सर है, अवस्था को स्थापन करती है, चिकनी है और धातुओं के लिये हितकारक है॥६॥

ताम्रनामगुणाः

ताम्रं म्लेच्छमुखं शुल्बं नैपालं रविनामकम् ।
उदुम्बरं सूर्यप्रियं रक्तजं रक्तधातुकम् ॥७॥

ताम्र, म्लेच्छमुख, शुल्व, नैपाल, रविनामक, उदुम्वर, सूर्यप्रिय, रक्तज, रक्तधातुक ये तांबे के नाम हैं॥७॥

ताम्रं सरं लघु स्वादु शीतं पित्तकफापहम् ।
रोपणं पाण्डुकुष्ठार्शः श्वयथुश्वासकासजित् ॥८॥

तांबा–दस्तावर है, हलका है, स्वादु है, शीतल है, पित्तकफ को नाश करता है, घाव पर अंकुर लाता है और पांडु, कुष्ठ, बवासीर, शोजा, श्वास, खांसी इनको जीतता है॥८॥

कांस्यनामगुणाः

कांस्यं लोहं निजं घोषं पंचलोहं प्रकाशकम् ।
कांस्यं गुरूष्णं चक्षुष्यं कफपित्तहरं सरम् ॥९॥

कांस्य, लोहा, निज, घोष, पंचलोह, प्रकाशक ये कांसी के नाम हैं। कांसी भारी है, गर्म है, नेत्रों को हित करता है, कफपित्त को हरता है और दस्तावर है॥९॥

पीतलोहनामगुणाः

पीतलोहं सिंहलकं कपिलं सौकुमारकम् ।
वर्तलोहं त्रिलोहं च राजरीतिर्महेश्वरी ।
पीतलोहं हिमं रूक्षं कटूष्णं कफपित्तनुत् ॥१०॥

पीतलोह, सिंहलक, कपिल, सौकुमारक, वर्तलोह, त्रिलोह, राजरीति, महेश्वरी ये पीतल के नाम हैं। पीतल—शीतल, रूखी, चर्परी, गर्म और कफ—पित्त को दूर करने वाली है॥१०॥

रंगनामगुणाः

रङ्ककं तीरकं वङ्गं त्रपु स्यात्करटी घनम् ।
रङ्गं लघु सरं रूक्षमुष्णं मेहकफक्रिमीन् ।
निहंति पांडुं सश्वासं दृश्यमीषत्तु पित्तलम् ॥११॥

रङ्कक, तीरक, वंग, त्रपु, करटी, घन ये रांग के नाम हैं। रांग—हलका है, सर है, रूखा है, गर्म है, प्रमेह, कफ, क्रमि, पांडु, श्वास इनको दूर करता है और किंचित् पित्त को उत्पन्न करता है। कलीरांगा नाम से प्रसिद्ध है॥११॥

जसदनामगुणाः

जसदं रङ्कसदृशं दितिहेतुश्च तन्मतम् ।
जसदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत ॥
चक्षुष्यं परमं मेहान् पाण्डुं श्वासं च नाशयेत् ॥१२॥

जसद, रङ्गसदृश, दितिहेतु ये जसद के नाम हैं। जसद—कषैला है, कडुवा है, शीतल है, कफपित्त को हरता है, नेत्र को परम हित कारक है और प्रमेह, पांडु, श्वास इनको नाश करता है॥१२॥

सीस (सिक्का) नामगुणाः

सीसं धातुमलं नागमुरगं परिपिष्टकम् ।
जवनेष्टं च भुजगं विसृष्टं कृष्णकं विदुः ।
सीसं रङ्गगुणं ज्ञेयं विशेषान्मेहनाशनम् ॥१३॥

सीस, धातुमल, नाग, उरग, परिपिष्टक, जवनेष्ट, भुजग, विसृष्ट, कृष्णक ये सीसे के नाम

हैं, सीसे में रांग के सब गुण हैं। विशेष करके प्रमेह को नाश करता है।।१३।।

लोहमंडूरयोर्नामगुणाः

लोहं शस्त्रमयः कुष्ठं व्यङ्गं पारावतं घनम् ।
कृष्णायस्तन्मलं किट्टं मण्डूरो लोहजं रजः ।।१४।।

लोह, शस्त्र, अयः कुष्ठ, व्यंग, पारावत, घन यह लोहे के नाम हैं। कृष्णायस, तन्मल, किट्ट, मण्डूर, लोहज, रज ये लोहे के मल के नाम हैं।।१४।।

लोहं सरं गुरु स्वादु कषायं कफपित्तनुत् ।
शीतं नेत्रहितं रूक्षं बल्यं बातलमुत्तमम् ।।१५।।

लोहा दस्तावर है, भारी है, स्वादु है, कषैला है, कफपित्त को नष्ट करता है, शीतल है, आंखों में हित है, रूखा है, बल को देता है, वात को उत्पन्न करता है और उत्तम है।।१५।।

शोफकुष्ठप्रमेहार्शोगरपाण्डुक्रिमीञ्जयेत् ।
तत्किट्टंतद्गुणं ज्ञेयं विशेषात्पाण्डुनाशनम् ।।१६।।

यह शोजा, कुष्ठ, प्रमेह, बवासीर, कृत्रिमविष, पाण्डु कृमि इनको जीतता है। लोहे के (तै) मैल में भी लोहे के सम गुण हैं। विशेष करके पाण्डुरोग को नष्ट करता है।।१६।।

पारदनामगुणाः

पारदश्चपलो हेमनिधिः सूतो रसोत्तमः ।
त्रिनेत्रो रोषणः स्वामी हरबीजं रसः प्रभुः ।।१७।।
रसेन्द्रश्चेति विख्यातो रसलोहो महारसः ।
पारदः क्रमिकुष्ठघ्नश्चक्षुष्योष्णो रसायनः ।।१८।।

पारद, चपल, हेमनिधि, सूत, रसोत्तम, त्रिनेत्र, रोषण, स्वामी, हरबीज, रस, प्रभु रसेन्द्र, रसलोह, महारस ये पारे के नाम हैं। पाराक्रमि और कुष्ठ को नष्ट करता है, नेत्रों को हितकारक है, गर्म है, और रसायन है।।१७–१८।।

अभ्रकनामगुणाः

अभ्रकं स्वच्छमाकाशं पटलं वरपीतकम् ।
अभ्रं गुरु हिमं बल्यं कुष्ठमेहत्रिदोषनुत् ।।१९।।

अभ्रक, स्वच्छ, आकाश, पटल, वरपीतक ये अभ्रक के नाम हैं, अभ्रक भारी है, शीतल है, वलकारक है, कुष्ठ, प्रमेह, त्रिदोष इनको नष्ट करता है।।१९।।

गगनं क्रमिकुष्ठमेहहृद् विशदं शुक्रकरं च दीपनम् ।
कथितं मुनिभिश्च पूर्वजैर्बलकृच्छुक्रकरं च सेवितम्।।२०।।

सेवन किया हुआ अभ्रक कृमि, कुष्ठ और प्रमेह को हरता है, रस को स्पष्ट करता है, वीर्य को बढ़ाता है, अग्नि को जगाता है, बल को करता है, और वीर्य को उपजाता है, ऐसे पुराने मुनियों ने कहा है।।२०।।

गन्धकनामगुणाः

गन्धकः सौगन्धको लेखी गन्धाश्मा गन्धपीतकः ।
लेलीतको बलिवसा वेगन्धो गन्धको बलिः ।।२१।।

गन्ध, सौगन्धक, लेखी, गन्धश्मा, गंधपीतक, लेलीतक, बलिवसा, वेगन्ध, गंधक बलि ये गंधक के नाम हैं।।२१।।

गन्धकः कटुकः पाके वीर्योष्णः पित्तलः सरः ।
हन्ति कुष्ठक्षयप्लीहकफवातरसामयान् ।।२२।।

गंधक–पाक में चर्परा है, वीर्य में गर्म है, पित्त को करता है, दस्तावर है, और कुष्ठ, क्षय, तिल्लीरोग, कफ, वात, पारे से उपजे रोग इनको नाश करता है।।२२।।

सुवर्णमाक्षिकनामगुणाः

माक्षिकं धातुमाक्षीकं ताप्यं तापीजमुच्यते ।
माक्षिकं तुवरं वृष्यं स्वर्यं लघु रसायनम् ।।२३।।

माक्षिक, धातुमाक्षीक, ताप्य, तापीज ये सोनामक्खी के नाम हैं। सोनामक्खी कषैली है। वीर्यवर्द्धक है, स्वर करती है, हलकी है, और रसायन है।।२३।।

चक्षुष्यं कुष्ठशोफार्शोमेहबस्त्यर्तिपाण्डुताः ।
व्यवायि कटुकं हन्ति कुष्ठोदरविषक्षयान् ।।२४।।

सोनामाखी–नेत्रों को हितकारक है, और कुष्ठ, शोजा, प्रमेह, बस्ति रोग, पांडु, उदररोग,विष, क्षय इनको नाश करती है और भोग में आनन्द देती है, तथा चर्परी है।।२४।।

मनःशिलानामगुणाः

मनःशिला शिला गोला नैपाली कुनटी कुला ।
दिव्यौषधिर्नागमाता मनोगुप्ता मनोऽम्बिका ।।२५।।

मनःशिला, शिला, गोला, नैपाली, कुनटी, कुला, दिव्यौषधि, नागमाता, मनोगुप्ता, मनोऽम्बिका ये मनशिल के नाम हैं।।२५।।

मनःशिला कृच्छ्रहरा सरोष्णा लेखनी कटुः ।
तिक्ता स्निग्धा विषश्वासकासभूतकफास्रजित् ।।२६।।

मनशिल मूत्रकृच्छ्र को हरती है, सर है, गर्म है, लेखनी है, चर्परी है, कड़ुवी है, चिकनी है, और विष, श्वास, खांसी, भूतदोष, कफ, रक्तविकार इनको जीतती

है।।२६।।

हरितालनामगुणाः

हरितालमलं तालं गोदन्तं नटभूषणम् ।
हरितालं कटु स्निग्धं कषायोष्णं विषं जयेत् ।
कण्डूकुष्ठास्यरोगांश्च कफपित्तकचग्रहान् ।।२७।।

हरिताल, अल, गोदन्त, नटभूषण ये नाम हरताल के हैं। हरताल चर्परी है, चिकनी है, कषैली है, गर्म है, और विष, खाज, कुष्ठ, मुखरोग, कफ, पित्त, बाल ग्रहदोष इनको जीतती है।।२७।।

गैरिकनामगुणाः

गैरिकं रक्तपाषाणं गिरिमृच्च गवेधुकम् ।
स्वर्णवर्णं परं स्वर्णमण्डलं स्वर्णगैरिकम् ।।२८।।

गैरिक, रक्तपाषाण, गिरिमृत्, गवेंधुक ये गेरु के नाम हैं। स्वर्णवर्ण, स्वर्णमण्डल, स्वर्णगैरिक ये सोना गेरू के नाम हैं।।२८।।

गैरिकं दाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ।
चक्षुष्यमन्यत्तद्वच्च विशेषाद्वान्तिनाशनम् ।।२९।।

गेरू-दाह, पित्त, रक्त, कफ, हिचकी विष इनको नाश करता है, नेत्रों को हित है, सोनागेरू में भी यही गुण हैं, परन्तु विशेषकर छर्दि को नाश करता है।।२९।।

तुत्थ (निलाथोथा) नामगुणाः

तुत्थं कर्पूरिकातुत्थममृतासङ्गमुच्यते ।
मयूरग्रीवकं चान्यच्छिखिकण्ठं च तुत्थकम् ।।३०।।

तुत्थ, कर्पूरिकातुत्थ, अमृतासंग, मयूरग्रीवक ये नीलाथोथा के नाम हैं। दूसरा शिखिकण्ठ नाम से होता है।।३०।।

तुत्थकं लेखनं भेदि कण्डूकुष्ठविषापहम् ।
कफक्रिमिहरं तद्वदन्यच्चक्षुष्यमुत्तमम् ।।३१।।

नीलाथोथा लेखन और भेदन है, खाज, कुष्ठ, विष, रक्त, कृमि इनका नाश करता है। दूसरा नीलाथोथा नेत्रों को हितकारक और उत्तम है।।३१।।

कासीसनामगुणाः

कासीसं धातुकासीसं खेचरं तप्तलोमशम् ।
अपरं पुष्पकासीसं तुवरं वस्त्ररागधृक् ।।३२।।

कासीस, धातुकासीस, खेचर, तप्तलोमश ये हीराकसीस के नाम हैं। पुष्पकासीस, तुवर, वस्त्ररागधृक् ये नाम दूसरे के हैं।।३२।।

कासीसद्वयमम्लोष्णं तिक्तं केश्यं दृशे हितम् ।
हन्ति कण्डूविषश्वित्रमूत्रकृच्छ्रकफानिलान् ॥३३॥

दोनों हीराकसीस–खट्टे हैं, गर्म हैं, कडुवे हैं, बालों को बढ़ाते हैं, नेत्रों में हित हैं और खाज, विष, श्वित्रकुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात इनको नाशते हैं॥३३॥

हिंगुल (सिंगरफ) नामगुणाः

हिंगुलं दरदं म्लेच्छं सैकतं चूर्णपारदम् ।
हिंगुलं पित्तकफनुच्चक्षुष्यं विषकुष्ठहृत् ॥३४॥

हिंगुल, दरद, म्लेच्छ, सैकत, चूर्ण, पारद ये सिंगरफ के नाम हैं। सिंगरफ–पित्त कफ को दूर करता है, नेत्रों को हितकारक है, विष और कुष्ठ को हरता है॥३४॥

सिन्दूरनामगुणाः

सिन्दूरं नागजं रक्तं श्रीमच्छृङ्गारभूषणम् ।
वसन्तमण्डनं नागरक्तं रक्तरजस्तथा ॥३५॥

सिन्दूर, नागज, रक्त, श्रीमत, शृंगारभूषण, वसंतमंडन, नागरक्त, रक्तरज, ये सिंदूर के नाम हैं॥३५॥

सिन्दूरमुष्णं वीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम् ।
भग्नसन्धानजननं व्रणशोधनरोपणम् ॥३६॥

सिंदूर गर्म है, विसर्प, कुष्ठ, खाज, विष इनको नाश करता है, टूटे हुए को जोड़ता है, घाव को शोधन करता है और भर लाता है॥३६॥

सौवीरनामगुणाः

सौवीरमञ्जनं कृष्णं कालनीलं सुवीरजम् ।
स्रोतोऽञ्जनं तु स्रोतोजं नदीजं यामुनं वरम् ॥३७॥

सौवीर, अञ्जन, कृष्ण, कालनील, सुवीरज, स्रोतोऽञ्जन, स्रोतोज, नदीज, यामुन, वर ये सुरमा के नाम हैं॥३७॥

सौवीरं ग्राहि मधुरं चक्षुष्यं कफवातजित् ।
सिध्माक्षयास्रनुच्छीतं स्रोतोऽञ्जनमपीदृशम् ॥३८॥

सुरमा–मल को बांधता है, मीठा है, आंखों में हित है, कफ–वात को जीतता है, सीप और क्षय रोग को नाश करता है तथा शीतल है। स्रोतोंजन में भी यही गुण हैं॥३८॥

रसाञ्जननामगुणाः

रसाञ्जनं रसोद्भूतं तार्क्ष्यं शैलं च तार्क्ष्यजम् ।
रसाग्र्यं कृत्रिमं तार्क्ष्यं दार्व्यं दार्वीरसोद्भवम् ॥३९॥

रसांजन, रसोद्भूत, तार्क्ष्य, शैल, तार्क्ष्यज, रसाग्र्य, कृत्रिम, तार्क्ष्य, दार्व्य, दार्वीरसोद्भव ये रसौंत के नाम हैं।।३९।।

रसाञ्जनं कटु श्लेष्ममुखनेत्रविकारजित् ।
उष्णं रसायनं तिक्तं छेदनं व्रणदोषजित् ।।४०।।

रसौंत–चर्परा है; कफ, मुखरोग और नेत्ररोग को जीतता है, गर्म है, बूढ़ापे का दूर करता है, कड़ुवा है, छेदन है और घाव दोष को जीतता है।।४०।।

पुष्पाञ्जननामगुणाः

पुष्पाञ्जनं पुष्पकेतुं रीतिजं कुसुमाञ्जनम् ।
पुष्पाञ्जनं क्षारमुष्णं काचार्मपटलापहम् ।।४१।।

पुष्पाञ्जन, पुष्पकेतु, रीतिज, कुसुमांजन ये पुष्पांजन के नाम हैं, पुष्पांजन–खारा है, गर्म है, काच, अर्म, पटल इनको नाश करता है।।४१।।

शिलाजतुनामगुणाः

शिलाजतूष्णजं शैलनिर्यासो गिरिशाह्वयम् ।
शिलाह्वं गिरिजं शैलं शैलेयं गिरिजत्वपि ।।४२।।

शिलाजतु, उष्णज, शैलनिर्यास, गिरिशाह्वय, शिलाह्व, गिरिज, शैल, शैलेय, गिरिजतु ये शिलाजीत के नाम हैं।।४२।।

शिलाजतूष्णं कटुकं योगवाहि रसायनम् ।
छर्दिप्रमेहवातार्शः कुष्ठास्योदरपाण्डुताः ।
हन्ति श्वासक्षयोन्मादरक्तशोफकफक्रिमीन् ।।४३।।

शिलाजीत गर्म है, चर्परा है, योगवाहि अर्थात् जैसे योग में मिलता है वैसा ही गुण देता है, रसायन है, छर्दि, प्रमेह, वात, बवासीर, कुष्ठ, मुखरोग, उदररोग, श्वास, क्षय, उन्माद, रक्त, शोजा, कफ, कृमि इनका नाश करता है।।४३।।

बोलनामगुणाः

बोलं गन्धरसं वीरं निर्लोहं बर्बरं चलम् ।
सुगन्धि नालिका पिण्डं रसगन्धं च तद्द्विधा ।।४४।।

बोल, गंधरस, वीर,निर्लोह, बर्बर, चल, सुगंधि, नालिका, पिण्ड, रसगंध ये बोल के नाम हैं, यह दो प्रकार का होता है।।४४।।

बोलं रक्तहरं शीतं मेध्यं दीपनपाचनम् ।
ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नं गर्भाशयविशोधनम् ।।४५।।

बोल–रक्तविकार को हरता है, शीतल है, बुद्धि को बढ़ाता है, अग्नि को जगाता है, पाचन है, ज्वर, मृगीरोग, कुष्ठ इनका नाश करता है और गर्भाशय का शोधन

करता है।।४५।।

स्फटिकाख्यानामगुणाः

स्फटिकाख्या मृता बाष्पी कक्षी सौराष्ट्रसम्भवा ।
आडकी तुवरा त्वन्या मृत्तिका सुरमृत्तिका ।।४६।।

स्फटिकाख्या, मृता, बाष्पी, कक्षी, सौराष्ट्रसंभवा ये नाम फिटकड़ीके हैं। दूसरी के आढ़की, तुवरा, मृत्तिका, सुरमृत्तिका ये नाम हैं।।४६।।

स्फटिकाख्या कषायोष्णा कफपित्तविषव्रणान् ।
निहन्ति श्वित्रवीसर्पांस्तुवरी तद्गुणा मता ।।४७।।

फिटकड़ी कषैली और गर्म है। यह कफ, पित्त, विष, घाव, श्वित्रकुष्ठ, विसर्प इनको नाश करती है, तुवरी में भी येही गुण हैं, तुवरी फिटकड़ी का ही भेद है।।४७।।

समुद्रफेननामगुणाः

समुद्रफेनो डिण्डीरः फेनो वारिकफो द्विजः ।
समुद्रफेनश्चक्षुष्यो लेखनः शमनः सरः ।।४८।।

समुद्रफेन, डिंडीर, फेन, वारिकफ, द्विज ये समुद्रझाग के नाम हैं। समुद्रझाग नेंत्रों को हित है, लेखन है, शमन और सर है।।४८।।

प्रवालनामगुणाः

प्रवालं विद्रुमं सिन्धुर्लताग्रं रक्तवर्णकम् ।
पुष्टिदं कान्तिदं बल्यं वर्द्धनं बलशुक्रयोः ।।४९।।

प्रवाल (मूंगा) विद्रुम. सिंधु, लताग्र, रक्तवर्णक ये मूंगा के नाम है। मूंगापुष्टि, कांति, बल इनको देता है तथा बल और वीर्य को बढ़ाता है।।४९।।

मौक्तिकनामगुणाः

मौक्तिकं तौतिला मुक्ताफलं मुक्ता च शुक्तिजम् ।
मौक्तिकं मधुरं शीतं रोगघ्नं विषनाशनम् ।।५०।।

मौक्तिक, तौतिला, मुक्ताफल, मुक्ता, शुक्तिज ये मोती के नाम हैं, यह मीठा है, शीतल है, रोगों को और विष को नाश करता है।।५०।।

माणिक्यनामानि

माणिक्यं पद्मरागं स्याद्वसु रत्नं सुरत्नकम् ।।५१।।

माणिक्य, पद्मराग, वसु, रत्न, सुरत्नक ये माणिक के नाम हैं। अधिक वजन होने से इसको लाल कहते हैं।।५१।।

सूर्यकांतमणिनामानि

सूर्यकान्तः सूर्यमणिः सूर्याक्षो दहनोपलः ।।५२।।

सूर्यकांत, सूर्यमणि, सूर्याक्ष, दहनोपल ये सूर्यकांतमणि के नाम हैं।।५२।।

चन्द्रकांतमणिनामानि

चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिः स्फटिकः स्फटिकोपलः ।।५३।।

चंद्रकांत, चंद्रमणि, स्फटिक, स्फटिकोपल ये नाम चन्द्रकांतमणि के हैं।।५३।।

गोमेदनामानि

गोमेदं सुन्दरं पीतं रत्नं तृणचरं तथा ।।५४।।

गोमेद, सुन्दर, पीत, रत्न, तृणचर, ये गोमेदमणि के नाम हैं।।५४।।

हीरकनामानि

हीरकं भिदुरं वज्रं सूचीवक्त्रं वरार्धकम् ।।५५।।

हीरक, भिदुर, वज्र, सूचीवक्त्र, वरार्धक ये हीरा के नाम हैं।।५५।।

नीलवैडूर्ययोर्नामानि

नीलरक्तं नीलमणिर्वैडूर्यं बालवायजम् ।।५६।।

नीलरक्त नीलमणि (नील इंद्रनील) ये नीलम के नाम हैं। और वैडूर्य, (केतुरत्न राष्ट्रक), बालवायज ये लसणिये के नाम हैं।।५६।।

मरकतमणिनामानि

गारुत्मतं मारकतं दृषद्गर्भं हरिन्मणिः ।।५७।।

गारुत्मत, मारकत,दृषद्गर्भ,हरिन्मणि ये मरकतमणि के नाम हैं। इसको पन्ना भी कहते हैं।।५७।।

मुक्तास्फोटनामानि

मुक्तास्फोटोऽब्धिमंडूकी शुक्तिर्मौक्तिकमन्दिरम् ।।५८।।

मुक्तस्फोट, अब्धिमंडूकी, शुक्ति, मौक्तिक मंदिर ये मोतीप के नाम हैं।।५८।।

मुक्तिकान्तिनामानि

कटुकान्तिर्मुक्तिकान्तिर्दीपनी वह्निनाशिनी ।।५९।।

कटुकांति, मुक्तिकांति, दीपनी, वह्निनाशिनी ये नाम मोतीकांति (सीप विशेष) के हैं।।५९।।

प्रवालादिगुणाः

प्रवालमुक्तिमाणिक्यसूर्यशीतकरोपलाः ।
गोमेदवज्रवैडूर्यनीलगारुत्मतादयः ।।६०।।
चक्षुष्या लेशनाः शीताः कषाया मधुराः सराः ।
माङ्गल्या धारणाद्दाहदुष्टग्रहविषापहाः ।।६१।।

मूंगा, मोती, लाल, सूर्यकान्तमणि, चन्द्रमणि, पन्ना, हीरा, लसनियां, मरकतमणि

आदि रत्न नेत्रों को हितकारक हैं, लेखन हैं, शीतल हैं, कषैले हैं, मीठे हैं, फैलने वाले हैं, धारण करने से मङ्गल को देते हैं, तथा दाह दुष्टग्रह विष इनको नाश करते हैं।।६०-६१।।

शंखनामगुणाः

शङ्खः कम्बुर्जलधरो वारिजो दीर्घनिःस्वनः ।
शङ्खो हि कटुकः पाके कषायो मधुरो लघुः ।।६२।।

शंख, कम्बु, जलधर, वारिज, दीर्घनिःस्वन ये शंख के नाम हैं। शंख- पाक में चर्परा है, कषैला है, मीठा है, और हलका है।।६२।।

चक्षुष्यो लेखनः पक्तिशूलपित्तविनाशनः ।
शङ्खो नेत्रहितः शीतो लघुः पित्तकफास्रजित् ।।६३।।

शंख—नेत्रों को हितकारक है, लेखन है, परिणाम शूल और पित्त को नाश करता है, शीतल है, हलका है, तथा पित्त, कफ, रक्तविकार को जीतता है।।६३।।

लघुशंखकपर्दनामगुणाः

शङ्खो लघुः शङ्खनकः शम्बुका वारिशुक्तयः ।
कपर्दाः क्षुल्लका ज्ञेयाश्चराचरमराटकाः ।
लघुशङ्खादयः शीता नेत्ररुक्स्फोटनाशनाः ।।६४।।

शंख, लघु, शंखनक, शंबुक, वारिशुक्ति ये छोटे शंख के नाम हैं। कपर्द, क्षुल्लक, चराचर, वराटक ये कौड़ी के नाम हैं। छोटा शंख आदि शीतल हैं, नेत्ररोग और फोड़े को नाश करते हैं।।६४।।

खटीगौड़ग्रावनामगुणाः

खटी कपोलः खटिनी श्वेता नाडीतरङ्गकः ।
तद्भेदो गौडपाषाणः क्षीरपाक उदाहृतः ।
खटी दाहास्रनुच्छीता गौडग्रावापि तद्गुणः ।।६५।।

खटी, कपोल, खटिनी, श्वेता, नाड़ीतरंगक ये खड़िया के नाम हैं। इसी के भेद, गौड़पाषाण और क्षीरपाक कहे जाते हैं। खड़िया—दाह, रक्तविकार इनको दूर करती हैं और शीतल हैं गौडग्राव में भी ये ही गुण हैं।।६५।।

पङ्कवालुकानामगुणाः

पङ्कः कर्दमको ज्ञेयो वालुका सिकता तथा ।
पङ्को दाहास्रपित्तार्त्तिशोथघ्नः शीतलः सरः ।
वालुका लेखनी शीता व्रणौरः क्षतनाशिनी ।।६६।।

पक, कर्दमक ये नाम कीचड़ के और वालुका, सिकता ये नाम वालूके हैं।

कीचड़–दाह, रक्तपित्त, शोजा इनको नाशता है और सर है। वालुका लेखन है, शीतल है, घाव और छाती के फटने को नाशती है॥६६॥

चुम्बकपाषाणनामगुणाः

चुम्बकः कान्तपाषाणोऽयस्कान्तो लोहकर्षकः ।
चुम्बको लेखनः शीतो मेदोविषगरापहः ॥६७॥

चुंबक, कांतपाषाण, अयस्कांत, लोहकर्षक ये चुंबक पत्थर के नाम हैं। चुंबकलेखन और शीतल है, तथा मेद, विष, कृत्रिमविष इनको नाश करता है॥६७॥

काचनामगुणाः

काचः कृत्रिमरत्नं स्याद्विगुणः काचभाजनम् ।
काचो विदारणो व्रण्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः ॥६८॥

काच, कृत्रिमरत्न, विगुण, काचभाजन ये काच के नाम हैं। काच फाड़ता है, घाव करता है और घाव को पूरण अर्थात् भर देने वाला भी है, नेत्रों में हित है, लेखन है, हलका है॥६८॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल–
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्ण–
श्चित्रोऽयं ललितपदैः सुवर्णवर्गः ॥६९॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ सुवर्णादिवर्गश्चतुर्थः ॥४॥

राजाओं में अत्यन्त प्रधान जो कटारमल्ल उसी मदनपाल राजा के रचे हुए इस मदनविनोद नामक ग्रन्थ में ललितपदों से चित्रित यह सुवर्णादिवर्ग पूरा हुआ॥६९॥

इति श्रीमदनपालनिघंटौ वैद्यरत्न पं०–रामप्रसादवैद्योपाध्यायविर–
चितहिन्दीतत्त्वप्रकाशिनीटीकायां सुवर्णादिवर्गश्चतुर्थः ॥४॥

*****
****

करेण संगृह्य कुचौ महिष्याः पयः पिबन्तं पुरुषं पुराणम् ।
विचित्रलीलं परिशुद्धशीलं तमालनीलं शिशुमाश्रयामि॥१॥

श्रीयशोदाजी के स्तनों को हाथ से ग्रहणकर दूध को पीता हुआ पुराण पुरुष विचित्र लीलासंयुक्त सर्वतः शुद्धस्वभाव कृष्णरूप बालक के आश्रित होता हूं॥१॥

वटनामगुणाः

वटो रक्तपदा क्षीरी बहुपादो वनस्पतिः ।
यक्षावासः पदारोही न्यग्रोधः स्कन्धजो ध्रुवः ।
वटः शीतो गुरुर्ग्राही कफपित्तव्रणापहः ।।२।।

बट (बरौटा) रक्तपदा, क्षीरी, बहुपाद, वनस्पति, यक्षावास पदारोही, न्यग्रोध, स्कंधज, ध्रुव, ये बड़ के नाम हैं, बड़–शीतल है, भारी है, मल को बांधता है और कफ, पित्त, घाव इनको नाश करता है।।२।।

पिप्पलनामगुणाः

पिप्पलः श्यामलोऽश्वत्थः क्षीरवृक्षो गजाशनः ।
हरिवासश्चलदलो मंगल्यो बोधिपादपः ।
पिप्पलो दुर्जयः शीतः पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ।।३।।

पिप्पल, श्यामल, अश्वत्थ, क्षीरवृक्ष, गजाशन, हरिवास, चलदल, मंगल्य, बोधिपादप ये पीपल के नाम हैं। पीपल दुःख को जीतता है, शीतल है और पित्त, कफ, घाव, रक्त इनको जीतता है।।३।।

पारिशाश्वत्थकनामगुणाः

पारिशोऽन्यः पलीशः स्यात्कपिनूतः कपीतनः ।
पारिशाश्वत्थको वृष्यः स्निग्धः श्लेष्मकृमिप्रदः ।।४।।

पारिश, फलीश, कपिनूत, कपीतन ये पारसपीपल के नाम हैं। पारसपीपल वीर्यवर्द्धक है, चिकना है, कफ और कृमियों को पैदा करता है।।४।।

उदुम्बरनामगुणाः

उदुम्बरः क्षीरवृक्षो जन्तुवृक्षः सदाफलः ।
हेमदुग्धः कृमिफलो यज्ञाङ्गः शीतवल्कलः ।
उदुम्बरो हिमो व्रण्यः कफपित्तास्रजिद् गुरुः ।।५।।

उदुंबर, क्षीरवृक्ष, जंतुवृक्ष, सदाफल, हेमदुग्ध, कृमिफल, यज्ञांग, शीतवल्कल ये गूलर के नाम हैं। गूलर–शीतल है, घाव को हित है और कफ, पित्त, रक्त को जीतता है तथा भारी है।।५।।

काकोदुम्बरिकानामगुणाः

काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलायुश्चित्रभेषजम् ।
काकोदुम्बरिका तद्वद्विशेषाच्छिन्ननाशिनी ।।६।।

काकोदुंबरिका, फल्गु, मलायु, चित्रभेषज ये कैवरी के नाम हैं, कटुंबर में गूलर के सब गुण हैं। विशेपकर कटे हुए को अच्छा करती है।।६।।

प्लक्षनामगुणाः

प्लक्षः प्लवश्चारुवृक्षः सुपार्श्वो गर्भभाण्डकः ।
वटी कमण्डलुर्यूपः पिप्परिश्चारुदर्शनः ।
प्लक्षः शीतो व्रणश्लेष्मपित्तशोथविसर्पजित् ॥७॥

प्लक्ष, प्लव, चारुवृक्ष, सुपार्श्व, गर्भभांडक, वटी, कमंडलु, यूप, पिप्परि, चारुदर्शन ये पिलखन के नाम हैं। पिलखन शीतल है और घाव, कफ, पित्त, शोजा, विसर्प इनको जीतता है॥७॥

पंचक्षीरवृक्षनामगुणाः

न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थः पारिशः प्लक्षपादपः ।
पञ्चैते क्षीरिणः प्रोक्तास्तेषां त्वक् पञ्चवल्कला ॥८॥

बड़, गूलर, पीपल, पारसपीपल, पिलखन ये पांच क्षीरीवृक्ष कहे गये हैं। इनके छाल पंचवल्कल कहे जाते हैं॥८॥

त्वक्पञ्चकं हिमं ग्राहि व्रणशोथविसर्पजित् ।
केचित्तु पारिशस्थाने शिरीषं वेतसं परे ॥९॥

पंचवल्कल–शीतल है, ग्राही है, व्रण, शोथ, विसर्प इनको जीतता है। कितने वैद्य पंचवल्कल में पारसपीपल के स्थान में शिरस मिलाते हैं और कितने के वेतस लेते हैं॥९॥

क्षीरवृक्षा हिमा व्रण्या योनिदोषव्रणापहाः ।
शोफपित्तकफास्रघ्नाः स्तन्या भग्नास्थियोगदाः ॥१०॥

क्षीरवृक्ष–शीतल हैं, घाव में हित हैं, योनि दोष, घाव, शोजा, पित्त, कफ, रक्तविकार इनको नाश करते हैं, स्तनों में दूध बढ़ाते हैं, टूटी हड्डी को जोड़ते हैं॥१०॥

तेषां पत्रं हिमं ग्राहि कफवातास्रनुल्लघु ।
फलं विष्टम्भि संग्राहि रक्तपित्तकफापहम् ॥११॥

क्षीरवृक्षों के पत्ते शीतल हैं, मल को बांधते हैं और कफ, पित्त, रक्त इनको दूर करते हैं, तथा हलके हैं। क्षीरवृक्षों का फल विष्टभ करता है, मल को बांधता है, रक्तपित्त और कफ को दूर करता है॥११॥

नन्दीवृक्षनामगुणाः

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदः प्ररोही गजपादपः ।
नन्दीवृक्षोऽश्वत्थगुणो लघूष्णो गरनुत्पुनः ॥१२॥

नन्दीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप ये नन्दीवृक्ष के नाम हैं। नन्दीवृक्ष में पीपल के सब गुण हैं और हलका, गर्म और विष को दूर करने वाला है॥१२॥

कदम्वनामगुणाः

कदम्बो गन्धवत्पुष्पः प्रावृषेण्यो मनोन्नतिः ।
अन्यो धूलिकदम्बः स्यान्नीपो राजकदम्बकः ।
कदम्बः शीतलः श्लेष्मपित्तरक्तगदापहः ।।१३।।

कदम्ब, गन्धवत्पुष्प, प्रावृषेण्य, मनोन्नति ये कदंब के नाम हैं। धूलिकदम्ब, नीप, राजकदंबक ये नाम दूसरे कदंब के हैं। कदम्ब–शीतल है और कफ, पित्त, रक्त इन रोगों को नाश करता है।।१३।।

ककुभार्जुननामगुणाः

ककुभोऽर्जुननामा स्यान्नदो मञ्जुः शठद्रुमः ।
ककुभः शीतलो भग्नक्षतक्षयविषास्रजित् ।।१४।।

ककुभ, अर्जुननामा, नद, मंजु, शठद्रुम ये कोह के नाम हैं। कोह–शीतल है और भग्न, क्षत, क्षय, विष रक्त इनको जीतता है।।१४।।

शिरीषनामगुणाः

शिरीषः प्लवगो विप्रः शुकवृक्षः कपीतनः ।
मृदुपुष्पः श्यामवर्णोः भण्डीरः शङ्खिनीफलः ।
शिरीषः शीतलो वर्ण्यो विषवीसर्पशोथजित् ।।१५।।

शिरीष (सिरस) प्लवग, विप्र, शुकवृक्ष, कपीतन, मृदुपुष्प, श्यामवर्ण, भंडीर, शंखिनीफल ये शिरस के नाम हैं। शिरस–शीतल है, वर्ण को निखारता है तथा विष, विसर्प, शोजा इनको जीतता है।।१५।।

आर्तगलनामगुणाः

आर्गटः स्यादार्त्तगलो बहुकण्टः प्रघर्षणः ।
आर्गटः स्तुवरः शीतो व्रणशोधनरोपणः ।।१६।।

आर्गट, आर्त्तगल, बहुकंट, प्रघर्षण ये आर्तगल के नाम हैं। आर्तगल–कषैला है, शीतल है, घाव को शोधता है और अंकुर लाता है। कोई इसको नीले फूल की कटसरैया कहते हैं, कोई कांटे युक्त वृक्ष होता है ऐसा कहते हैं।।१६।।

वेतसनामानि

वेतसो वञ्जुलो नम्रो वानीरो दीर्घपत्रकः ।
नादेयो मध्यपुष्पोऽन्यस्तोयकामो निकुञ्जकः ।।१७।।

वेतस, वंजुल, नम्र, वानीर, दीर्घपत्रक, नादेय, मध्यपुष्प, तोय–काम, (वेतस, वेत, मजनु) निकुंजन ये वेतस व्यूस के नाम हैं।।१७।।

जलवेतसनामानि

जलौकासम्भृतोऽम्भोजो निचुलो जलवेतसः ॥१८॥

जलौकासंभृत, अंभोज, निचुल, जलवेतस ये जलबेत के नाम हैं॥१८॥

इज्जलो हिज्जलो गुच्छफलः स्यात्कच्छपोलिका ॥१९॥

इज्जल, हिज्जल, गुच्छ फल, कच्छपोलिका ये इज्जल के नाम हैं। इसको हिज्जल, समुद्रफल, समुद्रशोष भी कहते हैं॥१९॥

वेतसादिगुणाः

वेतसः शीतलो दाहशोफार्शोयोनिरुग्व्रणान् ।
हन्ति वीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान् ॥२०॥

वेतस–शीतल है और दाह, शोजा, बवासीर, योनिरोग, घाव, विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, पथरी, कफ, वात इनको नाश करता है॥२०॥

जलजो वेतसः शीतः संग्राही वातकोपनः ।
इज्जलस्तद्गुणः प्रोक्तः विशेषाद्विषनाशनः ॥२१॥

जलवेतस–शीतल है, मल को बांधता है, वात को कुपित करता है। हिज्जल में भी ये ही गुण हैं, विशेषकर विष को नाश करता है॥२१॥

श्लेष्मान्तक (लिसोड़ा) नामगुणाः

श्लेष्मातकः[१] कर्बुदारः पिच्छली भूतपादपः ।
शेलुः शैलुश्च शैलूकः शैलिको द्विजकुत्सिकः ॥२२॥

श्लेष्मातक, कर्बुदार, पिच्छली, भूतपादप, शेलु, शैलु, शैलूक, शैलिक, (ल्हेसवा) द्विजकुत्सिक (नसूड़ा, नसूड़ी) ये लिसोड़े के नाम हैं॥२२॥

श्लेष्मातको विषस्फोटव्रणवीसर्पकुष्ठजित् ।
केश्योष्णस्तत्फलं वृष्यं वातपित्तक्षयास्रजित् ॥२३॥

लिसोड़ा, विष, पोड़ा, घाव, विसर्प, कुष्ठ इनको जीतता है, बालों को हितकारक है और गर्म है। ल्हेसवा का फल (लिसोड़ा) वीर्य को पुष्ट करता है तथा वात, पित्त, क्षय, इनको जीतता है॥२३॥

पीलुनामगुणाः

पीलुःशतसहस्रांशी तीक्ष्णस्तु करभप्रियः ।
सहस्राङ्गी गुडफलस्तत्फलं पीलु पीलुजम् ॥२४॥

पीलु, शतसहस्रांशी, तीक्ष्ण, करभप्रिय, सहस्राङ्गी, गुड़फल ये पीलू के नाम हैं। पीलु,

---

१–श्लेष्मान्तकः इति पाठान्तरम् ।

पीलुज ये पीलू के फल के नाम हैं।।२४।।

पीलूष्णं दीपनं भेदि रक्तपित्तकरं लघु ।
गुल्मार्शः प्लीहवाताश्मकफहारि रसायनम् ।।२५।।

पीलु गर्म है, अग्नि को जगाता है, भेदी है, रक्तपित्त को करता है, हलका है और गुल्म बवासीर, तिल्लीरोग, वात, पथरी, कफ इनको हरता है तथा रसायन है।।२५।।

शाकनामगुणाः

शाकः खरच्छदो भूमिसहो दीर्घच्छदो मतः ।
शाकः श्लेष्मानिलास्रघ्नो गर्भसन्धानदो हिमः ।।२६।।

शाक, खरच्छद, भूमिसह, दीर्घच्छद ये शागौन के नाम हैं। शागौन–कफ, वात, रक्त इनको नाशता है, गर्भ को स्थापित करता है और शीतल है।।२६।।

शालनामगुणाः

शालः सर्जरसः सर्जः श्रीकृष्णारिश्च पत्रकः ।
शालो ग्राही व्रणश्लेष्मदग्धरुग्विषनुद्धिमः ।।२७।।

शाल, सर्जरस, सर्ज, श्रीकृष्णारि, पत्रक ये शाल के नाम हैं, शाल–मल को बांधता है, घाव, कफ, जला हुआ, विष इनको नष्ट करता है और शीतल है।।२७।।

तमालनामगुणाः

तमाल उक्तस्तापिच्छः कालस्कन्धो मितद्रुमः ।
तमालस्तद्गुणः शोथदाहविस्फोटहृत्पुनः ।।२८।।

तमाल, तापिच्छ, कालस्कन्ध, मितद्रुम ये तमाल वृक्ष के नाम हैं। तमाल में शाल के सब गुण हैं और शोजा, दाह, विस्फोट इनको हरता है।।२८।।

खदिरनामगुणाः

खदिरो रक्तसारः स्याद्गायत्री बालपत्रकः ।
खदिरः श्वेतसारोऽन्यः कार्मुकः कुब्जकण्टकः ।।२९।।

खदिर, रक्तसार, गायत्री, बालपत्रक ये खैर के नाम हैं। खदिर, श्वेतसार, कार्मुक, कुब्जकण्टक ये नाम दूसरे खदिर के हैं।।२९।।

खदिरः शीतलो दन्त्यः कृमिमेहज्वरव्रणान् ।
श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफाञ्जयेत् ।।३०।।

खैर–शीतल है और दांतों में हित करता है, कृमि, प्रमेह, ज्वर, घाव, श्वित्र, शोजा, आम, पित्तरक्त, पाण्डु, कुष्ठ, कफ इनको जीतता है।।३०।।

निर्यासस्तस्य मधुरो बल्यः शुक्रविवर्द्धनः ।
सारस्तु विशदो बल्यो मुखरोगकफास्रजित् ।।३१।।

खदिर का गोंद–मधुर है, बल देने वाला है, शुक्र को बढ़ाने वाला है और खैरसार (कत्था) विशद है, बल करने वाला है, मुखरोग, कफ, रक्तविकार को जीतता है।।३१।।

अरिमेदनामगुणाः

अरिमेदो विट्खदिरो गोधास्कन्धोऽरिमेदकः ।
अरिमेदः कषायोष्णो मुखदन्तगदास्रनुत् ।
तथा कण्डूविषश्लेष्मक्रिमिकुष्ठव्रणाञ्जयेत् ।।३२।।

अरिमेद, विट्खदिर, गोधास्कंन्ध, अरिमेदक ये गंधखदिर के नाम हैं, गंधवाला खैर कषैला है, गर्म है, मुखरोग, दंतरोग, रक्त इनको दूर करता है और खाज, विष, कफ, कृमि, कुष्ठ, घाव इनको जीतता है।।३२।।

बबूलनामगुणाः

बबूलः किङ्कूरालः स्यात्पीतकः पीतपुष्पकः ।
बबूलः कफनुद् ग्राही कुष्ठक्रिमिविषापहः ।
रक्तपित्तं कषायेण निहन्ति दिनसप्तकैः ।।३३।।

बबूल, किंकराल (कीकरा) पीतक, पीतपुष्पक ये बबूल के नाम हैं। बबूल कफ को दूर करता है, मल को बांधता है और कुष्ठ, कृमि, विष इनको दूर करता है। इसके क्वाथ को ७ दिन पीवे तो रक्तपित्त दूर होता है।।३३।।

बीजक (विजयसारं) नामगुणाः

बीजकोऽशनकः सौरी प्रियः काम्योऽलकप्रियः ।।३४।।

बीजक, अशनक, सौरी, प्रिय, काम्य, अलकप्रिय ये नाम विजय सार के हैं।।३४।।

बीजकः कुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहज्वरक्रिमीन् ।
हन्ति श्लेष्मास्रपित्तानि त्वच्यः केश्यो रसायनः ।।३५।।

विजयसार–कुष्ठ, विसर्प, श्वित्र, प्रमेह, ज्वर, कृमि, कफ, रक्तविकार, रक्तपित्त इनको नष्ट करता है, त्वचा को अच्छा करता है, बालों को बढ़ाता है और रसायन है।।३५।।

तिनसनामगुणाः

तिनसः स्पन्दनो नेमी सर्वसारोऽश्मगन्धकः ।
तिनसः श्लेष्मपित्तास्रमेदः कुष्ठप्रमेहनुत् ।।३६।।

तिनस, स्पंदन, नेमी, सर्वसार, अश्मगन्धक ये तिनक के नाम हैं। तिनस–कफ, पित्त, रक्त, मेद, कुष्ठ, प्रमेह इनको दूर करता है।।३६।।

भूर्जपत्रनामगुणाः

भूर्जो भुजो बहुपटो मृदुत्वग्लेख्यपत्रकः ।
भूर्जो भूतग्रहश्लेष्मकर्णरुग्रक्तपित्तजित् ।।३७।।

भूर्ज, भुज, बहुपट, मृदुत्वक्, लेख्यपत्रक ये भोजपत्र के नाम हैं। भोजपत्र भूतदोष, ग्रहदोष, कफ, कर्णरोग, रक्तपित्त इनको जीतता है।।३७।।

पलाशनामगुणाः

पलाशः किंशुकः किर्मी याज्ञिको ब्रह्मपादपः ।
क्षीरश्रेष्ठो रक्तपुष्पस्त्रिवृतः समिदुत्तमः ।।३८।।

पलाश, किंशुक, किर्मी, याज्ञिक, ब्रह्मपादप, क्षीरश्रेष्ठ, रक्तपुष्प (केसू), त्रिवृत, समित् उत्तम ये ढाक के नाम हैं।।३८।।

पलाशो दीपनो वृष्यः सरोष्णो व्रणगुल्मजित् ।
भग्नसन्धानकृद्दोषग्रहण्यर्शः क्रिमीन् हरेत् ।।३९।।

ढाक—अग्नि को दीपन करता है, धातु को पुष्ट करता है, सर है, गर्म है, घाव और गुल्म को जीतता है, टूटे हुए को जोड़ता है तथा ग्रहणी बवासीर कृमि इनको नाश करता है।।३९।।

तत्पुष्पं कफपित्तास्रकृच्छ्रजिद् ग्राहि शीतलम् ।
फलं लघूष्णं मेहार्शः कृमिदुष्टकफापहम् ।।४०।।

ढाक का फूल—कफ, पित्तरक्त, मूत्रकृच्छ्र, इनको जीतता है और ग्राही है तथा शीतल है। इसकी फली हलकी और गर्म है, प्रमेह, बवासीर, कृमि, दुष्टकफ इनको हरती है।।४०।।

धवनामगुणाः

धवो नन्दितरुर्गौरः शकटाक्षो धुरन्धरः ।
धवः शीतप्रमेहास्रपाण्डुपित्तकफापहः ।।४१।।

धव, नंदितरु, गौर, शकटाक्ष, धुरंधर ये नाम धव के हैं। धव—शीत, प्रमेह, रक्त, पांडु, पित्त, कफ इनको हरता है।।४१।।

धन्वननामगुणाः

धन्वनो गोत्रविटपी धर्मणो गोत्रपुष्पकः ।
धन्वनः कफपित्तास्रकासजित्तुवरो लघुः ।।४२।।

धन्वन, गोत्रविटपी, धर्मण, गोत्रपुष्पक ये नाम धामण (ढामण) के हैं। धामण—कफ, पित्तरक्त, खांसी इनको जीतता है कषैला और हलका है।।४२।।

सर्जनामगुणाः

सर्जोऽजकर्णः स्वेदघ्नो लतावृक्षः कुदेहकः ।
सर्जो वर्ण्यः कफस्वेदमलंपित्तक्रिमीञ्जयेत् ।।४३।।

सर्ज, अजकर्ण, स्वेदघ्न, लतावृक्ष, कुदेहक, शाल ये नाम सर्जवृक्ष के हैं। सर्जवर्ण करता है और कफ, पसीना, मल, पित्त, कृमि इनको जीतता है, राल इस वृक्ष से ही होती है।।४३।।

शाखोटनामगुणाः

शाखोटः स्यात्पीतफलश्छागी क्षीरविनाशनः ।
शाखोटो वातरक्तास्रकफवातातिसारजित् ।।४४।।

शाखोट, पीतफल, छागी, क्षीरविनाशन ये नाम शाखोट के हैं। शाखोट–वातरक्त, रक्त, कफ, वात, अतिसार इनको जीतता है। इसके वृक्ष अत्यंत गठीले झाड़ से होते हैं, फूल सफेद, लकड़ी में कुछ कांटे होते हैं, इसको सिहोड़ा भी कहते हैं।।४४।।

वरुणनामगुणाः

वरुणो वरणः श्वेतः शाकवृक्षः कुमारकः ।
वरुणः पित्तलो भेदी श्लेष्मकृच्छ्रास्रमारुतान् ।
निहन्ति गुल्मवातास्रकृमिशोथांश्च दीपनः ।।४५।।

वरुण, वरण, श्वेत, शाकवृक्ष, कुमारक ये बरना के नाम हैं। बरना–पित्त को करता है और भेदी है। कफ, मूत्रकृच्छ्र, रक्त, वात, गुल्म, वातरक्त, कृमि, शोजा इनको नाशता है और अग्नि को जगाता है, इसके वृक्ष को बरना कहते हैं।।४५।।

जिङ्गिणीनामगुणाः

जिङ्गिणी झिङ्गिणी जिङ्गी मुनिर्यासा च मोटकी ।
जिङ्गिणी व्रणहृद्रोगवातातीसारजित्कटुः ।
उष्णस्तस्यास्तु निर्यासो नस्याद्बाहुव्यथापहः ।।४६।।

जिंगिणी, झिंगिणी, जिंगी, मुनि, यासा, मोटकी ये जींगणी के नाम हैं। जींगणी–घाव हृद्रोग, वात, अतिसार इनको जीतती है, कडुवी है। जींगणी का सत गर्म है, नस्य लेने से बाहु की पीड़ा को हरती है।।४६।।

शल्लकीनामगुणाः

शल्लकी वल्लकी मोची गजभक्षा महारुहा ।
गन्धवीरा कुन्दुरुकी सुस्रावा वनकर्णिका ।
शल्लकी व्रणपित्तास्रश्लेष्मपित्तातिसारजित् ।।४७।।

शल्लकी, वल्लकी, मोची, गजभक्षा, महारुहा, गन्धवीरा, कुन्दुरुकी, सुस्रावा

वनकर्णिका ये नाम शल्लकी (छल्ल) के हैं। छल्ल—घाव, पित्तरक्त, कफ, पित्त अतिसार इनको जीतता है।।४७।।

इंगुदनामगुणाः

इङ्गुदो भल्लकी बृक्षकण्टकस्तापसद्रुमः ।
इङ्गुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रिमीन् ।
हंत्युष्णः श्वित्रशूलघ्नस्तत्फलं कफवातजित् ।।४८।।

इंगुद, भल्लकी, वृक्षकंटक, तापसद्रुम ये नाम हिंगोट के हैं। हिंगोट—कुष्ठ, भूत आदि ग्रहदोष घाव, विष, कृमि इनको हरता है, गर्म है, श्वित्रकुष्ठ और शूल को नाशता है, हिंगोटा का फल कफ और वात को नाशता है।।४८।।

कटम्भरनामगुणाः

कटम्भरश्चारुश्रृङ्गी कटभी तृणशैण्डकः ।
कटम्भरः प्रमेहास्त्रनाडीव्रणविषक्रिमीन् ।।४९।।
हन्त्युष्णः कफकुष्ठघ्नस्तत्फलं कफशुक्रनुत् ।
निर्यासोऽस्य गुरुर्वृष्यो बलकृद्वातनाशनः ।।५०।।

कटंभर, चारुश्रृंगी, कटभी, तृणशैण्डक ये नाम कटभी के हैं। कटभी—प्रमेह, रक्त, नाडीव्रण, विष, कृमि इनको नाश करता है और कफ तथा कुष्ठ को हरता है। कटहा का फल कफ और वीर्य को दूर करता है, इसका सत भारी है, धातु को पुष्ट करता है, बलदायक है और वात को नाश करता है।।४९–५०।।

मुष्कनामगुणाः

मुष्को मोक्षकको घुण्टी शिखरी क्षुद्रपाटला ।
मोक्षकः कफवातघ्नो ग्राही गुल्मविषक्रिमीन् ।।५१।।
हन्त्युष्णो बस्तिरुक्कण्डूस्तत्पुष्पं कफपित्तजित् ।
निर्यासोस्य परं वृष्यः शोषपित्तानिलापहः ।।५२।।

मुष्क, मोक्षकक, घुंटी, शिखरी, क्षुद्रपाटला ये नाम मोषा के हैं। मोषावृक्ष—कफ वात को नाशता है, मल को बांधता है और गुल्म, विष, कृमि इनको नष्ट करता है। तथा गर्म है, मोषा का फूल बस्तिरोग, खाज, कफ, पित्त इनको जीतता है। मोषा का सत अत्यंत वीर्यवर्द्धक है और शोष, पित्त, वात इनको नाश करता है।।५१–५२।।

पारिभद्रनामगुणाः

पारिभद्रो निम्बवृक्षो रक्तपुष्पः प्रभद्रकः ।
कण्टकी पारिजातः स्यान्मन्दारः कटिकिंशुकः ।
पारिभद्रः कृमिश्लेष्ममेदः श्लेष्मानिलापहः ।।५३।।

पारिभद्र, निम्बवृक्ष, रक्तपुष्प, प्रभद्रक, कंटकी, पारिजात, (पहाड़ी नीम) मन्दार, कटिकिंशुक ये फरहद के नाम हैं। पहाड़ी नींब कृमि, कफ, मेद, कफवात इनको नाश करता है। टकसाल में उसको पंडयारा कहते हैं।।५३।।

शाल्मलीनामगुणाः

शाल्मली तूलिनी मोचा कुक्कुटी रक्तपुष्पिका ।
कण्टकाढ्या स्थूलफला पिच्छला चिरजीविनी ।।५४।।

शाल्मली, तूलिनी, मोचा, कुक्कुटी, रक्तपुष्पिका, कंटकाढ़चा, स्थूलफला पिच्छला, चिरजीविनी ये नाम शीम्बल के हैं।।५४।।

शाल्मली शीतला वृष्या बृंहणी रक्तपित्तजित् ।
निर्यासोऽस्य परं वृष्यः शोफपित्तानिलास्रजित् ।
रसायनवरा स्निग्धा तत्पुष्पं ग्राहि पित्तजित् ।।५५।।

शींवल (शंभल) शीतल है, धातु को पुष्ट करता है, वीर्य को बढ़ाता है और रक्तपित्त को जीतता है। शींबल का गूंद (मोचरस) धातु को बहुत पुष्ट करता है। शोजा, पित्त, वातरक्त इनको जीतता है, रसायन है और चिकना है। शींबल का फूल मल को बांधता है और पित्त को जीतता है।।५५।।

तुणिनामगुणाः

तुणिः कुठेर आपीतस्तनुको नन्दिपादपः ।
तुणिर्ग्राही हिमो वृष्यो व्रणकुष्ठास्रपित्तहा ।।५६।।

तुणि, कुठेर, आपीत, तनुक, नंदिपादप ये नाम तुनि (तून्ही) के हैं। तुण मल को बांधती है, शीतल है, धातु को पुष्ट करती है और घाव, कुष्ठ, रक्तपित्त इनको नाश करती है।।५६।।

सप्तपर्णनामगुणाः

सप्तपर्णो गुच्छपुष्पश्छत्री शाल्मलिपत्रकः ।
सप्तपर्णो व्रणश्लेष्मवातकुष्ठहरः सरः ।।५७।।

सप्तपर्ण, गुच्छपुष्प, छत्री, शाल्मलिपत्रक, ये सातला के नाम हैं। सातला–घाव, कफ, वात, कुष्ठ इनको हरता है और सर है। सातलाके शींबल की समान आकार के मध्यम वृक्ष होते हैं।।५७।।

हारिद्रकनामगुणाः

हारिद्रकः पीतवर्णः श्रीमान् गैरद्रुमो वरः ।
हारिद्रकः कफहरो व्रणशोधनरोपणः ।।५८।।

हारिद्रक, पीतवर्ण, श्रीमान्, गैरद्रुम, वर ये हरिद्रुके नाम हैं, हरिद्रु कफ को हरता है

तथा घाव को शोधित और रोपित करता है,हारिद्रक के वृक्ष पहाड़ों पर होते हैं।।५८।।

करंजनामगुणा:

करञ्जो नक्तमाल: स्यान्नक्ताह्वो घृतवर्णक: ।
पूतिकोऽन्य:पूतिवर्ण: प्रकीर्णश्चिरबिल्वक: ।।५९।।

करंज, नक्तमाल, नक्ताह्व, घृतवर्णक, पूतिक, पूतिवर्ण, प्रकीर्ण, चिरबिल्वक ये-करंजवृक्ष के नाम हैं।।५९।।

करञ्ज: कटुकस्तीक्ष्णो वीर्योष्णो योनिदोषजित् ।
कुष्ठोदावर्त्तगुल्मार्शोव्रणक्रिमिकफापह: ।।६०।।

करंज चर्परा है, तेज है, वीर्य में गर्म है, योनिदोष को जीतता है और कुष्ठ, उदावर्त, गुल्म, बवासीर, घाव, कृमि, कफ इनको नष्ट करता है।।६०।।

तत्फलं कफवातघ्नं मेहार्श: क्रिमिकुष्ठजित् ।
तत्पत्रं कफवातार्श: कृमिशोथहरं परम् ।।६१।।

करंज का फल, कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, कृमि, कुष्ठ इनको जीतता है। करंज का पत्ता–कफ, वात, बवासीर, कृमि, शोजा इनको दूर करने में परमोत्तम है।।६१।।

लताकरंजीनामगुणा:

करञ्जी काकतिक्ता च वयस्याऽङ्गारवल्लरी ।
करञ्जिकोष्णवातार्श: क्रिमिकुष्टप्रमेहनुत् ।।६२।।

करंजी, काकतिक्ता, वयस्या, अंगारवल्लरी ये लताकरंज के नाम हैं। लताकरंज उष्णता, वात, बवासीर, कृमि, कुष्ठ, प्रमेह इनको दूर करता है।।६२।।

तिरिगिच्छिनामगुणा:

तिरिगिच्छिर्गजकण्ट: करञ्जी क्षीरिणी द्विप: ।
तिरिगिच्छिर्बलासार्श: क्रिमिकुष्ठप्रमेहहृत् ।।६३।।

तिरिगिच्छि, गजकण्ट, करंजी, क्षीरिणी, द्विप ये तिरिगिच्छी के नाम हैं। तिरिगिच्छी,कफ, बवासीर, कृमि, कुष्ठ, प्रमेह इनको हरती है। यह भी करंजकी ही जाति है।।६३।।

शमीनामगुणा:

शमी तुङ्गा शंकुफला पवित्रा केशहृत्फला ।
लक्ष्मी शिवान्याधिमती भूशमी शङ्कराह्वया ।।६४।।

शमी, तुंगा, शंकुफला, पवित्रा, केशहृत्फला, लक्ष्मी, शिवानी, आधिमती, भूशमी, शंकराह्वया, ये नाम जांड़ी के हैं।।६४।।

शमी शीता लघुः श्वासकुष्ठार्शःकफहृत्सरा ।
तत्फलं पित्तलं रूक्षं मेध्यं केशविनाशनम् ।।६५।।

जांडी शीतल और हलकी है, श्वास, कुष्ठ, बवासीर, कफ इनको हरती है और सर है। जांडी का फल पित्त को उपजाता है, रूखा, है, बुद्धि को बढ़ाता है और बालों को नष्ट करता है।।६५।।

टिण्ठिणीनामगुणाः

शमीषिका टिण्ठिणिका दुर्बलाऽम्बुशिरीषिका ।
टिण्ठिणी कफकुष्ठार्शः सन्निपातविषापहा ।।६६।।

शमीषिका (झिंझिणी) टिण्ठिणिका, दुर्बला, अंबुशिरीषिका ये कीर्गण के नाम हैं। कीर्गण-कफ, कुष्ठ, बवासीर, सन्निपात, विष इनको नाश करती है।।६६।।

अरिष्टकनामगुणाः

अरिष्टको गर्भपाती कुम्भवीर्यश्च फेनिलः ।
कृष्णबीजो रक्तबीजःपीतफेनोऽर्थसाधनः ।
अरिष्टकस्त्रिदोषघ्न उष्णो गर्भग्रहापहः ।।६७।।

अरिष्टक, गर्भपाती, कुंभवीर्य, फेनिल, कृष्णबीज, रक्तबीज, पीतफेन, अर्थ-साधन, ये रीठे के नाम हैं। रीठा-त्रिदोष को नाशता है, गर्म है, गर्भ और ग्रहदोष को दूर करता है।।६७।।

शिंशपानामगुणाः

शिंशपा कपिला कृष्ण सारमण्डलपत्रिका ।
अन्या कुशिंशपा भस्मपिङ्गला स्याद्वसादनी ।।६८।।

शिंशपा, कपिला, कृष्णा, सारमण्डलपत्रिका, कुशिंशपा, भरमपिंगला, वसादनीं, ये शीसम के नाम हैं।।६८।।

शिंशपोष्णा हरेन्मेहान् कुष्ठश्वित्रवमिक्रिमीन् ।
बस्तिरुग्व्रणदाहास्रगर्भगूढनिपातिनी ।।६९।।

शिंशपा गर्म है और प्रमेह, कुष्ठ, श्वित्रकुष्ठ, छर्दि, कृमि, बस्तिरोग, घाव, दाह रक्तविकार इनको नाशती है और गर्भ को गिराती है।।६९।।

अगस्त्यनामगुणाः

अगस्त्यो वङ्गसेनाह्वो मधुशिग्रुर्मुनिद्रुमः ।
अगस्त्यः पित्तकफजिन्निदाघशमनो हिमः ।
तत्पुष्पं पीनसश्लेष्मपित्तनक्तान्ध्यनाशनम् ।।७०।।

अगस्त्य, वंगसेनाह्व, मधुशिग्रु, मुनिद्रुम, ये अगस्त के नाम हैं। अगस्तवृक्षपित्त, कफ,

गम इनको जीतता है और शीतल है। अगस्त का फूल—पीनस, कफ, पित्त, रतौंधी इनको नाश करता है। इसके वृक्ष बगीचों में अधिक होते हैं, जब अगस्तिका उदय होता है, यह उसी समय खिलता है।।७०।।

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्ण-
श्चित्रोऽयं ललितपदैर्वटादिवर्गः ।।७१।।

इति मदनपालनिघण्टौ वटादिवर्गः पञ्चमः ।।५।।

राजाओं में अत्यंत मुख्य माना हुआ जो कटारमल्ल मदन राजा इसके रचे हुए इन मदनविनोद नामक ग्रन्थ में ललितपदों से वटादिवर्ग पूर्ण हुआ।।७१।।

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ आयुर्वेदोद्धारकवैद्यरत्न पं० रामप्रसादविरचित-भाषातत्वप्रकाशिनीहिन्दीटीकायां वटादिवर्गः पञ्चमः ।।५।।

*****
****

भ्रमोच्छलद्दर्द्धरिकाग्रपृष्ठं मन्दस्मितं वेणुनिनादरक्तम् ।
गोपालिकानां करतालिकाभिर्नृत्यन्महस्तत्परमं स्मरामि ।।१।।

इधर उधर भ्रमण करने से उछलता है अग्रभाग और पृष्ठभाग जिसका मन्द मुसकान सहित बांसुरी के बजाने से आ रही है लालिमा मुख पर जिसके और गोपियों के हाथ की तालिकाओं से नाचते हुए उस परमात्मा को स्मरण करता हूँ।।१।।

द्राक्षानामगुणाः

द्राक्षा मधुफला स्वाद्वी हारहूरा फलोत्तमा ।
मृद्वीका मधुयोनिश्च रसाला गोस्तनी गुडा ।।२।।

द्राक्षा, मधुफला, स्वाद्वी, हारहूरा, फलोत्तमा, मृद्वीका, मधुयोनि, रसाला, गोदस्तनी, गुड़ा ये मुनक्का के नाम हैं।।२।।

द्राक्षा पक्का सरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरुः ।
हन्ति तृष्णाज्वरश्वासवान्तिवातास्रकामलाः ।।३।।

पकी हुई दाख सर (सारक) है, शीतल है, आँखों को हितकारी है, धातु को पुष्ट करती है, भारी है और तृषा, ज्वर, छर्दि, वातरक्त, कामला इनको नाश करती है।।३।।

कृच्छ्रास्रपित्तसम्मोहदाहशोषमदात्ययान् ।
आमा साऽल्पगुणा गुर्वी सैवाम्ला रक्तपित्तकृत् ॥४॥

और मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष, मदात्यय इनको नाश करती है। कच्ची दाख–अल्पगुण करती है और भारी है तथा खट्टी दाख रक्तपित्त को करती है॥४॥

निर्वीर्याऽन्या लघुद्राक्षा गौस्तनीसदृशा गुणैः ।
द्राक्षा पर्वतजा लघ्वी साम्ला श्लेष्माम्लपित्तनुत् ॥५॥

छोटी दाख वीर्य से रहित होती है, गौ के थन के समान दाख गुणों में मुनक्का के समान होती है, पहाड़ में उपजी दाख हलकी है और खट्टी होती है तथा कफ और अम्लपित्त को जीतती है॥५॥

पक्वापक्वशुष्काम्लाम्रनामगुणाः

आम्रश्चूतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ।
माकन्दः पिकबन्धुः स्याद्रसालः कामवल्लभः ॥६॥

आम्र, चूत, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, माकन्द, पिकबन्धु, रसाल, कामवल्लभ ये पके आम के नाम हैं॥६॥

आम्रो ग्राही प्रमेहास्रकफपित्तव्रणाञ्जयेत् ।
तत्फलं बालमत्यम्लं रूक्षं दोषत्रयास्रजित् ॥७॥

आम्र मल को बांधता है और प्रमेह, रक्त, कफ, पित्त घाव इनको जीतता है। आम का कच्चा फल अत्यन्त खट्टा और रूखा है तथा त्रिदोष और रक्त को जीतता है॥७॥

पक्वं तु मधुरं वृष्यं स्निग्धं हृद्यं बलप्रदम् ।
गुरु वातहरं रुच्यं वर्ण्यं शीतमपित्तलम् ।
रसस्तस्य सरः स्निग्धो रोचनो बलवर्णकृत् ॥८॥

पका हुआ आम मीठा है, वीर्य को बढ़ाता है, चिकना है, दिल को ताकत देता है, बल देता है, भारी है, वात को हरता है, रुचि को उपजाता है, रूप को निखारता है, शीतल है और पित्तको नहीं करता है। उसका रस सर है, चिकना है रुचि को उपजाता है, बल और वर्ण को करता है॥८॥

सहकारं च वातघ्नं पित्तश्लेष्मविनाशनम् ।
कषायं मधुरं वृष्यं गुरु स्निग्धं विशेषतः ॥९॥

आम–वात को नाशता है, पित्त–कफ को हरता है, कषैला है, मीठा है, वीर्यवर्द्धक है, भारी है और विशेषता से स्निग्ध है॥९॥

पक्वाम्रं जनयेदायुर्मांसशुक्रबलप्रदम् ।
शुष्काम्रं तु कषायाम्लं भेदनं कफवातजित् ।।१०।।

पका हुआ आम–आयु को बढ़ाता है, मांस, वीर्य, बल इनकी वृद्धि करता है, सूखा आम कषैला है, खट्टा है, कफ और वात को जीतता है।।१०।।

जम्बूनामगुणाः

महाजम्बू राजजम्बूर्महास्कन्धा बृहत्फला ।
क्षुद्रजम्बूर्वीरपत्रा मेघाभा कामवल्लभा ।।११।।
नादेयी स्यात्क्षुद्रफला तत्फलं जम्बु जाम्बवम् ।
जम्बूः संग्राहिणी रूक्षा कफपित्तव्रणास्रजित् ।।१२।।

महाजम्बू, राजजम्बू, महास्कन्धा, बृहत्फला, क्षुद्रजम्बू, वीरपत्रा, मेघाभा, कामवल्लभा, नादेयी, क्षुद्रफला, ये जामुन के नाम हैं। जामुन का फल जम्बु, जांबव, जामुन इन नामों से प्रसिद्ध है। जामुन मल को बांधती है, रूखी है और कफ, पित्त, घाव, रक्त इनको जीतती है।।११–१२।।

राजजम्बूफलं स्वादु विष्टम्भि गुरु रोचनम् ।
क्षुद्रजम्बूफलं तद्वद्विशेषाद्दाहनाशनम् ।।१३।।

राजजामुन का फल स्वादु है, विष्टंभ करता है, भारी है और रुचि को उपजाता है। छोटी जामुन का फल भी ऐसा ही है, विशेषकर दाह को नाश करने वाला है।।१३।।

नारिकेलनामगुणाः

नारिकेलो दृढफलो महावृक्षो महाफलः ।
तृणराजस्तृणफलस्तृणाह्वो दृढबीजकः ।।१४।।

नारिकेल, दृढ़फल, महावृक्ष, महाफल, तृणराज, तृणफल, तृणाह्व, दृढ़बीजक है नारियल के नाम हैं।।१४।।

नारिकेलफलं शीतं दुर्जरं बस्तिशोधनम् ।
विष्टम्भि बृंहणं वृष्यं वातपित्तास्रदाहजित् ।।१५।।

नारियल का फल शीतल है, देर में जरता है, बस्ति को शोधता है, विष्टंभी है, धातु को पुष्ट करता है, वीर्य को बढ़ाता है और वात, पित्त, रक्त, दाह इनको जीतता है।।१५।।

तस्याम्भः शीतलं हृद्यं दीपनं शुक्रलंलघु ।
तत्पादपशिरोमज्जा शुक्रला वातपित्तजित् ।।१६।।

नारियल का रस शीतल है, दिल को ताकत देता है, अग्नि को जगाता है, वीर्य को

बढ़ाता है और हलका है। नारियल वृक्ष के शिर की मज्जा वीर्य को पैदा करती और वात पित्त को जीतती है।।१६।।

खर्जूरिकानामगुणाः

श्रेणी खर्जूरिकावृक्षः श्रीफला द्वीपलम्भवा ।
पिण्डखर्जूरिका खर्जूर्दुष्प्रधर्षा सुकण्टका ।।१७।।
अन्या स्कन्धफला स्वाद्वी दुरारोहा मृदुच्छदा ।
भूमिखर्जूरिका काककर्कटी कासुकर्कटी ।।१८।।

श्रेणी, खर्जूरिका वृक्ष, श्रीफला, द्वीपसंभवा, पिंडखर्जूरिका, खर्जू, दुष्प्रधर्षा, सुकंटका, स्कंधफला, स्वाद्वी, दुरारोहा, मृदुच्छदा, भूमिखर्जूरिका, काककर्कटी, कासुकर्कटी ये छुहारा और खर्जूर के नाम हैं।।१७–१८।।

खर्जूरिकाफलं शीतं स्वादु स्निग्धं क्षतास्रजित् ।
बल्यं हन्ति मरुत्पित्तमदमूर्च्छामदात्ययान् ।।१९।।

खजूर का फल शीतल है, स्वादु है, चिकना है, घाव और रक्तविकार को जीतता है, बल में हित है और वात, पित्त, मद, मूर्च्छा, मदात्यय इनको नाश करता है।।१९।।

तस्मादल्पगुणं ज्ञेयमन्यत्खर्जूरिकाफलम् ।
तन्मज्जा मूर्द्धजूः शीतो वृष्यः पित्तास्रदाहजित् ।।२०।।

छुहारा में इससे अल्प गुण हैं, छुहारा की गिरी मस्तक रोग को जीतती है, शीतल है, धातु को पुष्ट करती है, पित्त, रक्तविकार और दाह को जीतने वाली है।।२०।।

शिलेमानीखर्जूरनामगुणाः

शिलेमानी लोकपरा मृदृला तिवरीफला ।
शिलेमानी श्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छास्रपित्तनुत् ।।२१।।

शिलेमानी, लोकपरा, मृदृला, तिवरीफला ये खर्जूर सुलेमानी के नाम हैं। सुलेमानी खर्जूर परिश्रम, भ्रम, दाह, मूर्च्छा रक्तपित्त इनको दूर करती है।।२१।।

कदलीनामगुणाः

कदली ग्रन्थिनी मोचा रम्भा वीराऽऽयतच्छदा ।
वारणा वारणबुसाऽम्बुसारांशुमती फला ।।२२।।

कदली, ग्रंथिनी, मोचा, रंभा, वीरा, आयतच्छदा, वारणा, वारणबुसा, अम्बुसारा, अंशुमती, फला ये केला के नाम हैं।।२२।।

कदली योनिदोषाश्मरक्तपित्तहरा हिमा ।
तत्कन्दः शीतलो बल्यः केश्यः पित्तकफास्रजित् ।।२३।।

केला–योनिदोष, पथरी, रक्तपित्त इनको हरती है और शीतल है। केले का कंद–शीतल है, बल को करता है, बालों को बढ़ाता है तथा पित्त, कफ, रक्तविकार इनको जीतने वाला है।।२३।।

तत्फलं मधुरं शीतं विष्टम्भि कफकृद्गुरु ।
स्निग्धं पित्तास्त्रतृड्दाहक्षतक्षयसमीरजित् ।।२४।।

केले का फल मीठा और शीतल है; विष्टंभ करता और कफ करता है, भारी और चिकना है, पित्तरक्त, तृषा, दाह, क्षत, क्षय, वात इनको जीतता है।।२४।।

दाडिमीनामगुणाः

दाडिमी रक्तकुसुमा दन्तबीजा शुकप्रिया ।
दाडिमं दीपनं हृद्यं रोचनं नातिपित्तलम् ।।२५।।

दाडिमी, रक्तकुसुमा, दंतबीजा, शुकप्रिया ये अनार के नाम हैं। अनार अग्नि को जगाता है, दिल को ताकत देता है, रुचि को उपजाता है और अत्यंत पित्त को नहीं करता है।।२५।।

कषायानुरसं ग्राहि द्विविधा ह्यम्लवेतवत् ।
तयोः स्वादु त्रिदोषघ्नमम्लं वातबलास्रजित् ।
शुष्काम्लदाडिमीसारः फुट्टितं कफवातहृत् ।।२६।।

अनार, खट्टा, मीठा, कषायानुरस, (पीछे से किंचित्कषाय प्रतीत होने वाला है) मल को बांधता है,और अम्लवेतस की तरह दो प्रकार का है। उन दोनों में स्वादिष्ट अनार त्रिदोष को नाशता है, खट्टा अनार वात, बल, रक्त इनको जीतता है। सूखे हुए खट्टे अनार में भी ये ही गुण है, अनार का रस कफ और वात को हरता है।।२६।।

कतकनामगुणाः

कतकस्य फलं नेत्र्यं जलनिर्मलकारकम् ।
वातश्लेष्महरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ।।२७।।

कतकफल अर्थात् निर्मली का फल आंखों में हित है, पानी को निर्मल करता है, वात और कफ को हरता है, शीतल है, मीठा है, कषैला और भारी है।।२७।।

बदरीनामगुणाः

बदरी कर्कटी मोघा कोरण्टी युग्मकण्टका ।
अन्या स्निग्धच्छदा क्रोशफला सौवीरिकाऽपरा।।२८।।

बदरी, कर्कटी, मोघा, कोरंटी, युग्मकंटका, दूसरे प्रकार की बेरी स्निग्धच्छदा, क्रोशफला, और तीसरे प्रकार का सौवीरिका कही जाती है।।२८।।

हस्तिकोलिः परा त्वन्या लघ्वी कर्कन्धुकीधुके ।
बदरी शीतला तिक्ता रूक्षा पित्तकफापहा ।
बदरं त्वपरं लोके फेनिलं कुवलं कुहम् ॥२९॥
कर्कन्धु ह्रस्वबदरं वरटं कन्धु कन्धुकम् ।
पक्वं ताम्र च मधुरं मतं सौवीरकं महत् ॥३०॥

तथा चौथी–हस्तिकोलि; छोटी बड़बेरी कर्कन्धु, कीधुका इन नामों वाली है। बड़बेरी–शीतल है, कडुवी है, रूखी है, पित्त और कफ को नाश करती है। लोक में छोटा बेर फेनिल, कुवल, कुह, कर्कन्धु, ह्रस्वबदर, वरट, कन्धु नाम से प्रसिद्ध है। कंधुक और पके हुए गूदे वाला बेर मीठा माना है, और सौवीरक बड़ा बेर होता है ॥२९–३०॥

बदरं लघु संग्राहि रुच्यमुष्णं समीरजित् ।
कफपित्तकरं तद्वत्कोलं गुरु सरं स्मृतम् ॥३१॥

बेर हलका है, मल को बांधता है, रुचि को उपजाता है, गर्म है, वात को जीतता है, कफ–पित्त को करता है। कोल नामक बेर भारी तथा दस्तावर है॥३१॥

सौवीरं बदरं शीतं भेदनं गुरु शुक्रलम् ।
बृंहणं पित्तदाहास्रक्षततृष्णानिलापहम् ।
शुष्कं भेद्यग्निकृत्सर्वं लघु तृष्णाक्लमास्रजित् ॥३२॥

प्योंदीबेर शीतल है, भेदन है, भारी है, वीर्य को उपजाता है, धातु को पुष्ट करता है और पित्त, दाह, रक्त, क्षत, तृषा, वात इनको हरता है। सूखा बेर भेदन करता है, अग्निवर्द्धक है, हलका है और तृषा, ग्लानि रक्त इनको जीतता है॥३२॥

कर्कन्धु मधुरं स्निग्धं गुरु पित्तानिलापहम् ।
मरुत्पित्तहरा मज्जा वृष्या वीर्यबलप्रदा ॥३३॥

छोटी बेरी का बेर मीठा है, चिकना है, भारी है, पित्त और वात को नाश करता है, बेर की गिरी–वातपित्त को हरती है, धातु को पुष्ट करती है, वीर्य और बल को देने वाली है॥३३॥

क्षीरीनामगुणाः

क्षीरी क्षत्रियराजाह्वा राजादनफलाशिनौ ।
राजन्यः स्तम्भनोऽन्योऽश्वचिबुको मुचिलिण्टकः ॥३४॥

क्षीरी, क्षत्रिया, राजाह्वा, राजादन, फलाशी, राजन्य, स्तंभन, अश्वचिबुक, मुचिलिंटक ये खिरनी के नाम हैं॥३४॥

क्षीरवृक्षफलं शीतं स्निग्धं गुरु बलप्रदम् ।

तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयास्रजित् ।।३५।।

खिरनी का फल–शीतल, चिकना, भारी, बलदायक और तृषा, मूर्च्छा, मद, भ्रम, क्षय, त्रिदोष, रक्त इनको जीतने वाला है।।३५।।

चारनामगुणाः

चारो धनुः पटः शालः प्रियालो मुनिवल्लभः ।
चारः पित्तकफास्रघ्नस्तत्फलं मधुरं गुरु ।।३६।।

चार, धनुःपट, शाल, प्रियाल, मुनिवल्लभ ये चिरोंजी के नाम हैं। चिरोंजी पित्त, कफ, रक्त इनको नाश करती है। चिरोंजी का फल मीठा और भारी है।।३६।।

स्निग्धं सरं मरुत्पित्तदाहतृष्णाक्षतापहम् ।
तन्मज्जा मधुरा वृष्या शुक्रला पित्तवातजित् ।।३७।।

तथा चिकना है, सर है और वात, पित्त, दाह, तृषा, क्षत इनको नाशता है। चिरोंजी की गिरी मीठी है, धातु को पुष्ट करती है, वीर्य को उत्पन्न करती है, पित्त और वात को जीतती है।।३७।।

परूषकनामगुणाः

परूषको मृदुफलः परूषो रोषणः परः ।
परूषकं कषायाम्लमामपित्तकरं लघु ।।३८।।

परूषक, मृदुफल, परूष, रोषण, पर ये फालसा के नाम हैं। फालसा–कषैला है, खट्टा हैं, आम और पित्त को करता है तथा हलका है।।३८।।

पक्वं तु मधुरं पाके शीतं विष्टम्भि बृंहणम् ।
हृद्य तृट्पित्तदाहस्रक्षतक्षयसमीरनुत् ।।३९।।

पका हुआ फालसा पाक में मीठा है, शीतल है, विष्टंभी है, धातु को पुष्ट करता है, दिल को ताकत देता है और तृषा, पित्त, दाह, रक्त, क्षत, क्षय, वात इनको नष्ट करता है।।३९।।

तिंदुकनामगुणाः

तिन्दुकः स्पन्दनः स्फूर्ज्यः कालसारश्च रावणः ।
काकपीलुः कुपीलुः स्यादपरो विषतिन्दुकः ।।४०।।

तिंदुक, स्पंदन, स्फूर्ज्य, कालसार, रावण, काकपीलु, कुपीलु ये तेन्दु के नाम हैं। दूसरा–विषतिंदुक नामवाला होता है, इसी को तेन्दु भी कहते हैं।।४०।।

तिन्दुको व्रणवातघ्नस्तत्सारः पित्तरोगजित् ।
आममस्य फलं ग्राहि वातलं शीतलं लघु ।।४१।।

तेन्दु घाव और वात को नाश करता है। इसका सार पित्तरोग को जीतता है। तेन्दु

का कच्चा फल ग्राही है, वात को करता है, शीतल और हलका है।।४१।।

पक्वं पित्तप्रमेहास्रश्लेष्मघ्नं विशदं गुरु ।
विषतिन्दुकमप्येवं विशेषाद् ग्राहि शीतलम् ।।४२।।

पका हुआ फल पित्त, प्रमेह, रक्त, कफ इनको नाशता है और भारी है। विषतेन्दु में ये ही गुण हैं, विशेषकर मल को बांधता है और शीतल है। विषतिन्दुक कुचले को कहते हैं, इसको शोधन कर अल्प मात्रा में प्रयोग करते हैं ये तीक्ष्ण विष मारक होता है।।४२।।

किंकिणीनामगुणाः

किंकिणीलो व्याघ्रपादो देवदारुश्चरः क्वचित् ।
किंकिणी तुवरा तिक्ता पित्तश्लेष्महरा हिमा ।
तत्फलं वातलं त्वामं पक्वं स्वादु त्रिदोषजित् ।।४३।।

किंकिणील, व्याघ्रपाद,देवदारु,चर ये नाम कांकईके हैं।कांकई कषैली है, कडुवी है, पित्त और कफ को हरती है तथा शीतल है। कांकई का कच्चा फल वात को करता है, पका फल स्वादु है और त्रिदोष को जीतता है।।४३।।

आरुकनामगुणाः

आरुकं वीरसेनं तज्जातिभेदाच्चतुर्विधम् ।
आरुकं जारकं वातमेहार्शः कफनाशनम् ।।४४।।

आरुक, वीरसेन ये आडू के नाम हैं, वह आडू जाति के भेद से चार प्रकार का है। आडू–वात, प्रमेह, बवासीर, कफ इनको नाश करता है।।४४।।

मधूकनामगुणाः

मधूको मधुकस्तीक्ष्णः सारश्च गुडपुष्पकः ।
गोलाफलो मधुकोष्ठो मधुकोष्ठी मधुद्रुमः ।।४५।।

मधूक, मधुक, तीक्ष्ण, सार, गुड़पुष्पक, गोलाफल, मधुकोष्ठ, मधुकोष्ठी, मधुद्रुम ये महुआ के नाम हैं।।४५।।

मधुकोन्यो ह्रस्वफलो मधुरो दीर्घपुष्पकः ।
मधुकः कफवातघ्नः कषायो व्रणरोपणः ।।४६।।

दूसरा महुआ ह्रस्वफल, मधुर, दीर्घपुष्पक इन तीन नामों वाला है। महुआ कफ वात को नाश करता है, कषैला है और घाव को रोपण करता है।।४६।।

तत्पुष्पं मधुरं बल्यं शीतलं गुरु बृंहणम् ।
फलं शीतं गुरु स्वादु शुक्रलं वातपित्तजित् ।
अहृद्यं हंति तृष्णास्रदाह श्वासक्षतक्षयान् ।।४७।।

महुवे का फूल मीठा है, बलवर्द्धक है, शीतल है, भारी है और धातु को पुष्ट करता है। महुवे का फल–शीतल है, भारी है, स्वादु है, वीर्य को करता है, वातपित्त को जीतता है, हृदय को अप्रिय है और तृषा, रक्तविकार, दाह, श्वास, क्षत, क्षय इनको हरता है।।४७।।

पनसनामगुणाः

पनसः कण्टकिफलः श्वासहा गर्भकण्टकः ।
पनसं शीतलं पक्वं स्निग्धं पित्तानिलापहम् ।।४८।।

पनस, कंटकिफल, श्वासहा, गर्भकंटक ये कटहलके नाम हैं। कटहल (कटहर) शीतल है, चिकना है, पित्तवात को हरण करता है।।४८।।

बल्यं शुक्रपदं हन्ति रक्तपित्तक्षतक्षयान् ।
आमं तदेव विष्टम्भि वातलं तुवरं लघु ।।४९।।

कटहल–बल देता है, वीर्य को देता है और रक्तपित्त, क्षत, क्षय इनको नाश करता है, कच्चा कटहर विष्टंभ करता है, वात को उपजाता है, कषैला और हलका है।।४९।।

लकुचनामगुणाः

लकुचः क्षुद्रपनसो निकुचो ग्रंथिमत्फलः ।
लकुचं गुरु विष्टंभि स्वाद्वम्लं रक्तपित्तकृत् ।
श्लेष्मकारि समीरघ्नमुष्णं शुक्राग्निनाशनम् ।।५०।।

लकुच, क्षुद्रपनस, निकुच, ग्रन्थिमत्फल ये बड़हल के नाम हैं। बड़हल–भारी है, विष्टंभ करता है, स्वादु है, खट्टा है, रक्तपित्त और कफ को करता है, वात को हरता है, गर्म है, वीर्य और अग्नि को नाश करता है।।५०।।

तालनामगुणाः

तालो ध्वजो दुरारोहस्तृणराजो महाद्रुमः ।
तालः शीतो मरुत्पित्तव्रणजिन्मदशुक्रकृत् ।।५१।।

ताल, ध्वज, दुरारोह, तृणराज, महाद्रुम ये ताड़ के नाम हैं। ताड़–शीतल है और वात, पित्त, घाव इनको जीतता है तथा मद और वीर्य को बढ़ाता है।।५१।।

तत्फलं शीतलं बल्यं स्निग्धं स्वादुरसं गुरु ।
विष्टम्भि वातपित्तास्रक्षतदाहक्षतापहम् ।
बीजं मूत्रकरं वृष्यं वातपित्तहरं हिमम् ।।५२।।

ताड़ का फल शीतल है, बल को करता है, चिकना है, स्वादु रसवाला है, भारी है और विष्टंभी है तथा वात, पित्त, रक्तक्षत, दाह, क्षत, इनको नाश करता है। ताड़ का

बीज मूत्र को पैदा करता है, धातु को पुष्ट करता है, वातपित्त को हरता है और शीतल है।।५२।।

खर्बूजनामगुणाः

खर्बूजं फलराजः स्यादमृताह्वं दाशाङ्गुलम्।।५३।।

खर्बूज, (खर्बूजा) फलराज, अमृताह्व, दशांगुल यह खर्बूजे के नाम हैं।।५३।।

खर्बूजं मूत्रलं बल्यं कोष्ठशुद्धिकरं गुरु ।
स्निग्धं स्वादुकरं शीतं वृष्यं पित्तानिलापहम् ।।५४।।

खर्बूजा, मूत्र उत्पन्न करता है, बलदायक है, कोठे को शुद्ध करता है, भारी है, चिकना है, स्वादु है, शीतल है, वीर्य पुष्ट करता है और पित्तवात को हरता है।।५४।।

तेषु यच्चाम्लमधुरं सक्षारं च रसाद्भवेत् ।
रक्तपित्तकरं तत्तु मूत्रकृच्छ्रकरं परम् ।।५५।।

सब तरह के खर्बूजों में जो खट्टा मीठा है और जो रस से खारा होता है वह खर्बूजा रक्तपित्त को और मूत्रकृच्छ्र को पैदा करने वाला होता है।।५५।।

सेवनामगुणाः

मुष्टिप्रमाणं बदरं सेवं सीवफलं तथा ।
फलं च सितिकापूर्वं वातपित्तहरं गुरु ।।५६।।

मुष्टिप्रमाण, बदर सेव, सीवफल, सितिकाफल ये सेव के नाम हैं सेव वातपित्त को हरता है, भारी है।।५६।।

हिमं स्यन्दनकं स्निग्धं मूत्रलं स्वादु शीतलम् ।
त्वग्दाहयन्तर्दाहं च हृत्कम्पान् पित्तसम्भवान् ।।५७।।
हरेत्तत्सञ्चितमलं ज्वरघ्नं तु विषापहम् ।
बृंहणं कफकृद् वृष्यं स्वादुपाकरसं हिमम् ।।५८।।

सेव शीतल है, स्यंदन है, चिकना है, मूत्र को करता है, स्वादु है और त्वचा में दाह, भीतर दाह, पित्त से उपजे हृत्कपं, संचित, मल, ज्वर, विष इनको नाश करता है, धातु को पुष्ट करता है, कफकारक है, वीर्यवर्द्धक है, स्वादु है तथा पाक में और रस में शीतल है।।५७-५८।।

अमृतफलनासपातीनामगुणाः

अन्यदम्भःफलं भिन्नं महत्सिञ्चितिकाफलम् ।
अमृतं गुरु वातघ्नं स्वाद्वम्लं रुचिशुक्रकृत् ।
अपरं सेवगुणकृद्विशेषात्तुवरं हिमम् ।।५९।।

दूसरा अंभःफल, महसिंचितिकाफल यह नाम (काश्मीर की नासपाती) के हैं। यह

सेव के समान गुण करती है, विशेषकर कषैली और शीतल है।।५९।।

अमृताह्वं रुचिफलं लघुबिल्वं फलाकृति ।
अमृतं गुरु वातघ्नं स्वाद्वम्लं रुचिशुक्रकृत् ।।६०।।

अमृताह्व, रुचिफल, लघुबिल्व, फलाकृति ये अमृतफल (नासपाती) के नाम हैं। अमृतफल गर्म है, वात को नाशता है, स्वादु है, खट्टा है, रुचि और वीर्य को करता है।।६०।।

पेरुक (अमरूद) नामगुणाः

पेरुकं तुवरं प्रोक्तं स्वाद्वम्लं कफकारकम् ।
शुक्रलं वातपित्तघ्नं शीतलं च रसं मतम् ।।६१।।

अमरूद, (पेरुक) कषैला, मीठा, खट्टा, कफकारक, वीर्यवर्द्धक, वात पित्त नाशक और शीतल है।।६१।।

बादामनामगुणाः

बादामं सुफलं वातवैरि नेत्रोपमं मतम् ।
बादाममुष्णं सुस्निग्धं वातघ्नं बलशुक्रकृत् ।।६२।।

बादाम,वाताद,सुफल, वातवैरि, नेत्रोपम ये बादाम के नाम हैं। बादाम गर्म है, बहुत चिकना है, वात को नाशता है, बल और वीर्य को बढ़ाता है।।६२।।

पिस्तनामगुणाः

निकोचकं चारुफलमङ्कोटं गलकोजकम् ।
पिस्तं मुकुलकं ज्ञेयं दन्तीफलसमाकृति ।।६३।।

निकोचन, चारुफल, अंकोट, गलकोजक, पिस्त (पिस्ता), मुकुलक, दन्ती, फलसमाकृति ये पिस्ता के नाम हैं।।६३।।

निकोचकं गुरु स्निग्धं वृष्योष्णं स्वादु बृंहणम् ।
रक्तप्रसादनं बल्यं वातघ्नं कफपित्तकृत् ।
तद्वन्मुकुलकं ज्ञेयं विशेषाद्गुरु दुर्जरम् ।।६४।।

पिस्ता–भारी है, चिकना है, स्त्रीसंग में गुण देता है, गर्म है, स्वादु है, धातु को पुष्ट करता है, रक्त को बदलता है, बल को करता है, वात को नाशता है तथा कफ और पित्त को करता है। चिलगोजा में भी यही गुण हैं। विशेषकर देर में जरता है और भारी है।।६४।।

एलाफलगुणाः

एलानामामवातघ्नमलोष्णं गुरु रेचनम् ।
पक्वं स्वादु हिमं बल्यं वातपित्तविनाशनम्।।६५।।

एलाफला अर्थात् (लीची) अलीची आमवात को नाशती है, खट्टी है, गर्म है, भारी है, दस्तावर है पकी हुई अलीची स्वादु है, शीतल है, बल को करती है और वातपित्त को नाशती है।।६५।।

आलूबुखारानामगुणाः

आल्लूकमल्लूर्भल्लूकं भल्लू रक्तफलं तथा ।
आलूकं रसतः शीतं स्वाद्वम्लं वातपित्तकृत् ।।६६।।

आल्लूक, अल्लू, भल्लूक, भल्लू, रक्तफल (अलूचा) ये आलूबुखारे के नाम हैं। आलूबुखारा रस में शीतल है, स्वादु है, खट्टा है, वात, और पित्त को करने वाला है।।६६।।

अञ्जीरनामगुणाः

अञ्जीरं मज्जलं ज्ञेयं काकोदुम्बरिकाफलम् ।
अञ्जीरं शीतलं स्वादु गुरु पित्तास्रवातजित् ।
तस्मादन्यगुणं ज्ञेयमञ्जीरं लघु वा गुणैः ।।६७।।

अञ्जीर, मज्जल, काकोदुम्बरिका फल ये अञ्जीर के नाम हैं। अञ्जीर शीतल है, स्वादु है, भारी है, पित्तरक्त और वात को जीतता है। छोटा अञ्जीर (केंवरी) इससे भिन्न गुणवाला है, अर्थात् दस्तावर है, पित्तकारक है।।६७।।

आक्षोटनामगुणाः

आक्षोटो वैधृतफलं कन्दलाभः पृथुच्छदः ।
आक्षोटं मधुरं बल्यं गुरूष्णं वातहृत्सरम् ।।६८।।

आक्षोट (क), वैधृतफल, कंदलाभ, पृथुच्छद ये अखरोट के नाम हैं। अखरोट मीठा है, वल को करता है भारी है, गर्म है वात को हरता है और सर है।।६८।।

पालेवत (पालो) नामगुणाः

पालेवतं सितं पुष्पैस्तिन्दुकं च फलं स्मृतम् ।
अन्यन्मानवकं ज्ञेयं महापालेवतं तथा ।।६९।।

पालेवत, सितपुष्प, तिन्दुकफल ये पालेवत के नाम हैं। दूसरा मानवक यह नाम महापालेवत का है।।६९।।

पालेवतं हिमं स्वादु गुरूष्णं वह्निवातजित् ।
तद्वन्मानवकं हृद्यं तृष्णाघ्नं मिष्टमम्लकम् ।।७०।।

पालेवत शीतल है, स्वादु है, भारी है, गर्म है, अग्नि और वात को जीतता है। वैसे ही महापालेवत दिल को ताकत देता है, तृषा को नाशता है, रुचिकारक और खट्टा है। यह छोटे सेव के समान होता है,शिमले के पहाड़ में इसको पालो कहते

हैं।।७०।।

तूतनामगुणाः

तूदं तुदं ब्रह्मकोषं ब्राह्मण्यं ब्रह्मदारु च ।
तूतं गुरु हिमं पक्वं स्वादु पित्तानिलापहम् ।।७१।।

तूत, तूद, ब्रह्मकोष, ब्राह्मण्य, ब्रह्मदारु ये सहतूत के नाम हैं। सहतूत शीतल है, पका हुआ स्वादु है, भारी है, गर्म है और पित्तवात को नाश करता है।।७१।।

गंगेरुकनामगुणाः

गङ्गेरुकं कर्कटकं कारकं मृगलिण्डकम् ।
तोदनं क्रन्दनं चान्यन्मृगविट्सदृशं तथा ।।७२।।

गंगेरुक, कर्कटक, कारक, मृगलिंडक ये गंगेरुवा के नाम हैं। दूसरे के तोदनं क्रंदन, मृगविट्सदृश ये नाम हैं।।७२।।

गङ्गेरु रेचनं पक्वं गुरुवातास्रजिन्मतम् ।
तोदनं ग्राहि मधुरं वातपित्तहरं लघु ।।७३।।

गंगेरुवा–दस्तावर है, पका हुआ भारी है,वातरक्तको जीतता है। तोदकारक है, मल को बांधता है, मीठा है, वातपित्त को हरता है और हलका है।।७३।।

तुवर–तुम्बरवृक्ष–नामगुणाः

तुवरं टिन्त्रिकं साम्लमुष्णमामं तु पित्तलम् ।
कालायनफलैः पत्रैः केशराभैः समुद्रजैः ।।
वृक्षस्तुम्बरको ज्ञेयो भल्लातकसमो गुणैः ।
तुम्बरं कफजित्पाके कटूष्णं व्रणमेहकृत् ।।७४।।

तुवर, टिन्त्रिक ये तुवर के नाम हैं, गर्म और खट्टा है, कच्चा तुवर पित्त को करता है, समुद्र में उपजे और केशर के समान कांतिवाले ऐसे कालायन के फल और पत्तों के समान तुवर वृक्ष जानना। इसमें भिलावे के समान गुण, हैं, तुंबर कफ को जीतता है, पाक में चर्परा है, गर्म है तथा घाव और प्रमेह को उत्पन्न करता है,।।७४।।

बीजपूरनामगुणाः

बीजपूरो मातुलिङ्गः कुशरी फलपूरकः ।
बीजपूरफलं रुच्यं रसाम्लं दीपनं लघु ।।७५।।

बीजपूर, मातुलिंग, कुशरी, फलपूरक ये बिजौरे के नाम हैं। बिजौरे का फल रुचि को करता है, रस में खट्टा है, अग्नि को जगाता है और हलका है।।७५।।

रक्तपित्तकरं कण्ठ्यं जिह्वाहृच्छोधनं परम् ।
तन्मांसं बृंहणं शीतं गुरु पित्तसमीरजित् ।।७६।।

नींबू–रक्त पित्त को करता है, कंठ को हित है, जीभ और हृदय को शोधन करता है। बिजौरे का गूदा धातु को पुष्ट करता है, शीतल है, भारी है, पित्त और वात को जीतता है॥७६॥

केशरं लघु संग्राहि शूलगुल्मोदरापहम्।
बीजमुष्णं कृमिश्लेष्मवातजिद्गर्भदं गुरु ॥७७॥

बिजौरे की केशर हलकी है, मल को बांधती है, और शूल, गुल्म, उदररोग इनको नाशती है। बिजौरे का बीज गर्म है, और कृमि, कफ, वात इनको जीतता है, गर्भ को देता है, तथा भारी है॥७७॥

तत्पुष्पं वातलं ग्राहि रक्तपित्तहरं लघु।
शूलाजीर्णविबन्धेषु मन्दाग्नौ कफमारुते।
अरुचौ श्वासकासेषु रसस्तस्योपदृश्यते ॥७८॥

बिजौरे का फूल–वात को करता है, मल को बांधता है, रक्तपित्त को हरता है, और हलका है, शूल, अजीर्ण, विबन्ध, मन्दाग्नि, कफ, वात, अरुचि, श्वास, खांसी इनमें बिजौरे का रस देना उत्तम है॥७८॥

मधुकर्कटीनामगुणाः

मधुकर्कटिका स्वादुलुङ्गी घण्टालिका घटा।
मधुकर्कटिका शीता रक्ता पित्तहरा गुरुः।
तन्मूलं तु विषूचीघ्नं कर्णशोथविनाशनम् ॥७९॥

मधुकर्कटिका, स्वादु, लुङ्गी, घंटालिका, घटा ये मधुककड़ी (चकोतरे) के नाम हैं, मधुककड़ी (चकोतरा) शीतल है, लाल रंग की है, पित्त को हरती है, भारी है। मधुककड़ी की जड़ हैजा और कान के शोजे को नाशती है॥७९॥

नारङ्गीनामगुणाः

नारङ्गी नागरङ्गः स्याद्गोरक्षो योगसागरः।
नारङ्गमम्लमत्युष्णं पित्तवातहरं सरम्।
स्वाद्वम्लपरं हृद्यं दुर्जरं वातनाशनम् ॥८०॥

नारंगी, नागरंग, गोरक्ष, योगसागर ये नारंगी के नाम हैं। नारंगीखट्टी है, अत्यंत गर्म है, पित्तवात को हरती है, सर है, और स्वादु है। संतरा (रंगतरा) दिल को ताकत देता है, देर में जरता है, और वात को नाशता है॥८०॥

जमीरनामगुणाः

जम्बीरको दन्तशठो जम्भीरो जङ्गलो मतः।
जम्बीरमम्लं शूलघ्नं गुरूष्णं कफवातजित्।

आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमान्द्यक्रिमीञ्जयेत् ॥८१॥

जंबीरक, दंतशठ, जंभीर, जंगल ये जंभीरी के नाम हैं, जंभीर नींबू खट्टा है, शूल को नाशता है, भारी है, गर्म है, कफवात को जीतता है और मुख की विसरता हृत्पीड़ा, मन्दाग्नि, कृमि इनको जीतता है॥८१॥

अम्लवेतसनामगुणाः

अम्लोऽम्लवेतसश्चुक्रो वेतसः शरभेदकः ।
अम्लवेतसमत्युष्णं भेदनं लघु दीपनम् ।
हृद्रोगशूलगुल्मघ्नं पित्ततृट्कफदूषणम् ॥८२॥

अम्ल, अम्लवेतस, चुक्र, वेतस, शरभेदक ये अम्लवेतस के नाम हैं। अम्लवेतस अत्यन्त गर्म है, भेदन है, हलकी है, अग्नि को जगाती है, और हृद्रोग, शूल, गुल्म इनको नाश करती है, भारी है और पित्त, तृषा, कफ इनको दूषित करने वाली है॥८२॥

साराम्लनामगुणाः

साराम्लकः सारगुलो रसालः सारपादपः ।
साराम्लमम्लवातघ्नं गुरु पित्तकफप्रदम् ॥८३॥

साराम्लक, सारगुल, रसाल, सारपादप ये साराम्ल के नाम हैं। साराम्ल–अम्लवात को नाशता है, भारी है, पित्त और कफ को उत्पन्न करता है॥८३॥

निम्बुनामगुणाः

निम्बूकं निम्बुकं राजनिम्बूकमपरं स्मृतम् ।
निम्बूकमम्लं वातघ्नं पाचनं दीपनं लघु ।
राजनिम्बूफलं स्वादु गुरु पित्तसमीरजित् ॥८४॥

निंबूक, निंबुक ये नींबू के नाम हैं। दूसरा राजनिंबूक नामक होता है। नींबू खट्टा है, वात को नाशता है, पाचन है, अग्नि को जगाता है और हलका है। राजनिंबू मीठा है, भारी है, पित्त और वात को जीतता है॥८४॥

कर्मरङ्गनामगुणाः

कर्मरङ्गं नागफलं भव्यं पिच्छिलबीजकम् ।
कर्मरङ्गं हिमं ग्राहि स्वाद्वम्लं कफपित्तजित् ॥८५॥

कर्मरङ्ग, नामफल, भव्य, पिच्छिलबीजक ये कमरख के नाम हैं। कमरख–शीतल है मल को बांधती है, स्वादु है, खट्टी है और कफपित्त को जीतती है॥८५॥

अम्लीनामगुणाः

अम्लिका चुक्रिका चिञ्चा तिन्तिडी शुक्तिचन्द्रिका ।
अम्लिकाऽऽमा गुरुर्वातहरा पित्तकफास्रजित् ॥८६॥

अम्लिका, चुक्रिका, चिञ्चा, तिंतिड़ी, शुक्तिचन्द्रिका ये इमली के नाम हैं। कच्ची इमली भारी है, वात को हरती है और पित्त, कफ रक्त इनको जीतती है।।८६।।

पक्वा तद्वत्सरा रुच्या वह्निबस्ति विशुद्धिकृत् ।
शुष्का हृद्या श्रमभ्रान्तितृष्णाक्लमहरा लघुः ।।८७।।

पकी इमली भारी है, रुचि को उपजाती है, और अग्नि तथा बस्ति की शुद्धि करती है। सूखी इमली दिल को ताकत देती है और परिश्रम, भ्रम, तृषा, ग्लानि इनको हरती है और हलकी है।।८७।।

तिन्तिड़ीनामगुणाः

तिन्तिडीकं तु वृक्षाम्लमम्लशाकोऽम्लपादपः ।
तिन्तिडीकं समीरघ्नमाममुष्णं परं गुरू ।
तत्पक्वं लघु संग्राहि ग्रहणीकफवातजित् ।।८८।।

तिंतिड़ीक, वृक्षाम्ल, अम्लशाक, अम्लपादप ये तिंतड़ीक के नाम हैं। कच्चा तिंतड़ीक वात को नाश करता है, गर्म और भारी है। पका हुआ तिंतड़ीक हलका है, मल को बांधता है और ग्रहणी, कफ, वात इनको जीतता है।।८८।।

करमर्दी (करोंदा) नामगुणाः

करमदी सुषेणा स्यादन्या कृष्णफला मता ।
करमर्दी गुरूष्णाम्लं रक्तपित्तकफप्रदम् ।
तत्पक्वं मधुरं रुच्यं लघु पित्तसमीरजित् ।।८९।।

करमर्दी, सुषेणा, कृष्णफला ये करोंदा के नाम हैं। करोंदा भारी है, गर्म है, खट्टा है, और रक्तपित्त, कफ इनको उत्पन्न करता है। पका हुआ करोंदा मीठा है, रुचि को उत्पन्न करता है, हलका है तथा पित्त और वात को जीतता है।।८९।।

विकंकत (कंडचाई) नामगुणाः

[विकंकतो मधुश्चाम्लः कषायः शीतलो जयेत् ।
बलासपित्तशोफास्रविकारान्कामलां स्तथा ।।१।।
पाककालेऽतिमधुरो दाहं शोषं च नाशयेत् ।
दीपनः पाचनश्चैव व्रणलूताविनाशनः ।।२।।]

[विकंकत (कटाई–किंकिणी) मधुर है, खट्टी है, कषैली है, शीतल है तथा कफ, पित्त, शोजा रुधिरविकार, कामला इनको जीतती है, पाक में मधुर और पाचन है तथा दाह, शोष, लूता, व्रण, अर्श इनको नाश करती है।।१–२।।]

कपित्थनामगुणाः

कपित्थको दधिफलः कपित्थः सुरभिच्छदः ।

कपित्थमामं संग्राहि लघु दोषत्रयापहम् ॥९०॥

कपित्थक, दधिफल, कपित्थ, सुरभिच्छद ये कैथ के नाम हैं। कच्चा कैथ संग्राही है, हलका है और त्रिदोष को नाश करता है॥९०॥

पक्वं गुरु तृषाहिक्काशमनं वातपित्तजित् ।
स्वाद्वम्लं तुवरं कण्ठशोधनं ग्राहि दुर्जरम् ॥९१॥

पका हुआ कैथ भारी है, तृषा और हिचकी को शमन करता है, वातपित्त को जीतता है, स्वादु है, खट्टा है, कषैला है, कंठ को शोधता है, मल को बांधता है और देर में जीर्ण होता है॥९१॥

कपित्थपत्रीनामगुणाः

कपित्थपत्री फणिजा कुलजा जीवपत्रिका ।
कपित्थपत्री तिक्ष्णोष्णा कफमेहविषापहा ॥९२॥

कपित्थपत्री, फणिजा, कुलजा, जीवपत्रिका ये कैथपत्री के नाम हैं। कैथपत्री तेज है, गर्म है और कफ, प्रमेह, विष इनको नाशती है॥९२॥

आम्रातकनामगुणाः

आम्रातकश्चाम्रवटः फली मोदः फलः कपिः ।
आम्रातमामवातघ्नं गुरूष्णं रुचिकृत्सरम् ।
पक्वं स्वादु हिमं वृष्यं मरुत्पित्तक्षयास्रजित् ॥९३॥

आम्रातक, आम्रवट, फली, मोद, फल, कपि ये अंबाड़े के नाम हैं। कच्चा अंबाड़ा–वात को नाश करता है, भारी है, गर्म है, रुचि करता है और सर है। पका हुआ अंबाड़ा स्वादु है, शीतल है, धातु को पुष्ट करता है और वात, पित्त, क्षय, रक्त इनको जीतता है॥९३॥

राजाम्रनामगुणाः

राजाम्राह्वं काम्रनामा कामाह्वो राजपुत्रकः ।
राजाम्रं मधुरं शीतं ग्राहि पित्तकफापहम् ॥९४॥

राजाम्राह्व, काम्रनाम कामाह्व, राजपुत्रक ये राजाआम के नाम हैं। राजाआम (कलमी आम) मीठा है, शीतल है, मल को बांधता है, पित्त और कफ को नाशता है॥९४॥

पञ्चाम्लनामगुणाः

वृक्षाम्लदाडिमीचिञ्चाकपित्थैश्चतुराम्लकम् ।
अम्लवेतसवृक्षाम्लं दाडिमो बदरः क्वचित् ।
बीजपूरयुतैरेतैः पञ्चाम्लमुदितं बुधैः ॥९५॥

तिंतड़ीक, अनार, इमली, कैथ इन चारों को मिलाने से चतुराम्ल होता है। अम्लवेत, तिंतड़ी, अनार, बेर, बिजौरा इन पांचों को बुद्धिमानों ने पंचाम्ल कहा है।।९५।।

क्रोशाम्रनामगुणाः

कोशाम्रको घनस्कन्धो जन्तुवृक्षश्च कोशकः ।
कोशाम्रः कुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः ।।९६।।

कोशाम्रक, घनस्कंध, जंतुवृक्ष, कोशक ये कोशाम्र के नाम हैं। कोशाम्र–कुष्ठ, शोजा, रक्तपित्त, घाव और कफ को नाश करता है।।९६।।

तत्फलं ग्राहि वातघ्नमम्लोष्णं गुरु पित्तलम् ।
पक्वं तद्दीपनं रुच्यं लघूष्णं कफवातजित् ।
मज्जा पित्तसमीरघ्नी स्वादुर्बल्याऽग्निदीपनी ।।९७।।

कोशाम्रका फल मल को बांधता है, वात को नाशता है, खट्टा है, गर्म है, भारी है और पित्त को करता है। पका हुआ कोशाम्र अग्नि को जगाता है रुचि को उपजाता है। हलका है, गर्म है और कफ वात को जीतता है, इसकी गिरी पित्तवात को नाशती है, स्वादु है, बल को करती है, अग्नि को जगाती है। छोटे छोटे फल वाले पहाड़ पर जंगलों में उत्पन्न हुए आमों को कोशाम्र कहते हैं।।९७।।

पूगीफलनामगुणाः

क्रमूकं क्रमुकं पूगं पूगीफलमुदाहृतम् ।
पूगं गुरु हिमं रूक्षं कषायं कफपित्तजित् ।।९८।।

क्रमूक, क्रमुक, पूग, पूगीफल ये सुपारी के नाम हैं। सुपारी–भारी है, शीतल है, रूखी है, कषैली है और कफपित्त को जीतती है।।९८।।

मोहनं दीपनं रुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ।
आर्द्रं तद्गुर्वभिष्यन्दि वह्निदृष्टिहरं परम् ।।९९।।

सुपारी–मोह को करती है, अग्नि को जगाती है, रुचि को उपजाती है और मुख की विरसता को नाशती है। गीली सुपारी भारी है, कफ करती है, अग्नि और दृष्टि को हरती है।।९९।।

स्निग्धं त्रिदोषहृत्सर्वं पक्वं शुष्कं तु वातलम् ।
पूगं स्याद्दृढमध्येष्टं तद्धि नानाविधं हिमम् ।।१००।।

पकी हुई चिकनी सुपारी–त्रिदोष को हरती है, सूखी सुपारी वात को करती है, करड़े मध्यभाग वाली सुपारी बहुत अच्छी है, अनेक प्रकार की सुपारी होती हैं सो ठंडी होती हैं।।१००।।

पाकदेशविभेदेन चिक्कणं सर्वदोषनुत् ।

कृमिकृत्पूगपुष्पं तु कषायं मधुरं गुरु ।
स्निग्धं त्रिदोषहृद्बल्यं तद्भेदांस्तद्वदादिशेत् ।।१।।

पाक में और देश भेद से योग्य होने पर चिकनी सुपारी सब दोषों को हरती है। सुपारी का फूल कृमियों को पैदा करता है, कषैला है, मीठा और भारी है। चिकनी सुपारी–त्रिदोष को हरती है, बल को करती है, चिकनी सुपारी के भदाम भी यही गुण है।।१।।

तांबूलनामगुणाः

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागिनी नागवल्लरी ।
ताम्बूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरं सरम् ।।२।।

तांबूलवल्ली, तांबूली, नागिनी, नागवल्लरी, तांबूल ये नाम नागरपान के हैं। नागरपान (पान) दिल को ताकत देता है, रुचि को उपजाता है और चर्परा, गर्म, कषैला तथा दस्तावर है।।२।।

तिक्तक्षारोषणं बल्यं रक्तपित्तकरं लघु ।
कासश्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् ।।३।।

तांबूल–कडुवा, खारा, चर्परा और गर्म है, बलदायक और रक्तपित्त को उत्पन्न करता है, तथा खांसी, कफ, मुखकी दुर्गंध, मल, वात, परिश्रम इनको नाश करता है।।३।।

ताम्बूलं स्वर्णवर्णं क्रमुकफलयुतं साग्रमप्यग्रहीनं
कर्पूरैणाण्डजाभ्यां कृतखदिरवटीसौरभेखातिचूर्णम् ।
चूर्णं ग्रीवानुजातं शिशिरकिरणवत्प्रोज्ज्वलं तेन साकं
दत्वा विप्राय पूर्वं तदनु नरपतिर्भक्षयेदाप्तदत्तम् ।।४।।

सुवर्ण के समान वर्णवाला, सुपारी के टुकड़ों से संयुत किया, अग्रभाग हत कपूर और कस्तूरी से सुगंधित किया, कत्थे से संयुत किया और चूना लगाकर चंद्रमा के समान प्रकाशित किया हुआ नागरपान प्रथम ब्राह्मण को दे५.र पीछे योग्य पुरुष के हाथ से दिये नागरपान को राजा खावे।।४।।

चूर्णं कफानिलहरं खदिरं कफपित्तजित् ।
संयोगतो दोषहरं सौमनस्यं करोति च ।
वैरस्यं हन्ति सौगन्ध्यकान्तिशोभाकरं परम् ।।५।।

चना–कफ और वात को हरता है, कत्था कफ और पित्त को जीतता है और दोनों पान में लगाकर खाने से दोष को हरते हैं तथा सुंदरता करते हैं, मुख के विरसपने को हरते हैं, सुगंधि, कांति, शोभा इनको करते हैं।।५।।

लवली–तत्फलंनामगुणाः

घनस्निग्धा महाप्रांशुः प्रपुन्नाटः समच्छदा ।
सुगन्धमूला लवली पाण्डुः कोमलवल्कली ॥६॥

घनस्निग्धा, महाप्रांशु, प्रपुन्नाट, समच्छदा, सुगंधमूला, लवली, पांडु, कोमलवल्कली ये लवली के नाम हैं॥६॥

लावल्याः फलमुद्दिष्टं श्यामं ज्योत्स्नाफलं तथा ॥७॥

श्याम, ज्योत्स्नाफल ये लवली के फल के नाम हैं॥७॥

लवलीफलमश्मार्शो वातपित्तहरं लघु ।
विशदं रोचनं रूक्षं हृद्यं पित्तकफापहम् ।
फलं तुल्यगुणं सर्वं मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥८॥

लवलीफल–पथरी, बवासीर, वात, पित्त इनको हरता है और हलका है, विशद है, रुचि को उपजाता है, रूखा है, हृदयं को हितकारी है। वृक्ष के ही समान सब फलों में गुण होते हैं। गिरी में भी उनके समान ही गुण होते हैं॥८॥

फलं हिमाग्निदुर्वातव्यालकीटादिदूषितम् ॥९॥
अकालजातं नाश्नीयात्पाकातीसारभूमिजम् ।
आमं दोषकरं प्रायः फलं बिल्वं विनाऽखिलम् ॥११०॥

पाला, अग्नि, दुष्टं पवन, सर्प कीड़ा आदि से फल दूषित होते हैं, अकाल में उपजा, पाक को उल्लंघित करने वाला और बुरी पृथिवी में उपजा हुआ भी दूषित होता है इस कारण दूषित फल नहीं खाना चाहिये। बेल फल के बिना और कच्चा फल विशेषकर दोष को करता है॥९–११०॥

यस्य यस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम् ।
तस्य तस्यैव वीर्येण मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥१११॥

जिस जिस फल का जैसा वीर्य हो उसके वीर्य के समान उसका गूदा भी जानना॥१११॥

व्याधितं कृमिदुष्टं च पाकातीतमकालजम् ।
वर्जनीयं प्रयत्नेन सपद्यागतमेव च ॥११२॥

इति मदनपालनिघण्टौ फलादिवर्गः षष्ठः ॥६॥

गला, सड़ा, खराब हुआ, कीड़ों से युक्त हुआ, पाक से अतीत हुआ, बिना समय में उपजा, तत्काल पका हुआ ऐसे फल वर्जित हैं अर्थात् खाना नहीं चाहिये॥११२॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ आयुर्वेदोद्धारकवैद्यपञ्चाननपं० रामप्रसादवैद्योपाध्याय–विरचितभाषातत्वप्रकाशिनीहिन्दीटीकायां फलादिवर्गः षष्ठः ॥६॥

राधापदाब्जे निपतन्विनोदी मानापनुत्त्यै जगदेकवन्द्यः ।
केनापि कामेन स गोपरूपी पायादपायात्पुरुषः पुराणः ॥१॥

मान को दूर करने के लिये राधाजी के चरण कमल में निरन्तर गिरता हुआ, आनन्दयुक्त, संसार में एक ही वंदना के योग्य, किसी भी कामना से गोपरूप वाला पुराणपुरुष हमारी सदैव कष्टों से रक्षा करें॥१॥

सर्वशाकेषु जीवन्ती श्रेष्ठा निन्द्यस्तु सर्षपः ।
शाकं चतुर्द्धा तत्पुष्पच्छदकन्दफलैः स्मृतम् ॥२॥

सब शाकों में जीवन्ती श्रेष्ठ है और सरसों का शाक बुरा है। फूल, पत्ता, कन्द, फल इन भेदों से शाक चार प्रकार का होता है॥२॥

त्रिविधकूष्मांडनामगुणाः

कूष्माण्डकी पुष्पफली पचनालिश्चतुर्विधः ।
कर्क्कारुरफला कन्दी स्यादारू राजकर्क्कटी ॥३॥

कूष्मांडकी, पुष्पफली, पचनालि, चतुर्विध, कर्कारु, अफला, कन्दी, आरु, राजकर्कटी ये पेठे के नाम हैं॥३॥

कूष्माण्डं बृंहणं शीतं गुरु पित्तास्रवातजित् ।
बल्यं पित्तपहं शीतं मध्यमं कफकारकम् ॥४॥

पेठा, धातु को पुष्ट करता है, शीतल है, भारी है, पित्तरक्त और वात को जीतता है, वल को करता है, पित्त को हरता है। मध्यम पका हुआ पेठा शीतल है, कफकारक है॥४॥

पक्वं नातिहिमं स्वादु सक्षारं दीपनं लघु ।
बस्तिशुद्धिकरं रेतोरोगदोषत्रयापहम् ॥५॥

पका हुआ पेठा अत्यन्त शीतल नहीं है, खारसहित है, अग्नि को जगाता है, हलका है, बस्ति को शोधन करता है और वीर्यरोग तथा त्रिदोष को नाश करता है॥५॥

कूष्माण्डं नातिमधुरं वातश्मरिकफापहम् ।
तन्मज्जा पित्तनुद् वृष्यो मधुरो बस्तिशोधनः ॥६॥

कुम्हड़ा (कद्दू) काशीफल अत्यन्त मीठा है और वात, पथरी, कफ को नाश करता है। कद्दू के बीजों की मज्जा पित्त को दूर करती है, वीर्य को बढ़ाती है, मीठी है और बस्ति को शोधन करती है॥६॥

कर्कटं शीतलं ग्राहि रक्तपित्तहरं गुरु ।
पक्वं पित्ताग्निजननं सक्षारं श्लेष्मवातजित् ॥७॥

लघु पेठा शीतल है, मल को बांधता है, रक्तपित्त को हरता है और भारी है। यही

पका हुआ पित्त और अग्नि को उपजाता है, खारसहित है और कफवात को जीतता है।।७।।

कर्कटीनामगुणाः

कर्कटी लोमशी व्यालपत्रैर्वारुर्बृहत्फला ।
कर्कटी शीतला रूक्षा ग्राहिणी मधुरा गुरुः ।।८।।

कर्कटी, लोमशी, व्यालपत्रा, एर्वारु, बृहत्फला ये ककड़ी के नाम हैं। ककड़ी शीतल है, रूखी है, मल को बांधती है, मीठी है, और भारी है।।८।।

कालिङ्ग (तर्बूजा) नामगुणाः

कालिङ्गं कृष्णबीजं स्यात्कलिङ्गं फलवर्तुलम् ।
कालिङ्गं ग्राहि दृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलं गुरु ।
पक्वं तु सोष्णं सक्षारं पित्तलं कफवातजित् ।।९।।

कालिंग, कृष्णबीज, कलिंग, फलवर्तुल ये तरबूज के नाम हैं। तरबूज–मल को बांधता है, नेत्ररोग और पित्त को हरता है, शीतल और भारी है। पका हुआ तरबूज गर्म है, खारसहित है, पित्त को करता है, कफ और वात को जीतता है।।९।।

मिष्टतुम्बीनामगुणाः

तुम्बी मिष्टा महातुम्बी राजाऽलाबुरलाबुनी ।
मिष्टं तुम्बीफलं वृष्यं कफपित्तहरं गुरु ।।१०।।

तुम्बी, मिष्टा, महातुंबी, राजा, अलाबु, अलाबुनी, ये नाम मीठी तूँबी के हैं। मीठा-तुंबीफल धातु को पुष्ट करता है, कफ और पित्त को हरता है तथा भारी है, इसको घीया या आल कहते हैं।।१०।।

कटुतुम्बीनामगुणाः

कटुतुम्बी मिष्टफली राजपुत्री च दुग्धिनी ।
कटुतुम्बी हिमा हृद्या पित्तकासविषापहा ।।११।।

कुटुतुंबी, मिष्टफली, राजपुत्री, दुग्धिनी ये कडुवी तूंवी के नाम हैं, कडुवी तूंबी–शीतल है, दिल को ताकत देती है और पित्त, खांसी विष इनको नाश करती है।।११।।

त्रपुषनामगुणाः

त्रपुषं कण्टकिलता सुधावासोऽपरं कटुः ।
छर्दिपर्णी मूत्रफला पित्तकं हस्तिपर्णिनी ।।१२।।

त्रपुष, कण्टकिलता, सुधावास, कडु, छर्दिपणी, मूत्रफला, पित्तक, हस्तिपर्णिनी, ये खीरा के नाम हैं।।१२।।

त्रपुषं मूत्रलं शीतं रूक्षं पित्ताश्मकृच्छ्रनुत् ।
तत्पक्वमुष्णमम्लं स्यात्पित्तलं कफवातजित् ॥१३॥

खीरा–मूत्र को उपजाता है, शीतल है, रूखा है और पित्त, पथरी, मूत्रकृच्छ्र को नष्ट करता है। पका हुआ खीरा गर्म है, खट्टा है, पित्त को उत्पन्न करता है तथा कफ और वात को जीतता है॥१३॥

चिर्भटनामगुणाः

चिर्भटं धेनुदुग्धं स्याज्ज्ञेयं गोरक्षकर्कटी ।
चिर्भटं मधुरं रूक्षं गुरु पित्तकफापहम् ॥१४॥

चिर्भट, धेनुदुग्ध, गोरक्षकर्कटी ये चीभड़ के नाम हैं। चीभड़ अर्थात् गोरख काकड़ी मीठी है, भारी है, पित्त और कफ को नाशती है॥१४॥

शीतं विष्टम्भि संग्राहि पक्वमुष्णं तु पित्तलम् ॥१५॥

यह शीतल है, विष्टंभ करती है, मल को बांधनी है, पकी हुई चीभड़ गर्म है और पित्त को करती है॥१५॥

वालुकनामगुणाः

वालुकं काण्डकं वालु तच्छीतं मधुरं गुरु ।
रक्तपित्तहरं भेदि लघूष्णं पक्वमग्निकृत् ॥१६॥

वालुक, कांडक, वालु, ये नाम वालुक के हैं। वालुक (वालु में होने वाली ककड़ी विशेष) शीतल है, मीठी है, भारी है, रक्तपित्त को हरती है, भेदी है, हलका तथा गर्म है, पका हुआ वालुक अग्नि को करता है॥१६॥

(फुट्ट) शीर्णवृन्तनामगुणाः

शीर्णवृन्तं चित्रफलं विचित्रं पीतवर्णकम् ।
शीर्णवृन्तं लघु स्वादु भेद्युष्णं वह्निपित्तकृत् ॥१७॥

शीर्णवृंत, चित्रफल, विचित्र, पीतवर्णक ये शीर्णवृतं के नाम हैं। शीर्णवृतं हलका है, भेदी है, स्वादु है, गर्म है, अग्नि और पित्त को करता है। कोई लोग इसको तर्बूज का ही भेद कहते हैं॥१७॥

कोशातकीनामगुणाः

कोशातकी शतच्छिद्रा जालिनी कृतवेधसा ।
मृदङ्गकलका ज्वेरा घोटाकी कर्कशच्छदा ॥१८॥

कोशातकी, शतच्छिद्रा, जालिनी, कृतवेधसा, मृदंगफलका, ज्वेरा, घोटाकी, कर्कशच्छदा ये तोरी के नाम हैं॥१८॥

कोशातकी लघुस्तिक्ता रूक्षाऽऽमाशयशोधनी ।

शोफपाण्डूदरप्लीहकुष्ठार्शः कफपित्तजित् ।
तत्फलं भेदनं शीतं लघु मेहत्रिदोषजित् ॥१९॥

तोरी (तुरई) हलकी है, कडुवी है, रूखी है, आमाशय को शोधती है और शोजा पांडु, उदररोग, तिल्ली, कुष्ठ, बवासीर, कफ तथा पित्त को जीतती है। तोरीका फल–भेदन है, शीतल है, हलका है, प्रमेह और त्रिदोष को जीतता है॥१९॥

राजकोशातकीनामगुणाः

राजकोशातकी मिष्टा महाजालिः सपीतका ।
राजकोशातकी शीता ज्वरघ्नी कफवातला ॥२०॥

राजकोशातकी, मिष्टा, महाजालि, सपीतका ये घीयातोरी के नाम हैं। घीयातोरी शीतल है, ज्वर को नाशती है, कफ और वात को करती है॥२०॥

महाकोशातकीनामगुणाः

महाकोशातकी त्वन्या हस्तिघोषा महाफला ।
महाकोशातकी स्निग्धा मिष्टा पित्तानिलापहा ॥२१॥

महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला ये बड़ी तोरई के नाम हैं। बड़ी तोरई–चिकनी है, मीठी है, पित्त और वात को नाशती है॥२१॥

वृन्ताकीनामगुणाः

वृन्ताकी वार्तिकी वृत्ता भण्टाकी भण्टिका मता ।
वृन्ताकं स्वादु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकं च पित्तलम् ॥२२॥

वृंताकी, वार्तिकी, वृत्ता, भंटाकी, भंटिका ये बैंगन के नाम हैं। बैंगन–स्वादु है, तेज है, गर्म है, पाक में कडुवा है और पित्त को उपजाता है॥२२॥

कफवातहरं हृद्यं दीपनं शुक्रलं लघु ।
ज्वरारोचककासघ्नं पक्वं तत्पित्तलं गुरु ॥२३॥

यह कफ और वात को हरता है और दिल को ताकत देता है, अग्नि को जगाता है, वीर्य को पैदा करता है, हलका है और ज्वर अरुचि तथा खांसी को नाशता है। पका हुआ बैंगन पित्त को करता है और भारी है॥२३॥

श्वेतवार्त्ताकुनामगुणाः

अपरः श्वेतवार्त्ताकुः कुक्कुटाण्डफलोपमः ।
तस्माद्धीनगुणः किञ्चिदर्शसां च हितः स्मृतः ॥२४॥

श्वेतवार्ताकु, कुक्कुटांडफलोपम ये सफेद बैंगन के नाम हैं। इसमें बैंगन से कम गुण हैं और बवासीर वालों को हित कहा है॥२४॥

बिम्बीनामगुणाः

बिम्बी रक्तफला गोला तुण्डी दन्तच्छदोपमा ।
बिम्बी वान्तिप्रदा हन्ति रक्तपित्तास्त्रकामलाः ॥२५॥

बिंबी, रक्तफला, गोला, तुण्डी, दन्तच्छदोपमा ये कंदूरी के नाम हैं। कंदूरी–छर्दि को करती है और रक्तपित्त, रक्तविकार, कामला इनको नाशती है॥२५॥

तत्फलं शीतलं स्वादु गुरु पित्तास्त्रदाहजित् ।
स्तम्भनं लेखनं वातविबन्धाध्मानकारकम् ॥२६॥

कंदूरी का फल शीतल है, स्वादु है, भारी है, पित्तरक्त और दाह को जीतता है, स्तंभन है, लेखन है तथा वात, विबंध, आध्मान इनको करता है॥२६॥

कारेवेल्लनामगुणाः

कारवेल्लं कटिल्लं स्यादुग्रकाण्डं सुकाण्डकम् ।
कारवल्ली वारिवल्ली बृहद्वल्ल्यपरा स्मृता ॥२७॥

कारवेल्ल, कटिल्ल, उग्रकांड, सुकांडक, कारवल्ली, वारिवल्ली, बृहद्वल्ली ये करेला के नाम हैं॥२७॥

कारवेल्लं हिमं भेदि लघुतिक्तमवातलम् ।
पित्तास्त्रकामलापाण्डुकफमेहक्रिमीञ्जयेत् ॥२८॥

करेला शीतल है, भेदी है, हलका है, कडुवा है वात को नहीं करता है और पित्तरक्त, कामला, पांडु, कफ, प्रमेह, कृमि इनको जीतता है॥२८॥

कर्कोटकीनामगुणाः

कर्कोटकी पीतपुष्पा महाजालिनिरुच्यते ।
तद्वत्कर्कोटकीपुष्पं किलासारुचिनाशनम् ॥२९॥

कर्कोटकी, पीतपुष्पा, महाजालिनि ये ककोड़ा के नाम हैं। ककोड़ा–किलास और अरुचि को नाशता है, यही गुण इसके पुष्प में हैं॥२९॥

वन्ध्याकर्कोटकीनामगुणाः

वन्ध्याकर्कोटकी देवी नागारिर्विषकण्टका ।
वन्ध्याकर्कोटकी तिक्ता विषवीसर्पकासजित् ॥३०॥

वन्ध्याकर्कोटकी, देवी, नागारि, विषकंटका, ये बांझकर्कोटी के नाम हैं। बांझ ककोड़ी कडुवी है और विष, वीसर्प, खांसी को नाशती है॥३०॥

डोडिकानामगुणाः

डोडिका विषमुष्टिः स्याद्विषयष्टिः समुष्टिका ।
डोडिका कफपित्तार्शः क्रमिगुल्मविषापहा ॥३१॥

डोडिका, विषमुष्टि, विषयष्टि, समुष्टिका ये डोडी के नाम हैं। डोडी कफ, पित्त, बवासीर, कृमि, गुल्म और विष को नाशती है। डोडी की बेल होती है, इसमें से दूध निकलता है, फल डोडियों के अंदर होते हैं।।३१।।

डिण्डिसनामगुणाः

डिण्डिसो रोमशफलस्तिन्दिसो मुनिनिर्मितः ।
डिण्डिसो वातलो रूक्षो मूत्रलोऽश्मरिभेदकः ।।३२।।

डिंडिस, रोमशफल, तिन्दिस, मुनिनिर्मित ये डिंडिस (ढेडस; टिंडस टिंडे) के नाम हैं। डिंडिस वात को उपजाता है, रूखा है, मूत्र को उत्पन्न करता है और पथरी को भेदन करता है।।३२।।

कोलशिम्बीनामगुणाः

कोलशिम्बी कृष्णफला षड्वसी करपादिकाः ।
कोलशिम्बी समीरघ्नीगुर्वामकफपित्तकृत् ।।३३।।

कोलशिंबी, कृष्णफला, षड्वसी, करपादिका, ये सेम (सुआरासेम) के नाम हैं। कोलशिंबी वात को नाशती है, भारी है और आम, कफ, पित्त इनको करती है।।३३।।

शिम्बीनामगुणाः

शिम्बी कुशिम्बी कुत्साऽस्त्रशिम्बी पुत्रक शिम्बिका ।
शिम्बी शीता गुरुर्बल्याश्लेष्मला वातपित्तजित् ।।३४।।

शिंबी, कुशिंवी, कुत्सा, अस्त्रशिंबी, पुत्रकशिंबिका ये दूसरे सेम के नाम हैं। शिंबी, शीतल है, भारी है, बल को करती है, कफ को देती है और वात को जीतती है। दोनों प्रकार की सेम (सेमफली) प्रसिद्ध है।।३४।।

वास्तुकनामगुणाः

वास्तुकः शाकपत्रः स्यात्कम्बीरस्तु प्रसादकः ।
वास्तुकः पाचनो रुच्यो लघुः शुक्रबलप्रदः ।
सरः प्लीहास्त्रपित्तार्शः कृमिदोषत्रयापहः ।।३५।।

वास्तुक, शाकपत्र, कंवीर, प्रसादक, ये बथुवा के नाम हैं। बथुवा पाचन है, रुचि को करता है, हलका है, वीर्य और बल को देता है, सर है, तिल्लीरोग, रक्तपित्त, बवासीर, कृमि, क्षय इनको नाशता है।।३५।।

जीवन्तकनामगुणाः

जीवन्तकः शाकवीरो रक्तनालः प्रणालकः ।
जीवन्तो वातकृत्क्षारः स्वादुपाकस्त्रिदोषनुत् ।।३६।।

जीवंतक, शाकवीर, रक्तनाल, प्रणालक ये जीवंती के नाम हैं, जीवंती, वात को करती है, खरी है, पाक में स्वादु है और त्रिदोष को दूर करती है। जीवंती और डोडी एक जाति की ही होती है।।३६।।

चिल्लीनामगुणाः

चिल्ली बृहद्दला रक्ता चिल्लिका गौडवास्तुका ।
चिल्ली सरा लघुः शीता रुच्या मेध्याऽग्निदीपनी ।
बल्या रूक्षा हरेत्प्लीहरक्तदोषत्रयक्रिमीन् ।।३७।।

चिल्ली, बृहद्दला, रक्ता, चिल्लिका, गौडवास्तुका ये चिल्ली (वाथु) के नाम हैं। चिल्ली सर है, हलकी है, शीतल है, रुचि को उपजाती है, बुद्धि को बढ़ाती है, अग्नि को जगाती है, बल को करती है, रूखी है और तिल्ली दोष, रक्त, त्रिदोष, कृमि इनको नाशती है।।३७।।

कालशाकनामगुणाः

कालशाकं कालिका स्याच्चुञ्चुका चुञ्चुकोऽपरः ।
कालशाकं सरं रुच्यं वातलं कफशोफजित् ।।३८।।

कालशाक, कालिका, चुंचुका, चुंचुक ये कालशाक के नाम हैं। कालशाक सर है, रुचि को करता है। वात को उपजाता है, कफ और शोजा को जीतता है।।३८।।

पित्र्यं पवित्रमायुष्यं नातिपित्तप्रकोपनम् ।
चञ्चुः शीता सरा रूक्षा स्वाद्वी दोषत्रयापहा ।।३९।।

यह पितृकर्म में उत्तम है, पवित्र है, आयु को बढ़ाता है, पित्त को अत्यन्त कुपित नहीं करता है, शीतल है, सर है, रूखा है, स्वादु है और त्रिदोष को हरता है। इसको नाड़ी का शाग भी कहते हैं। यह पानीवाली जमीन में बेल सी होती है।।३९।।

तण्डुलीयनामगुणाः

तण्डुलीयो मेघनादः काण्डीरस्तण्डुलीयकः ।
विषघ्नः कवरोऽन्यः स्यान्मारीषो मार्षिकस्तथा ।।४०।।

तण्डुलीय, मेघनाद, कांडीर, तण्डुलीयक, विषघ्न, कवर, मारीष, मार्षिक ये चौलाई के नाम हैं।।४०।।

तण्डुलीयो लघुः शीतो रूक्षः पित्तकफास्रजित् ।
सृष्टमूत्रमलो रुच्यो दीपनो रक्तपित्तहा ।।४१।।

चौलाई हलकी है, शीतल है, रूखी है और पित्त, कफ, रक्त को जीतती है, मूत्र और मल को उपजाती है, रुचि में हित है, अग्नि को जगाती है और रक्तपित्त को नाशती है।।४१।।

फोगनामगुणाः

फोगो मरुद्भवः भृङ्गी सूक्ष्मपुष्पः शशादनः ।
फोगः संग्राहकः शीतो रक्तपित्तकफापहः ॥४२॥

फोग, मरुद्भव, शृंगी, सूक्ष्मपुष्प, शशादन ये फोग के नाम हैं। फोग मल को बांधता है, शीतल है, रक्तपित्त और कफ को नाशता है, फोग मारवाड़ देश में विशेष होता है॥४२॥

मारिषगुणाः

मारिषो रेचनः शीतो गुरुर्मेदस्त्रिदोषजित् ॥४३॥

मारिष दस्तावर है, शीतल है, भारी है, मेद और त्रिदोष को नाशता है, यह सफेद और लाल दो प्रकार का होता है॥४३॥

पटोलनामगुणाः

पटोलः पाण्डुको जातीकलकः कर्कशच्छदः ।
राजीफलः पाण्डुफलो राजीमानमृताफलम् ॥४४॥

पटोल, पांडुक, जातीकलक, कर्कशच्छद, राजीफल, पाण्डुफल, राजीमान् अमृताफल ये परवल के नाम हैं, इसी को पंडोल भी कहते हैं॥४४॥

तिक्तोत्तमा बीजगर्भाऽपरा राजपटोलिका ।
ज्योत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ॥४५॥

तिक्तोतमा, बीजगर्भा, राजपटोलिका, ज्योत्स्नी, पटोलिका, जाली, नादेयी,भूमिजंबुका ये दूसरे परवल के नाम हैं॥४५॥

पटोलं पाचनं हृद्यं वृष्यं लघ्वग्निदीपनम् ।
स्निग्धोष्णं हन्ति वातास्रज्वरदोषत्रयक्रिमीन् ॥४६॥

परवल पाचन है, दिल को ताकत देता है, धातु को पुष्ट करता है, हलका है, अग्नि को जगाता है, चिकना है, और वातरक्त ज्वर त्रिदोष, कृमि इनको नाशता है॥४६॥

पत्रं पित्तहरं शीतं तस्य वल्ली कफापहा ।
मूलं विरेचनं प्रोक्तं फलं दोषत्रयापहम् ॥४७॥

परवल का पत्ता–पित्त को हरता है और शीतल है, परवल की बेल कफ को नाशती है, इसकी जड़ दस्तावर है और इसका फल त्रिदोष नाशक है॥४७॥

चंचुड़नामगुणाः

चञ्चुडो वेश्मकूलोऽन्यः श्वेतराजी बृहत्फला ।
किञ्चिन्न्यूनगुणस्तस्माद्विशेषाच्छोषणो हितः ॥४८॥

चंचुड़, वेश्मकूल, श्वेतराजी ये चचरिडा (चिंचेडा) के नाम हैं। इसमें गुण परवल से कम हैं, विशेष कर शोषक और हित है॥४८॥

पालक्यानामगुणाः

पालक्या वास्तुकाकारा छुरिका चीरितच्छदा ।
पालक्या वातला शीता भेदिनी श्लेष्मला गुरुः ।
विष्टम्भिनी मदश्वासरक्तपित्तकफापहा ॥४९॥

पालक्या, वास्तुकाकारा, छुरिका, चीरितच्छदा ये पालक के नाम हैं, पालक–वातल हैं, शीतल हैं, भेदन हैं, कफकारक है, भारी है, विष्टंभी है और मद, श्वास, रक्तपित्त, कफ इनको नाशता है॥४९॥

पोतकीनामगुणाः

पोतकी पोतका प्रोक्ता मत्स्या काली सुरङ्गिका ।
पोतकी शीतला स्निग्धा श्लेष्मला वातपित्तजित् ॥५०॥

पोतकी, पोतका, मत्स्या, काली, सुरंगिका ये पोई के नाम हैं। पोई शीतल है, चिकनी है, कफ को करती है और वातपित्त को जीतती है॥५०॥

अकण्ठ्या पिच्छिला निद्राशुक्रदा रक्तपित्तनुत् ।
पोतक्या पोदिका दिव्या शुक्रदा रक्तपित्तजित् ॥५१॥

पोई–कंठ को हित नहीं है, पिच्छिल है, नींद लाती है, वीर्य को उत्पन्न करती है तथा रक्तपित्त को जीतती है। पोतक्या, पोदिका ये नाम दूसरी पोई के हैं। यह वीर्य को देती है और रक्तपित्त को जीतती है॥५१॥

लोणिकुटीरयोः (सलोनक) नामगुणाः

लोणिकोक्ता बृहच्छोटी कुटीरस्तु कुटिञ्जरः ।
दुन्दुरः स्याद्गुडीरीकः पिण्डी पिण्डीतकस्तथा ॥५२॥

लोणिका, बृहच्छोटी, कुटीर, कुटिंजर, दुंदुर, गुडीरीक, पिण्डी, पिण्डीतक ये लोनियां और कुटीर के नाम हैं॥५२॥

लोणी रूक्षा गुरुः शीता सरा विष्टम्भिनी पटुः ।
दोषला मधुरा पाके तद्वत्कुट्टीरहृद्गुरुः ।
लोणिका वातला श्वासकासश्लेष्मविषापहा ॥५३॥

सलोनक (लोनियां) रूखा है, भारी है, शीतल है, सर है, विष्टंभ करता है, सलोना है, दोष को उपजाता है और पाक में मीठा है, कुंटीर में भी ये ही गुण हैं। यह हृद्रोग को हरता है और भारी है। लोनियां वात को करता है और श्वास, खांसी, कफ, विष इनको हरता है॥५३॥

सुषेणनामगुणाः

सुषेणस्तु स्वस्तिकः स्याद्बलदस्तिलपर्णिका ।
सुनिषण्णो हिमो ग्राही मेहदोषत्रयापहः ।।५४।।

सुषेण, स्वस्तिक, बलद, तिलपर्णिका, सुनिषण्ण ये सुनिषण्णक शाक के नाम है। स्वस्तिक शाक शीतल है, मल को बांधता है और प्रमेह तथा त्रिदोष को हरता है।।५४।।

तिलपर्णीनामगुणाः

तिलपर्णी हिमा रुच्या ग्राहिणी कफपित्तजित् ।।५५।।

तिलपर्णी, शीतल है, रुचि को उपजाती है, मल को बांधती है और कफपित्त को जीतती है।।५५।।

सूक्ष्मपत्रनामगुणाः

सूक्ष्मपत्रस्तीक्ष्णशाको धनुःपुष्पः सुबोधकः ।
चौरकः कफवातघ्नः सुतीक्ष्णो नातिपित्तलः ।।५६।।

सूक्ष्मपत्र, तीक्ष्णशाक, धनुःपुष्प, सुबोधक, चौरक ये सूक्ष्मपत्र के नाम हैं। सूक्ष्मपत्र–कफवात को नाशता है, बहुत तेज हैं और अत्यंत पित्तल नहीं है।।५६।।

टुंटुकनामगुणाः

टुंटुको विटपो रूक्षः स्वरपत्रस्त्वरण्डजः ।
टुण्टुको वातलो रूक्षो विष्टम्भी कफनाशनः ।।५७।।

टुंटुक, विटप, रूक्ष, स्वरपत्र, अरंडज ये नाम टुंटुक के हैं। टुंटुक वात को करता है, रूखा है, विष्टंभ करता है और कफ को नाशता है।।५७।।

वल्लीनामगुणाः

घनागमभवा वल्ली प्रसिद्धो नाम बस्तिजः ।
घनागमस्त्रिदोषघ्नस्तत्पुष्पं मधुरं सरम् ।
फलं तस्य सरं वृष्यमामं मिष्टं तु वातलम् ।।५८।।

घनागमभवा, वल्ली, प्रसिद्ध, बस्तिज ये घनवल्लभा के नाम हैं। यह त्रिदोष को नाशती है। इसका फूल मीठा है और सर है। तथा फल सर है और धातु को पुष्ट करता है। इसका कच्चा फल मधुर है और वात को उपजाता है। यह वर्षात में होती है, इसको वसिवा भी कहते हैं।।५८।।

शीतवारनामगुणाः

शीतवारः कुरण्डी स्यान्नाडी तु नलिका मता ।
शीतवारः सरो वृष्यः शोफघ्नो वातपित्तलः ।।५९।।

शीतवार, कुरंडी ये करंड के नाम हैं। नाड़ी, नलिका ये नलिका के नाम हैं। कुरंड सर है, हलका है, धातु को पुष्ट करता है, शोजा को नाशता है तथा वात और पित्त को करता है।।५९।।

नाडी सरा लघुः शीता पित्तनुत् कफवातला ।।६०।।

नाली का शाक सर है, हलका है, शीतल है, पित्त को दूर करता है, कफ और वात को करता है, यह सजल स्थान में होता है।।६०।।

सर्षपकौसुम्भयोर्नामगुणाः

सार्षपं सर्षपोद्भूतं कौसुम्भं कुंकुमोद्भवम् ।
सार्षपं बद्धविण्मूत्रं गुरूष्णं वा त्रिदोषनुत् ।
कौसुम्भं स्वादु रूक्षोष्णं कफजित्पित्तलंलघु ।।६१।।

सार्षप और सर्षपोद्भूत ये सरसों के शाक के नाम हैं। कौसुंभ, कुंकुमोद्भव ये कुसुंभा के शाक के नाम हैं। सरसों का शाक विष्ठा मूत्र को बांधता है, भारी है, गर्म है और त्रिदोष को हरता है। कुसुंभ का शाक स्वादु है, रूखा है, गर्म है, कफ को जीतता है, पित्त को करता है और हलका है।।६१।।

चणकशाक-कलायशाक-नामगुणाः

चणकं शाकमुद्दिष्टं दुर्जरं कफवातनुत् ।
कलायशाकं भेदि स्याल्लघु पित्तकफापहम् ।।६२।।

चणक–शाक ये चनाशाक के नाम हैं। चने का शाक देर में जीर्ण होता है तथा कफ और वात को करता है। कलाय (मटर) का शाक भेदन है, हलका है तथा पित्त और कफ को जीतता है।।६२।।

चाङ्गेरीनामगुणाः

चाङ्गेरी त्वाम्लिका क्षुद्राम्लिका चुक्रा चतुश्छदा ।
चाङ्गेरी दीपनी रुच्यालघूष्णा कफवातजित् ।
सपित्तला ग्रहण्यर्शः कुष्ठातीसारनाशिनी ।।६३।।

चांगेरी, आम्लिका, क्षुद्राम्लिका, चुक्रा, चतुश्छदा ये नाम चूका शाक के हैं। चूका अग्नि को जगाता है, रुचि को उपजाता है, हलका है, गर्म है, कफवात को जीतता है, पित्त को करता है और ग्रहणीरोग, बवासीर, कुष्ठ अतिसार को नाशता है।।६३।।

कासमर्दननामगुणाः

कासमर्दः कर्कशः स्याज्जरणोऽजगरस्तथा ।
कासमर्दो लघुः कण्ठ्यः कासदोषविषास्रजित् ।।६४।।

कासमर्द, कर्कश, जरण, अजगर ये कसोंदी के नाम हैं। कसोंदी-हलकी है, कंठ में हित है और खांसी, त्रिदोष, विष, रक्तविकार को नाशती है।।६४।।

गृञ्जननामगुणाः

गृञ्जनः कटुकस्तीक्ष्णस्तिक्तोष्णो दीपनो लघुः ।
संग्राही रक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ।।६५।।

गाजर चर्परी है, तेज है, कडुवी है, गर्म है, अग्नि को जगाती है, हलकी है, मल को बांधती है और रक्तपित्त, बवासीर, ग्रहणीरोग, कफ, वात इनको जीतती है।।६५।।

मूलकनामगुणाः

मूलकं हस्तिदन्तं च बालमूलं कफान्तकम् ।
मूलकं वातलं रुच्यं स्वर्योष्णं पाचनं लघु ।।६६।।

मूलक, हस्तिदंत, बालमूल, कफांतक ये मूली के नाम हैं। मूली–वात करती है, रुचि को उपजाती है, स्वर में हित है, गर्म है, पाचन है और हलकी है।।६६।।

हन्ति त्रिदोषजं श्वासगदाक्षिगलपीनसम् ।
स्निग्धसिद्धं तदेव स्याद्दोषत्रयविनाशनम् ।।६७।।

मूली त्रिदोष से उपजे हुए उपद्रव, श्वास, आंखरोग, गलरोग, पीनस इनको नाशती है। घृत में सिद्ध की हुई मूली तीनों दोषों को नाश करती है।।६७।।

शुष्कं तद्धिविशोथघ्नं लघु दोषत्रयापहम् ।
तत्पुष्पं श्लेष्मपित्तघ्नं फलं वातकफापहम् ।।६८।।

सूखी मूली शोजे को हरती है, हलकी है और त्रिदोष को दूर करती है। मूली का फूल, कफपित्त को हरता है और इसका फल वातकफ को नाशता है।।६८।।

करीरनामगुणाः

करीरको गूढपत्रः क्रकचो ग्रन्थिलो मतः ।
करीरः कटुको भेदी तीक्ष्णोष्णः कफवातजित् ।।६९।।

करीरक, गूढ़पत्र, क्रकच, ग्रन्थिल ये करीर के नाम हैं। करीर चर्परा है, भेदी है, तेज है, गर्म है और कफवात को जीतता है।।६९।।

व्रणशोथविषार्शोघ्नस्तत्पुष्पं कफपित्तजित् ।
फलं ग्राहि कषायोष्णं मधुरं श्लेष्मपित्तकृत् ।।७०।।

करीर, घाव, शोजा, विष, बवासीर को नाशता है। कैर का फूल कफपित्त को जीतता है, कैर का फल मल को बांधता है, कषैला है, गर्म है, मीठा है, कफ और पित्त को करता है।।७०।।

सौभाञ्जननामगुणाः

शिग्रुः शौभाञ्जनः कृष्णगन्धः स्याद्बहुलच्छदः ।
रक्तोऽन्यो मधुशिग्रुस्तु श्वेतोऽन्यो हरितच्छदः ।।७१।।

शिग्रु, सौभांजन, कृष्णगन्ध, बहुलच्छद ये नाम सहँजना (सहांजना) के हैं। दूसरा लाल सहँजना होता है। तीसरा मधुशिग्रु हरितच्छद इन नामों वाला होता है।।७१।।

सौभांजनभवं बीजं तीक्ष्णोष्णं चक्षुषे हितम् ।
शिग्रुस्तीक्ष्णो लघुर्ग्राही वह्निदः कफवातजित् ।
तीक्ष्णोष्णो विद्रधिल्पीहव्रणघ्नो रक्तपित्तकृत् ।।७२।।

सहँजने का बीज तेज है, गर्म है और नेत्रों को हितकारक है, सहँजना तेज है, हलका है, मल को बांधता है, अग्नि को देता है, कफवात को जीतता है, गर्म है और विद्रधि, तिल्लीरोग, घाव को नाशता है तथा रक्तपित्त को करता है।।७२।।

मधुशिग्रुर्गुणैस्तद्वद्विशेषाद्दीपनः सरः ।
तत्पुष्पं लघु संग्राहि वातलं कफशोथजित् ।
फलं ग्राहि कषायोष्णं मधुरं श्लेष्मपित्तहृत् ।।७३।।

मीठे सहँजने में भी ये ही गुण हैं। विशेषता से दीपन है और दस्तावर है। मीठे सहँजने का फूल हलका है, मल को बांधता है, वात को करता है, कफ और शोजाको जीतता है, मीठे सहँजने का फल मल को बांधता है, कषैला है, गर्म है, मीठा है और कफपित्त को जीतता है।।७३।।

लशुननामगुणाः

लशुनः स्यादुग्रगन्धी यवनेष्टो रसोनकः ।
गृञ्जनोऽन्यो महाकन्दो जर्जरो दीर्घपत्रकः ।।७४।।

लशुन, उग्रगंधी, यवनेष्ट, रसोनक, गृंजन, महाकंद, जर्जर, दीर्घपत्रक ये नाम लहसन के हैं।।७४।।

लशुनो बृंहणो वृष्यः स्निग्धोष्णः पाचनः सरः ।
भग्नसन्धानकृत्केश्यो गुरुः पित्तास्त्रबुद्धिदः ।।७५।।

लहसन धातु को पुष्ट करता है, वीर्य को बढ़ाता है, चिकना है, गर्म है, पाचन है, सर है, टूटे हुए को जोड़ता है, बलों को बढ़ाता है, भारी है, पित्तरक्तकारक और बुद्धिप्रद है।।७५।।

रसायनं कफश्वासकासगुल्मज्वरारुचीः ।
हन्ति शोथप्रमेहार्शः कुष्ठशूलानिलक्रिमीन् ।

तत्पत्रं मधुरं क्षारं नालो मधुरपित्तलः ।।७६।।

तथा बुढ़ापे को दूर करता है और कफ, श्वास, खांसी, गुल्म, ज्वर, अरुचि, शोजा, प्रमेह, बवासीर, कुष्ठ, शूल, वात, कृमि इनको नाशता है। लहसन का पत्ता मीठा है, खारा है, लहसन की नाल मीठी है और पित्त को उपजाती है।।७६।।

पलाण्डुनामगुणाः

पलाण्डुर्धवलाख्यश्च दुर्गन्धो मुखदूषकः ।
पलाण्डुस्तद्गुणैस्तुल्यः कफकृन्नातिपित्तलः ।
अनुष्णः केवलं वातं स्वादुः पाके रसाञ्जयेत् ।।७७।।

पलांडु, धवलाख्य, दुर्गंध, मुखदूषक ये नाम प्याज के हैं। इसमें लहंसन के गुण हैं परन्तु कफ को करता है, अत्यन्त पित्त को नहीं करता है, गर्म नहीं है, केवल वात को और रसों को जीतता है तथा पाक में स्वादु है।।७७।।

गृञ्जननामगुणाः

गृञ्जनः पित्तलो ग्राही तीक्ष्णोऽर्शोरोगनाशनः ।।७८।।

गृंजन, अर्थात् लालवर्ण का लहसुन पित्त को करता है, मल को बांधता है, तेज है, बवासीर को नाशता है।।७८।।

सूरणद्वयनामगुणाः

सूरणः कन्दलः कन्दो गुदामयहरोऽपरः ।
वल्लकन्दः सुरेन्द्रः स्याद्वन्योऽन्यश्चित्रकन्दकः ।।७९।।

सूरण, कंदल, कन्द, गुदामयहर ये जिमीकंद के नाम हैं। दूसरा वल्लकन्द, सुरेन्द्र, तीसरा वन में होने वाला, चित्रकन्दक नाम वाला होता है।।७९।।

सूरणो दीपनो रूक्षः कषायः कटुकण्डुकृत ।
विष्टम्भी विशदो रुच्यः कफार्शः कृन्तनो लघुः ।।८०।।
नालं सूरणक रुच्यं कफवातहरं लघु ।
अर्शसां तु विशेषेण हितं कामाग्निदीपनम् ।।८१।।
सूरणो दीपनो रूक्षः कफार्शः कृन्तनो लघुः ।
तद्वदन्यो वज्रकन्दः कफघ्नः पित्तरक्तकृत् ।।८२।।

जिमीकन्द–अग्नि को जगाता है, रूखा है, कषैला है, चर्परा है, खाज करता है, विष्टंभ करता है, फैलने वाला है, रुचि को उपजाता है और कफ, बवासीर को काटता है तथा हलका है। जिमीकन्दकी नाली रुचिकारक, कफवातनाशक, हलकी विशेषता से अर्शनाशक, कामाग्निदीपक है वन में होने वाले जिमीकन्द में भी यही गुण हैं, वह वज्रकन्द कहाता है, यह कफ को नाशता है और पित्तरक्त को करता

है॥८०-८१-८२॥

अस्थिशृङ्खलिकानामगुणाः

अस्थिश्रृङ्खलिका वज्री ग्रन्थिमानस्थिसंहतिः ।
अस्थिश्रृङ्खलिका वृष्या श्लेष्मला मधुरा हिमा ।
अस्थिसन्धानकृद्बल्या पित्तरक्तानिलापहा ॥८३॥

अस्थिशृंखलिका, वज्री, ग्रंथिमान्, अस्थिसंहति ये हड़संहारी के नाम हैं। हड़संहारी वीर्य को बढ़ाती है, कफ को करती है, मीठी है, शीतल है, हड्डी को जोड़ती है, बल को करती है, पित्त, रक्त और बात को नाशती है॥८३॥

वाराहीनामगुणाः

वाराही मागधी गृष्टिस्तत्कन्दः सौकरः किटिः ।
सौकरः पित्तलो वर्ण्यः स्वादुस्तिक्तो रसायनः ।
आयुः शुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहः ॥८४॥

वाराही, मागधी, गृष्टि, वाराहीकन्द, सौकर, किटि, ये वराहीकन्द के नाम हैं। वाराहीकन्द पित्त को करता है, वर्ण को निखारता है, स्वादु है, कडुवा है, बुढ़ापे को दूर करता है और आयु, वीर्य, जठराग्नि इनको बढ़ाता है तथा प्रमेह, कफ, कुष्ठ, वात इनको नाशता है॥८४॥

मुसलीनामगुणाः

मुसली तालपत्री स्यात्खलिनी तालमूलिका ।
मुसली बृहणी बल्या वीर्योष्णाऽर्शोनिलापहा ॥८५॥

मुसली, तालपत्री, खलिनी, तालमूलिका ये मुसली के नाम हैं। मुसली–धातु को पुष्ट करती है, बल करती है, वीर्य में गर्म है, बवासीर और वात को नाशती है॥८५॥

कंचुकनामगुणाः

कंचुका पीलुनी पीलुः फेलुका दलशालिनी ।
कंचुकं वातलं ग्राहि दीपनं कफपित्तनुत् ॥८६॥

कंचुका, पीलुनी, पीला, फेलुका, दशशालिनी ये कंचुक के नाम हैं। कंचुक वात को करता है, मल को बांधता है, अग्नि को जगाता है और कफ–पित्त को दूर करता है॥८६॥

(खुंव) भूच्छत्रनामगुणाः

भूच्छत्रं पृथिवीकन्दः शिलीन्ध्रं बलकं मतम् ।
भूच्छत्रं शीतलं बल्य गुरु भेदि त्रिदोषजित् ॥८७॥

भूच्छत्र, पृथिवीकन्द, शिलीन्ध्र, बलक ये भूच्छत्र के नाम हैं। भूच्छत्र–शीतल है, बल करता है, भारी है, भेदन है और त्रिदोष को जीतता है, भूच्छत्र वर्षात में पृथ्वी पर छत्राकार का होता है॥८७॥

स्थूलकन्द–मानकन्दनामगुणाः

स्थूलकन्दो ग्रामकन्दो मानकन्दो महाच्छदः ।
स्थूलकन्दो गुरुः श्लेष्मवातलः पित्तशोथजित् ।
मानकः शीतलः स्वादुः पित्तरक्तहरो गुरुः ॥८८॥

स्थूलकन्द, ग्रामकन्द, और मानकन्द, महाच्छद ये नाम स्थूलकन्द और मानकन्द के हैं। स्थूलकन्द, भारी है, कफ–वात को करता है, पित्त और शोजे को हरता है। मानकन्द शीतल है, स्वादु है, पित्त रक्त को हरता है और भारी है॥८८॥

कसेरुशृङ्गाटकयोर्नामगुणाः

कसेरुकं स्वल्पकन्दं बृहद्राजं कसेरुजम् ।
शृङ्गाटो जलकन्दः स्यात्त्रिकोणस्त्रिकटुः स्मृतः ॥८९॥

कसेरुक, स्वल्पकन्द, बृहद्राज, कसेरुज ये कसेरु के नाम हैं, और शृङ्गाट, जलकन्द, त्रिकोण, त्रिकटु ये सिंगाड़े के नाम हैं॥८९॥

कसेरुकं हिमं स्वादु गुरु पित्तास्रदाहजित् ।
ग्राहि पित्तानिलश्लेष्मप्रदं शृङ्गाटकं तथा ॥९०॥

कसेरु शीतल है, स्वादु है, भारी है, और पित्तरक्त और दाह को जीतता है। सिंगाड़ा (सिंघाड़ा) मल को बांधता है, और पित्त, वात, कफ इनको उत्पन्न करता है॥९०॥

पिण्डालुनामगुणाः

पिण्डालुको वृष्यगन्धो मध्वालुः स्यात्तु रोमशम् ।
शङ्खालुश्चित्रसंङ्काशः काष्ठालुः स्वल्पकाष्ठकम् ॥९१॥
हस्तालुकं महाकाष्ठं रक्तकन्दं महाफलम् ।
आलुकं शीतलं सद्यो विष्टम्भि मधुरं सरम् ॥९२॥

पिंडालुक, वृष्णगन्ध, मध्वालु, रोमश, शंखालु, चित्रसंकाश, काष्ठालु, स्वल्पकाष्ठकहस्तालुक, महाकाष्ठ, रक्तकन्द, महाफल ये आलुवों के नाम हैं। आलु शीतल है, तत्काल विष्टंभ करते हैं, मीठे हैं, और सारक हैं॥९१–९२॥

सूक्ष्मं च मूत्रलं[१] रूक्षं दुर्जरं रक्तपित्तनुत् ।

---

१ सृष्टमूत्रमलम् । इति पाठान्तरम् ।

कफानिलकरं बल्यं वृष्यं स्तन्यविवर्धनम् ।।९३।।

तथा सूक्ष्म है, मूत्र को उपजाता है, रूखा है, देर में जीर्ण होता है, रक्तपित्त को दूर करता है, कफ वात को हरता है, बल करता है, वीर्य को उपजाता है, और दूध को बढ़ाता है।।९३।।

पिण्डालुकमभिष्यन्दि तिक्तोष्णं दोषलं गुरु ।
मध्वालुकं पित्तकरं कटु पाके कफापहम् ।।९४।।

और पिण्डालु कफ करता है, गर्म है, दोषों को उपजाता है और भारी है। मध्वालु पित्त को करता है, पाक में चर्परा है, और कफ को नाश करता है।।९४।।

केयूरनामगुणाः

केयूरं स्वल्पविटपं कन्दलः स्वादुकन्दलः ।
केयूरं शीत्तलं ग्राहि पित्तलं कफवातजित् ।।९५।।

केयूर, स्वल्पविटप, कन्दल, स्वादुकन्दल ये केयूर के नाम हैं। केयूर शीतल है, मल को बांधता है, पित्त को करता है, कफवात को जीतता है।।९५।।

अतिजीर्णमकालोत्थं रूक्षं स्निन्धमभूमिजम् ।
जरठं कोमलं वातशीतपित्तानिलापहतम् ।।९६।।

बहुत पुराना, विना समय उपजा, रूखा, चिकना, बुरी पृथिवी पर उपजा, कठोर, कोमल, शीत और गर्मी से दूषित हुआ शाक नहीं खाना चाहिये।।९६।।

शुष्कं शाकं च सकलं नाश्नीयान्मूलकैर्विना ।।९७।।

और मूली के विना संपूर्ण सूखे शाकों को भी नहीं खावे।।९७।।

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णः कूष्माण्डप्रभृतिरयं च शाकवर्गः।।९८।।

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ शाकवर्गः सप्तमः ।।७।।

राजाओं में जो मुख्य प्रधान कटारमल्ल हुआ उस मदनपाल राजा के रचे हुए इस मदनविनोद नामक ग्रंथ में पेठा आदिशाकवर्ग समाप्त हुआ।।९८।।

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ वैद्यरत्नपं०–रामप्रसदावैद्योपाध्यायविरचितभाषातत्त्व–
प्रकाशिनीहिन्दीटीकायां शाकवर्गः सप्तमः ।।७।।

*****
****

करेण संगृह्यकुचौ कपोले मात्राऽङ्गुलीभिर्मृदु ताड्यमानम्।
मुक्तं त्वराजानुबलेन पानं नमामि कृष्णं नवनीतचोरम् ।।१।।

हाथ से स्तनों को ग्रहणकर दूध पीते हुए और माता की अंगुलियों से गालों पर मृदुमृदु ताड़ित होते हुए गोड़े के बल से शीघ्र छुटे हुए मक्खन के चोर श्रीकृष्ण को प्रणाम करता हूँ।।१।।

पानीयनामगुणाः

पानीयं जीवनं नीरं कीलालममृतं जलम् ।
आपोऽम्भस्तोयमुदकं पाथोऽम्बु सलिलं पयः ।।२।।

पानीय, जीवन, नीर, कीलाल, अमृत, जल, आप, अंभ, तोय, उदक, पाथ, अंबु, सलिल, पय ये पानी के नाम हैं।।२।।

पानीयं शीतलं हृद्यं हन्ति पित्तविषभ्रमम् ।
दाहाजीर्णश्रमच्छर्दिमदमूर्च्छामदात्ययान् ।।३।।

पानी शीतल है, दिल को ताकत देता है, पित्त, विष, भ्रम, दाह अजीर्ण, परिश्रम, छाद, मद, मूर्च्छा, मदात्यय इनको नाशता है।।३।।

शीतलजलनिषेधः

शीतलं स्तिमिते कोष्ठे गलरोगे नवज्वरे ।
ग्रहणीपीनसाध्मानहिक्कागुल्मेषु विद्रधौ ।।४।।
कासमेहारुचिश्वासपाण्डुवातामयेषु च ।
पार्श्वशूले स्नेहपीते सद्यः शुद्धौ न शस्यते ।।५।।

स्तिमितरोग, कोष्ठरोग, गलरोग, नवज्वर, ग्रहणी, पानस, आध्मान, हिचकी, गुल्म, विद्रधि, खांसी, प्रमेह, अरुचि, श्वास, पांडु, वातरोग, पसलीशूल, स्नेहपान, तत्काल वमन, जुलाब आदि इनमें शीतल पानी अच्छा नहीं है।।४–५।।

चतुर्विधजलम्

दिव्यं तुषारजं धारं करिहैममिति स्मृतम् ।
चतुर्विधं वरं दीव्यं लघुत्वात्तत्पुनर्द्विधा ।।६।।

दिव्य, तुषारज, धार, करिहैम इन भेदों से पानी चार प्रकार का होता है। इनमें हलकेपन से दिव्य उत्तम है और वह दिव्य भी दो प्रकार का है।।६।।

द्विविधाकाशजलम्

गाङ्गं समुद्रजं चेति गाङ्गं श्रेष्ठतमं स्मृतम् ।

---

१ जातिमिति पाठः।

आश्विने मासि सामुद्रं गुणैर्गाङ्गवदादिशेत् ।।७।।
स्थापिते हेमजे पात्रे राजते मृन्मयेऽपिवा ।
शाल्यन्नं येन संसिक्तं भवेदक्लेदि वर्णवत् ।
तज्जलं शीतलं ज्ञेयं दोषत्रयविषापहम् ।।८।।

गांग (गंगाजल) और समुद्रज भेद से आकाश का जल दो प्रकार का होता है, इनमें गांग पानी उत्तम है। आश्विन महीने में वर्षे हुए पानी को सोना चांदी वा मिट्टी के पात्र में भरकर धर रखे, शालिचावल जिस जल में रखने से यदि क्लेद रहित और शुद्ध वर्णयुक्त रहा हो उस पानी को शीतल गांगजल जानना, वह त्रिदोष और विष को नाशता है।।८।।

तद्गाङ्गं सर्वदोषघ्नं ज्ञेयं सामुद्रमन्यथा ।
सक्षारं लवणं मिश्रं शुक्रदृष्टिबलापहम् ।।९।।

वही गांग पानी पीने योग्य है, सब दोषों को नाशता है। इससे विपरीत सामुद्र पानी होता है। सो खारसहित और नमक मिला हुआ होता है। यह वीर्य, दृष्टि, बल को नाशता है।।९।।

रसायनं तृषामूर्च्छातन्द्रादाहक्लमापहम् ।
सौम्यं रसायनं दिव्यं महानिद्रात्रिदोषजित् ।।१०।।

आकाश से वर्षा हुआ गांग पानी बुढ़ापे को दूर करता है और तृषा, मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह, तथा ग्लानि को नाशता है। आकाश से वर्षा हुआ पानी सुन्दर है, बुढ़ापे को दूर करता है, बहुत नींद और त्रिदोष को जीतता है।।१०।।

आश्वासजननं ह्लादि श्रमघ्नंमतिबुद्धिकृत् ।
तदेव भूमिपतितं भौममित्यभिधीयते ।।११।।

यह सुन्दर श्वास को उपजाता है, आनन्द देता है, परिश्रम को नाशता है और अत्यन्त बुद्धि को देता है। आकाश का पानी पृथिवी में पड़के भौम नामक कहा जाता है।।११।।

अन्यविविधजलानां गुणाः

दिव्याभावे तु तत्तोयं प्रविचार्य गुणागुणान् ।
कौपं श्लेष्महरं क्षारं पित्तलं दीपनंलघु ।।१२।।

आकाश का पानी नहीं मिले तो गुण दोष विचारकर भौम पानी यानी भूमि पर का लेना। कूँए का पानी कफ को हरता है, खारा है, पित्त को उपजाता है, अग्नि को जगाता है और हलका है।।१२।।

ताडागं वातलं स्वादु तुवरं कटुपाकि च ।

वाप्यं पित्तकरं क्षारं कटु वातकफापहम् ॥१३॥

तालाब का पानी वात को उपजाता है, स्वादु है, कषैला है और पाक में चर्परा है। बावड़ी का पानी पित्त को करता है, खारा है, चर्परा है, वात और कफ को हरता है॥१३॥

नैर्झरं लेखनं हृद्यं कफघ्नं दीपनं लघु ।
ह्लादं च लघु पित्तघ्नमविदाह्यतिदीपनम् ॥१४॥

झरने का पानी लेखन है, दिल को ताकत देता है, कफ को नाशता है, दीपन है और हलका है। कुण्ड का पानी हलका है, पित्त का नाशक है, दाह को नहीं करता है और अग्नि को अत्यन्त जगाता है॥१४॥

चौडयमग्निप्रदं रूक्षं स्वादु श्लेष्मकरं न च ।
नादेयं दीपनं रूक्षं वातलं लघु लेखनम् ॥१५॥

चोवा का पानी अग्नि को उत्पन्न करता है, रूखा है, स्वादु है और कफ को नहीं करता है। नदी का पानी अग्नि को जगाता है, रूखा है, वात को करता है, हलका और लेखन है॥१५॥

सारसं मधुरं बल्यं तृष्णाघ्नं तुवरं लघु ।
कैदारं स्वाद्वभिष्यन्दि विपाके गुरु दोषलम् ॥१६॥

सरोवर का पानी मीठा है, बल को करता है और तृषा को नष्ट करता है, कषैला है और हलका है। जंगल के जोहड़ का पानी स्वादु है, कफ को करता है, पाक में भारी है और दोषों को उत्पन्न करता है॥१६॥

पाल्वलं तद्वदुद्दिष्टं विशेषात्सर्वदोषकृत् ।
तौषारं वातलं शीतं रूक्षं पित्तकफापहम् ॥१७॥

पालके पानी में भी येही गुण हैं, विशेषकर सब दोषों को उत्पन्न करता है। ओस का पानी वात को करता है, शीतल है, रूखा है, पित्त और कफ को नाशता है॥१७॥

आकाशजलगुणाः

धारं भूमावपतितं दिव्यं तत्सर्वदोषनुत्[1] ।
नैर्झरं गुरु[2] वै प्रोक्तं विशदं कफवातनुत् ॥१८॥

आकाश से वर्षे पानी की धार पृथिवी पर न गिरने पावे और पात्र आदि में ग्रहण की जावे, वह दिव्य पानी सब दोषों को दूर करता है। पहाड़ से झिरा पानी भारी कहा है, हृद्य है, कफ और वात को दूर करता है॥१८॥

---

१ तत् पेयमिति पाठोऽन्यत्र पुस्तके । २ गुरु रूक्षं हि विशदं कफवातकृत् । इति पाठोऽन्यत्र ।

हैमजलगुणाः

हैमं गुरुतरं शीतं पित्तनुद्वातवर्द्धनम् ।
चन्द्रकान्तजलं रूक्षं लघु पित्तविषास्रनुत् ।।१९।।

बर्फ का पानी अत्यन्त भारी है, शीतल है, पित्त को दूर करता है और वात को बढ़ाता है, चन्द्रकान्त पानी रूखा है, हलका है, और पित्त, विष, रक्त को दूर करता है।।१९।।

हंसोदकगुणाः

दिवाकरकरैर्जुष्टं निशि शीतकरांशुभिः ।
ज्ञेयं हंसोदकं नाम स्निग्धं दोषत्रयापहम् ।।२०।।

दिन में सूर्य की किरणों से युक्त और रात्रि में चन्द्रमा की किरणों से युक्त जो पानी होता है उसको हंसोदक जानना। यह चिकना है और त्रिदोष को नाश करता है।।२०।।

अनभिष्यन्दि निर्दोषमन्तरिक्षजलोपमम् ।
बल्यं रसायनं मेध्यं शीतं लघु सुधोपमम् ।।२१।।

तथा अभिष्यंदी नहीं है और दोषों से रहित है। आकाश से वर्षे हुए पानी के समान है, बुढ़ापे को दूर करता है, बुद्धि को बढ़ाता है, शीतल है, हलका और अमृत के समान है।।२१।।

ऋतुभेदेन जलभेदाः

वर्षासु दिव्यं पानीयमौद्भिदं वा प्रशस्यते ।
शरत्प्रसन्नमुदकमगस्त्योदयनिर्विषम् ।।२२।।

वर्षाऋतु में आकाश का पानी अथवा पृथिवी का पानी श्रेष्ठ है। शरद ऋतु में अगस्त्य तारा के उदय से विषरहित हुआ और स्वच्छ पानी उत्तम है।।२२।।

हेमन्ते सारसं तोयं ताडागं वा गुणावहम् ।
वसन्तग्रीष्मयोः कौप्यं वाप्यं नैर्झरमेव च ।।२३।।

हेमन्त अर्थात् मङ्गसिर पौष में सरोवर का पानी अथवा माघ फाल्गुन में तालाब का पानी गुणदायक होता है। वसंत अर्थात् चैत्र, वैशाख, ग्रीष्म–ज्येष्ठ, आषाढ़ इन महीनों में कुएँ का पानी, बावड़ी का पानी और झरनों का पानी हित है, वर्षाऋतु में चोए का पानी उत्तम है और विष्टंभ नहीं करता है।।२३।।

नदीजलगुणाः

नद्यः शीघ्रवहा लघ्व्यः सर्वा याश्चामलोदकाः ।।२४।।

शीघ्र बहने वाली, और निर्मल पानी वाली सब नदियाँ हलकी हैं।।२४।।

मन्दगाः कलुषा गुर्व्यो याश्च शैवालसेविताः ।
हिमवत्प्रभवाः पथ्या नद्योऽश्माहतपाथसः ।।२५।।

मंद बहने वाली, मैली और शिवाल से युत हुई नदियां भारी हैं। पत्थरों से आहत हुए पानी वाली और हिमालय से उत्पन्न हुई नदियां पथ्य हैं।।२५।।

गङ्गाशतद्रूसरयूयमुनाद्या गुणोत्तमाः ।
ईषत्पित्तकाराः स्वच्छाः पुण्या वातकफापहाः ।।२६।।

गङ्गा, शतद्रू, सरयू, जमुना आदि नदियां उत्तम गुणों वाली हैं किंचित् पित्त को करती हैं, स्वच्छ हैं, पवित्र हैं और वात तथा कफ को नाश करती हैं।।२६।।

मलयाचलजा नद्यो लघ्व्यः शीघ्रवहा हिताः ।
कृतमालाताम्रपर्णीप्रमुखा विमलोदकाः ।।२७।।

मलयाचल से उपजी नदियां हलकी हैं, शीघ्र बहती हैं और हित हैं। कृतमाला और ताम्रपर्णी आदि नदियां निर्मल पानी वाली हैं।।२७।।

स्थिरापास्तत्प्रभूता या कुर्वन्ति श्लीपदापचीः ।
शोथपादशिरः कण्ठगलरोगार्बुदक्रिमीन् ।।२८।।

स्थिर, पानी वाली और मलयाचल से उपजी नदियां श्लीपद, अपची, शोजा, पादरोग, शिरोरोग, कंठरोग, गलरोग, अर्बुद और कृमिरोग को उत्पन्न करती हैं।।२८।।

सह्यशैलभवा नद्यो वेणीगोदावरीमुखाः ।
कुर्वन्ति प्रायशः कुष्ठमीषद्वातकफापहाः ।।२९।।

सह्यपर्वत से निकली वेणी, गोदावरी, आदि नदियाँ प्रायः खाज, दाद आदि कुष्ठ रोग को उत्पन्न करती हैं और कुछेक, वात, कफ, इनको नाशती है।।२९।।

विन्ध्याचले भवाः शिप्रारेवाद्याः पाण्डुकुष्ठदाः ।
पारियात्रोद्भवाः प्रोक्ता द्विधा चर्मण्वतीमुखाः ।।३०।।

विंध्याचल से निकली शिप्रा रेवा आदि नदियाँ पांडु और दाद कुष्ठ को पैदा करती हैं। पारियात्र पर्वत से निकली चम्मल आदि नदियाँ।।३०।।

पथ्यास्तडागजास्तत्र त्रिदोषघ्न्यो बलापहाः ।
दरीजाः कुष्ठकण्डूग्निश्लेष्मश्लीपदरोगदाः ।।३१।।

और जो तालाब से निकली हुईं नदियां हैं, वे पथ्य हैं त्रिदोष को नाशती हैं और बल को हरती हैं। जो दरी से निकली हैं वे कुष्ठ, खाज, मन्दाग्नि, कफ, श्लीपद इन रोगों को करती हैं।।३१।।

प्राच्यावन्त्यपराः पश्चाद्गुदजानि प्रकुर्वते ।

मरुजा मधुरा बल्या लघवोऽग्निप्रदाः परम् ॥३२॥

पूर्व और अवंत्य देश की नदियां गुदा के रोगों को करती हैं, बागड़ देश से निकली हुईं नदियां मीठी हैं, बल को करती हैं, हलकी हैं और अग्नि को चैतन्य करती है॥३२॥

पश्चिमाम्भोधिपतिता गोमतीनर्मदादयः ।
पथ्यावातास्रपित्तघ्न्यो बल्याः कण्डूकफापहाः ॥३३॥

पश्चिम के समुद्र में पड़ने वाली गोमती, नर्मदा आदि नदियां पथ्य हैं, वातरक्त, पित्त इनको नाशती हैं, बल को देती हैं तथा खाज और कफ हरने वाली हैं॥३३॥

दक्षिणाब्धिगता बल्याः पित्तघ्न्यः कफवातदाः ।
पूर्वाम्भोधिवहा नद्यो मन्दगा गुरवो घनाः ॥३४॥

दक्षिण के समुद्र में पड़ने वाली नदियां बल को करती हैं, पित्त को नाशती हैं और कफवात को देती हैं। पूर्व के समुद्र में पड़ने वाली नदियां मंद चलती हैं, भारी हैं और घन हैं॥३४॥

जलग्रहणकालः

भौमानामम्भसां प्रातः सर्वेषां ग्रहणं वरम् ।
नैर्मल्यं तत्र शैत्यं तत्तेषां स च परो गुणः ॥३५॥
भुक्त्यादौ सलिलं पीतं कार्श्यमन्दाग्निदोषकृत् ।
मध्येऽग्निदीपनं श्रेष्ठमन्ते स्थौल्यकफप्रदम् ॥३६॥

पृथिवी में से निकले हुए सब पानी प्रभात में ग्रहण करने योग्य हैं। इनमें भी जो निर्मल और शीतल हो वह पानी बहुत उत्तम है। भोजन के आदि में पिया हुआ पानी शरीर का माड़ापन मन्दाग्नि दोष को करता है। भोजन के मध्य में पिया गया पानी अग्नि को जगाता है, अत्यन्त उत्तम है। भोजन के अन्त में पिया हुआ पानी मोटाई और कफ को देता है॥३५-३६॥

विविधप्रकारेण जलपानविधिः

जीवनं जीविनां जीवो जगत्सर्वं तु तन्मयम् ।
ततोऽत्यन्ततया सुज्ञैर्न क्वचिद्वारि वार्यते ॥३७॥

पानी से जीवन रहता है और संपूर्ण जगत् पानीरूप है, इसलिये बुद्धिमान जल का अत्यन्त निषेध कहीं भी न करे॥३७॥

पानीयं प्राणिनां प्राणा विश्वमेव हि तन्मयम् ।
अतोऽत्यन्तनिषेधेऽपि न क्वचिद्वारि वार्यते ॥३८॥

प्राणियों का प्राण पानी है, संसार पानी से उपजता है, इस कारण से अत्यन्त निषेध

में भी कहीं पानी वर्जित नहीं किया जाता।।३८।।

क्वचिदुष्णं क्वचिच्छीतं क्वचित्क्वथितशीतलम् ।
क्वचिदन्यसमायुक्तं न क्वचिद्वारि वर्जयेत् ।।
पानीयं न तु पानीयं पानीयं च प्रदेशयेत् ।
अजीर्णे क्वथितं चामे पक्वेऽजीर्णे च निर्मलम् ।।३९।।

कहीं गर्म, कहीं शीतल, कहीं औटाया हुआ, कहीं अन्य द्रव्य से सिद्ध किया हुआ पानी देना चाहिये। अजीर्ण में और आम में औटाया हुआ पानी और पके हुए अजीर्ण में नितरा हुआ पानी देना चाहिये।।३९।।

तृषितस्तु विदग्धेऽन्ने यः पिबेच्छीतलं जलम् ।
विदाहः प्रशमं याति शेषमन्नं च जीर्यति ।।४०।।

विदग्ध अजीर्ण में तृषावाला मनुष्य शीतल पानी को पीवे तो उसका दाह शांत हो और शेष रहा अन्न जीर्ण हो जावे।।४०।।

आनूपादिजलम्

आनूपं दोषकृद्वारि प्रायोऽभिष्यन्दि निन्दितम् ।
जाङ्गलं हन्ति सकलं दोषमग्निप्रदीपनम् ।
साधारणं हिमं स्वादु तृष्णाघ्नं हर्षदं लघु ।।४१।।

अनूप देश का पानी दोषों को करता है, कफ को उपजाता है और निंदित है। जांगल देश का पानी संपूर्ण दोषों को नाशता है और अग्नि को जगाता है। साधारण देश का पानी शीतल है, स्वादु है, तृषा को नाशता है, आनन्द देता है तथा हलका है।।४१।।

अपेयजलम्

वर्षासु योऽवगाहेत पिबेदथ नवं पयः ।
पर्णादिदुष्टं लभते स बाह्याभ्यन्तरामयान् ।।४२।।

वर्षाऋतु के पानी में जो स्नान करता है और नया पानी पीता है, पत्तों आदि से युक्त हुए पानी को पीता है उस मनुष्य के शरीर में भीतर और बाहर के रोग उत्पन्न होते हैं।।४२।।

कलुषं छन्नमम्भोजपर्णनीलतृणादिभिः ।
दुष्टगन्धाद्यसंस्पृष्टं सूर्याचन्द्रमसांशुभिः ।।४३।।

मैला और कमल के पत्ते शैवाल तृण आदि से आच्छादित, बुरे हैं गन्धादि गुण जिसमें और सूर्य चन्द्रमा की किरणों से असंस्पृष्ट।।४३।।

व्यापन्नमिति जानीयात्सर्वदोषप्रकोपकृत् ।

तोयं तद्वर्जयेत्सर्वं यच्चान्यर्तुसमुद्भवम् ॥४४॥

पानी व्यापन्न जानना। यह सब दोषों के कोप को करता है। जो विना समय वर्षा हुआ पानी हो वह पानी नहीं पीना चाहिये॥४४॥

व्यापन्नजलशोधनविधिः

व्यापन्नमपि पानीयं क्वथितं सूर्यतापितम् ।
तप्तायः सूर्यसिकताग्रावादिष्वथ धारितम् ॥४५॥
कर्पूरपूरपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ।
स्वच्छं कनकमुक्ताद्यैः शीतं दोषाय न क्वचित् ॥४६॥

जो पानी तपाये हुए लोह और सूर्य से गर्म किया हुआ और बालू रेत आदि से बुझाया हुआ हो और कपूर, केशर, पाटल आदि से सुंगधित किया हुआ हो और निर्मल हो, सोना और मोती आदि से युक्त हो ऐसा शीतल पानी कहीं भी दोष को नहीं करता है॥४५॥४६॥

क्वथितजलगुणाः

तत्क्वाथ्यमानं निष्फेनं निर्वेगं निर्मलं जलम् ।
तत्सर्वदोषशमनं दीपनं पाचनं लघु ॥४७॥

औटाया हुआ, झागों से रहित, वेग से वर्जित और निर्मल पानी सब दोषों को शांत करता है, अग्नि को जगाता है और हलका है॥४७॥

उष्णं तदग्निजननं लघ्वेतद्वह्निशोधनम् ।
पार्श्वरुक्पीनसाध्मानहिक्कानिलकफापहम् ॥४८॥

गर्म पानी अग्नि को उपजाता है, हलका है, अग्नि को शोधता है और पसलीशूल, पीनस, आध्मान, हिचकी, वात-कफ इनको नाश करता है॥४८॥

तत्पादहीनं वातघ्नमर्द्धहीनं च पित्तजित् ।
त्रिपादहीनं श्लेष्मघ्नं संग्राह्यग्निप्रदं लघु ॥४९॥

जलाने से चौथाई भाग हीन किया पानी वात को नाशता है, आधाभाग हीन किया पानी पित्त को हरता है, तीन-भाग हीन किया पानी कफ को नाशता है, मल को बांधता है, अग्नि को देता है और हलका है॥४९॥

निहन्ति श्लेष्मसङ्घातं मारुतं चापि कर्षति ।
अजीर्णं जरयत्याशु पीतमुष्णोदकं निशि ॥५०॥

रात्रि में पिया हुआ गर्म पानी कफ के समूह को नाशता है और वात को दूर करता है और अजीर्ण को शीघ्र दूर करता है॥५०॥

पादावशेषं सलिलं ग्रीष्मे शरदि शस्यते ।

हेमन्ते शिशिरे वर्षास्वर्द्धहीनं मधावपि ।।५१।।

चौथाई भाग शेष रहा पानी ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन और कार्तिक इन महीनों में श्रेष्ठ है। मंगशिर, पौष, माघ, फाल्गुन, श्रावण और भाद्रपद इन महीनों में तथा चैत, वैशाख में भी आधा भाग शेष रहा पानी श्रेष्ठ है।।५१।।

श्रृतशीतादिजलगुणाः

श्रृतशीतं सदा पथ्यं लघु नीरं त्रिदोषनुत् ।
तच्च पर्युषितं निम्नमम्लीभूतं* त्रिदोषकृत् ।।५२।।

गर्म करके शीतल किया पानी सब काल में पथ्य है, हलका है, त्रिदोष को दूर करता है। वही पानी रात्रि भर धरा बासी हुआ भारी है, खट्टा है और त्रिदोष को करता है।।५२।।

दिवा श्रृतं पयो रात्रो गुरुतामधिगच्छति ।
रात्रौ श्रृतं दिवा पीतं तथा दोषकरं परम् ।।५३।।

दिन में गर्म किया पानी रात्रि में भारी हो जाता है, रात्रि में गर्म किया पानी दिन में पिया जावे तो दोषों को करता है।।५३।।

जलजीर्णकालः

आमं जलं जीर्यति याममात्रं तदर्धमात्रं श्रृतशीतवारि ।
मुहूर्तमात्रं जलमुष्णमुक्तं त्रिधेति चोक्तो जलजीर्णकालः।।५४।।

बिना पका पानी एक पहर में परिपाक को प्राप्त होता है, और पकाकर ठंडा किया पानी डेढ़ घंटे में पचता है और गरम जल एक मुहूर्त में पचता है, ऐसे जल के जीर्ण के तीन काल कहे हैं।।५४।।

अरोचके प्रतिश्याये प्रसेके श्वयथौ क्षये ।
मन्दाग्नौ बद्धकोष्ठे च ज्वरे नेत्रामये तथा ।।
व्रणे च मधुमेहे च पानीयं मन्दमाचरेत् ।।५५।।

अरुचि, प्रतिश्याय, ग्लानि, सूजन, क्षय, मन्दाग्नि, मलावरोध, ज्वर, नेत्ररोग, व्रण और मधुमेह में थोड़ा पानी पीना चाहिये।।५५।।

रोगविशेषे जलविशेषः

तृषितो मोहमाप्नोति मोहात्प्राणैर्विमुच्यते ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन क्वचिद्वारि न वर्जयेत् ।।५६।।

तृषाकुल को मूर्च्छा होती है, मूर्च्छा से प्राणवियोग हो जाता है, इसलिये सब प्रयत्न

---

* निन्द्यं मलीभूतमिति पाठोऽपि ।

से कभी जल का निषेध न करे।।५६।।

मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषु विषे रक्ते च दापयेत् ।।५७।।

मूर्च्छा, पित्त, गर्मी से उपजी दाह, विष तथा रक्तज रोगों में पानी देना चाहिये।।५७।।

श्रमक्लमपरिक्षेपे तमकेऽथ क्षुतौ तथा ।
ऊर्द्ध्वगे रक्तपित्ते च उष्णाम्बु परिवर्जयेत् ।।५८।।

थकावट, क्लांति, शरीर का गिरा सा जाना, तमक श्वास और ऊर्ध्वगामी रक्तपित्त में गरम जल नहीं देना चाहिये।।५८।।

शीतजलनिषेधः

पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे ।
आध्माने तिमिरे कोष्ठे सद्यःशूले नवज्वरे ।।
हिक्कायां स्नेहपीते च शीताम्बु परिवर्जयेत् ।।५९।।

पार्श्वशूल, प्रतिश्याय, वातरोग, गलग्रह, आध्मान, तिमिर, मलावरोध, तात्कालिक शूल, नवीन ज्वर, हिचकी तथा स्नेह पिये हुए को ठंडे जल का पीना उचित नहीं।।५९।।

अत्यम्बुपानदोषाः

अत्यम्बुपानाद्व्रजते च वह्निर्विनाऽम्बुपानेन भवन्ति रोगाः ।
तस्मान्नरो वह्निविवर्धनार्थं मुहुर्मुहुर्वारि पिपेदभूरि ।।६०।।

अधिक जलपान से जाठराग्नि निर्बल होती है और जल के न पीने से रोग उत्पन्न होते हैं, इसलिए मनुष्य अग्नि की वृद्धि के लिये बार बार थोड़ा जल पीवे।।६०।।

दुग्धनामगुणाः

दुग्धं प्रस्रवणं क्षीरं सौम्यं सञ्जीवनं पयः ।
दुग्धं बलकरं शीतं मधुरं वातपित्तजित् ।।६१।।

दुग्ध, प्रस्रवण, क्षीर, सौम्य, संजीवन पय ये दूध के नाम हैं। दूध बल को करता है, शीतल है, मीठा है और वातपित्त को जीतता है।।६१।।

स्निग्धं रसायनं मेध्यं जीवनं धातुवर्द्धनम् ।
चेतोरक्तगदश्वाशक्षयार्शोभ्रमनुद्गुरु ।।६२।।

चिकना है, बुढ़ापे को दूर करता है, बुद्धि को बढ़ाता है, जीवन है, धातु को बढ़ाता है और चित्त का बिगड़ना, रक्तरोग, श्वास, क्षय, बवासीर, भ्रम इनको दूर करता है तथा भारी है।।६२।।

बालकवृद्धकृशादीनां स्त्रीसक्तानां प्रशस्यते ।

प्रायः प्राणभृतां साम्यं विशेषादोजसे हितम् ।।६३।।

बालक, बूढ़ा, कृश आदि को और स्त्रियों में आसक्त मनुष्यों को श्रेष्ठ है, विशेष करके प्राणियों के दोषों को साम्यावस्था में करता है और बलदायक है।।६३।।

गोदुग्धगुणाः

गोक्षीरं मधुरं शीतं गुरुस्निग्धं रसायनम् ।
बृंहणं स्तन्यकृद्वर्ण्यं जीवनं वातपित्तनुत् ।।६४।।

गौक्षीर अर्थात् गाय का दूध मीठा है, शीतल है, भारी है, चिकना है, बुढ़ापे को दूर करता है, धातु को पुष्ट करता है, स्तनों में दूध को उत्पन्न करता है, वर्ण में हित है और जीवन है तथा वातपित्त को दूर करता है।।६४।।

वरं कृष्णगवां क्षीरं श्वेतानां श्लेष्मलं गुरु ।
बालवत्साविवत्सानां गवां क्षीरं त्रिदोषकृत् ।
पिण्याकाद्यशनाज्जातं क्षीरं गुरु कफापहम् ।।६५।।

काली गौ का दूध उत्तम है, सफेद गौओं का दूध कफ को करता है, भारी है, बालक बछड़ेवाली और जिसका बच्चा मर जावे, ऐसी गौओं का दूध त्रिदोष को करता है, खल आदि को खाने से उपजा दूध भारी है और कफ को नाश करता है।।६५।।

अजादुग्धगुणाः

आजं गव्यगुणं ग्राहि विशेषाद्दीपनं लघु ।
हन्ति क्षयार्शोऽतीसारप्रदरास्रभ्रमज्वरान् ।।६६।।

बकरी के दूध में गाय के सब गुण हैं परन्तु मल को बांधता है, विशेषकर अग्नि को जगाता है, हलका है और क्षय, बवासीर, अतिसार, प्रदर, रक्तविकार, भ्रम, ज्वर इनको नाशता है।।६६।।

अजानामल्पकायत्वात्कटुतिक्तादिभक्षणात् ।
स्तोकाम्बुपानाद् व्यायामात्पयः सर्वगदापहम् ।।६७।।

छोटा शरीर होने से चर्परा और कड़ुवा आदि खाने से, थोड़ा पानी पीने से, बहुत फिरना आदि से बकरी का दूध सब रोगों को हरता है।।६७।।

अविदुग्धगुणाः

आविकं मधुरं केश्यं स्निग्धं वातकफापहम् ।
गुरु कासेऽनिलोद्भूते केवले चानिले वरम् ।।६८।।

भेड़ का दूध मीठा है, बालों को बढ़ाता है, चिकना है, वात, कफ को नाशता है, भारी है, वात की खांसी में और केवल वात में उत्तम है।।६८।।

महिषीदुग्धगुणाः

माहिषं मधुरं गव्यं स्निग्धं गुरु बलप्रदम् ।
निद्राशुक्रकरं शीतं मलाभिष्यन्दि वह्निनुत् ॥६९॥

भैंस का दूध मीठा है, कुछ कुछ गाय के दूध के समान है, चिकना है, भारी है, बल को देता है, नींद और वीर्य को करता है, शीतल है, मल को रोकनेवाला और अग्नि को नाशता है॥६९॥

नारीदुग्धगुणाः

नार्या लघु पयः शीतं दीपनं वातपित्तजित् ।
चक्षुःशूलाभिघातघ्नं नस्याश्च्योतनयोर्वरम् ॥७०॥

स्त्री का दूध हलका है, शीतल है, अग्नि को जगाता है, वातपित्त को जीतता है, आंख के शूल और चोट को नाशता है, नस्य और आश्च्योतन अर्थात् आंख में डालने के लिये हित है॥७०॥

हस्तिनीदुग्धगुणाः

हस्तिन्याः स्वादु बलकृच्चक्षुष्यं शीतलं गुरु ॥७१॥

हथिनी का दूध स्वादु है, बल को करता है, आंखों में हित है, शीतल है और भारी है॥७१॥

औष्ट्रदुग्धगुणाः

औष्ट्रं स्वादुरसं रूक्षं लवणं लघु दीपनम् ।
कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरं सरम् ॥७२॥

ऊँटनी का दूध स्वादु रसवाला है, रूखा है, सलोना है, हलका है, अग्नि को जगाता है और कृमि, कुष्ठ, कफ, अफारा, शोजा, उदररोग इनको हरता है तथा दस्तावर है॥७२॥

आश्वदुग्धगुणाः

आश्वमुष्णं पयो रूक्षं बल्यं वातकफापहम् ।
लावणाम्लं लघु स्वादु सर्व मैकशफं तथा ॥७३॥

घोड़ी का दूध गर्म है, रूखा है, बल को करता है, वातकफ को नाशता है, सलोना है, खट्टा है तथा हलका है और स्वादु है। एक खुरवाले सब पशुओं के दूध में ये गुण हैं॥७३॥

धारोष्णादिदुग्धगुणाः

धारोष्णं दीपनं बल्यं लघु शीतं त्रिदोषनुत् ।
मुहूर्त्तत्रितयादूर्ध्वं पयो भजति विक्रियाम् ।

तदेव द्विगुणे काले विषवद्धन्ति मानवम् ।।७४।।

जो दूध निकालते निकालते गर्म हो और जमीन पर न रखा हो उस तात्कालिक निकले दूध को धारोष्ण कहते हैं। वह धारोष्ण दूध-अग्नि को जगाता है। बलवर्द्धक है, हलका है, शीतल है और त्रिदोष को दूर करता है। छः घड़ी से उपरांत धरा दूध वर्तने के योग्य नहीं रहता और बारह घड़ी से उपरांत धरा दूध विष के समान मनुष्य को मार देता है।।७४।।

तस्माच्छीतगुणं तत्स्यात् पयस्तात्कालिकं पिबेत् ।
सुधासमं तदेव स्याद्धाराशीतं त्रिदोषकृत् ।।७५।।

शीतल गुणवाला दूध होता है, तत्काल निकाले हुए दूध को पीवे। यह दूध अमृत के समान हो जाता है। धार का निकाला दूध शीतल करके पिया जावे तो त्रिदोष को करता है।।७५।।

धारोष्णं शस्यते गव्यं धाराशीतं तु माहिषम् ।
भृतोष्णमाविकं पथ्यं भृतशीतमजापयः ।।७६।।

गाय का दूध धारोष्ण उत्तम होता है, धार से निकला शीतल किया भैंस का दूध उत्तम है, गर्मकर गर्म ही पिया हुआ दूध भेड़ का उत्तम है, गर्म कर शीतल किया हुआ बकरी का दूध उत्तम है।।७६।।

भृतशीतं जयेत्पित्तं भृतोष्णं कफमारुतौ ।
अतिपक्वं गुरु स्निग्धं वृष्यं बलविवर्द्धनम् ।।७७।।

गर्म करके शीतल किया दूध पित्त को जीतता है, गर्म करके गर्मरूप ही पान किया गया दूध कफवात को हरता है,अत्यंत पक्व किया हुआ दूध भारी है, चिकना और वीर्य में हित है तथा बल को बढ़ाता है।।७७।।

आममामप्रदं क्षीरमभिष्यन्दकरं गुरु ।
आममेव स्त्रियाःक्षीरं पथ्यं पक्वं तु दोषकृत् ।।७८।।

कच्चा दूध आम और कफ को करता है तथा भारी है। स्त्री का कच्चा दूध पथ्य है, पकाया दूध दोष को करता है।।७८।।

रात्रौ चन्द्रगुणाधिक्याव्द्यायामपरिवर्जनात् ।
प्रभातिकं पयः प्रायो विष्टम्भि गुरु बृंहणम् ।।७९।।

रात्रि में चंद्रमा के गुण की अधिकता और चलने फिरने आदि को वर्जने से प्रातःकाल का दूध विशेष करके विष्टंभ करता है, भारी है, धातु को पुष्ट करता है।।७९।।

दिवाकरकराघाताव्द्यायामानिलसेवनात् ।
प्रदोषे श्रमनुद्बल्यं चक्षुष्यं वातपित्तहृत् ।।८०।।

सूर्य की किरणों के लगने से चलने फिरने से वायु का सेवन करने से सायंकाल का दूध बल को करता है, नेत्रों को हित करता है, वात पित्त को हरता है।।८०।।

त्याज्यं दुग्धम्

विवर्णमम्लं दुर्गन्धि लवणं ग्रन्थितं पयः ।
वर्जयेदम्ललवणयोगात्कुष्ठादिदोषकृत् ।।८१।।

वर्ण से विगड़ा, खट्टा, दुर्गंधयुक्त, नमक के स्वाद से युक्त हुआ और गांठोवाला दूध नहीं पीना। खटाई और नमक के संयोग से दूध कुष्ठ आदि दोष को करता है।।८१।।

संतानिका (मलाई)

सान्तानिकं परं रूक्षं शृतदुग्धो परि स्मृता ।
सन्तानिका गुरुः शीता वृष्या पित्तास्रवातनुत् ।।८२।।

खुरचन बहुत रूखी कही है। पके हुए दूध पर आई हुई मलाई भारी है, शीतल है, स्त्रीसंग में हित है, पित्त रक्त और वात को दूर करती है।।८२।।

मोरटपीयूषादिदुग्धम्

सप्तरात्रात्परं क्षीरमप्रसन्नं तु मोरटम् ।
नष्टदुग्धं[1] भवेन्नारं मोरटं जैचयटोऽब्रवीत् ।।८३।।

सात रात्रि से अनन्तर दूध अप्रसन्न मोरट हो जाता है और जो दूध फटकर पानी समान हो जाय उसको जैयट ने मोरट कहा है।।८३।।

क्षीरं तत्कालसूतायाः पीयूष घनमुच्यते ।
पक्वं दध्ना समं क्षीरं विज्ञेया दधिकूर्चिका ।।८४।।

तत्काल व्याई गाय का दूध पीयूषघन अर्थात् खीस कहाता है। दही के बराबर दूध डालकर पकावे उसे दधिकूर्चिका कहते हैं।।८४।।

तक्रकूर्चिका, किलाटादि

तक्रेण तक्रकूर्चिका तयोः पिण्डः किलाटकः ।
पाकं विना स एव स्यात्क्षीरशाकसितान्वितः ।।८५।।

तक्र मिलाकर पकाये हुए दूध को तक्रकूर्चिका कहते हैं। और दही अथवा छाछ मिलने से जो दूध फट गया हो उसको शुद्ध झीने वस्त्र में डालकर पानी निचोड़ डाले, उस पानीरहित पिंड को तक्रपिंड या पिंड कहते हैं। जो दूध काढ़कर मावा (खोया) बनाया जाता है उसको किलाट (खोया) कहते हैं, जो बिना औटाये ही फट जाय

---

१ नष्टदुग्धभवं मस्तु मोरटं याजयेद्वमीन् । इत्यपि क्वाचित्कः पाठः ।

उसको क्षीरशाक कहते हैं।।८५।।

मोरटादीनां गुणाः

मोरटस्तु सपीयूषः कूर्चिका दधितक्रयोः ।
किलाटक्षीर शाकाश्च ह्येते निद्रामपुष्टिदाः ।।८६।।

मिसरी मिले हुए मोरट, पीयूष, दधिकूर्चिका, किलाट, क्षीरशाक ये सब निद्राजनक, आमवर्द्धक, पुष्टिकारक होते हैं।।८६।।

गुरवः श्लेष्मला वृष्या हृद्या वातदिनाशिकाः ।
वातला दुर्जरा रूक्षा ग्रहिणी तक्रकूचिका ।।८७।।

ये सब भारी हैं, कफ को करते हैं, वीर्यवर्द्धक हैं और दिल को ताकत देते हैं और वात तथा अग्नि को नाशती हैं। तक्रकूर्चिका वात को करती है, देर में जीर्ण होती है, रूखी है और मल को बांधती है।।८७।।

दधिनामगुणाः

दधि स्त्यानं पयः सम्यक् स्त्यानमीषत्तु मन्दकम् ।
तन्मिष्टमम्लमत्यम्लं मधुराम्लमिति स्मृतम् ।।८८।।

दधि, स्त्यान, सम्यक्स्त्यान्, ईषत्स्यान मंदक ये नाम दही के हैं। मीठा, खट्टा, अत्यंतखट्टा, मीठा-खट्टा ये दही के भेद कहे गये हैं।।८८।।

दध्युष्णं दीपनं स्निग्धं कषायानुरसं गुरु ।
पाकेऽम्लं ग्राहि पित्तास्रशोफमेदः कफप्रदम् ।।८९।।

दही गर्म है, अग्नि को जगाता है, चिकना है, कषैले अनुरसवाला है, भारी है, पाक में खट्टा है, मल को बांधता है और पित्तरक्त, शोजा, मेद, कफ इनको उत्पन्न करता है।।८९।।

मूत्रकृच्छ्रे प्रतिश्याये शीतके विषमे ज्वरे ।
अतिसारेऽरुचौ कार्श्ये शस्यते बलवर्द्धनम् ।।९०।।

मूत्रकृच्छ्र, प्रतिशाय, शीत, विषमज्वर, अतिसार, अरुचि, कार्श्य-रोग इनमें दही देना श्रेष्ठ है और बल को बढ़ाता है।।९०।।

मन्दं त्रिदोषजननं मधुरं वातपित्तजित् ।
अम्लं पित्तास्रकफकृदत्यम्लं रक्तपित्तदम् ।
मधुराम्लं गुणैर्मिश्रैर्दधि पूर्वपदादिशेत् ।।९१।।

बिना जमा दही त्रिदोष को करता है, मीठा दही वातपित्त को जीतता है, खट्टा दही पित्तरक्त और कफ को करता है, अत्यंत खट्टा दही रक्तपित्त को देता है। खट्टा, मीठा, दही मिले हुए गुणोंवाला होता है।।९१।।

गव्यादिदधिगुणाः

गव्यं दध्युत्तमं बल्यं पाके स्वादु रुचिप्रदम् ।
पवित्रं दीपनं स्निग्धं पुष्टिकृत्पवनापहम् ।।९२।।

गाय का दही उत्तम है, बल को करता है, पाक में स्वादु है, रुचि को देता है, पवित्र है, अग्नि को जगाता है, चिकना है, पुष्टि को करता है और बात को नाशता है।।९२।।

आजं दध्युत्तमं ग्राहि लघु दोषत्रयापहम् ।
शस्यते श्वासकासार्शःक्षयकार्श्येषु दीपनम् ।।९३।।

बकरी का दही उत्तम है, मल को बांधता है, हलका है, त्रिदोष को नाशता है और श्वास खांसी, बवासीर, क्षय, कार्श्यरोग इनमें श्रेष्ठ है और अग्नि को जगाता है।।९३।।

अविकं दधि दुर्न्नामकफवातास्त्रकोपनम् ।
अभिष्यन्दिरसं पाके स्वादु प्रायेण दोषलम् ।।९४।।

भेड़ का दही पुरुषार्थपना कारक है और कफ, वातरक्त, इनको प्रकुपित करता है, अभिष्यंदि रसवाला है, पाक में स्वादु है और विशेष करके दोष को दूर करता है।।९४।।

माहिषं दधि सुस्निग्धं श्लेष्मलं वातपित्तनुत् ।
वृष्यं विपाके मधुरं गुरु रक्तप्रदूषणम् ।।९५।।

भैंस का दही बहुत चिकना है, कफ को करता है, वातपित्त को दूर करता है, वीर्य को पुष्ट करता है, पाक में मीठा है भारी है, रक्त को दूषित करता है।।९५।।

नार्या दधि त्रिदोषघ्नं चक्षुष्यं तर्पणं गुरु ।
बल्यं विपाके मधुरं स्निग्धं वह्निकरं परम् ।।९६।।

नारी का दही त्रिदोष को नाशता है, नेत्रों में हित करता है, तर्पण है, भारी है, बल को करता है, पाक में मीठा है, चिकना है और अग्नि को बढ़ाता है।।९६।।

हस्तिन्या दधि वीर्योष्ण कटु पाकेऽग्निनाशनम् ।
कषायानुरसं वर्चोवर्द्धनं कफवातजित् ।।९७।।

हथिनी का दही वीर्य में गर्म है, पाक में चर्परा है, अग्नि को नाशता है, पीछे कषैला रसवाला है, मल को बढ़ाता है और कफवात को जीतता है।।९७।।

औष्ट्रं विपाके कटुकं भेदि क्षाराम्लकं दधि ।
निहन्त्युदरकुष्ठार्शःशूलबन्धानिलक्रिमीन् ।।९८।।

ऊंटनी का दही पाक में चर्परा है, भेदी है, खारा और खट्टा है तथा उदररोग, कुष्ट,

बवासीर, शूल, विबन्ध, वात, कृमि इनको नाशता है॥९८॥

अश्वाद्यैकशफं रूक्षं दध्यभिष्यन्दि दोषलम् ।
दीपनं स्वादु चक्षुष्यं वातकृत्कफमूत्रनुत् ॥९९॥

घोड़ी आदि एक खुरवाले पशु का दही रूखा है, अभिष्यंदि है, दोष को करता है, अग्नि को जगाता है, स्वादु है, आंखों में हित है, वात को करता है तथा कफ और मूत्ररोग को दूर करता है॥९९॥

सर्वेषु दधिषु श्रेष्ठं गव्यमेव गुणावहम् ।
गालितं दधि सुस्निग्धं वातघ्नं श्लेष्मलं गुरु ॥१००॥

सब दहियों में गाय का दही श्रेष्ठ है और गुणदायक है। कपड़े में छाना हुआ दही सुंदर चिकना है, वात को नाशता है, कफ को करता है और भारी है॥१००॥

बलपुष्टिकरं रुच्यं मधुरं नातिपित्तकृत् ।
भृतक्षीरभवं रुच्यं दधि स्निग्धं गुणोत्तमम् ॥१०१॥

गाय का दही बल और पुष्टि को करता है, रुचि को करता है, मीठा है, बहुत पित्त को नहीं करता है। पकाये हुए दूध का दही रुचि को करता है, चिकना है और उत्तम गुणवाला है॥१०१॥

पित्तानिलापहं सर्वं धात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥१०२॥

सब प्रकार का दही पित्तवात को नाशता है और धातु अग्नि, बल को बढ़ाता है॥१०२॥

छच्छिवागुणाः

असारं दधि संग्राहि कषायं वातलं लघु ।
विष्टम्भि दीपनं रुच्यं ग्रहणीरोगनाशनम् ॥१०३॥

मलाई से रहित दही मल को बांधता है, कषैला है, वात को हरता है, हलका है, विष्टम्भ करता है, अग्नि को जगाता है, रुचि में हित है और ग्रहणी रोग को नाशता है॥१०३॥

सशर्करं दधि श्रेष्ठं तृष्णापित्तास्रदाहनुत् ।
सगुडं वातनुद् वृष्यं बृंहणं तर्पणं गुरु ॥१०४॥

खांड़ सहित दही बहुत उत्तम है तथा तृषा, पित्तरक्त, दाह, इनको नाश करता है, गुड़ सहित दही वात को दूर करता है, वीर्य को पुष्ट करता है, धातुओं को पुष्ट करता है, तर्पण और भारी है॥१०४॥

ऋतुभेदेन दधिगुणः

वसन्ते शरदि ग्रीष्मे दधि प्रायेण निन्दितम् ।

हेमन्ते शिशिरे शस्तं वर्षासु चागुणावहम् ॥१०५॥

वसन्त, शरद, ग्रीष्म इन ऋतुओं में दही विशेषकरके निंदित है। हेमंत और शिशिर ऋतु में दही उत्तम है। वर्षा ऋतु में दही खाना अच्छा नहीं है॥१०५॥

रोगविशेषे दधिगुणाः

मूत्रकृच्छ्रेऽरुचौ कार्श्ये शीतगे विषमज्वरे ।
अतिसारे प्रतिश्याये दिवा च दधि शस्यते ॥१०६॥

मूत्रकृच्छ्र, अरुचि, कृशता, शीतयुक्त, विषमज्वर, अतिसार और प्रतिश्याय में और दिन के समय दधि श्रेष्ठ है॥१०६॥

शस्यते दधि नो रात्रौ शस्तं चाम्बुघृतान्वितम्॥१०७॥

रात्रि में दही उत्तम नहीं है, पानी और घृत से युत हुआ दही उत्तम है॥१०७॥

दध्युत्तरादिगुणाः

दध्युत्तरो दधिस्नेहो दध्यग्रः कटुकः सरः ।
दध्नः सरो गुरुर्वृष्यो वातवह्नि प्रणाशनः ।
वस्तेर्विशोधनश्चाम्लः पित्तश्लेष्मविवर्द्धनः ॥१०८॥

दध्युत्तर, दधिस्नेह, दध्यग्र, कटुक, सर ये नाम दही के सरके हैं। दही सर है, भारी है, वीर्यवर्धक है, वात और अग्नि को नाश करता है, वस्ति को शोधता है, खट्टा है तथा पित्त और कफ को बढ़ाता है॥१०८॥

मस्तु क्लमहरं बल्यं लघु भक्ताभिलाषकृत् ।
स्रोतोविशोधनं ह्लादि कफतृष्णानिलापहम् ।
अवृष्यं प्रीणनं शीघ्रं भिनत्ति मलसंग्रहम् ॥१०९॥

दही का पानी ग्लानि को हरता है, बल को करता है, हलका है, भोजन की रुचि उत्पन्न करता है, स्रोतों को शोधता है, आनन्ददायक है और कफ, तृषा, वात इनको नाशता है। वृष्य नहीं है, प्रीणन है, और मल के संचय को शीघ्र काटता है॥१०९॥

घोल, मथित, उदश्वित्, तक्रनामगुणाः

दण्डाहतं कालशेयं गोरसश्च विलोडितम् ॥११०॥

दण्डाहत, कालशेय, गोरस, विलोडित ये नाम तक्रके हैं॥११०॥

सरसं निर्जलं घोलं मथितरसवर्जितम् ।
समोदकमथश्वेतमुदश्वित्त्वर्धवारिकम् ॥१११॥

रससहित और पानी से रहित दही घोल होता है, रस से वर्जित दही मथित होता है, बराबर पानीवाला दही श्वेत होता है और आधा पानीवाला दही उदश्वित होता

है।।१११।।

पादोदकं भवेत्तक्रमर्द्धाम्भोऽन्ये बभाषिरे ।
तक्रं ग्राहि कषायाम्लं मधुरं दीपनं लघु ।।११२।।

चौथाई पानी वाला दही तक्र होता है। कोई वैद्य आधे पानी वाले को तक्र कहते हैं। तक्र मल को बांधता है, कषैला और खट्टा मीठा है, अग्नि को जगाता है और हलका है।।११२।।

वीर्योष्णं बलदं रूक्षं प्रीणनं वातनाशनम् ।
हन्ति शोथगरच्छर्दिप्रसेक विषमज्वरान् ।।११३।।

वीर्य में गर्म है, बल को देता है, तृप्ति करता है, वात को नाशता है और शोजा कृत्रिम विष, छर्दि, प्रसेक, विषमज्वर।।११३।।

पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ।
मेहं गुल्ममतीसारं शूलप्लीहकफक्रिमीन् ।
श्वित्रकुष्ठकफव्याधिकुष्ठतृष्णोदरापचीः ।।११४।।

पाण्डु, मेद, ग्रहणी, बवासीर, मूत्र का बन्ध, भगंदर, प्रमेह, गुल्म, अतीसार, शूल, तिल्लीरोग, कफ, कृमि, श्वित्र, कुष्ठ, कफरोग, कुष्ठ, तृषा, उदररोग और अपची को नाशता है।।११४।।

तक्रं निदाघे शरदि दौर्बल्ये भ्रममूर्च्छयोः ।
पित्तास्रमदशोफेषु कदाचिन्न प्रशस्यते ।।११५।।

गरमी के समय में, आश्विन और कार्तिक में, दुर्वलपन में भ्रम और मूर्च्छा में, पित्तरक्त, मद, शोजा इनमें तक्र कभी भी अच्छा नहीं है।।११५।।

शीतकाले ग्रहण्यर्शः कफवातामयेषु च ।
स्रोतोनिरोधे मन्दाग्नौ तक्रमेवामृतोषमम् ।।११६।।

शीतकाल में, ग्रहणी, बवासीर, कफरोग, वातरोग, स्रोतों का रुकना और मन्दाग्नि इनमें तक्र अमृत के समान है।।११६।।

तक्रं तु मधुरं सर्वं श्लेष्मलं वातपित्तनुत् ।।११७।।

सब प्रकार का तक्र मीठा है, कफ को करता है, और वात पित्त को दूर करता है।।११७।।

अम्लं वातहरं तक्रं रक्तपित्तप्रकोपनम् ।
वातेऽम्ले सैन्धवोपेतं स्वादु पित्ते सशर्करम् ।।११८।।

खट्टा तक्र वात को हरता है, रक्तपित्त को कुपित करता है, सेंधानमक से युक्त तक्र वात में हित है और पित्त में खांड़ से मिला हुआ तक्र हित है।।११८।।

पिबेत्तक्रं कफे रूक्षं व्योषक्षारसमन्वितम् ।
समुद्धृतघृतं तक्रं पथ्यं लघु विशेषतः ।।११९।।

कफ में रूखा तथा सोंठ मिरच, पीपल के खार से युक्त किये हुए तक्र को पीवे। घृत से रहित किया तक्र पथ्य है, विशेषकरके हलका है।।११९।।

स्तोकोद्धृतघृतं तस्माद् वृष्यं गुरु कफापहम् ।
अनुद्धृतघृतं शीतं गुरु पुष्टिकफप्रदम् ।।१२०।।

किंचित् निकाले घृतवाला तक्र वीर्य को पुष्ट करता है, भारी है, और कफ को नाशता है। घृत नहीं निकाला हुआ तक्र शीतल है, भारी है, पुष्टि और कफ को करता है।।१२०।।

यान्युक्तानि दधीन्यष्टौ तद्गुणं तक्रमादिशेत् ।
सरसं निर्जलं घोलं मथितं रसवर्जितम् ।।१२१।।

गौ भैंस आदि भेद से जो आठः प्रकार के दही कहे हैं, उन्हीं के समान गुणवाले आठों तक्र होते हैं। सरस, निर्जल, घोल, मथित, रसवर्जित ये तक्र के नाम हैं।।१२१।।

दधिवद्घोलमथिते किञ्चित्तु लघु नीरतः ।
मण्डतक्रा लघुतक्रा कूर्चिकादधिसम्भवा ।।१२२।।

घोल और मथित दही के समान होते हैं, परंतु कुछ पानी से युक्त घोल और मथित होता है। मण्डतक्रा, लघुतक्रा, कूर्चिका, दधिसंभवा ये नाम घोल और मथित के हैं। इनमें भी तक्र के समान गुण हैं।।१२२।।

नवनीतवर्गनामगुणाः

हैयङ्गवीनं सरजं नवनीतं तु मन्थजम् ।
नवनीतं लघु ग्राहि सद्यस्कं स्वादु शीतलम् ।।१२३।।

हैयङ्गवीन, सरज, नवनीत, मन्थज ये मक्खन के नाम हैं। मक्खन नौनी घृत हलका है, मल को बांधता है, तत्काल का मक्खन स्वादु और शीतल है।।१२३।।

मध्यमीषत्कषायाम्लं वृष्यं पित्तानिलापहम् ।
अविदाह्यग्निकृन्नेत्र्यं क्षयार्शोव्रणकासजित् ।।१२४।।

थोड़े दिनों का मक्खन कषैला है, खट्टा है, वीर्य को पुष्ट करता है, पित्तवात को नाशता है, दाह नहीं करता है, अग्नि को करता है, आंखों में हित है, क्षय बवासीर, घाव, खांसी इनको जीतता है।।१२४।।

नवनीतं चिरोद्भूतं गुरु मेदःकफप्रदम् ।
शोथघ्नं बलकृद् वृष्यं विशेषादमृतं शिशोः ।।१२५।।

बहुत दिनों का मक्खन भारी है, मेद और कफ को देता है, शोजे को नाशता है, बल

को करता है, वीर्य को पुष्ट करता है, विशेष करके बालक को अमृत के समान है॥१२५॥

क्षीरोत्थं तदतिस्निग्धं चक्षुष्यं रक्तपित्तजित् ।
वृष्यं बलकरं ग्राहि मधुरं शीतलं परम् ॥१२६॥

दूध से निकाला मक्खन अत्यन्त चिकना है, आंखों में हित है, रक्तपित्त को जीतता है, वीर्य को पुष्ट करता है, बल को करता है, मल को बांधता है तथा मीठा और उत्तम शीतल है॥१२६॥

घृतनामगुणाः

घृतमाज्यं हविः सर्पिराधारममृताह्वयम् ।
घृतं रसायनं स्वादु चक्षुष्यं गुरु दीपनम् ॥१२७॥

घृत, आज्य, हवि, सर्पि, आघार, अमृताह्वय ये नाम घृत के हैं। घृत बुढ़ापे को दूर करता है, स्वादु है, नेत्रों को हित है, भारी है, अग्नि को करता है॥१२७॥

शीतवीर्यं विषालक्ष्मीवातपित्तानिलापहम् ।
अत्यभिष्यंदि कान्त्योजस्तेजोलावण्यबुद्धिकृत् ॥१२८॥

घृत—शीतवीर्य वाला है, विष, दुष्टकान्ति, वात इनको नाशता है, अत्यन्त अभिष्यन्दि है, कान्ति, बल, तेज, लावण्य, बुद्धि इनको करता है॥१२८॥

उदावर्त्तज्वरोन्मादशूलानाहव्रणाञ्जयेत् ।
स्निग्धं कफप्रदं रूक्षं क्षयवीसर्परक्तजित् ॥१२९॥

उदावर्त, ज्वर, उन्माद, शूल, अफारा, घाव इनको जीतता है, चिकना है, कफकारक है, रूखा है क्षय, विसर्प, रक्त इनको जीतता है॥१२९॥

स्वर्यं क्षतहरं प्रायः शस्यते बालवृद्धयोः ।
घृतं क्षीरभवं ग्राहि शीतलं नेत्ररोगजित् ॥१३०॥

स्वर में हित है, विशेषकर बालक और वृद्धों को श्रेष्ठ है। दूध से निकला घृत मल को बांधता है, शीतल है, नेत्ररोग को जीतता है॥१३०॥

निहन्ति पित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान् ।
पुराणंकटुकं पाके सर्पिर्दोषत्रयापहम् ॥१३१॥

पित्त, दाह, रक्तविकार, मद, मूर्च्छा, भ्रम, वात इनको नाशता है। पुराना घृत पाक में चर्परा है, त्रिदोष को नाशता है॥१३१॥

श्रोत्रनेत्रशिरःशूलकुष्ठापस्मारशोथजित् ।
योनिरोगज्वर श्वासकुष्ठार्शोगुल्मपीनसान् ॥१३२॥

कर्णरोग, नेत्ररोग, शिर का शूल, कुष्ठ, मृगीरोग, शोजा इनको जीतता है।

योनिरोग, ज्वर, श्वास, कुष्ठ, बवासीर, गुल्म, पीनस इनको नाशता है।।१३२।।

निहन्ति दीपनं बस्तिनस्यपूर्त्तिषु शस्यते ।
घृतमण्डोऽपि घृतवद्गुणैस्तीक्ष्णो लघुः सरः ।।१३३।।

अग्नि को जगाता है, बस्ति में और नस्य में श्रेष्ठ है, घृत की छांछ में भी घृत के समान गुण हैं, परंतु तेज है, हलका है और दस्तावर है।।१३३।।

दशवर्षात्परं सर्पिः कौम्भमित्यभिधीयते ।
रक्षोघ्नं लघु तस्मात्तु गुणैः श्रेष्ठं महाघृतम् ।।१३४।।

दशवर्ष से उपरांत घृत कौंभ इस नाम से कहा जाता है। यह राक्षस दोष को नाशता है, हलका है, महाघृत गुणों करके इससे श्रेष्ठ है।।१३४।।

घृतस्य गुणदोषौ तु क्षीरतुल्यौ समादिशेत् ।
सर्वेषु गुणकृद्गव्यमाविकं निन्दितं पुनः ।।१३५।।

घृत के गुण और दोष दूध के समान कहे हैं। सब घृतों में गाय का घृत गुणकारी है और भेड़ का घृत निंदित है।।१३५।।

तैलगुणाः

तैलमुष्णं गुरु स्थैर्यं बलवर्णकरं सरम् ।
वृष्यं विकाशि विशदं मधुरं रसपाकयोः ।।१३६।।

तेल गर्म है, भारी है, स्थिरपन में हित है, बल और वर्ण को करता है, दस्तावर है, वीर्य को पुष्ट करता है, प्रकाशता है, फैलने वाला है तथा रस और पाक में मीठा है।।१३६।।

सोष्णं[1] कषायनुरसं तिक्तं श्लेष्मानिलापहम् ।
विपाके मधुरं तीक्ष्णं बृंहणं रक्तपित्तजित् ।।१३७।।

गर्म किया तेल कषैले अनुरसवाला है, कड़ुवा है, कफवात को नाशता है, पाक में मीठा है, तेज है, धातु को पुष्ट करता है और रक्तपित्त को जीतता है।।१३७।।

श्लेष्मलं कटु विण्मूत्रत्वग्गर्भाशयशोधनम् ।
दीपनं मतिदं[2] केश्यं व्यायामव्रणमेहनुत् ।।१३८।।

कफ को करता है, चर्परा है, और मल, मूत्र, त्वचा, गर्भाशय इनको शोधता है। यह अग्नि को जगाता है, बुद्धि को देता है, बालों में हित है और परिश्रम, घाव, प्रमेह इनको दूर करता है।।१३८।।

श्रोत्रयोनिशरःशूलनेत्ररोगविनाशनम् ।

---

१ सूक्ष्ममित्यपि पाठः । २ कान्तिदमिति पाठः ।

मथितच्युतविच्छिन्नभग्नव्यालविषादिषु ।
क्षतेऽग्निदग्धे तत्पथ्यं पानाभ्यङ्गादिभिः सदा ।।१३९।।

कान के रोग, योनिरोग, शिर का शूल, नेत्ररोग इनको नाशता है। मथित हुआ गिरा हुआ, कटा टूटा हुआ, सर्पविष आदि, चोट, अग्नि में जला हुआ इनमें पीने और मालिश करने आदि से सब काल में पथ्य है।।१३९।।

घृतमब्दात्परं पक्वं हीनवीर्यं प्रजायते ।
तैलं पक्वमपक्वं वा चिरस्थायि गुणाधिकम् ।।१४०।।

घृत वर्ष से उपरांत पका हुआ हीनवीर्य वाला हो जाता है और तेल पका वा विना पका और बहुत दिन का धरा हुआ उत्तम गुणोंवाला हो जाता है।।१४०।।

एरण्डतैलगुणाः

एरण्डतैलं मधुरमुष्णं दीपनशोधनम् ।
वृष्यं त्वच्यं वयः स्थापि मेधाकान्तिबलप्रदम् ।
कषायानुरसं सूक्ष्मं योनिशुक्रविशोधनम् ।।१४१।।
हन्ति वातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ।
वातशोणितशूलादिव्रणशोथामविद्रधीन् ।।१४२।।

एरण्ड का तेल मीठा है, गर्म है, अग्नि को दीपन करता है, शोधन करता है, वीर्य को पुष्ट करता है, त्वचा में हित है, अवस्था को ठहराता है और बुद्धि, कांति, बल इनको देता है। यह कषैला अनुरस वाला है, सूक्ष्म है, योनि तथा वीर्य को शोधता है और वात, उदररोग, अफारा, गुल्म, अष्ठीला, कटिग्रह, वातरक्त, शूल, घाव, शोजा, आम, विद्रधि इनको नाश करता है।।१४१–१४२।।

कटुतैलगुणाः

पृथ्वीकामूलजीमूतादन्तीकवचशिग्रुजम् ।
निम्बातसीकरञ्जार्कहस्तिकर्णेङ्गुदीभवम् ।।१४३।।
शङ्खिनीनीपकाम्पिल्लबिल्वज्योतिष्मतीकृतम् ।
कुसुम्भसर्षपोद्भूतं तैलं सौवर्चलं तथा ।।१४४।।
विपाके कटुकं तीक्ष्णमुष्णं तिक्तं सरं लघु ।
हन्तिकुष्ठामयं श्लेष्ममेहमूर्च्छा मयक्रिमीन् ।।१४५।।

इलायची, पीपलामूल, देवदाली, दन्ती, कौंच और सहँजना इनका तेल और नींब, अलसी, करंजुवा, आक लाल, एरण्ड अथवा हस्तिकंद, गोंदनी इनका तेल, शंखिनी का तेल, कदम्ब का तेल, रोचनी तथा वेल का तेल, मालकांगनी का तेल, कुसुंभ का तेल, सरसों का तेल, सुवर्चला का तेल ये सब पाक में चर्परे हैं, तेज हैं, गर्म हैं, कडुवे

हैं, फैलने वाले हैं, हलके हैं और कुष्ठरोग, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा, कृमि इनको नाश करते हैं।।१४३-१४५।।

निम्बतैलगुणाः

निम्बतैलं जयेत्कुष्ठं व्रणश्लेष्मज्वरक्रिमीन् ।।१४६।।

नींव का तेल कुष्ठ, घाव, कफ, ज्वर, कृमि इनको नाशता है।।१४६।।

अतसीतैलगुणाः

अतसीतैलमाग्नेयं स्निग्धोष्णं कफपित्तनुत् ।
कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरंगुरु ।।१४७।।

अलसी का तेल आग्नेय है, चिकना है, गरम है, कफ पित्त को दूर करता है, पाक में चर्परा है, नेत्रों को हित नहीं है, बल को करता है, वात को हरता है और भारी है।।१४७।।

सार्षपतैलगुणाः

सार्षपं कृमिनुत्तैलं कुष्ठकण्डूहरं लघु ।
पित्तास्रदूषणं हन्ति मेहकर्णशिरोगदान् ।।१४८।।

सरसों का तेल कृमियों को दूर करता है, कुष्ठ तथा खाज को हरता है, हलका है, पित्तरक्त को दूषित करता है, प्रमेह कान के रोग, शिर के रोग इनको दूर करता है।।१४८।।

कुसुम्भतैलगुणाः

कौसुम्भं कटुकं तैलमचक्षुष्यं बलप्रदम् ।
केवलानिलनुत्तीक्ष्णं विदाह्युष्णं द्विदोषकृत् ।।१४९।।

कुसुम्भे के बीजों का तेल चर्परा है, नेत्रों को हित नहीं है बल को देता है, अकेला वात को दूर करता है, तेज है, दाह को करता है, गरम है और दो दोषों को उत्पन्न करता है।।१४९।।

ज्योतिष्मतीतैलगुणाः

ज्योतिष्मतीभवं तैलं पित्तलं स्मृतिबुद्धिदम् ।।१५०।।

मालकांगनी का तेल पित्त को करता है, तथा स्मरण शक्ति और बुद्धि को बढ़ाता है।।१५०।।

नारिकेलादितैलगुणाः

[1]अक्षोटिकाहिमुक्ताक्षनारिकेलभवं हरेत् ।
तैलं पित्तानिलं केश्यं गुरु श्लेष्मकरं हिमम् ।।१५१।।

---

१ अक्षोटवातादभवमिति पाठोऽन्यत्र ।

अखरोट, सांप की काँचली, बहेड़ा, नारियल इनका तेल पित्तवात को नष्ट करता है, केशों को हित है, भारी है, कफ को करता है, और शीतल है॥१५१॥

शिंशपादितैलगुणाः

शिंशपागुरुगण्डीररसालामरदारुजम्* ।
तैलं कषायं कटुकं तिक्तंदुष्टव्रणापहम् ।
वातरक्तविषश्लेष्मकण्डूकुष्ठानिलाञ्जयेत् ॥१५२॥

सीसम, अगर, थोहर, ईख देवदारु इनका तेल कषैला और चर्परा है, कड़ुवा है, दुष्ट घाव को नाशता है, और वातरक्त, विष, कफ, खाज, कुष्ठ, वात इनको दूर करता है॥१५२॥

भल्लातकतैलगुणाः

भल्लातकं तौवरकं वीर्योष्णं स्वादु तिक्तकम् ।
कुष्ठोर्ध्वाधस्त्रिदोषास्रमेदोमेहकृमीन्हरेत् ॥१५३॥

भिलावे का तेल कषैला है, वीर्य में गर्म है, स्वादु है, कड़ुवा है और कुष्ठ, ऊर्ध्वदोष, अधोरोग, त्रिदोष, रक्त, मेद, प्रमेह, कृमि इनको हरता है। विना युक्ति से इनका सेवन करने से सूजन खाज आदि उपद्रव होते हैं॥१५३॥

पालाशमाधूकपाटलतैलगुणाः

तैलं पालाशमाधूकपाटलाफलसम्भवम् ।
कषायं मधुरं दाहपित्तश्लेष्मगदान् हरेत् ॥१५४॥

केसू, महुवा, पाटलाफल इनका तेल कषैला और मीठा है, तथा दाह, पित्त, कफरोग इनको जीतता है॥१५४॥

त्रपुषादितैलगुणाः

कूष्माण्डत्रपुषैर्वारुतुम्बीकालिङ्गतिक्तकैः ।
कृतं प्रियालजीवन्तीश्लेष्मान्तकभवं तथा ॥१५५॥
तैलं गुरु स्वादुपाकं शीतं मूत्रप्रवर्त्तकम् ।
अदीपनमभिष्यन्दि कफदंवातपित्तजित् ॥१५६॥

पेठा, ककड़ी, खरबूजा, तुम्बी, तरबूज, परवल, चिरौंजी, जीवंती, लिसोड़ा इनका तेल भारी है, पाक में स्वादु है, शीतल है, मूत्र को प्रवृत्त करता है, दीपन नहीं है, अभिष्यंदी है, कफ को देता है, और वातपित्त को जीतता है॥१५५–१५६॥

एकैषिजतैलगुणाः

एकैषिजं हिमं तैलं पित्तघ्नं श्लेष्मवातकृत् ॥१५७॥

---

* सरलेति पाठः ।

पाठा का तेल शीतल है, पित्त को नाशता है, और कफवात को करता है॥१५७॥

यवतिक्तोद्भवतैलगुणाः

यवतिक्तोद्भवं तैलमीषत्तिक्तं रसायनम् ।
दीपनं लेखनं मेध्यं पथ्यं दोषत्रयापहम् ॥१५८॥

यवतिक्ता (येवेची) का तेल कुछ कड़ुवा है, बुढ़ापे को दूर करता है, अग्नि को जगाता है, लेखन है, बुद्धि को बढ़ाता है, पथ्य है और त्रिदोष को नाश करता है॥१५८॥

आम्रतैलगुणाः

आम्रतैलं मनाक्तिक्तं मधुरं नातिपित्तकृत् ।
कफवातहरं रूक्षं सुगन्धि विशदं परम् ॥१५९॥

आम का तैल किंचित् कड़ुवा है, मीठा है, पित्त को अत्यंत नहीं करता है कफवात को हरता है, रूखा है, सुगन्धवाला और फैलने वाला है॥१५९॥

स्नेहवर्गगुणाः

स्थावरा वातशमनाः स्नेहाः प्रोक्तास्तु तैलवत् ।
गोणमेतेषु तैलत्वं बलवर्णकरं पुनः ॥१६०॥

सब वृक्षादिकों के तेल तेल की तरह वात को नाशने वाले कहे हैं। इनमें तेलपणा गौण है, परन्तु ये बल, वर्ण को करते हैं॥१६०॥

मेदआदिगुणाः

मेदोमज्जावसा ज्ञेया ग्राम्यानूपौदकोद्भवाः ।
गुरवो मधुराश्चोष्णाः समीरणविनाशनाः ॥१६१॥

ग्राम्य, आनूप, औदक इन देशों में रहने वाले जीवों की मेद, मज्जा और वसा भारी है, मीठी है, गर्म है और वात को नाशती है॥१६१॥

जाङ्गलैकशफादीनां क्रव्यादानां कषायकाः ।
लघवः शीतला ज्ञेया रक्तपित्तनिबर्हणाः ॥१६२॥

जांगल देश में रहने वाले एक खुरवाले और मांस खाने वाले जीवों की मेद, मज्जा, वसा कषैली, हलकी है, शीतल है और रक्तपित्त को दूर करती है॥१६२॥

प्रतुदा विष्किरादीनां ज्ञातव्याः कफकृन्तनाः ।
घृततैलवसामेदोमज्जानो वातनाशनाः ।
यथोत्तरं परिज्ञेया विपाके स्वादवः परम् ॥१६३॥

चोंच से चुगने वाला बड़ा तोता, परेवा, खंजन, कोयल आदि और बतक, लवा, मुर्गा,

चकोर आदि जीवों की मेद, मज्जा, वसा, कफ को नाशती है। घृत, तेल, वसा, मेद मज्जा वात को नाश करते हैं। ये उत्तरोत्तर घृत से तेल और तेल से वसा ऐसे पाक में बहुत अच्छे हैं।।१६३।।

मद्यभेदनामगुणाः

मद्यं हाला सुरा शुण्डा मदिरा वरुणात्मजा ।
सुरा गन्धोत्तमा कल्या देवस्पृष्टा च वारुणी ।।१६४।।

मद्य, हाला, सुरा शुंड़ा, मदिरा, वरुणात्मजा, गन्धोत्तमा, कल्या, देवस्पृष्टा, वारुणी ये मदिरा के नाम हैं।।१६४।।

मद्यं पित्तकरं प्रायः सरं रोचनदीपनम् ।
विदाहि सृष्टविण्मूत्रं तीक्ष्णं वातकफापहम् ।।१६५।।

मदिरा प्रायः पित्त को करती है, दस्तावर है, रुचि को उपजाती है, अग्नि को जगाती है, दाह करती है, मलमूत्र को उपजाती है, तेज है और वातकफ को नाशती है।।१६५।।

विधिनाऽन्नयुतं पीतं तस्मादमृतसन्निभम् ।
अन्यथा कुरुते रोगानतिपीतं विषोपमम् ।।१६६।।

विधि से अन्न भोजन के साथ में युक्त मात्रा से पान की हुई मद्य अमृत के समान है और अयुक्ति से अनुचित रीति पर पी हुई मदिरा रोगों को करती है, बहुत पान की हुई मदिरा विष के समान है।।१६६।।

द्राक्षोत्थमविदाहित्वाद्रक्तपित्तेषु शस्यते ।
बलपुष्टिकरं मद्यं रक्तार्शोहारि दीपनम् ।।१६७।।

दाख की मदिरा दाह नहीं करने से रक्तपित्त में उत्तम है, बल और पुष्टि को करती है, रक्त की बवासीर को हरती है और अग्नि को जगाती है।।१६७।।

माध्वीकाऽल्पगुणा किञ्चित्खर्जूरमनिलप्रदम् ।
तदेव विशदं रुच्यं श्लेष्मघ्नं कर्षणं लघु ।।१६८।।

महुवे की मदिरा—अल्प गुणोंवाली है, खजूर की मदिरा वात को करती है, वही स्पष्ट है, रुचि में हित है, कफ को नाशती है, कर्षण है और हलकी है।।१६८।।

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतं मद्यं सुरा मतम् ।
सुरा गुर्वी बलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा ।
ग्राहिणी शोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ।।१६९।।

शालीचावल, सांठीचावल और पीठी आदि की हुई मदिरा सुरा मानी गयी है। सुरा भारी है और बल, दूध, पुष्टि, मेद, कफ इनको बढ़ाती है, मल को बांधती है तथा

शोजा, गुल्म, बवासीर, ग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र इनको दूर करती है।।१६९।।

पुनर्नवा शालिपिष्टैर्विहिता वारुणी मता ।।१७०।।

साठी और शाली चावलों की पीठी से बनी हुई मदिरा वारुणी मानी गई है।।१७०।।

सुरावद्वारुणी लघ्वी पीनसाध्मानशूलनुत् ।
प्रसन्ना स्यात्सुरामण्डस्तस्मात्कादम्बरी घना ।।१७१।।

वारुणी में भी सुरा के सब गुण हैं, परन्तु हलकी है और पीनस, आध्मान, शूल इनको दूर करती है, सुरा का मण्ड प्रसन्ना होती है। सुरामण्ड से घनरूप कादंबरी होती है।।१७१।।

जङ्गलस्तादधः प्रोक्तो जङ्गलान्मेदको घनः ।
पक्वशो जङ्गलः सारः सुराबीजं तु किण्वकम् ।।१७२।।

उससे नीच जंगल कहा है, जंगल से घनरूप मेदक होता है, जंगल का साररूप पक्वश होता है, सुरा का बीज किण्वक होता है।।१७२।।

प्रसन्नानाऽऽहगुल्मार्शश्छर्द्यरोचकवातजित् ।
दीपन्याध्मानहृत्कुक्षितोदशूलप्रणाशिनी ।।१७३।।

प्रसन्ना, अफारा, गुल्म, बवासीर, छर्दि, अरोचक, वात इनको जीतती है अग्नि को जगाती है, आध्मान को हरती है, कूख के चमके और शूल को नाशती है।।१७३।।

कादम्बरी गुरुर्वृष्या दीपनी वातकृत्सरा ।
जङ्गलः कफनुद् ग्राही शोफार्शोग्रहणीहरः ।।१७४।।

कादम्बरी भारी है, स्त्रीसंग में हित है, अग्नि को जगाती है, वात को करती है, और फैलने वाली है। जंगल—कफ को दूर करती और मल को बांधती है, तथा शोजा, बवासीर, ग्रहणी इनको हरती है।।१७४।।

मेदको मधुरो बल्यः स्तम्भनः शीतलो गुरुः ।
पक्वशो हृतसारत्वाद्विष्टम्भी वातवर्द्धनः ।।१७५।।

मेदक मीठा है, बल को करता है, वीर्य को थांमता है, तथा शीतल और भारी है। सारयुक्त होने से पक्वश विष्टंभ करता है और वात को बढ़ाता है।।१७५।।

किण्वकं वातशमनमहृद्यं दुर्जरं गुरु ।
आक्षिकी सा सुरा या स्यादक्षत्वक्शालितण्डुलैः ।।१७६।।

किण्वक वात को शांत करता है, हृद्य नहीं है, देर में जरता और भारी है। बहेड़ा की छाल और शालीचावलों से बनी मदिरा आक्षिकी होती है।।१७६।।

आक्षिकी पाण्डुशोफार्शःपित्तास्रकफकुष्ठनुत् ।
किञ्चिद्वातकरा रूक्षा दीपनी रेचनी लघुः ॥१७७॥

आक्षिकी पाण्डु, शोजा, बवासीर, पित्तरक्त, कफ, कुष्ठ, इनको दूर करती है, किञ्चित् वात को करती है, रूखी है, अग्नि को जगाती है, दस्तावर है, और हलकी है॥१७७॥

यवपिष्टकृतं मद्यं प्रोक्तं यवसुरा च सा ।
काकोलिकोहली ज्ञेया मैरेयो धान्यजासवः ॥१७८॥

जवों की पीठी से बनाई मदिरा यवसुरा होती है, काकोलिकोहली, मैरेय, धान्यजासव ये इसके नाम हैं॥१७८॥

आसवश्च सुरायाश्च द्वयोरप्येकभाजनम् ।
साधनं* तद्विजानीयान्मैरेयमुभयात्मकम् ॥१७९॥

आसव और सुरा इन दोनों का एक ही पत्र होता है, और उसी प्रकार साधन जानना दोनों का मैरेय होता है॥१७९॥

क्वचित्तू धातकीपुष्पं गुडधान्याम्बुसाधितम् ।
गुर्वी यवसुरा रूक्षा स्याद्विष्टम्भत्रिदोषकृत् ॥१८०॥

कहा तो धाय का फूल, गुड़ और अन्न के पानी से साधित किया मैरेय होता है। यवसुरा भारी है, रूखी है, विष्टंभ और त्रिदोष को करती है॥१८०॥

काकोली बृंहणी वृष्या दृष्टिमान्द्यप्रदा गुरुः ।
मैरेयं बृंहणं वृष्यं गुरु सन्तर्पणं सरम् ॥१८१॥

काकोली धातु को पुष्ट करती है, स्त्रीसंग में हित है, दृष्टि को मन्द करती है, भारी है। मैरेय धातु को पुष्ट करती है, स्त्रीसंग में हित है, भारी है, तृप्त करने वाली है और दस्तावर है॥१८१॥

मद्यं सर्वरसं जातं मधूलकमुदीर्यते ।
मधूलकं गुरु स्वादु स्निग्धं शुक्रकफप्रदम् ॥१८२॥

सब रसोंवाली उपजी मदिरा मधूलक कही है। मधूलक भारी है, स्वादु है, चिकनी है, वीर्य और कफ को उत्पन्न करती है॥१८२॥

शर्करो दीपनः स्वादुः पाचनो रोचनो लघुः ।
स्त्रीविलासकरो वातशोषबस्तिविकारनुत् ॥१८३॥

शार्करमद्य, अग्निको जगाता है, स्वादु है, पाचन है, रुचि को करता है, हलका है,

---

* सन्धानमिति पाठोऽपि ।

स्त्रीसंभोग में सुख देता है, वात, शोष, बस्तिविकार इनको दूर करता है।।१८३।।

मध्वासवो लघू रूक्षः कुष्ठमेहविषापहः ।
गौडोऽग्निवर्द्धनो वर्णबलकृत्तर्पणः कटुः ।
तिक्तको बृंहणः स्वादुः सृष्टविण्मूत्रमारुतः ।।१८४।।

मध्वासव हलका है, रूखा है, कुष्ठ, प्रमेह, विष इनको नाशता है, गौड़मदिरा अग्नि को बढ़ाती है, वर्ण और बल को करती है, तृप्ति करती है, चर्परी है, कड़ुवी है, धातु को पुष्ट करती है, स्वादु है मल, मूत्र, वात इनको उत्पन्न करती है।।१८४।।

इक्षोः पक्वरसः पक्वः सीधुः पक्वरसः स्मृतः ।
आसवः सैव विहितो बुधैः शीतरसो मतः ।।१८५।।

ईख का पका हुआ रस सीधु होता है, वही वैद्यों ने पक्वरस कहा है, उसी का आसव बनने से शीतरस कहा जाता है।।१८५।।

सीधुः पक्वरसःश्रेष्ठः स्वराग्निबलवर्णकृत् ।
वातपित्तकरो हृद्यःस्नेहनो रोचनो जयेत् ।
विबन्धमेहशोफार्शःशोफोदरकफामयान् ।।१८६।।

सीधु और पक्वरस श्रेष्ठ है, स्वर अग्नि, बल, वर्ण इनको करता है, वातपित्त को करता है, दिल को ताकत देता है, शरीर को चिकना बनाता है, रुचि को उत्पन्न करता है, विबन्ध, प्रमेह, शोजा, बवासीर, उदररोग, कफरोग इनको जीतता है।।१८६।।

तस्मादल्पगुणःशीत रसः संलेखनः स्मृतः ।।१८७।।

उससे अल्पगुणों वाला शीतरस, फैलने वाला है, अच्छी तरह लेखन कहा है ।।१८७।।

जाम्बवः क्षौद्रसम्भूतो जम्बूरसगुडोद्भवः ।
जाम्बवो बद्धनिष्यन्दः कषायोऽनिलकोपनः ।।१८८।।

शहद से बनी मदिरा जांबव होती है, जामुन का रस और गुड़ से बनी मदिरा जांबव होती है, जांबव आंख को मिचाती है कषैली है वात को कुपित करती है।।१८८।।

अरिष्टासवादि

अरिष्टासवसीधूनां गुणान् कर्माणि चादिशेत् ।
बुद्ध्या यथा स्वसंस्कारमवेक्ष्य कुशलो भिषक् ।।१८९।।

अरिष्ट, आसव, सीधु इनके गुण कर्मो को बुद्धि से विचार कर मद्य जिस संस्कार से

बनी उसका वैसा गुण कुशल वैद्य देखकर कहै।।१८९।।

त्याज्यमद्यम्

सान्द्रं विदाहि दुर्गन्धि विरसं कृमिसंकुलम् ।
अहृद्यं तरुणं रूक्षमुष्णं दुर्भाजने स्थितम् ।।१९०।।
अल्पौषधं पर्युषितमत्यर्थं पिच्छिलं च यत् ।
कफप्रकोपि तन्मद्यं दुर्जरं च विशेषतः ।।१९१।।

सान्द्र, दाह करनेवाली, दुर्गंधवाली, रस से रहित, कीड़ों से युक्त हुई, हृदय को अप्रिय, ताजी बनी हुई, रूखी, बुरे पात्र में स्थित, अल्प औषधोंवाली, बहुत दिनों की धरी, झागोंवाली ऐसी मदिरा कफ को कुपित करती है और विशेषकरके देर में जीर्ण होती है।।१९०–१९१।।

पित्तप्रकोपि बहुलं तीक्ष्णमुष्णं विदाहि च ।
अहृद्यं पेशलं पूति कृमिलं विरसं गुरु ।।१९२।।

बहुत तेज गर्म और विशेषकर दाह करनेवाली ऐसी मदिरा पित्त को कुपित करती है, हृदय को अप्रिय, दुर्गंधवाली, कीड़ों से युक्त, रस से वर्जित और भारी होती है।।१९२।।

तथा पर्युषितं वापि विद्यादनिलकोपनम् ।
सर्वदोषैरुपेतं तु सर्वदोषप्रकोपनम् ।।१९३।।

तथा पर्युषित (बासी) मदिरा वात को कुपित करती है और सब दोषों से युक्त हुई मदिरा सब दोषों को कुपित करती है।।१९३।।

सेवनयोग्यमद्यम्

चिरस्थितं जातरसं दीपनं कफवातजित् ।
रुच्यं प्रसन्नं सुरभि मेध्यं सेव्यं महाहवम् ।।१९४।।

बहुत काल की धरी और उत्पन्न हुए रसवाली मदिरा अग्नि को जगाती है, कफ को और वात को जीतती है, रुचि को पैदा करनेवाली, निर्मल, सुगंधित, बुद्धि को बढ़ाने वाली ऐसी मदिरा सेवन करने के योग्य है।।१९४।।

अज्ञातगुणमद्यस्य निषेधः

तस्मान्नैकप्रकारस्य मद्यस्य रसकीर्तनात् ।
स सौक्ष्म्यादोष्ण्यवातत्वाद्विकाशित्वात्त्ववह्निनुत् ।।१९५।।

इसलिये एक प्रकारकी मदिराके रस वीर्यको जाने बिना सेवन न करे वह मदिरा सूक्ष्मपने से और गर्भ वातवाली और विकाशी होने से अग्नि को मन्द नहीं करती है।।१९५।।

समेत्य हृदयं प्राप्त धमनीरूर्ध्वमार्गतः ।
विक्षुभ्येन्द्रियचेतांसि मदयत्याशु वीर्यतः ॥१९६॥

हृदय को अच्छी तरह प्राप्त होकर धमनियों के ऊपर प्राप्त हो इंद्रिय और चित्त को बिगाड़ वीर्य से शीघ्र मद करती है॥१९६॥

दोषभेदेन मदः

चिरेण श्लेष्मके पुंसि पातनो जायते मदः ।
अचिराद्वातिके दृष्टः पैत्तिके शीघ्रमेव च ॥१९७॥

कफ की प्रकृति वाले पुरुष में बहुत देर में गिराने वाला मद उपजता है, वात की प्रकृति वाले पुरुष को थोड़ी देर में मद होता है और पित्त की प्रकृति वाले को शीघ्र मद उपजता है॥१९७॥

नवीनमद्यादिगुणाः

नवं मद्यमभिष्यन्दि त्रिदोषजनकं सरम् ।
अरिष्टं बृंहणं दाहि दुर्गन्धि विशदं गुरु ॥१९८॥

नई मदिरा अभिष्यंदी है, त्रिदोष को उपजाती है, दस्तावर है, अरिष्ट करता है, दाह करता है, दुर्गंधवाला तथा स्पष्ट और भारी है॥१९८॥

जीर्णमद्यादिगुणाः

जीर्णं तदेव रोचिष्णु कृमिश्लेष्मानिलापहम् ।
हृद्यं सुगन्धि सुगुणं लघु स्रोतोविशोधनम् ॥१९९॥

वही पुराना मद्य रुचि को करता है और कृमि, कफ, वात को नाशता है, दिल को ताकत देता है, सुगंधित और सुन्दर गुणों वाला है, हलका है और नाड़ी के स्रोतों को शोधता है॥१९९॥

मदभेदाः

सात्विके गीतहास्यादि राजसे साहसादिकम् ।
तामसे निन्द्यकर्माणि निद्रादि कुरुते तदा ॥२००॥

सात्विक प्रकृति वाले को मदिरा पीने से गीत और हँसना आदि उत्पन्न होते हैं, रजोगुण की प्रकृति वाले को साहसादि अर्थात् हठ आदि होता है, तमोगुण की प्रकृति वाले को मदिरा निंदित कर्म और नींद आदि में रत करती है॥२००॥

चक्रगुणाः

चुक्रं कफघ्नं तीक्ष्णोष्णं लघु रोचनपाचनम् ।
पाण्डुक्रिमिहरं रूक्षं भेदनं रक्तपित्तकृत् ॥२०१॥

चुक्र कफ को नाश करता है, तेज है, गर्म है, हलका है, रुचि को उत्पन्न करता है,

पाचन है, पांडु और कृमि को हरता है, रूखा है, भेदन है और रक्तपित्त को उत्पन्न करता है॥२०१॥

गुड़ादिजनितमद्यगुणा:

गौडादिरसयुक्तानि मद्यान्युक्तानि यानि च ।
यथापूर्वं गुरुतराण्यभिष्यन्दकराणि च ॥२०२॥

गौड़ादि रस से युक्त जो मद्य कही हैं, वे पूर्व पूर्व क्रम से भारी और अभिष्यंदी है॥२०२॥

कांजिकगुणा:

स्यात्काञ्जिकं तु सौवीरमारनालं तु दोषकृत् ।
काञ्जिकं शिशिरस्पर्शं पाचनं रोचनं लघु ॥२०३॥

कांजिक, सौवीर, आरनाल ये कांजी के नाम हैं। कांजी दोष को करती है, शीतल स्पर्श वाली है, पाचन है, रुचि को उपजाती है और हलकी है॥२०३॥

तुषोदकादिभेदगुणा:

तुषोदकं यवैरामैः सतुषै सकलैः कृतम् ।
सौवीरकं कृतं त्वामैः पक्वैर्वा निस्तुषैर्यवैः ॥२०४॥

कच्चे जवों से बनाया हुआ तुषोदक होता है, तुषोंसहित कच्चे जवों से बनाया हुआ अथवा तुषोंरहित पक्के जवों से बनाया हुआ सौवीर होता है॥२०४॥

***सर्वै रसै रसाम्लं स्यात्सौवीरकमिति क्वचित् ।**
तुषाम्बु दीपनं हृद्यं पाण्डुक्रिमिगदापहम् ॥२०५॥

सब रसों से रसाम्ल होता है। कोई इसको सौवीरक कहते हैं। तुषोदक अग्नि को जगाता है, दिल को ताकत देता है और पांडु, कृमिरोग इनको नाश करता है॥२०५॥

सौवीरक-- कांजिकयोर्गुणा:

सौवीरकं ग्रहण्यर्शोनाशनं भेदि दीपनम् ।
धान्याम्लं धान्ययोनित्वात्प्रीणनं लघु दीपनम् ॥२०६॥

सौवीर ग्रहणी और बवासीर को नाशता है, भेदन है, अग्नि को जगाता है। धान्याम्ल धान्य से उपजने वाला होने से तृप्ति करता है, हलका है और अग्नि को चैतन्य करता है॥२०६॥

स्पर्शाद्दाहकरं पानात्पाचनं श्लेष्मनाशनम् ।

---

* गोधूमैस्तु सुराम्लं स्यादिति पाठोऽपि ।

गण्डूपान्मुखवैरस्यदौर्गन्ध्यकफकृन्तनम् ॥२०७॥

स्पर्श से दाहकारक है, पीने से पाचन है, कफ को नाशता है, गरारासे मुख के विरसपन, दुर्गंध और कफ को दूर करता है॥२०७॥

[दाहज्वरापहं स्पर्शात्पनाद्वातक्षयापहम् ।
विबंधघ्नमविग्राहि दीपनं चापि कांजिकम् ॥]

कांजी स्पर्श से दाह और ज्वर को नष्ट करती है, पीने से वात और क्षय को हरती है, विबंधघ्न और दीपन है, ग्राही नहीं है॥]

गोहस्तिमहिषादिमूत्रगुणाः

मूत्रं गोनागमहिषीहयाजाविखरोष्ट्रजम् ।
नराणां च भवेत्सर्वं पाचनं दीपनं लघु ॥२०८॥

गाय, हाथी, भैंस, घोड़ा, बकरी भेड़, गधा, ऊंट और मनुष्य इन सबके मूत्र पाचन हैं, अग्नि को जगाते हैं और हलके हैं॥२०८॥

लवणानुरसं तिक्तं रूक्षं स्रोतोविशोधनम् ।
पित्तलं कटुकं हृद्यं भेदि वातानुलोमनम् ॥२०९॥

तथा नमक के अनुरस वाले हैं, कडुवे हैं, रूखे हैं, स्रोतों को शोधते हैं, पित्त को करते हैं, चर्परे हैं, दिल को ताकत देते हैं, भेदन हैं और वात को अनुलोमन करते हैं॥२०९॥

निहन्ति वातगुल्मार्श शोफोदरकफक्रिमीन् ।
कुष्ठपाण्डुगदानाहविषशूलारुचीस्तथा ॥२१०॥

और वात, गुल्म, बवासीर, शोजा, उदररोग, कफ, कृमिरोग, कुष्ठ पांडुरोग, अफारा, विष, शूल, अरुचि इनको नाश करते हैं॥२१०॥

गो–हस्ति–महिष–मूत्राणां गुणाः

गोमूत्रं तेषुसर्वेषु मूत्रयोगे प्रशस्यते ।
हस्तिमूत्रं विषार्शोघ्नं कुष्ठगुल्मक्रिमीञ्जयेत् ।
माहिषं शोफगुल्मार्शःपाण्डुमेहेषु योजयेत् ॥२११॥

उन सब मूत्रों में गोमूत्र श्रेष्ठ है और हाथी का मूत्र विष, बवासीर, कुष्ठ, गुल्म और कृमियों को नाशता है, शोजा, गुल्म, बवासीर, पांडु प्रमेह इन रोगों में भैंस के मूत्र का प्रयोग करना॥२११॥

अश्वमूत्रगुणाः

आश्वं भेदि विशेषेण कफदद्रुकृमीन्हरेत् ॥२१२॥

घोड़े का मूत्र विशेषता से भेदन है और कफ, दाह, कृमि इनको हरता

है।।२१२।।

अजामूत्रगुणाः

आजं गुल्मविषश्वासकामलापाण्डुदोषजित् ।।२१३।।

बकरी का मूत्र, गुल्म, विष, श्वास, कामला, पांडु और दोषों को जीतता है।।२१३।।

आविकमूत्रगुणाः

आविकं शोफकुष्ठार्शोमेहवर्चोग्रहापहम् ।।२१४।।

भेड़ का मूत्र शोजा, कुष्ठ, बवासीर, प्रमेह और मल के बंध को नाश करता है।।२१४।।

गर्दभमूत्रगुणाः

गार्दभं ग्रहणीमेहकुष्ठोन्मादकृमीञ्जयेत् ।।२१५।।

गधे का मूत्र ग्रहणी, प्रमेह, कुष्ठ, उन्माद और कृमिरोग को जीतता है।।२१५।।

उष्ट्रमूत्रगुणाः

औष्ट्रमुन्मादशोफार्शःकृमिशूलोदरापहम् ।।२१६।।

ऊंट का मूत्र उन्माद, शोजा, बवासीर, कृमि, शूल और उदररोग को नाश करता है।।२१६।।

नरमूत्रगुणाः

नरमूत्रं गरं[1] हन्ति सेवितं सुरसायनम् ।।२१७।।

मनुष्य का मूत्र सेवन करने से (रोग) विष नाशक है और रसायन है।।२१७।।

स्त्रीपुंसमूत्रे विशेषः

गोऽजाविमहिषीणां च स्त्रीणां मूत्रं प्रशस्यते ।
खरोष्ट्रेभनराश्वानां पुंसां मूत्रं हितं मतम् ।।२१८।।

इति मदनपालनिघण्टौ पानीयादिगुणवर्गोऽष्टमः ।।८।।

गाय, बकरी, भेड़, भैंस इन स्त्री जाति पशुओं का मूत्र श्रेष्ठ है, गधा, ऊंठ, हाथी, मनुष्य और घोड़ा इन पुरुष जातियों का मूत्र हित माना गया है।।२१८।।

इति श्रीमदनपालनिघंटौ वैद्यरत्नपं०–रामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषातत्व–प्रकाशिनीहिन्दीटीकायां पानीयादिगुणवर्गोऽष्टमः ।।८।।

*****
****

---

१ गदमित्यपि पाठः

मृद्भक्षिताऽनेन रुषेति वक्त्रे प्रसारिते वीक्ष्य ततो जगन्ति ।
सविस्मयं सादरमीक्ष्यमाणं यशोदया नन्दसुतं नमामि ।।१।।

मट्टी खाकर रोष में पसारे हुए मुख में संपूर्ण चराचर लोकों को देख आश्चर्य और आदरसहित यशोदा से देखे हुए नन्दसुत को प्रणाम करता हूं।।१।।

इक्षुभेदनामगुणाः

इक्षुर्महारसो वेणुर्निःसृतो गुडपत्रकः ।
तृणराजो मधुतृणो गण्डीरोऽमृतपुष्पकः ।।२।।

इक्षु, महारस, वेणु, निःसृत, गुड़पत्रक, तृणराज, मधुतृण, गण्डीर, अमृतपुष्पक।।२।।

ह्रस्वमूलो लोहितेक्षुः पौण्ड्रिकः पौण्ड्रकोऽपरः ।
रसालः सुकुमारोऽपि कृष्णेक्षुर्भीरुको मतः ।।३।।

ह्रस्वमूल, लोहितेक्षु, पौंड्रिक ये ईख के नाम हैं। और पौंड्रक, रसाल, सुकुमार, कृष्णेक्षु, भीरुक ये उसके भेद हैं।।३।।

इक्षुः स्वादुर्गुरुः शीतो वृष्यः स्निग्धो बलप्रदः ।
जीवनो वातपित्तघ्नः कुर्यान्मूत्रकफक्रिमीन् ।।४।।

ईख स्वादु है, भारी है, शीतल है, वृष्य है, चिकनी है, बल को देती है, जीवन है, वातपित्त को नाशती है और मूत्र, कफ, कृमि इनको उत्पन्न करती है।।४।।

स मूले मधुरोऽत्यर्थं मध्ये मधुर एव च ।
अग्रग्रन्थिषु विज्ञेयो लवणो मूत्रलस्तथा ।।५।।

जड़ में ईख बहुत मीठी है, मध्य में मीठी है, अग्रभाग में और गांठों में नमक के स्वाद वाली और मूत्र को उपजाने वाली है।।५।।

लोहितेक्षुर्गुरुः शीतो दाहपित्तास्रकृच्छ्रनुत् ।
पौण्ड्रकः शीतलः स्निग्धो बृंहणः कफकृत्सरः ।।६।।

लाल ईख भारी और शीतल है, दाह, पित्तरक्त और मूत्रकृच्छ्र को दूर करती है। पौंड़ा शीतल है, चिकनी है, धातु को पुष्ट करती है, कफ को करती है और सर है।।६।।

कृष्णेक्षुस्तद्गुणो वंशः क्षारः किंचित्तु तत्समः ।
वंशवच्छतपोरोऽपि किंचिदुष्णः समीरजित् ।।७।।

काले ईख में भी यही गुण हैं। वंश नामक ईख किंचित् खारी है और पूर्वोक्त गुणों वाली है। शतपोर इख वंश-ईख के समान गुणोंवाली है और किंचित् गर्म है तथा वात को जीतती है।।७।।

कान्तारतापसौ तद्वत्काष्ठेक्षुर्वातलो हिमः ।
कासकारो गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः ।।८।।

कांतार और तापस ईख में भी ये ही गुण हैं। काष्ठेक्षु वात को करता है और शीतल है। कासकार ईख भारी है, शीतल है, रक्तपित्त और क्षय को नाशती है।।८।।

सूचीपत्रो नीलपरो नैपालो दीर्घपत्रकः ।
वातलः कफपित्तघ्नः सकषायोऽतिदाहकृत् ।।९।।

सूचीपत्र, नीलपर, नैपाल, दीर्घपत्रक, ये नैपाल ईख के नाम हैं। नैपाल ईख भारी है, दाह को करती है, कफपित्त को नाशती है, कषैली और अत्यन्त दाहकारक है।।९।।

ईक्षुरसगुणाः

दन्तनिष्पीडितस्तेषां रसः पित्तास्रनाशनः ।
शर्करासमवीर्यः स्यादविदाही कफप्रदः ।
गुरुर्विदाही विष्टम्भी यान्त्रिकस्तु प्रकीर्त्तितः ।।१०।।

दन्तों से पीड़ित किया ईख का रस पित्तरक्त को नाशता है, खांड़ के समान वीर्यवाला है, दाह को नहीं करता है, कफ को देता है और भारी है। यन्त्र से निकाला ईख का रस भारी है और दाह तथा विष्टंभ को करता है।।१०।।

मत्स्यण्डी (खण्ड आदि) नामगुणाः

सिता मत्स्यण्डिका पल्ली [1]ममाण्डी वलकस्तथा ।
अन्या विषपलद्‌गन्धा शिग्रुका कृत्तिकाऽमला ।।११।।
खण्डमन्यत्खण्डसिता माधवी मधुशर्करा ।
यवासशर्कराऽन्या सा यवासक्वाथसम्भवा ।।१२।।

सिता, मत्स्यडिका, पल्ली, ममाण्डी, वलक ये सफेद खांड़ के नाम हैं। दूसरी विषपलद्‌गंधा, शिग्रुका, कृत्तिका, अमला, खण्ड, खंडसिता ये खांड़ के नाम हैं। माधवी, मधुशर्करा ये मधुशर्करा के नाम हैं। यवासशर्करा, यवासक्वाथ संभवा ये (तरंजवीन के) नाम हैं।।११–१२।।

अन्या पुष्पसिता प्रोक्ता पुष्पसंस्कृतशर्करा ।
फाणितं क्षुद्रगुडको गुडस्त्विक्षुरसोद्भवः ।
मत्स्यण्डी ग्राहिणी बल्या गुरुः पित्तानिलापहा ।।१३।।

पुष्पसिता, पुष्पसंस्कृतशर्करा, ये शुद्ध बूरे के नाम हैं, फाणित, क्षुद्रगुड़क, गुड़,

---

१ मीनांसा इत्यपि पाठः ।

इक्षुरसोद्भव ये नाम राब, खांड़, गुड़ आदि के हैं। खांड़मल को बांधती है, बल को करती है, भारी है, पित्त और वात को नाशती है।।१३।।

सितोपलानामगुणाः

सितोपला सहागुर्वी वातपित्तहरा हिमा ।।१४।।

सितोपला, सहा ये मिश्री के नाम हैं। मिश्री भारी है, वातपित्त को हरती है और शीतल है।।१४।।

खण्डगुणाः

खण्डमप्येवमुद्दिष्टं रुच्यं पुष्टिबलप्रदम् ।।१५।।

खांड़ में भी येही गुण हैं, रुचि को बढ़ाती है तथा पुष्टि और बल को देती है।।१५।।

मधुशर्करागुणाः

माधवी शर्करा रूक्षा कफपित्तहरा गुरुः ।।१६।।

माधवी, शर्करा अर्थात् शहद की खांड़ रूखी है, शीतल है, वात को करती है, और कफपित्त को जीतती है।।१६।।

यवासशर्करागुणाः

यवासशर्करा[1] शीता वातला कफपित्तजित् ।।१७।।

यवासशर्करा अर्थात् जवासे की खांड़, शीतल है, वात को करती है और कफपित्त को जीतती है, यवास शर्करा तुरंजवीन को कहते हैं।।१७।।

पुष्पसिताशर्करानामगुणाः

सिता पुष्पसिता हृद्या रक्तपित्तहरा गुरुः ।।१८।।

सिता, पुष्पसिता ये चीनी खांड़ के नाम हैं। पुष्पसिता (बूरा) दिल को ताकत देती है, रक्तपित्त को हरती है, और भारी है।।१८।।

फाणितनामगुणाः

फाणितं गुर्वभिष्यन्दि दोषलं मूत्रशोधनम् ।।१९।।

फाणित अर्थात् राबभेद भारी है, अभिष्यंदी है, दोष को करती है, मूत्र को शोधती है।।१९।।

---

१ तुरंजवीनशीरखीस्तागुणाः

यवासशर्करा पित्तकफवातज्वरापहा । सर्वदोषहरी ज्ञेयां विरेकी यवनालजा ।।

तुरंजवीन, पित्त, कफ, वायु, ज्वर इनको नाश करती है और शीरखीस्त सब दोषों को हरती है और दस्तावर है।।

मधूकनामगुणाः

मधूकं फाणितं बस्तिदूषणं वातपित्तलम् ॥२०॥

मधूक, फाणित ये मधूक के नाम हैं। मधूक बस्ति को दूषित करता है और वातपित्त को उपजाता है, लाला और सीरे को मधूक कहते हैं॥२०॥

गुड़गुणाः

गुडः क्षारो गुरुः स्वादुर्वातपित्ताग्निकृत्सरः ।
बल्यः कृमिश्लेष्मकरो मूत्ररक्तविशोधनः ।
जीर्णोहृद्यो लघुः पथ्यो नाभिष्यन्द्यग्निपुष्टिकृत् ॥२१॥

गुड़ खारा है, भारी और स्वादु है, वातपित्त और अग्नि इनको करता है, दस्तावर और बलकारक है, कृमि और कफ को उत्पन्न करता है, तथा मूत्र और रक्त को शोधता है। पुराना गुड़ दिल को ताकत देता है, हलका है, पथ्य है, अभिष्यंदी नहीं है, तथा अग्नि और पुष्टि को करता है॥२१॥

इक्षोविकारान्विमलान् यथा कुर्युर्गुणांश्च ते ।
तृड्दाहमूर्च्छापित्तासृग्विषमेहहरा हिमाः ।
गुरवो मधुरा बल्याः स्निग्धा वातहराः सराः ॥२२॥

ईख के विकार जितने निर्मल बनावे उतने ही गुण करते हैं। तृषा, दाह, मूर्च्छा, पित्तरक्त, विष, प्रमेह इनको हरते हैं, शीतल हैं, भारी हैं, मीठे हैं, बल को करते हैं, चिकने हैं, वात को हरते हैं और सारक हैं॥२२॥

इति इक्षुवर्गः

मधुनामगुणाः

मधु पुष्पासवः पुष्परसो माक्षिकमीरितम् ।
माक्षिकं पौत्तिकं क्षौद्रं भ्रामरं मधु विस्तरात् ॥२३॥

मधु, पुष्पासव, पुष्परस, माक्षिक ये शहद के नाम हैं। शहद माक्षिक पौत्तिक, क्षौद्र, भ्रामर इन भेदों वाला होता है॥२३॥

माक्षिकं तैलसङ्काशं पौत्तिकं घृतसन्निभम् ।
क्षौद्रं कपिलवर्णं स्याद्भ्रामरं स्फटिकोपमम् ॥२४॥

तेल के समान कांतिवाला माक्षिक होता है, घृत के समान कांतिवाला पौत्तिक होता है, कपिल रङ्गवाला क्षौद्र होता है और स्फटिक के समान कांति वाला (सफेद) भ्रामर होता है॥२४॥

मधु शीतं लघु स्वादु रूक्षं ग्राहि विलेखनम् ।
चक्षुष्यं दीपनं स्वर्यं व्रणशोधनरोपणम् ॥२५॥

शहद शीतल और हलका है, स्वादु और रूखा है, मल को बांधता है, लेखन है, आँखों में हित है और अग्नि को जगाता है, स्वर में हित है, तथा घाव को शोधता और रोपता है॥२५॥

वर्ण्यं मेधाकरं वृष्यं विशदं रोचनं जयेत् ।
कुष्ठार्शःकासपित्तासृक्कफमेहक्लमक्रिमीन् ॥२६॥
मदतृष्णावमिश्वासहिक्कातीसारहृद्ग्रहान् ।
दाहक्षतक्षयांस्तं तु योगवाह्यल्पवातलम् ॥२७॥

मधु वर्ण को उपजाता है, बुद्धि को बढ़ाता है, धातु को पुष्ट करता है, सुन्दर है और रुचि को उपजाता है, तथा कुष्ठ, बवासीर, खांसी, पित्त, रक्त, कफ, प्रमेह, ग्लानि, कृमि, मद, तृषा, छर्दि, श्वास, हिचकी, अतिसार, हृदयरोग, दाह, क्षत, क्षय, और रक्त को जीतता है। यह योगवाही है और किंचित् वात को करता है॥२६–२७॥

माक्षिकं मधुषु श्रेष्ठं नेत्रामयहरं लघु ।
पौत्तिकं मधु रूक्षोष्णं पित्तदाहास्रवातकृत् ॥२८॥

मधुओं में माक्षिक शहद श्रेष्ठ है, यह नेत्ररोग को हरता है और हलका है। पौत्तिक शहद रूखा और गर्म है तथा पित्त, दाह और रक्तवात को करता है॥२८॥

क्षौद्रं माक्षिकमप्येवं विशेषान्मेहनाशनम् ।
भ्रामरं रक्तपित्तघ्नं मूत्रजाडयकरं गुरु ॥२९॥

माक्षिक में जो गुण हैं, वे सब क्षौद्र में भी हैं, परन्तु विशेषता से क्षौद्र प्रमेह को नाशता है। भ्रामर शहद रक्तपित्त को नाशता है, मूत्र और जड़पने को करता है तथा भारी है॥२९॥

नवीनं मध्वभिष्यन्दि स्निग्धं श्लेष्महरं सरम् ।
पुराणं ग्राहि तद्रूक्षं मेदोघ्नमतिलेखनम् ॥३०॥

नया शहद अभिष्यंदी और चिकना है, कफ को हरता है तथा सर है, पुराना शहद मल को बांधता है, रूखा है, मेदरोग को नाशता है और अत्यन्त लेखन है॥३०॥

विषादिपुष्टपुष्पेभ्यः सविषा माक्षिकादयः ।
मधु चिन्वन्ति तस्मात्तत्स्वभावात्सविषं स्मृतम् ॥३१॥

विष आदि से पुष्ट पुष्पों से विषवाली मक्खी आदि शहद को करती हैं, इसलिये वह स्वभाव से विषसहित शहद कहा है॥३१॥

तस्मादग्न्यातपात्तप्तं तद्भुक्तं हन्ति मानवम् ।

उष्णे काले च देशे च द्रव्यैरुष्णैश्च योजितम् ॥३२॥

इसलिये अग्नि और घाम से तपाया हुआ शहद खाया जावे तो मनुष्य को मारने वाला होता है, (क्योंकि तपायमान शहद में विष का दोष पूर्णरूप से व्यापक हो जाता है और विना तपाये का दोष मोम और मक्खियों के छत्ते में रह जाता है) गर्म समय में और गर्म देश में गर्म द्रव्यों से योजित किया सहत गर्म प्रकृति के मनुष्यों को विष के समान है॥३२॥

निरूहे छर्दने तज्ज्ञैस्तदुक्तं न निवार्यते ।
तस्मात्पाकमलब्ध्वैव तयोस्तद्विनिवर्त्तते ।
आमामये जलेनापि तद्द्रवे न निरुध्यते ॥३३॥

निरूहणबस्ति में और छर्दि में वह शहद दिया जा सकता है क्योंकि वह गर्म किये जाने से विकारयुक्त शहद परिपाक न होकर वमन या निरूहण में उलटा निकल जाता है इसलिये निरूहण और छर्दन में वैद्यलोग इसको निवारण नहीं करते और आमरोग में भी पानी के सङ्ग वह आम के द्रव में नहीं रोका जाता है अर्थात् आम के चलने में भी यह दिया जा सकता है॥३३॥

मधूच्छिष्टा (मोम) नामगुणाः

मदनं मधुजं सिक्थं मधूच्छिष्टं मधूलितम् ।
मदनं मृदुसुस्निग्धं भूतघ्नं व्रणरोपणम् ।
भग्नसन्धानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥३४॥

मदन, मधुज, सिक्थ, मधूच्छिट मधूलितम ये मोम के नाम हैं। मोम कोमल, सुन्दर और चिकना है, भूत–दोष को नाशता है, घाव पर अंकुर लाता है, टूटे हुए को जोड़ता है और वात, कुष्ठ, विसर्प, रक्त इनको जीतता है॥३४॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णो
वर्गोऽयं मधुररसादिरिक्षुकादिः ॥३५॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टाविक्षुकादिरसवर्णनंनाम नवमो वर्गः ॥९॥

राजाओं में मुख्यता से प्रधान जो कटारमल्ल हुआ उसी श्रीमदन राजा के रचे हुए मदनविनोद नाम इस ग्रन्थ में मधुररस इक्षुकादि वर्ग समाप्त हुआ॥३५॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ आयुर्वेदोद्धारक वैद्यरत्नपं०–रामप्रसादवैद्योपाध्यायकृत–विरचितभाषात्तत्वप्रकाशिनीहिन्दीटीकायामिक्ष्वादिवर्गः नवमः ॥९॥

*****

अजन्ममृत्युं बहुजन्ममृत्युं तमालभासं विशदप्रकाशम् ।
मुक्तिप्रदं बद्धमुलूखलेन त्रैलोक्यतातं शिशुमाश्रयामि ।।१।।

जन्म मरण से रहित, बहुत जन्म मरणवाले, तमाल के समान कांतिवाले, सुन्दर प्रकाशवाले, मुक्ति को देनेवाले, ऊखल से बँधे हुए और त्रिलोकी के रक्षा करने वाले बालक को मैं आश्रय लेता हूं।।१।।

शाल्यादिनामगुणाः

शालयो रक्तशाल्याद्या व्रीहयः षष्टिकादयः ।
मुद्गादि वैदलं शैलं कंग्वादि तृणधान्यकम् ।।२।।
क्षुद्रधान्यं कुधान्यं तु शूकधान्यं यवादिकम् ।
रक्तशालिर्लोहितः स्याद्गरुडः शकुनीहृतः[1] ।।३।।
सुगन्धिको महाशालिः कलमस्तु कलामकः ।
रक्तशशलिर्दीर्घशूकः पुण्ड्रो महिषमस्तकः ।।४।।
पूर्णचन्द्रो महाशालिः पुण्डरीकः प्रमादकः ।
पुष्पाण्डकः शीतभीरुः काञ्चनः शकुनीहृतः[1] ।।५।।
पाण्डुगौरः शारिवाख्यो रोध्रपुष्पः सुगन्धकः ।
हायनो दीर्घलातश्च महादूषकदूषकौ ।।६।।

लाल शालि चांवल आदि शालि, कहे जाते हैं। साठी चांवल आदि व्रीहि कहे जाते हैं। मूंग आदि वैदल तथा शैल कहाते हैं तथा कांगनी आदि तृणधान्य कहे जाते हैं। क्षुद्र धान्य और कुधान्य छोटी जात के अन्न के नाम हैं, जव आदि शूकधान्य होते है, लाल रङ्गवाला रक्तशालि होता है। गरुड़, शकुनीहत, सुगंधिक महाशालि, कलम, कलामक, रक्तशालि, दीर्घशूक, पुण्ड्र, महिषमस्तक, पूर्णचन्द्र, महाशालि, पुण्डरीक, प्रमादक, पुष्पाण्डक, शीतभीरु, कांचन, शकुनीहृत, पाण्डुगौर, शारिवाख्य, रोध्रपुष्प, सुगन्धक, हायन, दीर्घलात, महादूषक, दूषक ये चांवलों के भेद हैं।।२–६।।

शालिधान्यगुणाः

शालयो मधुरोः स्निग्धा बल्याश्च बद्धवर्चसः ।
पित्तघ्नाऽल्पानिलकफा मूत्रला लघवो हिमाः ।।७।।

सब शालि चांवल मीठे और चिकने हैं, बल को करते हैं, मल को बांधते हैं, पित्त को नाशते हैं, अल्प कात कफवाले हैं, मूत्र को उपजाते हैं तथा हलके और शीतल

---

१ शकुनांकिः इत्यपि पाठः ।

हैं।।७।।

रक्तशालिर्वरस्तेषां बल्यो वर्ण्यस्त्रिदोषजित् ।
चक्षुष्यो मूत्रलः स्वर्यः शुक्रलस्तृड्ज्वरापहः ।।८।।

उनमें लालशालि उत्तम है, बल और वर्ण कारक है, त्रिदोष को जीतता है, नेत्रों को हित है, मूत्र को उपजाता है, स्वर को करता है, वीर्य को उत्पन्न करता है तथा तृषा और ज्वर को नाशता है।।८।।

विषव्रणहरः किञ्चित्तस्मादल्पगुणाः परे ।
वृष्यो बल्यो महाशाली रक्तशालिगुणैः समः ।।९।।

तथा विष और घाव को नाशता है। अन्य शालि इससे कुछेक कम गुणोंवाले हैं। महाशालि वीर्यवर्द्धक है, बल को करता है, और लाल शालि के समान गुणवाला है।।९।।

कार्मुकः पीत आमोदो लघुर्वृष्यो मुकुन्दकः ।
महाषष्टिककेदारपुष्पाङ्कुरबकादयः ।।१०।।

कार्मुक, पीत, आमोद, मुकुंदक ये हलके हैं, वीर्य को पुष्ट करते हैं और महाषष्टिक, केदारपुष्पांकुर, बक आदि।।१०।।

षाष्टिकधान्यगुणाः

षष्टिका मधुराः शीता लघवो बद्धवर्चसः ।
वातपित्तप्रशमनाः शालीनां सदृशा गुणैः ।।११।।

और साठी चांवल मीठे हैं, शीतल हैं, हलके हैं, मल को बांधते हैं, वातपित्त को करते हैं, शालिचांवलों के समान गुणवाले हैं।।११।।

षष्टिकः प्रवरस्तेषां लघुः स्निग्धास्त्रिदोषजित् ।
पाके स्वादुर्मृदुर्ग्राही स्थैर्यकारी बलप्रदः ।।१२।।

उनमें सांठी चांवल उत्तम हैं, हलके हैं, चिकने हैं, त्रिदोष को जीतते हैं, पाक में स्वादु हैं, मल को बांधते हैं, स्थिरता करते हैं, और बल को देते हैं।।१२।।

कृष्णव्रीह्यादिधान्यगुणाः

रक्तशालिगुणैस्तुल्यास्तस्मादल्पगुणाः परे ।
कृष्णव्रीहिस्तुरितकः कुक्कुटाण्डकपाटलौ ।।१३।।

अन्य अल्प गुणोंवाले कृष्णव्रीहि, तुरितक, कुक्कुटांडक, पाटल ये सब लाल शाली के गुण के समान हैं।।१३।।

राजीवाक्षःशलायुश्च नन्दी जन्तुमुखादयः ।
व्रीहयो मधुराः शीताः षष्टिकानां गुणैः समाः ।।१४।।

राजीवाक्ष, शलायु नंदी, जंतुमुखादि ये सब व्रीहि के भेद हैं। सब व्रीहि मीठे हैं, शीतल हैं, और साठी चांवलों के समान गुणवाले हैं।।१४।।

कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणाः परे ।
शालयोः दग्धभुञ्जाना लघुरूक्षाः कफापहाः ।।१५।।

उनमें कृष्णव्रीहि उत्तम हैं, उससे अल्प गुणोंवाले अन्य व्रीहि हैं, भूने हुए शाली हलके हैं, रूखे हैं, कफ को नाशते हैं।।१५।।

स्थूलजाः स्वादवः पित्तकफघ्ना वातवह्निदाः ।
कैदारा वातपित्तघ्ना गुरवः कफशुक्रलाः ।।१६।।

स्थूलज शालि स्वादु हैं, पित्तकफ को नाशते हैं, वात और अग्नि को उत्पन्न करते हैं, कैदार वातपित्त को नाशते हैं, भारी हैं, कफ और वीर्य को देते हैं।।१६।।

रौप्यातिरौप्या लघवो मूत्रलास्ते गुणोत्तराः ।
छिन्नरूढा हिमा रूक्षाः पित्तघ्ना लघुपाकिनः ।।१७।।

रौप्य और अतिरौप्य हलके हैं, मूत्र को देते हैं, उत्तम गुणवाले हैं। छिन्नरूढ़ शीतल हैं, रूखे हैं, पित्त को नाशते हैं, शीघ्र पकते हैं।।१७।।

पुराणं नेत्रमन्धानां जलक्लिन्नं प्रयत्नतः ।
पुनर्विशोषितं सम्यग्घर्मे रूक्षं लघु स्मृतम् ।।१८।।

पुराने चांवल अंधों के नेत्र हैं, भिगोय के फिर घाम में अच्छी तरह शोषित किये रूखे हैं, और हलके कहे हैं।।१८।।

दीपनं पाचनं मेध्यं वातश्लेष्महरं परम् ।
व्रीहित्वं षष्टिकस्यापि भिन्नत्वं शीघ्रपाकतः ।।१९।।

अग्नि को जगाते हैं, पाचन हैं, बुद्धि को बढ़ाते हैं, वात कफ को हरते हैं। सांठी चांवल की भी व्रीहिधान्यों में गणना है, जल्दी पाक हो जाने से ये उनसे भिन्न हैं।।१९।।

गोधूमनामगुणाः

गोधूमः सुमनः क्षुद्रो मधूली रूपशीतला ।
नन्दीमुखोऽल्पगोधूमो लोकेशी पासिकोच्यते ।।२०।।

गोधूम, सुमन, क्षुद्र, मधूली, रूपशीतला, नंदीमुख, अल्पगोधूम, लोकेशी, पासिका ये गेहूं के नाम हैं।।२०।।

गोधूमो मधुरः शीतो वातपित्तहरो गुरुः ।
कफशुक्रप्रदो बल्यः स्निग्धः सन्धानकृत्सरः ।।२१।।

गेहूं, मीठा है, शीतल है, वात पित्त को हरता है, भारी है, कफ और वीर्य को उत्पन्न

करता है, बल को देता है, चिकना है, जोड़ने वाला है, सर है॥२१॥

जीवनो बृंहणो वर्ण्यः स्यन्दी रुच्यः स्थिरत्वकृत् ।
मधूली शीतला स्निग्धा पित्तघ्नी मधुरा लघुः ॥२२॥

जीवन है, धातु को पुष्ट करता है, वर्ण को निखारता है, अभिष्यंदी है, रुचि को करता है, स्थिरता करता है, मधूली शीतल है, चिकनी है, पित्त को नाशती है, मीठी है, हलकी है॥२२॥

शुक्रला बृंहणी पथ्या तद्वन्नन्दीमुखी मता ।
एतस्मात्स्थूलगोधूमात्क्षुद्रो हीनतरो गुणैः ॥२३॥

नन्दीमुख वीर्य को करता है, धातु को पुष्ट करता है, पथ्य है, इस स्थूल गेहूं से क्षुद्र गेहूं में बहुत कम गुण हैं॥२३॥

यवनामगुणाः

यवः शुचिस्तीक्ष्णशूको निश्शूकोऽतियवोऽपरः ।
यवः कषायो मधुरः शीतः पित्तकफास्रजित् ॥२४॥

यव, शुचि, तीक्ष्णशूक, निशूक, अतियव ये जव के नाम हैं। जव कषैला है, मीठा है, शीतल है, पित्त, कफ, रक्त इनको जीतता है॥२४॥

व्रणेषु तिलवत्पथ्यो रुक्षो मेधाग्निवर्द्धनः ।
लेखनो बद्धनिस्यन्दः स्वर्यो मेहतृषापहः ॥२५॥

घावों में तिलों की तरह पथ्य है, रूखा है, बुद्धि और अग्नि को बढ़ाता है, लेखन है, विबंध को करता है, स्वर में हित है, प्रमेह और तृषा को हरता है॥२५॥

बहुवातमलः स्थैर्यवर्णकारी स पिच्छिलः ।
अस्मादतियवः किञ्चिद्गुणैर्न्यूनतरः स्मृतः ॥२६॥

बहुत वात और मल को करता है, स्थिरता और वर्ण को करता है, पिच्छिल है, इससे अतियव गुणों करके अल्पगुणों वाला कहा है॥२६॥

शिंबीधान्यनामगुणाः

शिम्बी मुद्गश्चणो माषः सतीनः सकुलायकः ।
मसूरश्चक्रमङ्गल्यौ मकुष्ठत्रिपुटादयः ॥२७॥

शिंबी, मूँग, चना, उड़द, मटर, मोठ, मसूर, चौला, मोठ, गुवार, इत्यादिक वैदल अन्न कहे जाते हैं॥२७॥

वैदला मधुरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।
वातलाः कफपित्तघ्ना बद्धमूत्रमला हिमाः ॥२८॥

वैदल, मीठे हैं, रूखे हैं, कषैले हैं, पाक में चर्परे हैं, वात को करते हैं, कफ, पित्त को

नाशते हैं, मूत्र और मल को बांधते हैं, शीतल है॥२८॥

ऋते मुद्गमसूराभ्यामन्ये त्वाध्मानकारकाः ।
शिम्बा विष्टम्भिनो मेहदृष्टिघ्ना वातपित्तलाः ॥२९॥

मूँग और मसूर के सिवाय और सब आध्मान करते हैं, शिंबी विष्टंभ करते हैं, प्रमेह और दृष्टि को नाशते हैं तथा वातपित्त को करते हैं॥२९॥

विशदा गुरवो हृद्या रूक्षाः कटुविपाकिनः ।
सितासितादिभेदेन बहुधा ते प्रकीर्तिताः ॥३०॥

स्वच्छ हैं, भारी हैं, वीर्य को पुष्ट करते हैं, दिल को ताकत देते हैं, पाक में कडुवे हैं, सुफेद, काले, लाल इन भेदों से वे बहुत प्रकार के कहे गये हैं॥३०॥

मुद्गनामगुणाः

मुद्गो बलाढचो मङ्गल्यो हरितः शारदोऽपरः ।
बलको माधवः पीतः प्रचेतः परिकीर्तितः ॥३१॥

मुद्र, बलाढच, मंगल्य, हरित, शारद, बलाक, माधव, पीत, प्रचेत, ये मूँग के नाम हैं॥३१॥

वनमुद्गस्तुवरको राजमुद्गस्तु खण्डकः ।
मुद्गोरूक्षो लघुर्ग्राही कफपित्तहरो हिमः ॥३२॥

वनमुद्ग, तुवरक, राजमुद्ग, खंडक ये वनमूँग के नाम हैं। मूँग रूखा है, हलका है मल को बांधता है, कफ और पित्त को हरता है तथा शीतल है॥३२॥

स्वादुरल्पानिलो नेत्र्यो वर्ण्योऽप्येतद्गुणः स्मृतः ।
हरितः प्रवरस्तेषां तच्छाकं तिक्तमुत्तमम् ॥३३॥

मूँग स्वादु है, अल्प वात को करता है, नेत्रों में हित है, वर्ण को प्रकाश करता है, हरा मूँग बहुत उत्तम है, उसका शाक कडुवा है॥३३॥

माषनामगुणाः

माषो जीर्णकरो[१] धारी धवलो राजमाषकः ।
माषो गुरुः स्वादुपाकः स्निग्धो बृष्योऽनिलापहः ॥३४॥

माष, जीर्णकर, धारी, धवल, राजमाषक ये उड़द के नाम हैं। उड़द भारी है, पाक में स्वादु है, चिकंना है, वीर्य को पुष्ट करता है और वात को नाशता है॥३४॥

उष्णः स तर्पणो बल्यः शुक्रलो बृंहणः परम् ।
भिन्नमूत्रकफस्तन्यो मेदः पित्तकफप्रदः ।
गुदकीलार्दित श्वासपक्तिशूलानि नाशयेत् ॥३५॥

१ वीर्यकरः इत्यपि पाठः ।

उड़द गर्म है, तृप्ति करता है, बल करता है, वीर्य करता है, धातु को पुष्ट करता है और मूत्र, कफ, दूध इनको पैदा करता है, तथा मेद कफ, पित्त को देता है, गुदकील, लकुवा, श्वास, पक्तिशूल इनको नाश करता है।।३५।।

राजमाषगुणा:

राजमाषः स्वादुरूक्षः कषायस्तर्पणो लघुः ।
ग्राही वातकफस्तन्यबहुवर्चोरुचिप्रदः ।।३६।।

राजमाष अर्थात् लोबिया स्वादु है, रूखा है, कषैला है, हलका है, मल को बांधता है और वात, कफ, दूध, बहुत मल और रुचि इनको उत्पन्न करता है।।३६।।

मकुष्ठनामगुणा:

मकुष्ठको मकुष्ठः स्यान्निष्पावो वल्लकः स्मृतः ।
मकुष्ठो वातलो ग्राही कफपित्तहरो गुरुः ।
वान्तिजिन्मधुरःपाके कृमिकृज्ज्वरनाशनः ।।३७।।

मकुष्ठक, मकुष्ठ, निष्पाव, वल्लक, ये मोठों के नाम हैं। मोठ वात को करता है, मल को बांधता है, कफ–पित्त को हरता है, भारी है, छर्दि को जीतता है, पाक में मीठा है, कृमि को करता है और ज्वर को नाशता है।।३७।।

निष्पावगुणा:

निष्पावोऽनिलपित्तास्रमूत्रस्तन्यकरः सरः ।
विदाह्युष्णो गुरुः श्लेष्मशोफकृच्छुक्रनाशनः ।।३८।।

निष्पाव, अर्थात् राजशिंबी–पित्तरक्त, मूत्र, दूध इनको उत्पन्न करता है, सर है, दाहकारक, गर्म और भारी है, कफ और शोजे को करता है, तथा वीर्य को नाशता है।।३८।।

सतीतनामगुणा:

वर्तुलस्तु सतीनः स्याद्धरेणुः स्वल्पवर्तुलः ।
वर्तुलः शीतलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ।
विपाके मधुरो रूक्षो हरेणुस्तद्‌गुणः स्मृतः ।।३९।।

वर्तुल, सतीन, हरेणु, स्वल्पवर्तुल ये मटर के नाम हैं, मटर–शीतल है, मल को बांधता है, कफ और पित्त को हरता है, हलका है, पाक में मीठा और रूखा है। हरेणु में भी येही गुण हैं।।३९।।

कलायनामगुणा:

कलायः खण्डिकः प्रोक्तस्त्रिपुटःक्षुद्रखण्डिकः ।
कलायः कफपित्तघ्नो ग्राही शीतोऽतिवातलः ।

त्रिपुटोऽपि गुणैरेवं तच्छाकं कफपित्तजित् ॥४०॥

कलाय, खंडिक, त्रिपुट, क्षुद्रखंडिक ये नाम बड़े मटर के हैं। मटर–कफपित्त को नाशता है, मल को बांधता है, वात को बढ़ाता है। काले मटर में भी येही गुण हैं। मटर का शाक कफ–पित्त को जीतता है, इसकी भी मटर की समान ही जाति है, मध्यप्रदेश में इसको कसूर, कस्सा कहते हैं॥४०॥

चणकनामगुणाः

चणको हरिमन्थः स्याद्वाजिमन्थश्च जीवनः ।
चणकः शीतलो रूक्षो रक्तपित्तकफापहः ।
लघुः कषायो विष्टम्भी वातलः कुष्ठनाशनः ॥४१॥

चणक, हरिमंथ, वाजिमंथ, जीवन ये चना के नाम हैं। चना–शीतल है, रूखा है, रक्तपित्त और कफ को नाशता है, हलका है, कषैला है, विष्टंभ करता है, वात को उपजाता है और कुष्ठ को नाशता है॥४१॥

मसूरनामगुणाः

मसूरिकारिर्मसूरिर्मङ्गल्या पाण्डुरापलः ।
मसूरिर्मधुरः पाके संग्राही शीतलो लघुः ।
कफपित्तास्रजिद्बल्यस्तच्छाकं लघु तिक्तकम् ॥४२॥

मसूरिकारि, मसूरि, मंगल्या, पाण्डुरापल ये मसूर के नाम हैं। मसूर पाक में मीठा है, मल को बांधता है, शीतल है, हलका है, कफ और पित्तरक्त को जीतता है और बल को करता है, इसका शाक हलका और कडुवा है॥४२॥

कुलत्थनामगुणाः

कुलत्थश्चक्रकश्चक्रः कुलालो वजनः परः ।
अपरा दृक्प्रसादा च चक्षुष्या च कुलत्थिका ॥४३॥
कुलाली लोचनहिता कुम्भकारी मलापहा ।
कुलत्थः कटुकः पाके कषायो रक्तपित्तजित् ॥४४॥

कुलत्थ, चक्रक, चक्र, कुलाल, वजन, अपरा, दृक्प्रसादा, चक्षुष्या, कुलत्थिका, कुलाली, लोचनहिता, कुंभकारी, मलापहा ये नाम कुलथी के हैं। कुलथी पाक में चर्परी है, कषैली है और रक्त–पित्त को जीतती है॥४३–४४॥

लघुर्विदाही वीर्योष्णः श्वासकासकफानिलान् ।
हन्ति हिक्काश्मरीशुक्रदृगानाहान्सपीनसान् ॥४५॥

यह हलकी है, दाह को करती है, वीर्य में गर्म है और श्वास, खांसी, कफ, वात, हिचकी, पथरी, वीर्य, नेत्ररोग, अफारा, पीनस इनको नाशती है॥४५॥

स्वेदसंग्राहको गुल्ममेदःकृमिहरः सरः ।
वन्यो विशेषतः शीतो नेत्रामयविषापहः ।।४६।।

तथा पसीने को रोकती है, कुलथी गुल्म, मेद, कृमि, इनको हरती है, सर है। वनकुलथी विशेषकर शीतल हैं, नेत्ररोग और विष को नाशती है।।४६।।

तिलनामगुणाः

तिलपुष्पस्तैलफलस्तिलपिञ्जोपरः सितः ।
जातिलो वनजातः स्यादाढकी तुवरी मता ।।४७।।

तिलपुष्प, तैलफल, तिलपिंज, सित, जातिल, वनजात ये तिल के नाम हैं। आढकी, तुवरी ये अरहर के नाम हैं।।४७।।

तिलः कषायो मधुरस्तिक्तकः कटुको रसे ।
तिलो ग्राही गुरुः स्वादुः स्निग्धोऽस्रकफपित्तलः ।।४८।।

तिल कषैला है, मीठा है, कड़ुवा है, रस में चर्परा है, मल को रोकता है, भारी है स्वादु है, चिकना है और रक्त, कफ, पित्त इनको उत्पन्न करता है।।४८।।

बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यो व्रणहितः परम् ।
वन्योऽल्पमूत्रकृद्धातुनाशनोऽग्निमतिप्रदः ।।४९।।

और बल को करता है, बालों का बढ़ाता है, शीतल स्पर्शवाला है, त्वचा को हित है, घाव में हित है, वन का तिल, अल्पमूत्र करता है, धातु को नाशता है तथा अग्नि और बुद्धि को देता है।।४९।।

कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्लो मध्यमः सितः ।
अन्ये हीनतराः प्रोक्तास्तज्ज्ञै रक्तादयस्तिलाः ।।५०।।

काला तिल सब तिलों में उत्तम है, वीर्य को करता है, सफेद तिल मध्यम है और लाल तिल आदि पण्डितों ने बहुत हीन कहे हैं।।५०।।

तुवरीगुणाः

तुवरी ग्राहिणी शीता लघुः कफविषास्रजित् ।।५१।।

अरहर मल को रोकता है, शीतल है, हलका है और कफ, विष, रक्तविकार इनको जीतता है।।५१।।

अतसीनामगुणाः

अतसी मसृणा नीलपुष्पा चेलूत्तमा क्षुमा ।
अतसी शुक्रदृष्टिघ्नी स्निग्धा वातास्रजिद्गुरुः ।।५२।।

आतसी, मसृणा, नीलपुष्पा, चेलूत्तमा, क्षुमा ये अलसी के नाम हैं। अलसी वीर्य और दृष्टि को नाशती है, चिकनी है, वातरक्त को जीतती है और भारी है।।५२।।

कुसुम्भनामगुणाः

कुसुम्भं वार्द्धकी पीतमलक्तं वस्त्ररञ्जनी ।
तद्बीजं किरटी लघ्वी तथा शुद्धपयोत्तरा ॥५३॥

कुसुंभ, वार्द्धकी, पीत, अलक्त, वस्त्ररंजनी ये कुंसुभा के नाम हैं। किरटी, लघ्वी, शुद्धपयोत्तरा ये कुसंभे के बीज के नाम हैं॥५३॥

कुसुम्भं वातलं कृच्छ्ररक्तपित्तकफापहम् ।
किरटचतसीवदुद्दिष्टा विशेषाद्विषनाशिनी ॥५४॥

कुसुम्भा वात को करता है और मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, कफ इनको नाशता है। कुसुम्भा के बीज में अलसी के समान गुण हैं, विशेषकर विष को नाशता है॥५४॥

सर्षपनामगुणाः

सर्षपः कटुकः स्नेहो भूतघ्नो रक्षिताफलः ।
तुर्तुभोऽन्यः स उद्दिष्टः सिद्धार्थः श्वेतसर्षपः ॥५५॥

सर्षप, कटुक, स्नेह भूतघ्न, रक्षिताफल, तुर्तुभ, सिद्धार्थ, श्वेतसर्षप, ये नाम सरसों के हैं॥५५॥

राजिका वासुरी राजी सुतीक्ष्णः कृष्णसर्षपः ।
सर्षपः कफवातघ्नस्तीक्ष्णोष्णो रक्तपित्तकृत् ॥५६॥

राजिका, वासुरी, राजी, सुतीक्ष्ण, कृष्णसर्षप ये राई के नाम हैं। सरसों कफवात को नाश करती है, तेज है, गर्म है और रक्तपित्त को करती है॥५६॥

किञ्चिद्रूक्षोऽग्निदः कण्डूकुष्ठकोष्ठक्रिमीन्हरेत् ।
राजिकास्तद्गुणा ज्ञेयास्तीक्ष्णास्तीव्रा विशेषतः॥५७॥

तथा किंचित् रूखी है, अग्नि को देती है और खाज, कुष्ठ, कोठे के कृमि इनको हरती है। राई में भी ये ही गुण हैं और तीव्र तेज विशेष से हैं॥५७॥

शणनामगुणाः

शणः प्रोक्तो मातुलानी जन्तुतन्तुर्महाशणः ।
शणो हिमो गुरुर्ग्राही तत्पुष्पं प्रदरास्रजित् ॥५८॥

शण, मातुलानी, जंतुतन्तु, महाशण ये नाम शण के हैं। शण शीतल और भारी है, मल को रोकता है, इसका फूल प्रदर और रक्त को जीतता है॥५८॥

कङ्गूश्यामाकादिधान्यगुणाः

कंगूश्यामाकनीवारवरकोद्दालनर्त्तकाः ।
वरट्टिका तोदपर्णी कोद्रवश्च मधूलिका ॥५९॥
नन्दीमुखी वेणुयवा प्रियङ्गुः कोरदूषकः ।

गवेधुका नलो नाली मुकुन्दं वारिकादिकम् ।।६०।।

कंगू, श्यामाक, नीवार, उद्दाल, नर्तक, वरट्टिका, तोदपर्णी, कोद्रव, मधूलिका, नंदीमुखी, वेणुयवा, प्रियंगु, कोरदूषक, गवेधुका, नल, नाली, मुकुन्द, वारिका आदिक तृणधान्य हैं।।५९।।६०।।

तृणधान्यं लघु स्वादु कटुपाकि विलेखनम् ।
रूक्षोष्णं बद्धनिस्यंदं वातपित्तप्रकोपनम् ।।६१।।

तृणधान्य हलके हैं, स्वादु हैं, पाक में चर्परे हैं, लेखन हैं, रूखे हैं, गर्म हैं, विबंध करते हैं और वातपित्त कुपित करते हैं।।६१।।

पीततण्डुलिका कङ्गुः प्रियङ्गुः कर्कटी मता ।
सितकङ्गुस्तु मुसटी रक्तकङ्गुस्तु शोधिका ।
चीनाकःकाककङ्गुःस्याच्छ्यामाकः शणकङ्गुकः।।६२।।

पीततण्डुलिका, कंगु, प्रियंगु, कर्कटी, सितकंगु, मुसटी, रक्तकंगु, शोधिका, चीनाक, काककंगु, श्यामाक, शणकंगुक ।।६२।।

शाल्यादयः कङ्गुभेदाः कोद्रवः कुरसः स्मृतः ।
कोद्रवः कोरदूषः स्यादुद्दालो वनकोद्रवः ।
प्रियङ्गुः पित्तजिद् वृष्यो भग्नसन्धानकृद्गुरुः ।।६३।।

शालि आदि ये सब कांगनी के भेद हैं। कोद्रव, कुरस, कोरदूष, उद्दाल, वनकोद्रव ये नाम कोदू के हैं। कांगनी पित्त को जीतती है, वीर्य को पुष्ट करती है, टूटे हुए को जोड़ देती है और भारी है।।६३।।

श्यामाकः शोषणः शीतो रूक्षः पित्तकफापहः ।
कोद्रवः शीतलो ग्राही विषपित्तकफाञ्जयेत् ।।६४।।

श्यामाक शोषता है, शीतल है, रूखा है, पित्त कफ को नाशता है, कोद्रव शीतल है, मल को रोकता है और विष, पित्त, कफ इनको जीतता है।।६४।।

नीवारनामगुणाः

नीवार उटिका नाडी मुनिव्रीहिर्मुनिप्रियः ।
नीवारः शीतलो ग्राही पित्तघ्नः कफवातकृत् ।।६५।।

नीवार, उटिका, नाड़ी, मुनिव्रीहि, मुनिप्रिय ये नीवार के नाम हैं। नीवार शीतल है, मल को बांधता है, पित्त को नाशता है और कफवात को करता है।।६५।।

यावनाल (ज्वर) नामगुणाः

यावनालो देवधान्यं जुह्वोलिर्जुह्वलोऽनलः ।
यावनालः स्वादुशीतो वातलः कफपित्तजित् ।।६६।।

यावनाल, देवधान्य, जुह्नोलि, जुह्नल, अनल ये यवनाल (ज्वार) के नाम हैं। यवनाल स्वादु है, शीतल है, वात को करता है और कफपित्त को जीतता है।।६६।।

गवेधुकानामगुणाः

गवेधुका कर्षणी स्याद्गोजिह्वाऽऽकर्षिणी मता ।
गवेधुकाः कटुः स्वाद्वी कार्श्यकृत्कफनाशिनी ।।६७।।

गवेधुका, कर्षणी, गोजिह्वा, आकर्षिणी ये गवेधुका के नाम हैं। गवेधुका चर्परी है, स्वादु है, माड़ेपन को करती है और कफ को नाशती है।।६७।।

अयोग्यधान्यम्

अपर्याप्तं व्याधिहतमनार्त्तवमभूमिजम् ।
नवं जन्त्वादिभिर्जुष्टं न धान्यं गुणवन्मतम् ।।६८।।

सामर्थ्यरहित, रोग से नष्ट, बिना समय और निंदित पृथ्वी से उपजा नया और कीड़े आदि से युत ऐसा अन्न गुण करनेवाला नहीं माना गया है।।६८।।

नवीनधान्यगुणाः

धान्यं नवमभिष्यन्दि गुरु स्वादु कफप्रदम् ।
वर्षोषितं सर्वधान्यं गौरवं परिमुञ्चति ।।६९।।

नवीन अन्न अभिष्यंदी है, भारी है, स्वादु है, कफ को देता है, वर्ष दिन के उपरान्त सब अन्न भारीपन को छोड़ देते हैं।।६९।।

जीर्णधान्यगुणाः

न मुञ्चति तदा वीर्यं क्रमान्मुञ्चत्यतः परम ।
विदाहि गुरु विष्टम्भि विरूढं दृष्टिदूषणम् ।।७०।।

सामान्यता से एक वर्षपर्यंत धान्य अपने वीर्य और गुरुता आदि को नहीं छोड़ते, इसके उपरान्त क्रम से विदाहीपना, गुरुता, विष्टम्भता, विरूढता (जोर करना–जिससे पाचन न होकर ज्वरादि होता है) और दृष्टिदूषण इनको त्याग देता है और हलका तथा पाचन हो जाता है।।७०।।

एतेषु यवगोधूमतिलमाषा नवा हिताः ।
रूढाः पुराणा विरसा न तथा गुणकारिणः ।।७१।।

इन अन्नों में जब गेहूं, तिल, उड़द ये नये उत्तम हैं, पुराने और रस से रहित हुए गुण को नहीं करते हैं।।७१।।

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।

ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि शुद्धे
पूर्णोऽयं ललितपदैस्तु धान्यवर्गः ॥७२॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौधान्यगुणवर्णनं नाम दशमोऽवर्गः ॥१०॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ वैद्यरत्न पं० रामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषातत्त्वप्रकाशिनी-हिन्दीटीकायां धान्यगुणवर्णनं नाम दशमोऽवर्गः ॥१०॥

*****
****

राधां हरिं चरणयोः पतितं कराभ्यां
कोपाज्जघान तमुदीक्ष्य पुनर्हसन्तम् ।
तत्पादयोः समपतच्चकिता भिया ता-
मुत्थापयञ्जयति कैतवगोपवेषः ॥१॥

पैरों में पतित हुए श्रीकृष्ण को राधा कोष करके हाथों से मारने लगी फिर हँसते हुए श्रीकृष्ण को देख उनके पैरों में चकित होकर पड़ी हुई राधा को उठाते हुए कपट से गोपवेषधारी भगवान् की जय हो॥१॥

आहारनामगुणाः

आहारो भोजनं [1]जग्धिर्नित्यशोजीवनं तथा ।
आहारो बलकृत्सद्यः प्रीणनो देहधारकः ।
ओजस्तेजः स्वरोत्साहधृतिस्मृतिमतिप्रदः ॥२॥

आहार, भोजन, जग्धि, नित्य का जीवन ये भोजन के नाम हैं। भोजन तत्काल बल करता है, तृप्ति करता है, देह को धारता है और पराक्रम, तेज, स्वर, उत्साह, धैर्य, स्मरण तथा बुद्धि को देता है॥२॥

भक्तनामगुणाः

भक्तमन्धस्तु भिस्साऽहङ्करं दीदिविरोदनः ।
भक्तं वह्निकरं पथ्यं तर्पणं मूत्रलं लघु ॥३॥

भक्त, अन्धस्, भिस्सा, अहंकर, दीदिवि, ओदन ये नाम भात के हैं। भात अग्नि को करता है, पथ्य है, तृप्ति करता है, मूत्र उपजाता है और हलका है॥३॥

सुधौतं प्रस्तुतं चोष्णं विशदं गुणवन्मतम् ।
अधौतमस्रुतं शीतं गुरु वृष्यं कफप्रदम् ॥४॥

---

१ जग्धिरशनं जेमनं तथेति पाठः ।

सुन्दर धोया हुआ और अच्छी तरह निचोड़ा हुआ भात गर्म है, सुन्दर है, गुणवाला माना है। नहीं धोया हुआ और न निचोड़ा हुआ भात शीतल है, भारी है, वीर्य को पुष्ट करता है और कफ करता है।।४।।

भृष्टतण्डुलकं रुच्यं सुगन्धि कफजिल्लघु ।
भक्तं मांसफलक्षीरवैदलाम्लादिसाधितम् ।
स्नेहशाकैर्गुरुत्तरं वृष्यं बल्यं कफप्रदम् ।।५।।

भुना हुआ चांवल रुचि करता है, सुगंधित है, कफ को जीतता है, हलका है और मांस, फल, दूध, वैदल अर्थात् मूंग, उड़द, आदि अन्न, खट्टा रस आदि स्नेह शाक इनसे साधित किये चांवल बहुत भारी हैं, वीर्य को करते हैं, बल करते हैं और कफ को करते हैं।।५।।

रसौदनो गुरुर्वृष्यो बल्यो वातज्वरापहः ।
घोलं भक्तं ग्रहण्यर्शःश्रमघ्नं पाचनं हिमम् ।।६।।

मांस के रस में पकाया चांवल भारी है, वीर्य को पुष्ट करता है, बल को करता है और वातज्वर को नाशता है। घोलसंज्ञक भात ग्रहणी, बवासीर, परिश्रम इनको नाशता है, तथा पाचन है और शीतल है।।६।।

ओदनगुणाः

अत्युष्णान्नं बलहरं शीतमुष्णं च दुर्जरम् ।
अतिक्लिन्नं ग्लानिकरं दुर्जरं तण्डुलान्वितम् ।।७।।

अत्यन्त गर्म अन्नादि बल को हरता है, शीतल गर्म किया देर में जीर्ण होनेवाला है, बहुत गला हुआ ग्लानि को करता है तथा किनकों से युत हुआ दुर्जर है।।७।।

सौमनस्यं बलं पुष्टिमुत्साहं हर्षणं सुखम् ।
स्वादु सञ्जनयेदन्नमामं स्वादुविपर्ययम् ।।८।।

पका हुआ चांवल मन की सुन्दरता, बल, पुष्टि, उत्साह, आनन्द, सुख, आम इनको उपजाता है और स्वादु है। कच्चा चांवल विपरीत स्वादुवाला है।।८।।

यवागूपेयादिलक्षणम्

यवागूः षड्गुणे तोये संसिद्धा विदलद्रवा ।
चतुर्गुणे तु संसिद्धा विलेपी घनसिक्थिका ।।९।।

छः गुने पानी में सिद्ध की जावे और पतली रहे (जिसके अन्न के दाने अलग रहें, पानी अलग हो) वह यवागू होती है और चौगुने पानी में पकाई गाढ़ी (जिसमें जल और अन्न मिल जाय) वह विलेपी होती है।।९।।

पेया सिक्थान्विता तोये चतुर्दशगुणे कृता ।

मण्डश्चतुर्दशगुणे सिद्धस्तोये त्वसिक्थकः ॥१०॥

चौदह गुने पानी में पकाई किनकोंसहित हो वह पेया होती है, चौदह गुने पानी में पकाया जावे और किनकों से रहित हो जाय वह मण्ड होता है॥१०॥

यवागूगुणाः

यवागूर्ग्राहिणी तृष्णाज्वरघ्नी बस्तिशोधनी ॥११॥

यवागू मल को रोकती है, तृषा और ज्वर को नाशती है, बस्ति को शोधती है॥११॥

विलेपीगुणाः

विलेपी दीपनी बल्या हृद्या संग्राहिणी लघुः ।
व्रणाक्षिरोगिणां पथ्या तर्षणी तृड्ज्वरापहा ॥१२॥

विलेपी अग्नि को जगाती है, बल को करती है, दिल को ताकत देती है, मल को रोकती है, हलकी है, घाव और आंख के रोगवालों को पथ्य है। यह तृप्त करती है तथा तृषा और ज्वर को हरती है॥१२॥

पेयागुणाः

पेया कुक्षिगदक्लान्तिज्वरस्तम्भातिसारजित् ।
रुच्यग्निकृल्लघुर्दोषमलस्वेदानुलोमनी ॥१३॥

पेया कुक्षिरोग, जी मचलाना, ज्वर, स्तंभ, अतिसार इनको जीतती है, रुचि और अग्नि को उत्पन्न करती है तथा पित्तज्वर, कफ, परिश्रम इनको नाशती है॥१३॥

मण्डगुणाः

मण्डो ग्राही लघुः शीतो दीपनो धातुसम्यकृत् ।
स्रोतोमार्दवकृत्पित्तज्वरश्लेष्मश्रमापहः ॥१४॥

मांड़ मल को रोकता है, हलका है, शीतल है अग्नि को जगाता है, धातुओं को साम्यावस्था में करता है, स्रोतों को कोमल करता है तथा पित्तज्वर, कफ, परिश्रम इनको नाशता है॥१४॥

याव्यमण्ड—लाजमण्डगुणाः

याव्यमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डस्तु शालिभिः ।
याव्यमण्डो लघुर्ग्राही शूलानाहत्रिदोषजित् ॥१५॥

भुने हुए जवों से जो बनाया जाय वह याव्यमंड होता है और भुने हुए शालि चावलों से अथवा धान की खीलों से जो बनाया जाय वह लाजमण्ड होता है। याव्यमंड़ हलका है, मल को रोकता है और शूल, अफारा, त्रिदोष इनको जीतता है॥१५॥

नवज्वरेऽपि पथ्योऽयं पटोलमागधान्वितः ।
लाजमण्डो लघुर्ग्राही सद्यः पाचनदीपनः ।।१६।।

नवज्वर में भी परवल और पीपल से संयुक्त किया याव्यमण्ड पथ्य है और लाजमण्ड हलका है, मल को रोकता है तत्काल पाचन और दीपन है।।१६।।

अष्टगुणमण्डगुणाः

तण्डुलैरर्द्धमुद्‌गांशैः किञ्चिद्‌भृष्टैस्तु पाचितैः ।
हिङ्गुसिन्धूत्थधनिकापत्रत्रिकटुसंस्कृतः ।।१७।।
ज्ञेयः सोऽष्टगुणो मण्डो ज्वरदोषत्रयापहः ।
रक्तःक्षुद्बोधकः प्राणदीपनः शीतलो लघुः ।।१८।।

किंचित् भुनी हुई मूँग की दाल आधा भाग मिलाकर चांवलों को पकावे, हींग, सेंधानमक, धनियां, तेजपात, सोंठ, मिरच, पीपल ये उसमें मिलावे तो इसको अष्टगुणमण्ड कहते हैं। यह ज्वर और त्रिदोष को नाशता है, राग अर्थात् प्रीति को करता है, भूख लगाता है, जीवन है, अग्नि को जगाता है तथा शीतल और हलका है।।१७–१८।।

मुद्‌गयूषगुणाः

यूषः स्मृतो वैदलानामष्टादशगुणेऽम्भसि ।
मुद्‌गानामुत्तमो यूषो दीपनः शीतलो लघुः ।
व्रणोर्ध्वजत्रुरुग्दाहकफपित्तज्वरास्रजित् ।।१९।।

मूंग आदि अन्न अठारह गुने पानी में पकाया हुआ यूष कहा जाता है। मूंगों का यूष उत्तम है, अग्नि को जगाता है, शीतल और हलका है, घाव, ऊर्ध्वजत्रुरोग, दाह, कफ, पित्तज्वर, रक्त इनको जीतता है।।१९।।

दाडिमामलकयूषगुणाः

दाडिमामलकैर्यूषः पित्तवातहरो लघुः ।।२०।।

अनार और आंवला का यूष पित्तवात को हरता है तथा हलका है।।२०।।

मुद्‌गामलकयूषगुणाः

मुद्‌गामलकयूषस्तु भेदनः कफपित्तजित् ।
तृड्दाहशमनः शीतो मूर्च्छा श्रममदापहः ।।२१।।

मूंग और आंवले का यूष भेदन है, कफपित्त को जीतता है, तृषा और दाह को शांत करता है, शीतल है तथा मूर्च्छा परिश्रम और मद इनको नाश करता है।।२१।।

कुलत्थयूषगुणाः

कुलस्थयूषो गुल्मार्शःकफवाताश्मशर्कराः ।

तूनीप्रतूनीमेदांसि निहन्ति त्वग्निकृत्सरः ॥२२॥

कुलत्थयूष अर्थात् कुलथी का यूष गुल्म, बवासीर, कफ, वात, पथरी, शर्करा, तूनी, प्रतूनी और मेद को नाशता है, अग्नि को करता है और दस्तावर है॥२२॥

सूप्यमूलकयूषगुणाः

सूप्यमूलकजो यूषो गलग्रहकफज्वरान् ।
हन्तिश्वासप्रतिश्यायकासमेदोऽरुचिक्रिमीन् ॥२३॥

सूप्य, मूंग की दाल और मूली का यूष गलग्रह, कफ, ज्वर, श्वास, प्रतिश्याय, खांसी, मेद, अरुचि और कृमि को नाशता है॥२३॥

चणकयूषगुणाः

चणकैर्विहितो यूषोऽनुष्णस्तुवरको लघुः ।
रक्तपित्तप्रतिश्यायकासपित्तकफापहः ॥२४॥

चने का यूष गर्म नहीं है, कषैला और हलका है, रक्तपित्त, प्रतिश्याय, खांसी, पित्त कफ इनको नाशता है॥२४॥

मकुष्ठयूषगुणाः

मकुष्ठयूषः संग्राही पित्तश्लेष्मज्वरापहः ।
लघुः सन्तर्पणः पथ्यो हृद्यः पीनसकासजित् ॥२५॥

मकुष्ठयूष अर्थात् मोठ का यूष मल को रोकता है, पित्त और कफज्वर को नाशता है, हलका है, तृप्ति करता है और पथ्य है, दिल को ताकत देता है, पीनस और खांसी को जीतता है॥२५॥

कृताकृतयूषगुणाः

यूषःकृताख्यो लवणस्नेहाभ्यां वारिसाधितः ।
अकृतस्तैर्विनासिद्धः क्रमाद्गुरुलघू च तौ ॥२६॥

नमक और स्नेह से युतकर सिद्ध किया कृतयूष भारी है और नमक और स्नेह से रहित किया अकृतयूष हलका है॥२६॥

यूषसामान्यगुणाः

यूषा गोरसधान्याम्लफलाम्लादिभिरन्विताः ।
यथोत्तरं गुरुतरा वातघ्ना रुचिकारिणः ॥२७॥

गोरस, कांजी, खट्टारस आदि से संयुक्त किये और यूष उत्तरोत्तर गोरस से कांजी और कांजी से खट्टारस ऐसे बहुत भारी हैं वात को नाशते हैं और रुचि को करते हैं॥२७॥

यैरन्नैरौषधैर्यैश्च कृता मण्डादयो बुधैः ।

विचार्य तद्गुणानेतांस्तद्गुणानेव निर्दिशेत् ॥२८॥

जिन अन्न और औषधों से वैद्यों ने मण्ड आदि किये हैं उनके गुणों को विचार कर उनमें वही गुण कहना चाहिये॥२८॥

सूप्यनामगुणाः

सूप्यं तु सूप्यको भृष्टैः शिम्बिजैर्निस्तुषैः कृतः ॥२९॥

सूप्य, सूप्यक, ये दाल के नाम हैं। बिना छिलके के मूंग, उड़द, आदि से किया सूप्य होता है॥२९॥

सूप्यं विष्टम्भि रूक्षं स्यान्निरम्लं तु विशेषतः ।
निस्तुषं भृष्टसिद्धं तल्लाघवं सुतरां व्रजेत् ॥३०॥

सूप्य विष्टम्भ करता है और रूखा है। खटाई से रहित सूप्य बहुत रूखा है, छिलके से रहित और भून के पकाया हुआ बहुत हलका हो जाता है॥३०॥

कृशरागुणाः

क्वचित्समाषैःक्वाप्येवं कृशरा तिलतण्डुलैः ।
कृशरा बलकृद् ग्राह्या सिद्धा तण्डुलवैदलैः ॥३१॥
कृशरा शुक्रला बल्या गुरुः पित्तकफप्रदा ।
दुर्जरापुष्टिविष्टम्भमलहृद्वातनाशिनी ॥३२॥

उड़द, चांवलों को मिलाकर करने से खिचड़ी होती है, कहीं तिल और चावलों की खिचड़ी बनाते हैं, वह कृशरा अर्थात् खिचड़ी बल करती है और मल को रोकती है। चांवल और दाल की कृशरा अर्थात् खिचड़ी वीर्य को करती है, बल को करती है, भारी है, पित्त और कफ को देती है, देर में जीर्ण होती है तथा पुष्टि, विष्टम्भ, मल इनको करती है और वात को नाशती है॥३१–३२॥

क्षिप्रागुणाः

क्षिप्राऽपि तद्गुणा सैषा सुधान्यगुणकारिणी ॥३३॥

क्षिप्रा (ताहरी) में भी खिचड़ी के गुण हैं और सुन्दर अन्न के समान गुण करती है॥३३॥

(क्षैर) क्षैरेयीनामगुणाः

क्षैरेयी परमान्नं स्यात्पायसं क्षीरतण्डुलैः ।
क्षैरेयी दुर्जरा बल्या धातुपुष्टिप्रदा गुरुः ।
विष्टम्भिनी हरेत्पित्तरक्ततृष्णाग्निमारुतान् ॥३४॥

क्षैरेयी, परमान्न, पायस ये खीर के नाम हैं। दूध चांवलों से खीर बनती है। खीर देर में जीर्ण होती हैं, बल को करती है, धातु को पुष्ट करती है, भारी है, विष्टंभ वाली

है, और रक्तपित्त, तृषा, अग्नि, वात इनको हरती है।।३४।।

राजखांडवादिगुणाः

गुडादिपक्वं क्वथितमाममाम्रफलं पुनः ।
स्नेहैलानागरैर्युक्तो ज्ञातव्यो राजखाण्डवः ।।३५।।

गुड़ आदि को पकाके क्वाथ बनाया हुआ और कच्चे आम, स्नेह (घृत), इलायची, सोठ इनसे संयुक्त किया हुआ राजखांडव जानना चाहिये।।३५।।

सितारुचकसिन्धूत्थैः सवृक्षाम्लपरूषकैः ।
निम्बूफलरसैर्युक्तो रागो राजिकया कृतः ।।३६।।

मिसिरी, काला नमक, सेंधानमक, बिजोरा, फालसा, नींबू का रस, राई इनका राग बनता है।।३६।।

खाण्डवा मधुराम्लादिरससंयोगसंभवाः ।
दीपना बृंहणा रुच्यास्तीक्ष्णा हृद्याः श्रमापहाः ।।३७।।

मीठे खट्टे आदि रस के संयोग से बने खांडव अग्नि को जगाते हैं, धातु को पुष्ट करते हैं, रुचि को उपजाते हैं, तेज हैं, दिल को ताकत देते हैं और परिश्रम को नाशते हैं।।३७।।

खण्डाम्रखण्डामलकगुणाः

आम्रामलकलेहाद्या हृद्याबुद्धिबलप्रदाः ।
तर्पणा रोचनाः स्निग्धा मधुरा गुरवस्तथा ।।३८।।

आम और आंवले के लेह आदि दिल को ताकत देते हैं, बुद्धि और बल को तृप्त करते हैं, रुचि को उत्पन्न करते हैं तथा चिकने, मीठे और भारी हैं।।३८।।

रसालानामगुणाः

ससितं दधिमध्वाज्यमरीचैलादिसंस्कृतम् ।
मथितं कान्तमानिन्या कर्पूरपरिवासितम् ।।३९।।

मिसिरी, दही, शहद, घृत, मिरच, इलायची आदि से संयुक्त और चतुर स्त्री के कोमल हाथों से मथित की हुई और कपूर से सुगंधित की हुई रसाला होती है।।३९।।

रसाला शिखरा प्रोक्ता मार्जिका माञ्जिका बुधैः ।
रसाला शुक्रलाबल्या रोचनी वातपित्तजित् ।।४०।।

रसाला, शिखरा, मार्जिका, माञ्जिका ये रसाला के नाम हैं। रसाला वीर्य को देती है, बल को करती है, रुचि को उपजाती है और वात पित्त को जीतती है।।४०।।

स्निग्धा गुरुः प्रतिश्यायं विशेषेण विनाशयेत् ॥४१॥

यह चिकनी और भारी है विशेषकर प्रतिश्यायी को नाश करती है॥४१॥

पानकगुणाः

द्राक्षाऽम्लिकारूषादिजलं खण्डादिमिश्रितम् ।
मरीचार्द्रककर्पूरचातुर्जातादिसंस्कृतम् ॥४२॥

दाख, इमली, फालसा आदि के रस में खांड़ आदि से संयुक्त और मिरच, अदरक, कपूर, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर आदि से संस्कार किया हुआ पानक होता है॥४२॥

पंचसारपानकम्

पानकं द्विविधं तस्मादम्लानम्लविभेदतः ।
द्राक्षाखर्जूर काश्मर्यसमधूकपरूषकैः ॥४३॥
पञ्चसाराभिधं पानं चन्द्रसूर्याधिवासितम् ।
पानकं मूत्रलं हृद्यं प्रीणनं तु श्रमापहम् ॥४४॥

अम्ल और अनम्ल भेद से पानक दो प्रकार का है। दाख, छुहारा कंभारी, मडुआ, फालसा इनसे संयुक्त और कपूर से अधिवासित पंचसार नामक पानक होता है। पानक मूत्र को करता है दिल को ताकत देता है, पुष्टि करता है और परिश्रम को नाशता है॥४३–४४॥

यथाद्रव्यगुणं तत्तु गुरुलघ्वादि निर्दिशेत् ।
पञ्चसाराभिधं पाण्डुतृष्णादाहश्रमापहम् ॥४५॥
मृद्वीकं श्रमदाहास्रपित्तक्लमतृषापहम् ।
रूक्षाणां कोमलं हृद्यं पाचनं च बलप्रदम् ॥४६॥

वह पानक जिन द्रव्यों से बना हो उन द्रव्यों के गुरु, लघु आदि जैसे गुण हों वैसे गुणयुक्त जानना और वह पानक पांडु, तृष्णा, दाह तथा श्रम को हरता है, मुनक्का का पानक परिश्रम, दाह, रक्तपित्त, ग्लानि और तृषा को नाशता है, खुश्क प्रकृति वालों को कोमल है, दिल को ताकत देता है, पाचन है और बल को देता है॥४५–४६॥

अम्लिकारसगुणाः

अम्लिकाया रसस्तृष्णाकृमिदाहश्रमापहः ॥४७॥

इमली का रस तृषा, कृमि, दाह, परिश्रम इनको हरता है॥४७॥

सदकगुणाः

निःस्नेहं दधि निर्मथ्य पचेच्छर्करयाऽन्वितम् ।

सव्योषदाडिमाजाजिः सदकोऽयमुदाहृतः ॥४८॥

घृत से रहित दही को मथ खांड़ मिलाकर पकावे फिर उसमें सोंठ, मिरच, पीपल, अनारदाना, जीरा इनको मिलाने से इसको सदक कहते हैं॥४८॥

सदको रोचनः स्वर्यः पित्तानिलहरोः गुरुः ।
दीपनस्तर्पणो बल्यः श्रमक्लमतृषापहः ॥४९॥

सदक रुचि को करता है, स्वरकारक है, पित्तवात को हरता है, भारी है, अग्नि को जगाता है, तृप्ति करता है, बल में हित है, तथा परिश्रम, ग्लानि और तृषा को नाश करता है॥४९॥

पोलिआदिगुणाः

विकोलकर्कटद्राक्षाकण्टकारिविपाचिताः ।
मण्डकाद्या यथापूर्वं गुरुवो बृंहणा मताः ॥५०॥

सिंघाड़े, कौंच की गिरी, द्राक्षा, मोचरस इनके संयोग से पकाये हुए मांड़े आदि पूर्व पूर्व क्रम से भारी हैं, और धातु को पुष्ट करते हैं॥५०॥

मण्डकः सूचितः सूक्ष्मः कर्पूरादिषु पाचितः ।
स एव किञ्चित्स्थूलस्तु बुधैः पूपालिका मता ॥५१॥

सुंदर और महीन तथा कर्पूर आदि में पकाया हुआ मांड़ा उत्तम होता है, वही किञ्चित् मोटा हो उसे पंडितों ने पूपालिका कहा है॥५१॥

अङ्गारकर्कटी सैव विज्ञेयाऽङ्गारपाचिता ।
अत्युष्णो मण्डकः पथ्यः शीतः स गुरुरुच्यते ॥५२॥

अंगारों पर पकाया हुआ वही अंगारकर्कटी जानना चाहिये, बहुत गर्म मण्डा पथ्य है और शीतल मंडा भारी है॥५२॥

अङ्गारमण्डको ग्राही लघुर्दोषत्रयापहः ।
पोलिका कफकृद्बल्या पित्तला वातनुद्गुरुः ॥५३॥

अंगारमंडक अर्थात् अंगारों पर पकाया मण्डा मल को रोकता है, हलका है, और त्रिदोष को नाशता है। पोली कफ को करती है, बल में हित है, पित्त को करती है, वात को नाशती है, और भारी है॥५३॥

अङ्गारकर्कटीबल्या बृंहणी शुक्रला लघुः ।
दीपनी कफहृद्रोगपीनसश्वासवातजित् ॥५४॥

अंगारकर्कटी (बाटी) बल को करती है, धातु को पुष्ट करती है, वीर्य को देती है, अग्नि को जगाती है, और कफ, हृद्रोग, पीनस, श्वास और वात इनको जीतती है॥५४॥

शालिभक्ष्यगुणाः

शालिपिष्टकृता भक्ष्या नातिबल्या विदाहिनः ।
अवृष्या गुरुवः श्लेष्मकफपित्तप्रकोपनाः ॥५५॥

शालि चांवलों की पीठी के बनाये भोजन के पदार्थ बहुत बल नहीं करते हैं, विशेषता से दाह नहीं करते हैं, वृष्य नहीं हैं, भारी हैं, तथा कफ और पित्त को कुपित करते हैं॥५५॥

गोधूमादिभक्ष्यगुणाः

गोधूमविहिता भक्ष्या बल्याः पित्तानिलापहाः ।
वैदला वातला भक्ष्या गुरवास्तुवरा हिमाः ॥५६॥

गेहूं से बनाये भक्ष्य बल को करते हैं, और पित्तवात को नाशते हैं। वैदलसंज्ञक (उड़द सेम मूंग आदि) अन्न के भक्ष्य भारी हैं, कषैले और शीतल हैं॥५६॥

माषभक्ष्यगुणाः

माषपिष्टकृता भक्ष्या बल्याः पित्तकफप्रदाः ॥५७॥

उड़द की पीठी से बनाये भक्ष्य पदार्थ बल करते हैं, और पित्तकफ को बढ़ाते हैं॥५७॥

गुड़युक्तभक्ष्यगुणाः

विचार्यान्नगुणान्भक्ष्यानन्यानपि विनिर्दिशेत् ।
गौडिका गुरवो भक्ष्या वातघ्नाः कफशुक्रलाः ॥५८॥

अन्न के गुणों को विचारकर जिस अन्न से जो पदार्थ बनावे वैसा गुण कथन करना। गुड़ के भक्ष्य भारी हैं, वात को नाशते हैं, तथा कफ और वीर्य को उत्पन्न करते हैं॥५८॥

घृतपक्वभक्ष्यगुणाः

घृतपाचितभक्ष्यास्तु बल्याः पित्तकफापहाः ॥५९॥

घृत में पकाये भक्ष्य (खाने के पदार्थ) बल करते हैं, तथा पित्त और कफ को नाशते हैं॥५९॥

तैलपक्वभक्ष्यगुणाः

तैलजा दृक्समीरघ्ना उष्णाः पित्तास्रदूषणाः ॥६०॥

तेल में पकाये भक्ष्य दृष्टि और वात को नाशते हैं, गर्म हैं, और रक्तपित्त को दूषित करते हैं॥६०॥

दुग्धभक्ष्यगुणाः

दुग्धालोडितगोधूमशालिपिष्टादिनिर्मिताः ।

वातपित्तहरा भक्ष्याः हृद्याः शुक्रबलप्रदाः ।।६१।।

दूध में आलोडित किये गेहूं और शालि चांवल आदि की पीठी से रचे हुए भक्ष्य वातपित्त को हरते हैं, दिल को ताकत देते हैं तथा वीर्य और बल को बढ़ाते हैं।।६१।।

घृतपूरगुणाः

विचार्यान्नगुणान्भक्ष्यानन्यानपि विनिर्दिशेत् ।
क्षीरेण मर्दितं चूर्णं गोधूमानां सुगालितम् ।।६२।।
विस्तार्य सर्पिषा युक्तं ततः श्वेताविमिश्रितम् ।
घृतपूरोऽयमुद्दिष्टः कर्पूरमरिचान्वितः ।।६३।।

अन्न के गुणों को विचार अन्य भी भक्ष्य बना लेने। गेहूं के मैदे को अच्छी तरह छान दूध से मर्दितकर घी मिलाकर घी में पकाकर पीछे सफेद खांड़ और कपूर मिरच से संयुक्त करे यह घृतपूर अर्थात् घेवर कहा गया है।।६२–६३।।

समितो मर्दितः क्षीरनारिकेलसितादिभिः ।
अवगाह्य घृते पक्वे घृतपूरोऽपरः स्मृतः ।।६४।।

मैदा को घी, दूध, नारियल, मिसिरी इत्यादि करके मर्दित करके बेलकर घृत में पकावे तो यह दूसरा घेवर कहा गया है।।६४।।

घृतपूरो गुरुर्वृष्यो हृद्यः पित्तानिलापहः ।
सद्यः प्राणप्रदो बल्यः क्षतजिद् बृंहणः परः ।।६५।।

घेवर भारी है, वीर्य को पुष्ट करता है, दिल को ताकत देता है, पित्तवात को नाशता है, तत्काल प्राण देता है, बल को करता है और क्षत को जीतता है तथा धातुओं को पुष्ट करता है।।६५।।

समिता–संयावगुणाः

समितां सर्पिषा भृष्टां श्वेतां मरिचमिश्रिताम् ।
एलालवङ्गकर्पूरचूर्णादिपरिसंस्कृताम् ।।६६।।
क्षिप्त्वाऽन्यसमितालम्बपुटेषु सुघृते पचेत् ।
ततः खण्डे न्यसेत्पक्वं संयावोऽयमुदाहृतः ।।६७।।

मैदे को घी में भूनकर उसको लेसन ले और टिकिया बनाकर उनमें मिरच, इलायची, लौंग, कपूर इनका चूर्ण और खांड़ मिलावे तब सुन्दर घृत में तले, पीछे पकी हुई खांड़ की चाशनी में डाल दे इसको संयाव कहते हैं।।६६–६७।।

समितां मधुदुग्धेन मर्दयित्वा सुशोभनम् ।
पचेद् घृतोत्तरे खण्डे न्यसेत्पक्वे नवे घटे ।।६८।।

ततो मरिचचूर्णैलाशुभ्राचूर्णावचूर्णितम् ।
कुर्यात्कर्पूरसंयुक्तं संयावममृतोपमम् ।।६९।।

सुन्दर मैदे को राब और दूध में मर्दितकर घी में भून ले और दुगुनी खांड़ मिलाकर पक्के नये घड़े में डालकर फिर इसमें मिर्च, इलायची, वंशलोचन और कपूर इनके चूर्ण से संयुक्त करे। यह संयाव अमृत के समान स्वादवाला है।।६८-६९।।

मधुशीर्षिकागुणा:

मर्दयित्वा तु समितामपूपास्तनवः कृताः ।
पक्त्वा घृतेऽसिते पाके मण्डिता मधुशीर्षिका ।।७०।।

मैदे को घृत और पानी से मर्दितकर छोटी छोटी पूरी बना घृत में पका खांड़ से गलफे यह मधुशीर्षिका बनती है।।७०।।

घृतेन मर्दितां तोयैः समितां मृदु मर्दयेत् ।
मातुलुङ्गत्वचा खण्डिपक्वेनार्द्रकपूरितम् ।।७१।।
विधाय पूपकं वृत्तं गन्धाढ्यं केशरान्वितम् ।
पक्त्वा सर्पिषि खण्डे च मलितो मधुशीर्षकः ।।७२।।

मैदे को घी और पानी से युक्तिपूर्वक मर्दितकर महीन पूरी बना उसमें थोड़ी बिजोरा की छाल, पीपल और सोंठ भर गोल पूआ बना सुगन्ध और केशर से संयुक्तकर घृत में पका खांड़ की चासनी से गलेफे यह मधुशीर्षक पूआ कहा है।।७१-७२।।

पूप (पुड़ा) गुणाः

समितां गुडतोयेन मेलयित्वा सुगालिताम् ।
घृते विस्तार्य विपचेत्सुवृत्तान्मृदुपूपकान् ।।७३।।

मैदा में गुड़ और पानी मिला अच्छी तरह साफकर कोमल और गोल मालपुओं को घृत में विस्तृतकर पकावे ।।७३।।

दधिपूपकगुणाः

शालिपिष्टं युतं दध्ना मर्दयित्वा घृते पचेत् ।
वेष्टयेत्पक्वखण्डेन सुवृत्तान्दधिपूपकान् ।।७४।।

शालि चांवलों की पीठी को दही से मथकर घृत में पकावे। पीछे खांड़ की चासनी गलफेले ऐसे दही के मालपुए बनते हैं।।७४।।

संयावा मधुशीर्षाढ्याः पूपकाः दधिसम्भवाः ।
गुरुवो बृंहणा हृद्या वृष्याः पित्तानिलापहाः ।।७५।।

मधुशीर्षिका, संयाव, पूआ और दही से बने मालपुए आदि भारी हैं, धातु को पुष्ट करते हैं, दिल को ताकत देते हैं। वीर्य को पुष्ट करते हैं तथा पित्त और वात को

नाशते हैं॥७५॥

एते संस्कारभेदेन विविधास्तेऽपि तद्गुणाः ॥७६॥

संस्कार भेदकरके ये बहुत प्रकार के होते हैं और पूर्वोक्त गुणों को देते हैं॥७६॥

विस्यन्दगुणाः

दधिक्षीरे समे पक्त्वा त्वर्द्धभागावशेषिते ।
आपचेद्रक्तशालीनां तण्डुलांस्तिलसंयुतान् ।
प्रियालपनसादीनां बीजमुष्टिं समापचेत् ॥७७॥

दही और दूध बराबर भाग ले पकावे जब आधा भाग शेष रहे तब लाल शालिचांवल, तिल, पिस्ते और पनस आदि के बीजों के मुष्टि मिला पकावे॥७७॥

क्षीरतुल्यं घृतं चैव शर्करा चैवतत्समा ।
सिद्धस्त्रिकटुकोपेतः कर्पूरेणाधिवासितः ॥७८॥

दूध के समान घृत और उतनी ही खांड़ मिला सोंठ, मिरच, पीपल का चूर्ण मिलावे और कपूर से अधिवासित करे॥७८॥

एष विस्यन्दनो नाम देवलोकेऽपि दुर्लभः ।
यस्मात्पक्वेऽपि हि घृतं स्यन्दते सर्वतोमुखम् ॥७९॥

ये विस्यंदन देवलोक में भी दुर्लभ है। जिस कारण से पके हुए में भी सब तरफ से घृत झिरता है॥७९॥

तस्मात्सूपविधानज्ञैर्विस्यन्दो विधिवत्स्मृतः ।
विस्यन्दो बृंहणो हृद्यः पित्तानिलहरो गुरुः ॥८०॥

इसलिये सूपशास्त्र, जानने वालों ने विधि के समान विस्यंद कहा है। विस्यंद धातु को पुष्ट करता है, दिल को ताकत देता है, पित्त और वात को हरता है और भारी है॥८०॥

लप्सीगुणाः

समितां भर्जयेत्तते घृते श्वेतां ततो न्यसेत् ।
वारिमज्जादिसंयुक्तां पयसा योजयेत्तदा ॥८१॥

मैदा को गर्म घृत में मिलाकर भूने पीछे मिला के पानी, बदाम, पिस्ता और दूध आदि से संयुक्त करे॥८१॥

एषैलादियुता तज्ज्ञैर्लप्सिका ललिता मता ।
लप्सिका बृंहणी वृष्या वातपित्तहरा गुरुः ॥८२॥

पीछे इलायची आदि डाले। वैद्यों ने ये सुन्दर लपसी मानी है। लपसी धातु और वीर्य को

पुष्ट करती है, वातपित्त को हरती है और भारी है॥८२॥

फेनीगुणाः

फेनिका पुटिनी शुभ्रा वातपित्तहरा लघुः ।
लक्षणं फेनिकादीनां सूपशास्त्राद्विचारयेत् ॥८३॥

फेनिका, पुटिनी, शुभ्रा ये फेनी के नाम हैं। फेनी वातपित्त को हरती है और हलकी है। फेनी आदि के लक्षण सूपशास्त्र से विचारने चाहिये॥८३॥

मोदकनामगुणाः

मोदा लड्डुकका: प्रोक्तास्ते चानेकविधा मताः ।
तेषां पक्वत्वप्राप्तानां न्यसेद्गोधूमगालिताम् ॥८४॥

मोदक, लड्डू के नाम हैं। वे अनेक प्रकार के होते है, गेहूँ के मैदे की मुठड़ियें घी में पकाकर कूट छानकर खांड़ मिलाकर लड्डू बनाये ये साधारण लड्डू हैं॥८४॥

दधि क्षीरं मुप्रिजुष्टं समिता पाषपिष्टकः ।
सूरणार्द्रककूष्माण्डशालूकामिषमत्स्यकाः ॥८५॥

दही, दूध, मुठिया, मैदा, उड़द की पीठी, जमीकन्द, अदरक, कोहला, शालूक, मांस, मछली॥८५॥

इत्यादिभिर्बहुविधाः कल्यास्ते सूपशास्त्रतः ।
द्रव्यं विचार्य मतिमांस्तद्गुणानपि निर्दिशेत् ।
मोदका दुर्जरा वृष्या बल्याः पित्तानिलापहः ॥८६॥

इत्यादि को मिलाने से सूप (भोजन बनाने के) शास्त्र के अनुसार बहुत प्रकार के वनते हैं, बुद्धिमान् वैद्य द्रव्य का विचार कर जैसे द्रव्य से बने हों वैसे द्रव्य के गुणवाले लड्डुओं को भी कथन करे। लड्डू देर में जरते हैं, वीर्य को पुष्ट करते हैं, बल को देते हैं और पित्तवात को नाशते हैं॥८६॥

माषवटकगुणाः

माषमुद्गादिपिष्टोत्थाः कटुका वटिकादयः ।
तत्कारणगुणाञ्ज्ञात्वा तद्गुणानपि निर्दिशेत् ॥८७॥

उड़द और मूंग आदि की पीठी से बनाये गये बड़े आदि चर्परे हैं। मूंग उड़द के गुणों को जान के बड़ों के गुणों को भी कहे॥८७॥

माषाणां वटको हृद्यो बल्यो वातहरोगुरुः ।
विष्टम्भी घोलवटको विदाही पवनापहः ॥८८॥

उड़दों का बड़ा दिल को ताकत देता है, बल करता है, वात को नाशता है और भारी है। घोल बड़ा विष्टभवाला है, दाह को करता है और वात को नाशता

है।।८८।।

शाण्डकवटकगुणाः

शाण्डको वटको दृष्टिनाशनो दोषलो गुरुः ।।८९।।

शांडकवटक अर्थात् कांजी का बड़ा दृष्टि को नाशता है, दोष को करता है और भारी है।।८९।।

तुषाम्बुवटकगुणाः

तुषाम्बुवटको रुच्यः पित्तलः कफवातजित् ।
इण्डली शुक्रला रूक्षा विष्टम्भी कफवातकृत् ।।९०।।

तुषांबुवटक अर्थात् जवों की कांजी का बड़ा रुचि को करता है, पित्त को उपजाता है और कफवात को जीतता है। पकौड़ी वीर्य को उपजाती है, रूखी है, विष्टंभ और कफवात को करती है।।९०।।

सोमालिकागुणाः

सोमालिका गुरुर्वृष्या रोचनी पित्तनाशिनी ।।९१।।

सुहाली भारी है, पुष्टि करती है, रुचि को उत्पन्न करती है और पित्त को नाशती है।।९१।।

कुण्डलिकागुणाः

द्विप्रस्थां शुद्धसमितां प्रस्थं गोधूमगालितम् ।
विमर्द्य पयसा स्थाप्यं व्रजेद्यावत्तदम्लताम् ।।९२।।

एक सौ अट्ठाईस तोलेभर शुद्ध मैदा लेके चौंसठ तोलेभर गेहूं का चून मिला दूध से मथ जब तक खट्टापन प्राप्त हो तब तक धरे रहने दे।।९२।।

सच्छिद्रे नारिकेलस्य पात्रे निक्षिप्य निर्मले ।
परिभ्राम्य घृते तप्ते मन्दाग्नौ तु विपाचयेत् ।।९३।।

फिर नारियल के छिद्र सहित साफ पात्र में डाल तपाये हुए घृत में भ्रमाकर (चक्कर देकर) मन्द अग्नि से पकावे।।९३।।

कर्पूरवासिते पक्वे विज्ञेया नृपवल्लभा ।
सुपक्वां कंकणाकारां सितालेहे विनिक्षिपेत् ।।९४।।

फिर इस सुन्दर पकी हुई और कंकण के आकार वाली को कपूर से वासित की हुई सुंदर खांड़ की चासनी में डाले यह राजाओं को प्रिय कुंडलिका (जलेबी) कही जाती है।।९४।।

सा तु कुण्डलिका नाम्ना पुष्टिकान्तिबलप्रदा ।
धातुवृद्धिकरा वृष्या हृद्या चेन्द्रियतर्पणी ।।९५।।

इसका नाम कुण्डलिका है, वह पुष्टि, कांति और बल को देती है, धातु को बढ़ाती है, वीर्य को पुष्ट करती है, दिल को ताकत देती है और इंद्रियों को तृप्त करती है।।९५।।

तस्यामम्लत्वमाप्तायां न्यसेद्गोधूमगालिताम् ।।९६।।

यदि वह कुण्डली बनाने का खमीर अधिक खट्टा हो जाय तो उसमें थोड़ा मैदा मिला लेना चाहिये।।९६।।

कुल्माषगुणाः

गोधूमाद्यास्तु कुल्माषा अर्द्धस्विन्ना मताः क्वचित् ।
कुल्माषा गुरवो रूक्षा वतला भिन्नवर्चसः ।।९७।।

गेहूं आदि के बने कुल्माष कोई थोड़े सिजाते हैं, कोई पूर्णरूप से सिजाते हैं, कुल्माष भारी हैं, रूखे हैं, वात को करते हैं और मल को भेदते हैं।।९७।।

नवीननिस्तुषोद्भृष्टयवचूर्णं च सक्तवः ।।९८।।

नवीन, साफ जव भूनकर पीसे जावें सो सत्तू होते हैं।।९८।।

मन्थादिगुणाः

सक्तवस्तु घृताभ्यक्ताः शीतवारिविलोडिताः ।
नातिद्रवो नातिसान्द्रो मन्थः सद्भिः प्रकीर्तितः ।।९९।।

घृत से भिगोये शीतल पानी से विलोडित किये सत्तू होते हैं। न बहुत पतला हो और न बहुत करड़ा हो उसे सत्पुरुषों ने मन्थ कहा है।।९९।।

मन्थो बलकर सद्यः परिणामे बलावहः ।
मोहतृष्णाक्षयच्छर्दिकुष्ठदाहश्रमाञ्जयेत् ।।१००।।

मन्थ बल को शीघ्र करता है, परिणाम में बल को देता है और मोह, तृषा, क्षय, छर्दि, कुष्ठ, दाह, परिश्रम इनको जीतता है।।१००।।

द्राक्षा सितेक्षुस्वरसैर्मिश्रा पित्तास्रदाहजित् ।
द्राक्षा मधुयुता बल्या कफश्रममदापहा ।
वर्गत्रयसमायुक्ता दोषवर्चोऽनुलोमनी ।।१।।

मिसिरी और ईख के स्वरससे मिली दाख पित्तरक्त और दाह को जीतती है, शहद से युक्त हुई दाख बल को करती है और कफ, परिश्रम, मद इनको नाशती है, मिसिरी, ईख का रस, शहद इनसे युक्त हुई दाख दोष और मल को अनुलोमन करती है।।१।।

सक्तुगुणाः

सक्तवो यवजाः शीता दीपना लघवः सराः ।

कफपित्तहरा रूक्षा लेखनाः पानतस्तु ते ।
सद्यो बलप्रदाः पथ्या घर्मादि (क्ला) क्रान्तदेहिनः ।।२।।

जवों का सत्तू शीतल है, अग्नि को जगाता है, हलका है, सर है, कफपित्त को हरता है, पानी से रूखा और लेखन है, शीघ्र बल को देता है, घाम आदि से क्रांत देहवाले को पथ्य है।।२।।

निस्तुषैर्भर्जितैः पिष्टैश्चणकैः सयवैः कृताः ।।३।।
सक्तवः शर्करासर्पिर्युक्ता ग्रीष्मेऽतिपूजिताः ।
पिण्डी प्रोक्ता गुरुस्तेषां द्रवत्वाल्लेहिका लघुः ।।४।।

छिलकों से रहित और भुने हुए पीसे चने और जवों से किये सत्तू खांड और घृत से किये जावें तो गर्मी के समय में बहुत पूजित हैं। सत्तुवों की पिंडी भारी है, द्रवपने से लेहिका हलकी है।।३-४।।

न भुक्त्वा न रदैः स्पृष्ट्वा न निशायां न वा बहून् ।
न जलान्तरितांस्तद्धि सक्तूनद्यान्न केवलान् ।।५।।

भोजन करके सत्तू नहीं खाने चाहिये, इसी प्रकार दांतों पर रख करके न खावे, रात्रि में न खावे, बहुत ज्यादा न खावे, पानी से अन्तरित न खावे और केवल सूखे ही सत्तुओं को न खावे।।५।।

यवोद्भवलाजगुणः

भृष्टशाल्यादिजा लाजा धान्यभृष्टयवोद्भवाः ।
लाजा लघुतराः शीता बल्याः पित्तकफच्छिदः ।
छर्द्यतीसारदाहास्रमेहमेदस्तृषापहा ।।६।।

भुने हुए शालि चांवल आदि से और भुने हुए जवों से लाजा होती है, लाजा अर्थात् खील बहुत हलकी है, शीतल है, बल को करती है, पित्त और कफ को काटती है और छर्दि, अतिसार, दाह, रक्त, प्रमेह, तृषा इनको नाशती है।।६।।

धान्यागुणाः

धान्य विष्टम्भिनी रूक्षा कफमेदोहरा गुरुः ।।७।।

धाणियां विष्टंभ करती है, रूखी है, कफ और मेद को हरती है और भारी है।।७।।

(चिड़ते) पृथकगुणाः

पक्वार्द्रा व्रीहयः सम्यक् पीडिताः पृथुका मताः ।
पृथुका गुरवो बल्याः श्लेष्मला वातनाशनाः ।।८।।

पके हुए गीले चांवल भुनाये जावे वे पृथुक कहे जाते हैं, पृथुक भारी होते हैं, बल को

करते हैं, कफ करते हैं और वात को नाशते हैं॥८॥

होलकगुणा:

शिंबिधान्यैरर्द्धपक्वैः सुभृष्टैर्होलको मतः ।
होलकोऽल्पानिलो मेदः कफदोऽपक्वभावतः ॥९॥

आधा पका हुआ शिंबिसंज्ञक अन्न अच्छी तरह भूना जावे वह होलक कहा जाता है, होला अल्प वातवाला है तथा अपक्वपने से भेद और कफ को उत्पन्न करता है॥९॥

लम्वीनामगणा:

अपक्वभृष्टैर्गोधूमैरुलञ्चो लम्बलम्बिके ।
लम्बी कफप्रदा बल्या लघु पित्तानिलापहा ॥११०॥

विना पके हुए गेहुओं को भून ले तो उसे उलंच, लंब, लंबिका कहते हैं। लंबी कफ को देती है, बल को करती है, हलकी है तथा पित्त और वात को नाशती है॥११०॥

परिशुष्कगुणा:

हिंगुपक्वे घृते दत्त्वा मांसमालोडच भर्जितम् ।
मात्रयोष्णाम्बु निक्षिप्य पचेत्सम्यग्विचक्षणः ॥११॥

हींग से पके हुए घृत में भूने हुए मांस को आलोडित कर प्रमाण से गरम पानी डाल बुद्धिमान् पुरुष अच्छी तरह पकावे॥११॥

मरिचाद्रकसंयुक्तं सुगन्धिद्रव्यवासितम् ।
***गतद्रवं सुधातुल्यं परिशुष्कं तदुच्यते ॥१२॥**

मिरच और अदरक उसमें मिलाकर सुगंधित द्रव्य से वासित करे, अच्छा भूना हुआ यह अमृत के समान परिशुष्क कहा गया है॥१२॥

प्रदिग्धगुणा:

घनद्रव्योपलिप्तं तत्प्रदिग्धमिति कीर्त्यते ।
प्रदिग्धं वातजिद्बल्यं गुरु शुक्रविवर्द्धनम् ॥१३॥

वही घनद्रव्य से उपलिप्त हुआ प्रदिग्ध मांस होता है, प्रदिग्ध मांस वात को जीतता है, बल को करता है, भारी है, वीर्य को बढ़ाता है॥१३॥

उल्लिप्तमांसगुणा:

रसेन युक्तं सरसं शूल्यं शूलेन संस्कृतम् ।

---

* यतद्रव्यमिति पाठः

परिशुष्कं स्थितं स्निग्धं रोचनं तर्पणं गुरु ।।१४।।

रस से युक्त हुआ सरस मांस होता है, शूलकरे पकाया हुआ शूल्यमांस होता है, परिशुष्कमांस धरा हुआ चिकना है, रुचि को करता है, तृप्ति करता है और भारी है।।१४।।

बलमेधाग्निमांसौजः शुक्रवृद्धिकरं परम् ।
तदेवोल्लिप्तपिष्टत्वादुल्लिप्तं परिकीर्त्यते ।।१५।।

बल, बुद्धि, अग्नि, मांस, पराक्रम, वीर्य इनको बढ़ाता है, वही उल्लिप्त पिष्टपन से उल्लिप्त कहा गया है।।१५।।

उल्लिप्तं गुरु पथ्यं तत्परिशुष्कसमं गुणैः ।
प्रदिग्धं वातजिद्बल्यं गुरुशुक्रविवर्धनम् ।
सरसं तद्गुणं ज्ञेयं विशेषाल्लघु दीपनम् ।।१६।।

उलिप्त नामवाला मांस भारी है, पथ्य है, गुणों करके परिशुष्क मांस के समान है, प्रदिग्ध मांस वात को जीतता है, बल को करता है, भारी है और वीर्य को बढ़ाता है, सरस मांस में भी ये ही गुण हैं। विशेषकर हलका है और अग्नि को जगाता है।।१६।।

शूल्यमांसगुणाः

प्रोतं शूलने पिशितं सौरभाद्यम्बुना बहु ।।१७।।
लिप्तं विधूमैरङ्गारैः पाचितं शूल्यमुच्यते ।
शूल्यं सर्वोत्तम मांसं लघु पथ्योत्तमं मतम् ।।१८।।

शूलकरके पिरोया हुआ और सुगंधित पानी से लिप्त हुआ, धूम्र से रहित हुए अंगारों करके पकाया हुआ शूल्य मांस होता है। शूल्य मांस सब मांसों में से उत्तम है, हलका है और उत्तम पथ्य माना गया है।।१७।।१८।।

अङ्गारप्रतप्तमांसगुणाः

अङ्गारादिषु यत्पक्वं प्रतप्तं तदुदाहृतम् ।।१९।।

अंगार आदिकों में जो पकाया जावे उसे प्रतप्त मांस कहा है।।१९।।

पिष्टमांसगुणाः

मांसं दाडिमसिन्धूत्थसौरभादिसमन्वितम् ।
पिष्ट्वा पूपादिसंकल्पपक्वं पिष्टमिति स्मृतम्।।१२०।।

अनार, सेंधानमक, सुगन्ध आदि से युक्तकर पीस पुआ, आदि की तरह पकाया जावे उसे पिष्टमांस कहा है।।१२०।।

घृतादिसाधितमांसगुणा:

भर्जितं स्याद् घृतादौ तु भृष्ट्वा यत्साधितं पुनः ॥२१॥

घृतादि में भूनकर जो साधित किया जावे वह भर्जित मांस होता है॥२१॥

तन्दुपक्वमांसगुणा:

मांस सौरभसंलिप्तं तन्दुपक्वं मधुप्रभम् ॥२२॥

सुगन्ध से लिप्त हुआ और शहद के समान कांतिवाला ऐसा तन्दुपक्व मांस होता है॥२२॥

प्रदिग्धादितैलपक्वमांसगुणा:

प्रदिग्धं सरसं पक्वं भर्जितं मृदुपाचितम् ।
प्रतप्तं परिशुष्कं च शूल्यं यच्चान्यदीदृशम् ॥२३॥
मांसं तैलेन सिद्धं तद्वीर्योष्णं गुरु पित्तलम् ॥२४॥

प्रदिग्ध, सरस, पक्व, भर्जित, मृदुपाचित, प्रतप्त, परिशुष्क, शूल्य अन्य इसी प्रकार का मांस तैल करके सिद्ध किया जावे तो वीर्य में गर्म है, भारी है और पित्त को करता है॥२३-२४॥

घृतपक्वं तदेव स्याल्लघु रुच्यमपित्तलम् ।
अत्युष्णं वीर्यबलदं हृद्यं दृष्टिप्रसादनम् ॥२५॥

घृत से पकाया वही मांस हलका है, रुचि को करता है, पित्त को नहीं करता है, बहुत गर्म है, वीर्य और बल को देता है, दिल को ताकत देता है और दृष्टि को प्रसादन करता है॥२५॥

तक्रादिपक्वमांसगुणा:

गोरसस्नेहधान्याम्लफलाम्लकटुकादिभिः ।
सिद्धं मांसं भवेद्बल्यं रोचनं दीपनं गुरु ॥२६॥

तक्र, स्नेह, कांजी, खट्टारस, चर्परा आदि से सिद्ध किया मांस बल को करता है, रुचि को करता है, अग्नि को जगाता है और भारी है॥२६॥

सुस्विन्नमांसगुणा:

मांसं चातिरसं रूक्षं सुस्विन्नं वातलं गुरु ॥२७॥

अच्छी तरह सिजाया मांस बहुत रसवाला है, रूखा है, वात को करता है और भारी है॥२७॥

वेसवारगुणा:

गतास्थि मांसं सुस्विन्नं पुनर्दृषदि पेषयेत् ।
व्योषादिसंस्कृतं कृत्वा पचेद्भूयो घृतान्वितम् ।

वेसवारोऽयमुद्दिष्टो बल्यो वातहरो गुरुः ॥२८॥

हड्डियों से रहित मांस को अच्छी तरह सिजाय कर पत्थर पर पीसे, सोंठ, मिरच, पीपल इत्यादि से युक्त कर, फिर घृत मिला पकावे, यह वेसवार कहा है, यह बल को करता है, वात को हरता है और भारी है॥२८॥

सौरभगुणाः

स्विन्नमुद्‌गादिकल्कोऽपि वेसवारोऽपरः स्मृतः
हरिद्राव्योषसिन्धूत्थहिङ्गुधान्यकदाडिमैः ।
सजाजिभिर्वेसवारः सौरभोऽयमुदाहृतः ॥२९॥

सिजाया हुआ मूंग आदि का कल्क भी दूसरा वेसवार कहा गया है, हल्दी, सोंठ, मिरच, पीपल, सेंधानमक, हींग, धनिया, अनार, जीरा इन्हीं से युक्त किया वेसवार सौरभ कहा जाता है॥२९॥

सौरवगुणाः

मुद्‌गादिवेसवारेषु यथाद्रव्यगुणान्वदेत् ।
पिष्टमांससमुद्भूतः स्मृतो मांसरतो रसः ।
सौरवः सौरसः स्यात्तु यो रसो लवणान्वितः ॥१३०॥

मूंग आदि के वेसवार को जैसा द्रव्य हो उसके समान गुणवाला कहना। पीसे हुए मांस के रस से उपजा मांसरस होता है और लवणयुक्त को सौरव और सौरस कहते हैं॥१३०॥

स्वानिष्कगुणाः

संयुक्तो वेसवारेण रसः स्वानिष्कमुच्यते ॥३१॥

वेसवार से युक्त हुआ मांसरस स्वानिष्क कहा गया है॥३१॥

मांसरसगुणाः

रसो हृद्यः श्रमश्वासवातपित्तक्षयापहः ।
प्रीणनो व्रणयुक्तानां क्षीणानामल्परेतसाम् ॥३२॥

मांस रस दिल को ताकत देता है और परिश्रम, श्वास, वात, पित्त, क्षय इनको नाशता है, जख्मियों को, क्षीणों को और अल्पवीर्यवालों को तृप्त करता है॥३२॥

विश्लिष्टभग्नसन्धीनां शुद्धानां शुद्धिकाङ्क्षिणाम् ।
शस्यते स्वरहीनानां दृष्टयायुः श्रवणार्थिनाम् ॥३३॥

पृथक् और टूटी हुई संधिवालों को शुद्ध हुओं को शुद्धि की इच्छावालों को स्वर से हीन हुओं आदि को और दृष्टि, आयु, सुनना इनकी इच्छावालों को मांसरस उत्तम

है।।३३।।

दाडिमयुक्तमांसरसगुणाः

सदाडिमादिर्बलदोदोषघ्नस्तु* कृतस्तु सः ।।३४।।

अनार आदि से युत हुआ मांस का रस बल को देता है, दोषों को नाशता है।।३४।।

सौवीरः प्रीणनः शीतो मुखशोषश्रमापहः ।
दीपनः क्लमवातघ्नः सर्वधातुविवर्द्धनः ।।३५।।

सौवीर पुष्टि करता है, शीतल है, मुखशोष और परिश्रम को नाशता है, अग्नि को जगाता है, ग्लानि और वात को नाशता है तथा सब धातुओं को बढ़ाता है।।३५।।

स्वौनिष्कस्तु गुरुः पथ्यो दीप्ताग्नीनां विशेषतः ।
अल्पमांसादिसंयुक्तो लवणाम्बुविपाचितः ।।३६।।
दलिया चणिका ज्ञेया रसाद्या लघवो मताः ।
तक्रादिक्वाथसम्भूता क्वथिता कथिता बुधैः ।।३७।।

स्वानिष्क भारी है, दीप्त अग्निवालों को विशेषकर पथ्य है, अल्पमांस आदि से युक्त और नमक पानी से पकाया हुआ हो उसे दलिया और चणिका जानना, इनके रस आदि हलके माने हैं। तक्र आदि मिलाकर पकाई हुई क्वथिता कही है।।३६-३७।।

क्वथितागुणाः

क्वथिता पाचनी हृद्या रुच्या वह्निप्रदा लघुः ।
कफानिलविबन्धघ्नी किञ्चित्पित्तप्रकोपिनी ।।३८।।

क्वथिता पाचनी है, दिल को ताकत देती है, रुचि को करती है, अग्नि को देती है और हलकी है, वह कफ, वात, विबन्ध इनको नाशती है और पित्त को किंचित् कुपित करती है।।३८।।

शाकं तक्रादिभिः सम्यक्साधितं क्वथितं मतम् ।
क्वथितं दीपनं रुच्यं वातश्लेष्मश्रमापहम् ।
त्यक्त्वा स्वहेतुशाकस्य गुणानेतद्गुणं भवेत् ।।३९।।

तक्र आदि से अच्छी तरह साधित किया शाक क्वथित माना गया है, क्वथित अग्नि को जगाता है और रुचि को उपजाता है, वात, कफ, परिश्रम इनको नाशता है, शाक

---

* संस्कृतस्तु सः इति पाठोऽपि ।

मसाला आदि डालकर बनाने से अपने कारणजन्य गुणों को छोड़कर जैसे योग से बनाया जाय वैसे गुणवाला हो जाता है।।३९।।

पर्पटगुणाः

पर्पटा लघवो रुच्या लघीयान् क्षारपर्पटः ।।१४०।।

पर्पट अर्थात् पापड़ हलका है, रुचि को उपजाता है, खारसहित पापड़ बहुत हलका है।।१४०।।

पिण्याकनामगुणाः

पिण्याकस्तिलकिट्टः स्यात्पललं तिलपिष्टकम् ।
पिण्याको लघुरूक्षश्च विष्टम्भी दृष्टिदूषणः ।।४१।।

पिण्याक, तिलकिट्ट, पलल, तिलपिष्टक, ये नाम खल के हैं। तिलों का खल, हलका, रूखा और विष्टम्भ करता है तथा दृष्टि को दूषित करता है।।४१।।

पललगुणाः

पललं बृंहणं स्निग्धं कफपित्तकरंगुरु ।।४२।।

तिलों की पीठी धातु को पुष्ट करती है, चिकनी है, कफपित्त को करती है और भारी है।।४२।।

द्रव्यकालक्रियायोगदेहादीनि विचार्य तु ।
अन्येषामप्यनुक्तानामेषामपि गुणान् वदेत् ।।१४३।।

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ धान्यकृतान्नादिनामैकादशोवर्गः ।।११।।

जिनका यहां कथन नहीं किया उनके विषय में औषध, समय, क्रिया, योग शरीर इत्यादि का विचारकर गुणों को कथन करे।।१४३।।

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ वैद्यरत्न पं० रामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचित भाषातत्वप्रकाशिनीहिन्दीटीकायां धान्यकृतान्नादिनामैकादशो वर्गः ।।११।।

*****
****

मुखेन्दुपद्मप्रतिबाधलुब्धविधुन्तुदालिभ्रममादधानम् ।
लक्ष्मीकपोलप्रतिबिम्बिताङ्गं नीलाब्जनीलं कलयामि तेजः।।१।।

लक्ष्मी का मुखरूप जो इन्दु अर्थात् चन्द्रमा है उसका बाधक जो विधुन्तुद अर्थात् राहु उसके, अथवा लक्ष्मी के मुखरूप जो पद्म है, उसमें लुब्ध भौंरे के भ्रम को देनेवाला

और लक्ष्मी के कपोलों पर प्रतिबिंबित अंगोंवाला ऐसा नीले कमल के समान नीलरूप तेज का स्मरण करता हूं।।१।।

हस्तिनामगुणाः

हस्ती मतङ्गजो दन्ती मातङ्गोऽनेकपः करी ।
सिन्धुरः कुञ्जरः पद्मी वारणो द्विरदो द्विपः ।।२।।
इभो दन्तावलो नागः कुम्भी स्तम्बेरमो गजः ।
हस्तिनी धेनुका प्रोक्ता करेणुः करिणी च सा ।
हस्ती कफानिलौ हन्यादुष्णपित्तास्रकोपनः ।।३।।

हस्ती, मतंगज, दन्ती, मातङ्ग, अनेकप, करी, सिंधुर, कुंजर, पद्मी, वारण, द्विरद, द्विप, इभ, दन्तावल, नाग, कुंभी, स्तंबेरम, गज ये हाथी के नाम हैं। हस्तिनी, धेनुका, करेणु, करिणी ये हथिनी के नाम हैं। हाथी कफवात को नाशता है, गर्म है और रक्तपित्त को कुपित करता है।।३।।

घोटकनामगुणाः

घोटकः सैन्धवो वाजी तुरङ्गस्तुरगो हयः ।
तुरङ्गमोऽश्वो गन्धर्वो वाहः सप्तिर्यजुर्जवी ।।४।।

घोटक, सैंधव, वाजी, तुरंग, तुरग, हय, तुरंगम, अश्व, गन्धर्व, वाह, सप्ति, यजु, जवी ये घोड़े के नाम है।।४।।

घोटिका वडवा वामी प्रसूताऽश्वा च वाजिनी ।
घोटकः कटुकः पाके दीपनः कफपित्तकृत् ।।५।।
वातहृद्बृंहणो बल्यश्चक्षुष्यो मधुरो लघुः ।।६।।

घोटिका, वडवा, वामी, प्रसूता, अश्वा, वाजिनी ये घोड़ी के नाम हैं। घोड़ा पाक में चर्परा है, अग्नि को जगाता है और कफपित्त को करता है, वात को हरता है, धातु को पुष्ट करता है, बल में हित है, आंखों में हित है, मीठा और हलका है।।५।।६।।

अश्वतरनामगुणाः

तज्जो घोटचामश्वतरः शीघ्रवेगोऽङ्गपूजितः ।
बल्यमाश्वतरं मांसं बृंहणं कफपित्तलम् ।।७।।

घोड़ी में अन्य तरह के घोड़े से उपजा अश्वतरा, शीघ्रवेग, अंगपूजित इन नामोंबाला (खच्चर) होता है। खच्चर का मांस बल को करता है, धातु को पुष्ट करता है और कफपित्त को करता है।।७।।

उष्ट्रनामगुणाः

उष्ट्रः क्रमेलको वक्रग्रीवः शाखाशनो मयः ।

श्रृङ्खलः करभो दीर्घजंघो धूम्रो मरुत्प्रियः ॥८॥

उष्ट्र, क्रमेलक, वक्रग्रीव, शाखाशन, मय, श्रृंखल, करभ, दीर्घजंघ, धूम्र, मरुत्प्रिय ये ऊंट के नाम हैं॥८॥

उष्ट्रमांसं लघु स्वादु चक्षुष्यमनिलापहम् ।
उष्ट्रमांसं प्रशमनं मेदसः कफपित्तदम् ॥९॥

ऊँट का मांस, हलका है, स्वादु है, आंखों में हित है, वात को नाशता है, मेद को शांत करता है और कफपित्त को देता है॥९॥

गर्दभनामगुणाः

गर्दभो रासभो भारवाही दूरगमः खरः ।
गार्दभं पित्तलं बल्यं बृंहणं कफपित्तकृत् ।
कटु पाके लघु श्रेष्ठं तस्माद्वन्यखरोद्भवम् ॥१०॥

गर्दभ, रासभ, भारवाही, दूरगम, खर, ये गधे के नाम हैं। गधे के मांस पित्त को करता है, बल में हित है, धातु को पुष्ट करता है, कफपित्त को करता है, पाक में चर्परा और हलका है, इससे वन्य गधे का मांस उत्तम है॥१०॥

महिषनामगुणाः

महिषः सौरभः श्रृङ्गी वाहवैरी घनाघनः ।
कासरो गवलो दंशी लुलायः कालवाहनः ॥११॥

महिष, सौरभ, श्रृंगी, वाहवैरी, घनाघन, कासर, गवल, दंशी, लुलाय, कालवाहन ये भैंसा के नाम हैं॥११॥

माहिषं मधुरं मांसं स्निग्धोष्णं वातनाशनम् ।
निद्रारेतोबलस्तन्यतनुदार्ढ्यकरं गुरु ।
तद्वदारण्यजं विद्याद्विशेषाच्छोषिणे हितम् ॥१२॥

भैंसे का मांस मीठा, चिकना और गर्म हैं, वात को नाशता है, नींद, वीर्य, बल, दूध दृढ़ता इनको करता है और भारी है, वन के भैंसे में भी यही गुण हैं, विशेषकर शोषवाले के लिये हित है॥१२॥

भल्लूकगण्डकनामगुणाः

ऋक्षाऽच्छभल्लभल्लूकाः खड्गी खड्गश्च गण्डकः ।
ऋक्षः स्निग्धो गुरुर्वृष्यः स्वादूष्णः पवनापहः ॥१३॥

ऋक्ष, अच्छ, भल्ल, भल्लूक, खड्गी, खड्ग, गंडक, ये रीछ के नाम हैं। रीछ चिकना तथा भारी और वीर्य को पुष्ट करनेवाला है, स्वादु और गर्म है तथा वात को नाशता है॥१३॥

गण्डकगुणाः

गण्डको बहुविण्मूत्रे पवित्रोनिलनाशनः ॥१४॥

गंडक अर्थात् गैंड़ा मलमूत्र को बहुत उपजाता है, पवित्र है, और वात को नाशता है॥१४॥

सिंहशार्दूलनामगुणाः

सिंहः पञ्चाननो दृप्तो मृगेन्द्रः केसरी हरिः ।
शार्दूलः स्यात्पञ्चनखो मृगनाथः सकृत्प्रजः ॥१५॥

सिंह, पंञ्चानन, दृत, मृगेंद्र, केसरी, हरि ये सिंह के नाम हैं। शार्दूल, पंचनख, मृगनाथ, सकृत्प्रज ये शार्दूल के नाम हैं॥१५॥

सिंहशार्दूलयोर्मांसमुष्णं वाताक्षिरोगजित् ॥१६॥

सिंह और शार्दूल का मांस गर्म है, वात और नेत्ररोग को नाशता है॥१६॥

व्याघ्रनामानि

व्याघ्रोमृगारिर्मृगहा व्यालो भीमपराक्रमः ॥१७॥

व्याघ्र, मृगारि, मृगहा, व्याल, भीमपराक्रम ये बघेरे के नाम हैं॥१७॥

चित्रकनामानि

चित्रको वेगवांश्चित्री द्वीपी स्याद्दीर्घदंष्ट्रकः ॥१८॥

चित्रक, वेगवान्, चित्री, द्वीपी, दीर्घदंष्ट्रक, ये चीते के नाम हैं॥१८॥

वृकनामानि

वृकदेहो वृकः कोकस्तरक्षुस्तु मृगादनः ॥१९॥

वृकदेह, वृक, कोक ये नाम भेड़िये के हैं। तरक्षु, मृगादन ये नाम तिरखू के हैं॥१९॥

कुक्कुरनामानि

कुक्कुरः शुनकः श्वा स्यात्कौलेयः शुनकः शुनः ।
सारमेयः कृतज्ञश्च भक्षणो* मृगदंशकः ॥२०॥

कुक्कुर, शुनक, श्वा, कौलेय, शुनक, शुन, सारमेय, कृतज्ञ, भक्षण, मृगदंशक ये कुत्ते के नाम हैं॥२०॥

व्याघ्रचित्रतरक्षुश्ववृकाणां पललं गुरु ।
उष्णं वातहरं स्वर्यं हितमक्षिविकारिणाम् ॥२१॥

बघेरा, चीता, तिरखू, कुत्ता, भेड़िया, इनका मांस भारी, गर्म, वात को हरनेवाला,

---

* भषणः इत्यपि पाठः ।

स्वर में हित और नेत्ररोगवालों को हित हैं॥२१॥

सूकरनामगुणाः

सूकरो रोमशः पोत्री कोलो घोणिः किरिः किटिः ।
दंष्ट्री क्रोष्टा चोर्ध्वरोमा भूदारश्च वराहकः ॥२२॥

सूकर, रोमश, पोत्री, कोल, घोणि, किरि, किटि, दंष्ट्री, क्रोष्टु, ऊर्ध्वरोगा, भूदार वराहक ये नाम सूकर के हैं॥२२॥

सौकरं पिशितं स्वादु बल्यं वातापहं गुरु ।
स्निग्धोष्णं शुक्रलं रुच्यं निद्रास्थूलत्वदार्ढ्यकृत् ॥२३॥

सूकर का मांस स्वादु है, बल में हित है, वात को नाशता है, भारी है, चिकना और गर्म है, वीर्य को करता है, रुचि को उपजाता है और नींद, स्थूलता, दृढ़पना इनको करता है॥२३॥

छागनामगुणाः

छागी गलस्तनी मण्डा सर्वभक्ष्या त्वजा भृजा ।
वर्करश्छागलश्छागो बस्तेयः कालकः पशुः ॥२४॥

छागी, गलस्तनी, मण्डा, सर्वभक्ष्या, अजा, भृजा ये बकरी के नाम हैं। वर्कर, छागल, छाग, बस्तेय, कालक पशु ये बकरे के नाम हैं॥२४॥

छागमांसं गुरु स्निग्धं लघु पक्वं त्रिदोषजित् ।
अदाहि बृंहणं नातिशीतं पीनसनाशनम् ।
देहधातुसमानत्वादनभिष्यन्दि बृंहणम् ॥२५॥

बकरे का मांस भारी, चिकना और हलका है, पका हुआ त्रिदोष को नाशता है, दाह नहीं करता है, धातु को पुष्ट करता है, अति शीतल नहीं है, पीनस को नाशता है, देह और धातु के समापन से अभिष्यंदी नहीं है और धातु को पुष्ट करता है॥२५॥

मेषमेदःपुच्छनामगुणाः

मेषो भेडी हुडो मेढ्र उरभ्र उरणोऽविकः ॥
ऊर्णायुरेडको वृश्चिर्मेदः पुच्छस्तु दुम्बुकः ॥२६॥

मेष, भेड़ी, हुड, मेढ्र, उरभ्र, उरण, अविक, ऊर्णायु, एडक, वृश्चि, मेदःपुच्छ, दुंबुक ये नाम भेड़ और मेंढ़ा के हैं॥२६॥

मेषमांसं गुरु स्निग्धं बल्यं पित्तकफप्रदम् ।
मेदः पुच्छामिषं वृष्यं कफपित्तकरं गुरु ॥२७॥

मेढे का मांस भारी है, चिकना है, बल को करता है तथा पित्त और कफ को देता है।

मेदसहित पुच्छवाले मेंढे का मांस वीर्य को पुष्ट करता है, कफपित्त को करता है और भारी है॥२७॥

एणनामगुणाः

हरिणस्ताम्रवर्णः स्यात्कुरङ्गश्चारुलोचनः ।
सारङ्गोऽजिनयोनिश्च वातायुश्चपलो मृगः ॥२८॥

हरिण, ताम्रवर्ण ये हिरण के नाम हैं और कुरंग, चारुलोचन, सारंग, अजिनयोनि, वातायु, चपल, मृग ये काले हिरण के नाम हैं॥२८॥

एणः कृष्णोऽपरः कृष्णकुरङ्गः कृष्णसारकः ।
एणमांसं हिमं रुच्यं ग्राहि दोषत्रयापहम् ॥२९॥

काले वर्णवाला एण होता है और कृष्णकुरंग, कृष्णसार ऐसे भी मृग हैं। मृग का मांस शीतल है, रुचि को उपजाता है, मल को बांधता है और त्रिदोष को नाशता है॥२९॥

षड्रसं बलदं पथ्यं लघु हृद्यं ज्वरास्रजित् ॥३०॥

यह छः रसवाला है, बल को देता है, पथ्य है, हलका है, दिल को ताकत देता है तथा ज्वर और रक्त को जीतता है॥३०॥

गोकर्णशम्बरनामगुणाः

गोकर्णोऽविकटः शृङ्गी विड्बद्धोऽन्यस्तु शम्बरः ।
गोकर्णशम्बरौ शीतौ गुरु स्निग्धौ कफप्रदौ ।
रसे पाके च मधुरौ रक्तपित्तविनाशनौ ॥३१॥

गोकर्ण, अविकट, शृंगी, विड्बद्ध, शंबर ये नाम गोकर्ण और शंबर के हैं। गोकर्ण और शंबर शीतल है, भारी और चिकने हैं, कफ को देते हैं, रस में और पाक में मीठे हैं तथा रक्तपित्त को नाशते हैं॥३१॥

गवयनामगुणाः

रूक्षो मीलाण्डको नीलो गवयश्चारुदर्शनः ।
गवयो मधुरो वृष्यः स्निग्धोष्णः कफपित्तलः ॥३२॥

रूक्ष, मीलांडक, नील, गवय, चारुदर्शन ये रोझ के नाम हैं। रोझ मीठा है, वीर्य को पुष्ट करता है, चिकना है, गर्म है और कफ-पित्त को करता है॥३२॥

कस्तूरीमुण्डनीमृगनामगुणाः

कस्तूरी हरिणी गन्धी मुण्डनी मृगमातृका ।
कस्तूरी हरिणः स्वादुर्बद्धविड् दीपनो लघुः ॥३३॥

कस्तूरी, हरिणी, गंधी, मुण्डनी, मृगमातृका, ये नाम कस्तूरी और मुंडनी मृग के हैं।

कस्तूरीमृग स्वादु है, मल को बांधता है, अग्नि को जगाता है और हलका है।।३३।।

मुण्डनी ज्वरकासास्रक्षयश्वासापहा हिमा ।।३४।।

मुण्डनी मृग ज्वर, खांसी, रक्त, क्षय, श्वास इनको नाशता है और शीतल है।।३४।।

कृतमालच्छिक्कारनामगुणाः

कृतमालो वर्णचरः पृषतो बिन्दुचित्रकः ।
वातप्रमीर्वातमृगश्छिक्कारः कृष्णपुच्छकः ।।३५।।

कृतमाल, वर्णचर, पृषत, बिन्दुचित्रक ये चीतले मृगों के नाम हैं। वातप्रमी, वातमृग, छिक्कार, कृष्णपुच्छक ये छिक्कार के नाम हैं।।३५।।

कृतमालादिजं मांसं मधुरं ग्राहि दीपनम् ।
हृद्यं शीतं लघुं श्वासज्वरदोषत्रयास्रजित्।।३६।।

चीतल और छिक्वार मृग का मांस मीठा और मल को रोकनेवाला, अग्नि को जगानेवाला, दिल को ताकत देनेवाला, शीतल और हलका है। श्वास, ज्वर, त्रिदोष, रक्त इनको जीतता है।।३६।।

रुरुमृगनामगुणाः

रुरुः शरन्मुक्तमृगो न्यङ्कुर्बहुविषाणकः ।
रुरोर्मांसं गुरु स्वादु वृष्यं पित्तानिलापहम् ।
न्यङ्कुः स्वादुर्लघुर्बल्यो वृष्यो दोषत्रयापहः ।।३७।।

रुरु, शरन्मुक्तमृग, न्यंकु, बहुविषाणक ये रुरुमृग के नाम हैं। रुरु का मांस भारी और स्वादु है, वीर्य को पुष्ट करता है, पित्तवात को नाशता है, न्यंकुमृग स्वादु और हलका है, बल को करता है और त्रिदोष को नाशता है।।३७।।

शशनामगुणाः

शशः शूली रोमकर्णो लम्बकर्णो बिलेशयः ।
शशः शीतो लघुः स्वादुर्ग्राही पथ्योऽग्निदीपनः ।
सन्निपातज्वरश्वासरक्तपित्तकफापहः ।।३८।।

शश, शूली, रोमकर्ण, लम्बकर्ण, विलेशय, ये शशा (खरगोश) के नाम हैं। शश, शीतल, हलका, स्वादु, मल को बांधनेवाला पथ्य और अग्नि को जगानेवाला है, सन्निपात, ज्वर, श्वास, रक्तपित्त, कफ इनको नाशता है।।३८।।

काश्मीरदेशे शरभोऽष्टपात्स्यादुत्साहयुक्तश्चतुरूर्ध्वपादः ।
उष्ट्रप्रमाणः समहाविषाणः ख्यातो वनस्थः स मृगो महाख्यः ।।३९।।

काश्मीर देश में आठ पैरोंवाला, उत्साह से युक्त, ऊपर को चार पैरोंवाला, ऊँट के समान, बहुत बड़े सींगवाला और वन में रहनेवाला ऐसा महामृग होता है उसका नाम शरभ है।।३९।।

शल्लकनामगुणाः

शल्लकः शललो श्वाविन्मेधा स्यात्सूचिनी खरा ।
शल्लकः श्वासकासास्रशोफदोषत्रयापहः ।।४०।।

शल्लक, शलली, श्वावित्, मेधा, सूचिनी, खरा ये शेह के नाम हैं। शेह श्वास, खांसी, रक्त, शोजा, त्रिदोष इनको नाशता है।।४०।।

गोधानामगुणाः

गोधा तथैव विज्ञेया विशेषद्बलवर्द्धिनी ।।४१।।

गोधा में भी ये गुण हैं, विशेषकर बल को बढ़ाती है।।४१।।

बिड़ालनकुलनामगुणाः

बिडालकस्तु मार्जारो (पृ–वृ) विषदंशक आखुभुक् ।
नकुलः पिङ्गलो बभ्रुः सर्पारिः सर्पभक्षकः ।।४२।।

बिड़ाल, मार्जार, विषदंशक, आखुभुक् ये बिलाव के नाम हैं। नकुल, पिंगल, बभ्रु, सर्पारि, सर्पभक्षक ये नेवले के नाम हैं।।४२।।

मार्जारो मधुरः स्निग्धो वीर्योष्णः कफवातजित् ।
कृशताश्वासकासघ्नो नकुलोऽपि समो गुणैः ।।४३।।

बिलाव का मांस, मीठा, चिकना और वीर्य में गर्म है, कफवात को जीतता है, दुर्बलता, श्वास, खांसी इनको नाशता है। नौला में भी ये सब गुण है।।४३।।

वानरनामगुणाः

वानरो मर्कटः कीशो वनौकाश्च वलीमुखः ।
हरिः शाखामृगः प्लावी प्लवङ्गः पल्वगः कपिः ।
वानरः पकनश्वासमेदः पाण्डुक्रिमीञ्जयेत् ।।४४।।

वानर, मर्कट, कीश, वनौकस्, वलीमुख, हरि, शाखामृग, प्लावी, प्लवंग, प्लवग, कपि ये नाम वानर के हैं। वानर, वात, श्वास, मेद, पाण्डु, कृमि इनको जीतता है।।४४।।

शृगालनामगुणाः

शृगालो जम्बुकः फेरुर्गोमायुः फेरवः शिवः ।
शिवेशो वञ्चकः क्रोष्टुर्नेपालः स्वल्पजम्बुकः ।
शृगालो बलदो वृष्यः सर्ववातक्षयापहः ।।४५।।

शृगाल, जंबुक, फेरु, गोमायु, फेरव, शिव, शिवेश, वञ्चक, क्रोष्टु, नेपाल, स्वल्पजंबुक ये नाम गीदड़ के हैं। गीदड़ बल को देता है, वीर्य को पुष्ट करता है, सब प्रकार के वात और क्षय को नाशता है॥४५॥

मूषकनामगुणाः

मूषकः खनकः स्तेयी वृष उन्दुरुराखुकः ।
मूषको बद्धविण्मूत्रो बल्यो वृष्योऽनिलापहः ॥४६॥

मूषक, खनक, स्तेयी, वृष, उंदुरु आखुक ये मूषा के नाम हैं। मूषा मलमूत्र को बांधता है, बल में हित है, वीर्य को पुष्ट करता है और वात को नाशता है॥४६॥

पक्षिनामानि

पक्षी विहङ्गमः पत्री शकुन्तिर्विहगः खगः ।
अण्डजो विः पत्ररथः पतत्त्री शकुनिर्द्विजः ॥४७॥

पक्षी, विहंगम, पत्री, शकुंति, विहग, खग, अण्डज, वि, पत्ररथ, पतत्त्री, शकुनि, द्विज ये पक्षी के नाम हैं॥४७॥

तित्तिरिनामगुणाः

तित्तिरिश्चित्रपक्षः स्यात्कृष्णो गौरः कपिञ्जलः ।
तित्तिरिर्वर्णदो ग्राही हिक्कादोषत्रयापहः ।
श्वासकासहरः पथ्यस्तस्माद्गौरोऽधिको गुणैः ॥४८॥

चित्र पंखोंवाला और काला दो प्रकार का तीतर होता है। सफेद वर्णवाला कपिंजल होता है। तीतर वर्ण को देता है, मल को रोकता है, हिचकी और त्रिदोष को नाशता है, श्वास और खांसी को हरता है तथा पथ्य है। कपिंजल में इससे अधिक गुण है॥४८॥

वर्तिरनामगुणाः

वर्तिरो वर्तिका चित्रस्ततोऽल्पवर्तिका मता ।
वर्तिरोऽग्निकरः शीतो ज्वरदोषत्रयापहः ॥४९॥

वर्तिर, वर्तिका, चित्र, अल्पवर्तिका ये नाम बटेर के हैं। बटेर अग्नि को करती है, शीतल है, ज्वर और त्रिदोष को नाशती है॥४९॥

लावनामगुणाः

लावश्चित्रश्चित्रतनुः स चतुर्द्धा मतो बुधैः ।
पांशुलो गैरिकोऽन्यतु पौण्ड्रको दर्भरस्तथा ॥५०॥

लाव, चित्र, चित्रतनु ये नाम लवा के हैं। पण्डितो ने पांशुल, गैरिक, पौंड्रक दर्भर इन भेदों से लवा चार प्रकार का माना है॥५०॥

लावा हृद्याः हिमाः स्निग्धा ग्राहिणो वह्निप्रदीपनाः।
पांशुलः श्लेष्मलस्तेषां वीर्योष्णोऽनिलनाशनः ।।५१।।

लावा दिल को ताकत देता है, शीतल और चिकना है, मल को रोकता है, अग्नि को जगाता है। पांशुल कफ को करता है, गर्म वीर्यवाला है और वात को नाशता है।।५१।।

गैरिकः कफवातघ्नो रूक्षो वह्निप्रदः परम् ।
पौण्ड्रकः पित्तकृत्किञ्चिल्लघुः श्लेष्मानिलापहः ।।५२।।

गैरिक कफवात को नाशता है, रूखा है, अग्नि को बहुत देता है, पौंड्रक पित्त को करता है, किंचित् हलका है, कफवात को नाशता है।।५२।।

दर्भरोरक्तपित्तघ्नो हृदामयहरो हिमः ।।५३।।

दर्भर रक्तपित्त को नाशता है, हृदय के रोग को हरता है, और शीतल है।।५३।।

चटकनामगुणाः

चटकः कलविङ्कः स्यादन्यो ग्राम्यस्तु पुण्ड्रकः ।
चटकः शीतलः स्निग्धः स्वादुः शुक्रकफप्रदः ।
सन्निपातहरो वेश्मचटकः शुक्रलः परम् ।।५४।।

चटक, कलविंक, ग्राम्य, पुंड्रक नाम चिड़े के हैं। चिड़ा शीतल है, चिकना है, स्वादु है और वीर्य तथा कफ को उत्पन्न करता है, सन्निपात को हरता है। घर में रहने वाला चिड़ा बहुत वीर्य देता है।।५४।।

वार्तिकगुणाः

वार्तिको मधुरः शीतः सरूक्षः कफपित्तनुत् ।।५५।।

वार्तिक (वत्तक) मीठा, शीतल और रूखा है, कफ और पित्त को दूर करता है।।५५।।

पारावतादिनामगुणाः

पारावतः कलरवो मञ्जुघोषो मदोत्कटः ।
कपोतो घुघुकृत्पाण्डुरन्यः काणः कपोतकः ।।५६।।

पारावत, कलरव, मंजुघोष, मदोत्कट ये नाम परेवा के हैं, कपोत, घुघुकृत्, पांडु, काण, कपोतक ये नाम कबूतर के हैं।।५६।।

पारावतो गुरुः स्निग्धोः रक्तपित्तानिलापहः ।
संग्राही शुक्रलः शीतः कपोतोऽपि समो गुणैः ।
किञ्चिल्लघुः परं कामः कपोतः सर्वदोषकृत् ।।५७।।

परेवा भारी और चिकना है, रक्तपित्त और वात को नाशता है, मल को रोकता है,

वीर्य को करता है, और शीतल है। कबूतर में भी ये ही गुण हैं लघु कबूतर कुछेक हलका है, सब दोषों को करता है।।५७।।

मयूरनामगुणाः

मयूरश्चन्द्रकः केकी मेघरावो भुजङ्गभुक् ।
शिखी शिखावलो बर्ही शिखण्डी नीलकण्ठकः ।।५८।।
शुक्लापाङ्गः कलापी च मेघनादस्तु लासकः ।
मयूरो बृंहणः श्रोत्रशिरोरुग्वातशोषजित् ।।५९।।

मयूर, चन्द्रक, केकी, मेघराव, भुजंगभुक्, शिखी, शिखावल, बर्ही, शिखंडी, नीलकण्ठक, शुक्लापांग, कलापी, मेघनाद, लासक ये मोर के नाम हैं। मोर धातु को पुष्ट करता है, कान रोग, शिरोरोग, वात, शोष इनको जीतता है।।५८–५९।।

उष्णो बलायुर्मेधाग्निकेशदृग्वरवर्णदः ।
सेव्यं मयूरजं मांसं हेमन्ते शिशिरे मधौ ।
न शरद्ग्रीष्मयोः पथ्यं वर्षास्वप्यहिभक्षणात् ।।६०।।

तथा गर्म है, बल, उमर, बुद्धि, अग्नि, बाल, दृष्टि, उत्तम वर्ण इनको देता है। मार्गशिर, पौष, माघ, फाल्गुन, और चैत्र इन महीनों में मोर का मांस सेवन करना योग्य है। आश्विन, कार्तिक, ज्येष्ठ और आषाढ़ इनमें पथ्य नहीं है। सर्प को खाने वाला होने से श्रावण और भाद्रपद में भी पथ्य नहीं है।।६०।।

कुक्कुटनामगुणाः

कुक्कुटो विकिरः शौण्डी कालज्ञश्चरणायुधः ।
कृकवाकुस्ताम्रचूडः स्यादन्योऽरण्यकुक्कुटः ।।६१।।

कुक्कुट, विकिर, शौण्डी, कालज्ञ, चरणायुध, कृकवाकु, ताम्रचूड़, अरण्यकुक्कुट ये मुर्गा के नाम हैं।।६१।।

कुक्कुटो बृंहणः स्निग्धो वीर्योष्णोऽनिलजिद्गुरुः ।
चक्षुष्यः शुक्रकफकृद्वन्यो रूक्षः कषायकः ।
पानीयकुक्कुटः स्निग्धो बृंहणः श्लेष्मलो गुरुः ।।६२।।

मुर्गा धातु को पुष्ट करता है, चिकना है, वीर्य में गर्म है, वात को जीतता है, भारी है, नेत्रों को हित है तथा वीर्य और कफ को करता है। बन का मुर्गा रूखा और कषैला है, पानी का मुर्गा चिकना है, धातु को बढ़ाता है, कफ को करता है तथा भारी है।।६२।।

शुकसारिकानामगुणाः

शुको रक्तमुखः कीरो वाग्मी सुन्दरदर्शनः ।

सारिका रासिता दूती सुमतिः प्रियवादिनी ॥६३॥

शुक, रक्त.मुख, कीर, वाग्मी, सुन्दरदर्शन ये तोता के नाम हैं। सारिका, रासिता, दूती, सुमति, प्रियवादिनी ये मैना के नाम हैं॥६३॥

शुकः शीतो लघुर्ग्राही क्षतकासक्षयापहः ।
रूक्षस्तद्वन्मता सारी स्निग्धा बुद्धिबलाग्निकृत् ॥६४॥

तोता शीतल, हलका और मल को रोकने वाला है, क्षत की खांसी और क्षय का नाश करने वाला और रूखा है। मैना में भी येही गुण हैं, विशेपकर मैना चिकनी है तथा बुद्धि, बल और अग्नि को करती है॥६४॥

कोकिलनामगुणाः

कोकिलः कलकण्ठःस्यात्परपुष्टो वनप्रियः ।
पिकः परभृताहारी ताम्राक्षो मधुदूतकः ।
कोकिलोदीपनो ग्राही चक्षुष्यः क्षयकासजित् ॥६५॥

कोकिल, कलकण्ठ, परपुष्ट, वनप्रिय, पिक, परभृताहारी, ताम्राक्ष, मधुदूतक ये नाम कोयल के हैं। कोयल अग्नि को जगाती है, मल को रोकती है, नेत्रों को हित है, क्षय और खांसी को जीतती है॥६५॥

काकनामानि

काको ध्वांक्षो गूढकामी बलिपुष्टः सकृत्प्रजः ।
वायसो बलिभुक्काणः करटश्चतुरो द्विजः ॥६६॥

काक, ध्वांक्ष, गूढ़कामी, बलिपुष्ट, सकृत्प्रज, वायस, बलिभुक्, काण, करट, चतुर, द्विज ये नाम काक के हैं॥६६॥

भासनामानि

भासः सिखावाभ्रसतो[१] गृध्राकारो रजःप्रजः ॥६७॥

भास, सिखावाभ्रसत, गृध्राकार, रजःप्रज ये नाम भास (सफेद चील) के हैं॥६७॥

काकभासमांसगुणाः

काकभासभवं मांसं चक्षुष्यं दीपनं लघु ।
आयुष्यं बृंहणं बल्यं क्षतदोषक्षयापहम् ॥६८॥

काक और सफेद चील का मांस नेत्रों को हित है, अग्नि को जगाता है, हलका है, आयु में हित है, धातु को पुष्ट करता है, बल में हित है, क्षय दोष और क्षय को नाशता है॥६८॥

---

१ शिखावान् भासन्तो गृध्राकारो रजःप्रभः इति पाठोऽपि

गृध्रनामगुणाः

गृध्रः सुदृष्टः शकुनिर्वक्रदृष्टिश्च दूरदृक् ।
गृध्रस्य काकवन्मांसं विशेषान्नेत्ररोगजित् ॥६९॥

गृध्र, सुदृष्ट, शकुनि, वक्रदृष्टि, दूरदृक् ये गीध के नाम हैं, गीध के मांस में काक के मांस के सब गुण हैं, विशेषकर नेत्ररोग को जीतता है॥६९॥

हंसनामगुणाः

हंसश्वेतगरुत्मन्तः सौकारक्तौ पदानहौ ।
राजहंसः स्मृतः कृष्णैर्धार्त्तराष्ट्रोऽथ मालिकः ॥७०॥

हंस, श्वेत, गुरुत्मान्, सौक, आरक्त, पद, आनह ये हंस के नाम हैं। काले पंखोंवाला राजहंस होता है। उसके धार्तराष्ट्र और मालिक ये नाम है॥७०॥

मलिनैः कलहंसस्तु पीतैः कादम्ब उच्यते ।
कारण्डवः प्लवो मद्गुर्वरटा हंसयोषितः ॥७१॥

मलीन पंखोंवाला कलहंस होता है, पीले पंखोंवाला कादम्ब हंस होता है। कारंडव, प्लव, मद्गु, वरटा ये हंसनियों के नाम हैं॥७१॥

हंसः स्निग्धो गुरुर्वृष्यो वीर्योष्णः स्वरवर्णकृत् ।
वातास्रपित्तशमनो बृंहणो बलवह्निदः ॥७२॥

हंस चिकना है, भारी है, वीर्य को पुष्ट करता है, गर्म वीर्य वाला है, स्वर और वर्ण को करता है, वात और रक्तपित्त को नाशता है, धातु को पुष्ट करता है तथा बल और अग्नि को देता है॥७२॥

सारसचक्रवाकनामानि

सारसो लक्ष्मणो रक्तमूर्द्धा स्यात्पुष्कराह्वयः ।
चक्रवाकः पत्ररथश्चक्रश्चक्री सुकार्मुकः ॥७३॥
रथाङ्गनामा कोकोऽथ कङ्कः स्याल्लोहपृष्ठकः ॥७४॥

सारस, लक्ष्मण, रक्तमूर्द्धा, पुष्कराह्वय ये सारस के नाम हैं। चक्रवाक, पत्ररथ, चक्र, चक्री, सुकार्मुक, रथांगनामा, कोक, कंक, लोहपृष्ठक ये नाम चकवा के हैं॥७३–७४॥

बकनामानि

बको बकोटो धवलो बलाका बिसकण्ठिका ॥७५॥

बक, बकोट, धवल, बलाका, बिसकण्ठिका ये नाम बगुला के हैं॥७५॥

आड़िनामानि

आडिः शरारिरातिश्च विचित्रजलचारिणी ॥७६॥

आड़ि, शरारि, आति, विचित्रजलचारिणी ये आड़ि के नाम हैं।।७६।।

चक्रादिमांसगुणाः

चक्रकङ्कबकोटादिमांसं स्निग्धं हिमं गुरु ।
मधुरं सृष्टविण्मूत्रं वातपित्तास्रनाशनम् ।।७७।।

सारस, चकवा आदिकों का मांस चिकना, शीतल, भारी और मीठा है, मल मूत्र को उपजाता है तथा वात और पित्त को नाश करता है।।७७।।

कृङ्कणनामगुणाः

कारेडुकः ककरेडुः करकः कृङ्कणस्तथा ।
कृङ्कणो बृंहणो बल्यो वातपित्तहरो लघुः ।।७८।।

कारेडुक, ककरेडु, करक, कृंकण ये करेटू के नाम हैं। करेटू धातु को पुष्ट करता है, बल में हित है, वातपित्त को हरने वाला और हलका है।।७८।।

खञ्जरीटनामानि

खञ्जरीटः खञ्जनकश्चाषनामा किकीदिविः ।।७९।।

खंजरीट, खंजनक, चाषनामा, किकीदिवि ये खंजन के नाम हैं।।७९।।

चातकनामानि

चातकस्तु घनरवः सारङ्गस्तोकको भ्रमः ।।८०।।

चातक, घनरव, सारंग, तोकक, भ्रम ये पपैया के नाम हैं।।८०।।

भारद्वाजादिनामगुणाः

भारद्वाजः कक्कराटो व्याघ्राटोऽहिकुटिः परः ।
खञ्जरीटो भरद्वाजश्चाषः श्लेष्मानिलापहः ।।८१।।

भारद्वाज, कक्कराट, व्याघ्राट, अहिकुटि, पर ये भारद्वाज के नाम हैं। खंजन और चाष का मांस कफवात को नाशता है।।८१।।

वातलोऽनिलपित्तघ्नो भरद्वाजः कफास्रजित् ।।८२।।

भरद्वाज, वात को करता है, वातपित्त को नाशता है और कफरक्त को जीतता है।।८२।।

श्येननामगुणाः

श्येनः समादनः पत्री चीरिश्चिल्ली चिरिल्लिका ।
श्येनचीरीभवं मांसं प्रायो दोषकरं गुरु ।।८३।।

श्येन, समादन, पत्री ये शिकरा के नाम हैं। चीरि, चिल्ली, चिरिल्लिका ये चील के नाम हैं। शिकरा और चील का मांस विशेषकर दोष करने वाला और भारी है।।८३।।

उलूकनामगुणाः

उलूकः कौशिकः काकवैरी घूको निशाचरः ।
उलूकपललं भ्रान्तिकरं वातप्रकोपदम् ॥८४॥

उलूक, कौशिक,काकवैरी,घूक, निशाचर ये उल्लू के नाम हैं। उल्लू का मांस भ्रम कारक और वात को कुपित करने वाला है॥८४॥

चकोरनामगुणाः

चकोरश्चन्द्रिकापायी जीवंजीवः सुलोचनः ।
चकोरो बृहणो बल्यः स्निग्धोष्णो वातनाशनः ॥८५॥

चकार, चंद्रिकापायी, जीवंजीव, सुलोचन, ये चकोर के नाम हैं। चकोर धातु को पुष्ट करता है, बल में हित है, चिकना और गर्म है तथा वात को नाश करता है॥८५॥

क्रौंचादिनामगुणाः

क्रौञ्चकः पेचकोऽन्यस्तु पुच्छाधोभागलोहितः ।
वक्रोशः कुररोऽथान्यः कोयष्टिष्टिट्टिभस्तथा ॥८६॥

क्रौंचक, पेचक, पुच्छाधोभागलोहित, वक्रोश, कुरर, कोयष्टि, टिट्टिभ ये नाम कुंज आदि के हैं॥८६॥

क्रौञ्चः पित्तानिलहरः पेचकः कफवातजित् ।
कुररः क्रौञ्चवज्ज्ञेयष्टिट्टिभोऽल्पमरुत्करः ॥८७॥

कुंज पित्तवात को हरता है, पेचक कफवात को जीतता है, कुरर में कुञ्ज के समान गुण है और टिट्टिभ अल्प वात को करता है॥८७॥

रोहितादिमत्स्य यामगुणाः

मत्स्यो झषस्तिमिर्मीनः कण्ठी वैसारिणो द्रवः ।
पृथुरोमाऽभिसारः स्याद्विसारः शकुली तथा ॥८८॥
रक्तोदरो रक्तमुखो रोहितो मत्स्यपुङ्गवः ।
सहस्रदंष्ट्रः पाठीनः कृष्णवर्णो महाशिराः ॥८९॥

मत्स्य, झष, तिमि, मीन, कण्ठी, वैसारिण, द्रव, पृथुरोमा, अभिसार, विसार, शकुली, रक्तोदर, रक्तमुख, रोहित, मत्स्यपुंगव, सहस्रदंष्ट, पाठीन, कृष्णवर्ण महाशिरा ये मछली के नाम हैं॥८८–८९॥

शफरः क्षुद्रमत्स्यः स्यात्प्रोष्ठी तु सफरी स्मृता ।
नलमीनश्चिलिचिमस्तिमिः ख्यातः समुद्रजः ॥९०॥

शफर, क्षुद्रमत्स्य, प्रोष्ठी, ये सफरी के नाम हैं। बलमीन, चिलिचिम, तिमि, समुद्रज

ये सब मछली के भेद हैं।।९०।।

मत्स्या बलप्रदा वृष्या गुरवः कफपित्तलाः ।
उष्णाभिष्यन्दिनः स्निग्धाः बृंहणाः पवनापहाः ।।९१।।

मछली बल को देती है, वीर्य को पुष्ट करती है, भारी है, कफपित्त को करती है, गर्म और अभिष्यंदी है, चिकनी और धातु को पुष्ट करने वाली है तथा वात को नाशती है।।९१।।

नादेया बृंहणा मत्स्या गुरवोऽनिलनाशनाः ।
कौप्या वृष्याः कफाष्ठीलामूत्रकुष्ठविबन्धदाः ।।९२।।

नदी की मछली धातु को पुष्ट करती हैं, भारी हैं और वात को नाशती हैं। कुंए की मछली वीर्य को पुष्ट करती हैं और कफ, अष्ठीला, मूत्र, कुष्ठ, विबन्ध इनको उत्पन्न कर देती हैं।।९२।।

तडागा गुरवो वृष्याः शीतला मलसूत्रदाः ।
तडागवन्निर्झरजा बलायुर्मतिदृक्कराः ।।९३।।

तालाब की मछली भारी हैं, वीर्य को पुष्ट करती हैं, शीतल हैं तथा मल और मूत्र को देती हैं। झिरना की मछली तालाब की मछली के समान गुणोंवाली हैं और बल आयु दृष्टि इनको बढ़ाती हैं।।९३।।

सरोजा मधुराः स्निग्धाः बल्या वातनिवर्हणाः ।
सामुद्रा गुरवो नातिपित्तलाः पवनापहाः ।।९४।।

सरोवर की मछली मीठी, चिकनी और बल में हित हैं, वात को दूर करती हैं। समुद्र की मछली भारी हैं, बहुत पित्त को नहीं करती हैं, वात को नाशती हैं।।९४।।

तत्रापि लवणाम्भोजा ग्राहिणो दृष्टिनाशनाः ।
ह्रदोद्भवा बलकरा न तु स्वच्छजलोद्भवाः ।।९५।।

इनमें भी खारे पानी में उपजी मछली मल को रोकती और दृष्टि को नाशती हैं। कुण्डकी मछली बल को करती हैं। साफ पानी में उपजी मछली बल को नहीं करती हैं।।९५।।

हेमन्ते कूपजा मत्स्याः शिशिरे सारसा हिताः ।
मधुग्रीष्माम्बुकालेषु नदीचुंगीतडागजः ।।९६।।

हेमन्त ऋतु में कुँए की मछली हित हैं, शिशिर ऋतु में सरोवर की मछली हित हैं, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा इन ऋतुओं में नदी, झरना, तालाब इनकी मछली हित हैं।।९६।।

शरत्सु नैर्झराः सर्वे वर्षोत्थाः सर्वदोषदाः ।

रोहितः प्रवरस्तेषु नातिपित्तकरो लघुः ।
काऽयानुरसो बल्यः पाठीनःश्लेष्मलो गुरुः ।।९७।।

शरद ऋतु में निर्झरों की मछलियां हित हैं और वर्षा के पानी की मछली सब दोषों को करती हैं। सब मछलियों में रोहित मछली उत्तम है, क्योंकि, बहुत पित्त को नहीं करती है, हलकी है, कषैले अनुरसवाली और बल में हित है, पाठीन मछली कफ को करती है और भारी है।।९७।।

क्षुद्रमत्स्य–मत्स्याण्डगुणाः

क्षुद्रमत्स्याः स्वादुरसा दोषत्रयनिबर्हणाः ।
सूक्ष्माः परं पुंस्त्वकरा रुच्याः कासानिलापहाः ।।९८।।

क्षुद्रमत्स्य अर्थात् छोटी मछलियां स्वादु रसवाली और त्रिदोष को दूर करती हैं। बहुत छोटी मछलियां पुरुषपन को करती हैं, रुचि को उपजाती हैं, तथा खांसी और वात को नाशती हैं।।९८।।

चिमचिममत्स्यगुणाः

त्रिदोषकृच्चिमचिमो मत्स्यो बल्यः परं मतः ।
मत्स्यगर्भः परं वृष्यः स्निग्धः स्थैर्यकरो गुरुः ।
कफमेदःप्रदो बल्यो ग्लानिकृन्मेहनाशनः ।।९९।।

चिमचिम मछली त्रिदोष को करती है, परम बलदायक है, मत्स्यगर्भ वीर्य को बहुत पुष्ट करता है, चिकना है, स्थिरता को करता है, भारी है, कफ और मेद को देता है, बल में हित है, ग्लानि को करता है और प्रमेह को नाशता है।।९९।।

शिशुमारनामगुणाः

शिशुमारो दृतेस्तुल्यो मकरस्तिमिदंष्ट्रकः ।
शिशुमारो गुरुर्वृष्यः कफकृद्वातनाशनः ।
बृंहणो बलदः स्निग्धस्तद्वन्मकरमादिशेत् ।।१००।।

शिशुमार, दृष्टितुल्य, तिमिदंष्ट्रक ये नाम शिशुमार मछली के हैं। शिशुमार मछली भारी है, वीर्य को पुष्ट करती है, कफ को करती है, वात को नाशती है, धातु को पुष्ट करती है तथा बल को देनेवाली और चिकनी है। मकर में भी येही गुण हैं।।१००।।

कच्छपनामगुणाः

कच्छपो गूढपात्कूर्मः कमठो दृढपृष्ठकः ।
कच्छपो बलदः स्निग्धो वातजित्पुंस्त्वकारकः ।।१।।

कच्छप, गूढ़पात, कूर्म, कमठ, दृढ़पृष्ठक ये नाम कछुवे के हैं। कछुवा बल को देता है,

चिकना है, वात को जीतता है और पुंस्त्वकारक है॥१॥

मण्डूकनामगुणाः

मण्डूकः पल्वगो भेको वर्षाभूर्दर्दुरो हरिः ।
मण्डूकः श्लेष्मलो नातिपित्तलो बलकारकः ॥२॥

मण्डूक, पल्वग, भेक, वर्षाभू, दर्दुर, हरि ये मींडक के नाम हैं। मींडक कफ को करता है, बहुत पित्त को नहीं करता है और बल को करता है॥२॥

कर्कटनामगुणाः

कर्कटः कुरुचिल्लः स्यात्कुलीरः षोडशाम्बिकः ।
कर्कटो बृंहणो वृष्यः शीतलोऽसृग्दरापहः ॥३॥

कर्कट, कुरुचिल्ल, कुलीर, षोडशाम्बिक ये ककेरा के नाम हैं। ककेरा धातु और वीर्य को पुष्ट करता है, शीतल है और प्रदररोग को नाशता है॥३॥

सर्पनामानि

सर्पो भुजङ्गोभुजगः फणी भोगी भुजङ्गमः ।
कुण्डली कञ्चुकी चक्री पन्नगः पवनाशनः ॥४॥
गूढपादुरगो नागो जिह्मगश्च सरीसृपः ।
चक्षुःश्रवा दीर्घपृष्ठो व्याल आशीविषस्त्वहिः ॥५॥
दर्वीकरो विषधरो दन्दशूको बिलेशयः ।
कुम्भीनसः पृदाकुः स्याद्‌दंष्ट्री काकोदरी विषी ॥६॥

सर्प, भुजंग, भुजग, फणी, भोगी, भुजङ्गम, कुण्डली, कंचुकी, चक्री, पन्नग, पवनाशन, गूढ़पात, उरग, नाग, जिह्मग, सरीसृप, चक्षुःश्रवा, दीर्घपृष्ठ, व्याल, आशीविष, अहि, दर्वीकर, विषधर, दन्दशूक, बिलेशय, कुम्भीनस, पृदाकु, दंष्ट्री, काकोदरी, विषी ये सांप के नाम हैं॥४–६॥

डिण्डिमनामानि

डिण्डिभो[१] राजिलः प्रोक्तोऽजगरो वाहसः शयुः ।
जलसर्पोऽलगर्दः स्यात्तिलित्सो गोनसः स्मृतः ॥७॥

डिण्डिभ, राजिल, अजगर, वाहस, शयु, जलसर्प, अलगर्द, तिलित्स, गोनस ये डिंडिभ आदि सांप के नाम हैं॥७॥

सर्पमांसगुणाः

सर्पाणां स्नेहनं मांसं चक्षुष्यं बृंहणं गुरु ।

---

१ गलार्दः इत्यपि पाठः ।

दूषीविषक्रिमिहरं मेधाग्निबलवर्द्धनम् ॥८॥

सांपों का मांस चिकना, आंखों में हित, धातुपुष्टिकर, भारी और दूषीविष को हरने वाला है, बुद्धि, अग्नि, बल इनको बढ़ाता है॥८॥

गोधानामगुणाः

गोधा घोरफटा पञ्चनखरा जनिपस्तथा ।
कृष्णसर्पेण गोधेयो गौधेरः सुमहागुणः ।
गोधाऽग्निजननी बल्या वृष्या पित्तानिलापहा ॥९॥

गोधा, घोरफटा, पंचनखरा, जनिप ये गोह के नाम हैं। काले सांप के सकाश से गोह में उपजा गोहरा होता है, उसके गोधेय, गौधेर ये नाम हैं। गोह का मांस बहुत गुणवाला है, अग्नि को जगाता है, बल को करता है वीर्य को पुष्ट करता है, तथा पित्त और वात को नाशता है॥९॥

सद्योहतमांसगुणाः

सद्योहतं भन्जेमांसं व्याधिवारिविषे मृतम् ।
वयस्थमकृशं बल्यमन्यथा परिवर्जयेत् ॥११०॥

सद्योहत मांस अर्थात् तत्काल मारा हुआ, मोटा और अच्छी अवस्था वाला ऐसे जीव के मांस को सेवै तो बल में हित है और रोग, पानी, विष इनमें मरे जीव का मांस वर्जित है॥११०॥

च्युतगर्भागर्भगुणाः

बृद्धानां दोषलं मांसं बालानां बलदं गुरु ।
च्युतगर्भा गुरुर्योषिद्गर्भा गर्भवती तथा ॥११॥

बूढ़े जीवों का मांस दोष को करता है, बालकों का मांस बल को देता है, भारी है, झिरे हुए गर्भवाली और स्त्री गर्भवाली स्त्री जाति के जीव का मांस भारी है॥११॥

स्वयंमृतमांसगुणाः

स्वयंमृतमबल्यं स्यादतिसारकरं गुरु ॥१२॥

स्वयंमृत अर्थात् आपसे मरे हुए जीव का मांस बल से रहित है, अतिसार को करता है और भारी है॥१२॥

अखाद्यमांसगुणाः

विषाम्बुरुङ्मृतं मृत्युदोषत्रयरुजावहम् ॥१३॥

विष, पानी, रोग इनसे मरे जीव का मांस मृत्यु, त्रिदोष, रोग इनको करता है॥१३॥

अङ्गविशेषगुणाः

विहगेषु पुमान् श्रेष्ठः स्त्री चतुष्पादजातिषु ।
पश्चार्द्धं लघु पुंसां स्यात्स्त्रीणां पूर्वार्द्धमादिशेत् ॥१४॥

पक्षियों में पुरुष पक्षी और चौपायों में स्त्री जाति पशु श्रेष्ठ है। पुरुष का पिछला आधा भाग हलका होता है, स्त्रियों का पूर्वार्द्ध हलका होता है॥१४॥

तुल्यजातौ स्थूलदेहो महादेहेषु पूजितः ।
अल्पदेहेषु शस्यन्ते तथैव स्थूलदेहिनः ॥१५॥

बड़े शरीरवालों में समान जाति में स्थूल शरीरवाला अच्छा होता है। छोटे शरीरवालों में भी मोटे शरीरवाले उत्तम हैं॥१५॥

चेष्टावतां परं मांसमलसेभ्यो लघु स्मृतम् ।
देहमध्यं गुरु प्रायः सर्वेषां प्राणिनां मतम् ॥१६॥

अलसवालों से चेष्टावालों का मांस बहुत हलका है। विशेषकर सब जीवों के शरीर का मध्यभाग भारी है॥१६॥

पक्ष्मोत्क्षेपाद्विहङ्गानां तदेव सममुच्यते ।
गुरूण्यङ्गानि सर्वेषां गलग्रीवं च पक्षिणाम् ॥१७॥

पक्षियों के पंख के उत्क्षेप से शरीर का मध्यभाग समान होता है। पक्षियों के सब अंग और गला भारी हैं॥१७॥

देशविशेषान्मांसगुणाः

ये मृगा विहगास्तोयदूरावासप्रचारकाः ।
ते नाभिष्यन्दिनः सर्वे विपरीता अतोऽन्यथा ॥१८॥

जो मृग और पक्षी पानी से दूर रहते हैं वे सब अभिष्यंदी नहीं हैं, इससे विपरीत अभिष्यंदी हैं॥१८॥

जलानूपभवाः सर्वे जलानूपचराश्च ये ।
गुरुभक्ष्या गुरुतरं तेषां मांसमुदाहृतम् ॥१९॥

पानी और अनूपदेश में उपजे हुए तथा पानी और अनूपदेश में विचरने वाले जीवों का मांस भारी है॥१९॥

धन्वोत्पत्तिप्रचाराणां लघु स्याल्लघुभोजिनाम् ।
ऊरुस्कन्धोदरं मूर्द्धा पाणिपादौ कटीतथा ।
पृष्ठत्वग्यकृदन्त्राणि गुरूणि हि यथोत्तरम् ॥१२०॥

इति मदनपालिघण्टौ मांसवर्गो द्वादशः ॥१२॥

जांगलदेश में उपजे और विचरने वाले और हलका भोजन करने वाले जीवों का

मांस हलका है, जांघ, कन्धा, पेट, मस्तक, हाथ, पैर, कटि, पीठ, खाल, यकृत, आंत ये सब उत्तरोत्तर (अर्थात् जांघ से कन्धा और कन्धा से पेट इस प्रकार) भारी हैं।।१२०।।

इति श्रीमदनपालनिघंटौ वैद्यरत्नपं०—रामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषातत्व—प्रकाशिनीहिन्दीटीकायां मांसवर्गो द्वादशः ।।१२।।

*****
****

गोपालबालैः सह मल्लविद्यांविनोददक्षं धृतकाकपक्षम् ।
उपास्महे वाङ्मनसातिदूरं महः परं नीलमचिन्तनीयम्।।१।।

गोपालों के बालकों के साथ मल्लविद्या के विनोद में चतुर, कनपट्टों को धारण करने वाले, वाणी और मन से बहुत दूर और चिन्तवन में न आनेवाले ऐसे परम नील तेज की उपासना करता हूं।।१।।

अनुपानवर्णनम्

वातेऽनुपानं स्निग्धोष्णं रूक्षोष्णं श्लेष्मणि स्मृतम् ।
पित्ते स्निग्धं हिमं स्नेहपाने तोयमशीतलम् ।।२।।

वायु में चिकना और गर्म अनुपान हित होता है, तथा कफ में रूखा और गर्म अनुपान हित होता है और ऐसे ही पित्त में चिकना अनुपान हितकारक है। स्नेहपान में गर्म पानी का अनुपान हित है।।२।।

भल्लातकस्नेहमूर्च्छाव्याप्तानां शीतलं जलम् ।
शालिमुद्गादिभक्ष्याणां यूषो मांसरसस्तथा ।।३।।

भिलावे के स्नेह से प्राप्त हुई मूर्च्छावालों को शीतल पानी तथा शालिचांवल और मूंग आदि भक्ष्यों का यूष तथा मांस का रस हित होता है।।३।।

माषादिभोजिनां मस्तु धान्याम्लं दधि वा स्मृतम् ।
मद्यंशोषिविषार्त्तानामल्पाग्नीनां च शस्यते ।।४।।

मांस आदि भोजन करने वालों को दही का पानी, कांजी अथवा दही का अनुपान हितकारक है। शोषवाले विष से पीड़ित और मंदाग्निवाले को मदिरा हित है।।४।।

क्लान्तानामुपवासाध्वभारस्त्रीसुरतादिभिः ।
पयः सुधासमं प्रोक्तं क्षीणानां रक्तपित्तिनाम् ।।५।।

जिसने व्रत किया हो, मार्ग चलकर थकित हो, बोझ उठाया हो अथवा स्त्री संग से

पीड़ित आदि मनुष्यों को क्षीण पुरुषों को और रक्तपित्तवाले मनुष्यों को दूध अमृत के समान गुणदायक कहा है।।५।।

असात्म्यं दोषलं शीतमतिमात्रमथो गुरु ।
उक्तानुपानतो भुक्तं सुखमन्नं प्रजीर्यते ।।६।।

जो पदार्थ सात्म्य न हों, दोष को करने वाले हों अथवा शीतल मात्रा से अधिक और भारी ऐसे अन्न भोजन किये जावें तो मद्य (अथवा गर्म दूध) के अनुपान से सुखपूर्वक जीर्ण हो जाते हैं।।६।।

तदादौ कर्षयेत्पीतं स्थापयेन्मध्यसेवितम् ।
पश्चात्पीतं बृंहयति तत्समीक्ष्य प्रयोजयेत् ।।७।।

जल भोजन करने से पहिले पीवे तो मनुष्य कृश होता है, मध्य में पान करे तो मनुष्य की आयु–स्थापन होती है और पीछे पान किये मनुष्य को पुष्ट करता है। इस प्रकार विचारकर अनुपान का प्रयोग करना चाहिये।।७।।

न पिबेच्छ्वासकासार्शोजन्तुरोगक्षतातुरः ।
पीत्वाऽभिभाष्याध्ययननिद्रां न त्वरया भजेत् ।।८।।

श्वास, खांसी, बवासीर, कृमिरोग, क्षत इनसे पीड़ित हुआ मनुष्य शीतल जल कभी न पीवे और पीकर बहुत बोलना, पठन, नींद इनको वेग से सेवन न करे।।८।।

प्रातर्जलपानगुणाः

तत्कफानिलपित्तेषु चैकद्वित्रिपलोन्मितम् ।
वारि शस्त*मुषः काले दृष्टिकारि रसायनम् ।।९।।

कफ, वात, पित्त इनमें क्रम से एक दो तीन पल अर्थात् कफ प्रकृतिवाला चार तोले, वातवाला आठ तोले, पित्तवाला बारह तोले, पानी प्रभात में पीवे तो वह दृष्टि को दृढ़ करता है, और बुढ़ापे को दूर करता है।।९।।

वलीपलितवैस्वर्यपीनसश्वासशोषजित् ।
पानीयप्रसृतीरष्टौ यः पिबेदरुणोदये ।।१०।।

जो मनुष्य ६४ तोले भर पानी को प्रभात में पीवे तो उस मनुष्य के शरीर में वली पड़ना, बालों का सफेद होना, स्वर का बिगड़ना, पीनस, श्वास, शोष ये सब दूर होते हैं।।१०।।

अन्यान्नमांसादिगुणज्ञानप्रकारः

धान्येषु मांसे सकलेषु चैवं शाकेषु चानुक्तमिह प्रमादात् ।
स्वादादितो भूतगुणैर्गृहीत्वा तदादिशेद्द्रव्यमनल्पबुद्धिः ।।११।।

---

* नस्यमित्यपि पाठः ।

अन्नों में मांसों में और संपूर्ण शाकों में जो यहां प्रमादवश नहीं कहे गये हैं, उनको भी स्वादु और उनके रस आदि से तथा पृथ्वी आदि पांच महाभूतों के गुणों का विचारकर बुद्धिमान् उनके गुणों को कथन करे।।११।।

श्रेष्ठधान्यानि

षष्टिका यवगोधूमा लोहिता याश्च शालयः ।
मुद्गाढकीमसूराश्च धान्येषु प्रवराः स्मृताः ।।१२।।

साठी चांवल, जव, गेहूं, लाल शाली चांवल, मूंग, अरहर और मसूर ये अन्नों में उत्तम कहे गये हैं।।१२।।

भुक्त्वाऽऽचारगुणाः

स जराव्याधिनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतं सुखी ।
भुक्त्वोपविशतस्तुन्दी बलमुत्तानशायिनः ।
आयुर्वामकटिस्थस्य मृत्युर्धावति धावतः ।।१३।।

इन अन्नों को सेवन करनेवाला मनुष्य बुढ़ापे और रोगों से बचकर सुखपूर्वक सौ वर्षपर्यन्त जीता है, भोजन करके बैठनेवाले का पेट बढ़ जाता है, भोजन करके सीधा शयन करने वाले के शरीर में बल उत्पन्न होता है, भोजन करके वामी करवट सोनेवाले की आयु बढ़ती है। भोजन करके भागनेवाले की मृत्यु होती है।।१३।।

निद्रागुणाः

रात्रौ जागरणं रूक्षं स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा ।।१४।।

रात्रि में जागना रूक्षता करता है, और दिन में सोना स्निग्धता को करता है, इस प्रकार से कि, जिनको रात्रि में जागना रूखा है, उनको दिन में सोना हित है।।१४।।

निद्रा सात्मीकृता यैस्तु रात्रौ वा यदि वा दिवा ।
न तेषां स्वपतां दोषो जाग्रतां चोपजायते ।
भोजनानन्तरं निद्रा वातघ्नी कफपुष्टिकृत् ।।१५।।

जिनको दिन या रात में सोने का अभ्यास है, उनको सोने में और जागने में दोष नहीं है। भोजन के पीछे नींद वात को नाश करती है, कफ और पुष्टि को करती है।।१५।।

कफमेदोविषार्त्तानां रात्रौ जागरणं हितम् ।
दिवास्वप्नश्च तृट्शूलहिक्काजीर्णातिसारिणः ।।१६।।

कफ, मेद और विष इनसे पीड़ित हुए मनुष्यों को रात्रि में जागना हित है। तृषा, शूल, हिचकी, अजीर्ण और अतिसार इन रोगवालों को दिन का सोना हित

है।।१६।।

दन्तधावनगुणाः

दन्तधावनमुद्दिष्टमास्यवैशद्यकारकम् ।
प्रसेकारुचिदौर्गन्ध्यमलपित्तकफापहम् ।।१७।।

दांतुन करना मुख में सुन्दरता करता है, और प्रसेक अरुचि, दुर्गंधि, मल, पित्त, कफ इनको नष्ट करता है।।१७।।

दन्तधावननिषेधः

मदातुरः कृशः श्रान्तो दन्तताल्वोष्ठरोगवान् ।
हिक्काच्छर्दिशिरः पीडामूर्च्छाशोषी न तच्चरेत् ।।१८।।

मदरोगी, दुबला, श्रान्त हुआ, दन्तरोगी, तालुरोगी, ओष्ठरोगी, हिचकी के रोगवाला, छर्दि रोगवाला, शिर में पीड़ावाला, मूर्छारोगी और शोषरोगी दंतधावन न करे।।१८।।

मुखप्रक्षालनादिगुणाः

मुखप्रक्षालनं शीतपयसा रक्तपित्तजित् ।
मुखस्य पिडिकाशोषनीलिकाव्यङ्गनाशनम् ।
पादप्रक्षालनं दृष्टिकरं वृष्यं श्रमापहम् ।।१९।।

शीतलपानी से मुख का धोना रक्तपित्त को जीतता है, मुख की फुनसियां, खुश्की, नीलिका और व्यंग को नाशता है। पैरों का धोना दृष्टि को दृढ़ करता है, धातु को पुष्ट करता है और परिश्रम को दूर करता है।।१९।।

पादाभ्यङ्गगुणाः

पादाभ्यङ्गः सदा वृष्यो बलोत्साहविवर्द्धनः ।
निद्रासुखकरः सुप्तिश्रमनेत्ररुजापहः ।।२०।।

पैरों में तेल का मालिश करना सब काल में पुष्टि करता है, बल और उत्साह को बढ़ाता है, नींद और सुख को करता है तथा तन्द्रा, परिश्रम, नेत्ररोग इनको नष्ट करता है।।२०।।

गण्डूषधारणगुणाः

स्नेहगण्डूषकरणं मुखशोषद्विजामयान् ।
स्वरघातौष्ठपारुष्यरक्तवातान्विनाशयेत् ।।२१।।

स्नेह से कुल्ला करना मुखशोष, दंतरोग, स्वरभंग, होठों का करड़ापन और रक्तवात इनको नाशता है।।२१।।

सुखोष्णोदकगण्डूषः कफारुचिमलापहः ।।२२।।

जो सहन में सुखदायक प्रतीत होवे ऐसे गर्म पानी का कुल्ला करना कफ, अरुचि और मल इनको नाशता है॥२२॥

विषमूर्च्छामदार्त्तानां शोषिणां रक्तपित्तिनाम् ।
कुपितानामलक्ष्मीणां रूक्षाणां न प्रशस्यते ॥२३॥

विष, मूर्च्छा और मद से पीड़ित मनुष्यों को शोषवालों को रक्तपित्तवालों को कोपवालों को दरिद्रों को और रूखों को कुल्ला करना अच्छा नहीं है॥२३॥

अंजनगुणाः

अञ्जनं नेत्रनैर्मल्यदृष्टिकारि रुजापहम् ।
रात्रौ जागरितः श्रान्तश्छर्दितो भुक्तवांस्तथा ।
ज्वरातुरः शिरःस्नातः कदाचिन्न तदाचरेत् ॥२४॥

अंजन नेत्रों को साफ करता है, दृष्टि को दृढ़ करता है, रोग को नाशता है। रात्रि में जागा हुआ, परिश्रमवाला, छर्दिवाला, भोजन किये हुए, ज्वर से पीड़ित और शिर को धोये हुए कभी भी नेत्रों में अंजन न डाले॥२४॥

व्यायामगुणाः

व्यायामः कर्मसामर्थ्यस्थैर्यदोषक्षयाग्निकृत् ।
स सदा गुणमाधत्ते बलिनां स्निग्धभोजिनाम् ॥२५॥

व्यायाम (कसरत करना) सब कामों की सामर्थ्य पैदा करता है, देह को स्थिर करता है, दोषों को नाश करता है और अग्नि को बढ़ाता है, बलवालों को और चिकने भोजनवालों को सब काल में गुण देता है॥२५॥

व्यायामदृढचित्तानां व्याधिर्नास्ति कदाचन ॥२६॥

कसरत से दृढ़ हुए चित्तवाले मनुष्यों को कभी भी रोग नहीं होता है॥२६॥

विरुद्धं वा विदग्धं वा भुक्तं शीघ्रं च पच्यते ।
भवन्ति शीघ्रं नो तस्य वलीशिथिलताजराः ॥२७॥

विरुद्ध, अथवा जला हुआ भोजन किया जावे तो शीघ्र पचता है और शरीर में वली, शिथिलपन, बुढ़ापा ये भी निश्चय ही शीघ्र नहीं होते हैं॥२७॥

वसन्ते शीतसमये सुतरां स मतो हितः ।
अन्यदापि स कर्त्तव्यः शक्त्यर्द्धेन बलाबलम् ॥२८॥

वसन्त ऋतु और शीतकाल में कसरत करना बहुत हितकारक है, अन्यकाल में भी अपना बलाबल देखकर आधी ताकत से कसरत करना चाहिये॥२८॥

व्यायामनिषेधः

तनुं समीक्ष्य वा स्वेदी कण्ठे ग्रीवाललाटयोः ।

भुक्तवान्कृतसंयोगः कासी श्वासी क्षयी कृशः ।।२९।।
रक्तपित्ती क्षयी शोषी न तं कुर्याद्विचक्षणः ।
अतिव्यायामतः कासो ज्वरश्छर्दिश्च जायते ।।३०।।

शरीर को देखकर अथवा जिसके कण्ठ, ग्रीवा, मस्तक इनमें पसीना आ गया हो तथा भोजन करके, स्त्रीसंग करके, खांसीवाला, श्वासवाला, क्षयवाला और कृश शरीरवाला, रक्तपित्तवाला, क्षयवाला और शोषवाला कसरत न करे। बहुत कसरत से खांसी, ज्वर और छर्दि ये उत्पन्न होते हैं।।२९-३०।।

मर्दनकेशादिकर्तनयोर्गुणाः

मर्दनं श्रमवातघ्नं निद्रापुष्टिबलप्रदम् ।
केशश्मश्रुनखानां च कल्पनं शुचिरूपकृत् ।।३१।।

मालिश करना या चांपीकरना परिश्रम और वात को नाशता है, नींद, पुष्टि और बल को देता है, बाल डाढ़ी और नखों का काटना सुन्दर रूप को करता है।।३१।।

तैलाभ्यङ्गगुणाः

अभ्यङ्गो वातरोगघ्नो धातुसाम्यं बलं सुखम् ।
निद्रावर्णमृदुत्वानि कुरुते दृष्टिपुष्टिकृत् ।।३२।।

तेल आदि से मालिश करना वातरोग को नाशता है, धातुओं की समता, बल, सुख, नींद, वर्ण कोमलपन, दृष्टि और पुष्टि इनको करता है।।३२।।

केशप्रसाधनगुणाः

केशप्रसाधनी केश्या रजोजन्तुमलापहा ।
शिरोऽभ्यङ्गः शिरस्तृप्तिकेशदार्ढ्याक्षिपुष्टिकृत् ।।३३।।

कंघी से बालों का बाहना बालों को बढ़ाता है, धूली, जीव और मल को दूर करता है। शिर में तेल आदि का मालिश करना शिर की तृप्ति, बालों की दृढ़ता और आंखों की पुष्टि इनको करता है।।३३।।

कर्णपूरणगुणाः

उच्चैः श्रवणबाधिर्यमलमन्याहनुग्रहान् ।
नाशनं कर्णरोगाणां कुरुते कर्णपूरणम् ।।३४।।

ऊंचा सुनना, बहिरापन, मल, मन्याग्रह, हनुग्रह इनको नाश करता है। अतः कानरोग वालों के कान में तेल आदि पूरण करना।।३४।।

स्नेहसेचनगुणाः

सिक्तस्याद्भिर्यथा मूले शाखिनः पल्लवादयः ।

वर्द्धन्ते हि तथा पुंसः स्नेहसिक्तस्य धातवः ॥३५॥

जैसे वृक्षों की जड़ मे पानी सींचने से पत्ते आदि बढ़ते हैं वैसे स्नेह से सींचे मनुष्य के धातु बढ़ते हैं॥३५॥

स्नेहाभ्यङ्गादिवर्जनम्

स्नेहावगाहनं वातशमनं धातुपुष्टिदम् ।
मात्राभिस्त्रिचतुःपञ्चषट्सप्ताष्टभिराव्रजेत् ।
रसरक्तमांसमेदोमज्जाधातून्यथाक्रमम् ॥३६॥

स्नेह में गोता मारना वात को नाशता और धातुओं को पुष्ट करता है। तीन चार, पांच, छः, सात और आठ इन मात्राओं से गोता मारना क्रम से रस, रक्त, मांस, मेद, मज्जा और वीर्य इनको पुष्ट करता है॥३६॥

स्नेहाभ्यङ्गादिवजनम्

वान्तो नवज्वरोऽजीर्णी विरिक्तः केवलामरुक् ।
निरूहतर्पणं यच्च स्नेहाभ्यङ्गादि वर्जयेत् ॥३७॥

वांति किया हुआ, नया ज्वरवाला, अजीर्णवाला, जुलाब लिया हुआ और केवल आमरोगवाला, निरूह, तर्पण और स्नेहाभ्यंग (चिकनाई की मालिश) आदि का सेवन न करे॥३७॥

उद्वर्त्तनगुणाः

उद्वर्त्तनं वातहरं भ्राजकानलदीपनम् ।
गात्रस्थिरत्वसुखितात्वक्प्रसादमृदुत्वकृत् ॥३८॥

उबटना (मलना) वात को हरता है, कांतिकारक है और अग्नि को दीपन करता है, अंगों की स्थिरता, सुख, त्वचा की स्वच्छता और कोमलता को करता है॥३८॥

स्नानादिगुणाः

स्नानं वातश्रमालक्ष्मीपामाकण्डूमलापहम् ।
हृद्यं कासहरं वह्निसर्वेन्द्रियविबोधनम् ॥३९॥

स्नान करना वात, परिश्रम, दारिद्र्य, पामा, खाज और मल इनको नाशता है, दिल को ताकत देता है, खांसी को हरता है, अग्नि और सब इन्द्रियों को बलवान् करता है॥३९॥

न तदुष्णेन शिरसो योज्यं नेत्राहितं यतः ।
कफवातप्रकोपे तु भेषजार्थं तदाचरेत् ॥४०॥

गर्मपानी करके शिर को नहीं भिगोना, क्योंकि आंखों में हितकारक नहीं है, कफ और वात के प्रकोप में औषध के अर्थ देवे॥४०॥

स्नाननिषेधः

तच्चातिसारज्वरितकर्णशूलानिलार्तिषु ।
आध्मानारोचकाजीर्णभुक्तवत्सु च गर्हितम् ।।४१।।

अतिसार, ज्वर, कर्णशूल, वातरोग, आध्मान, अरोचक, अजीर्ण इन रोगवालों को और भोजन किये पीछे स्नान करना निंदित है।।४१।।

चन्दनलेपनादिगुणाः

अनुलेपस्तृषामूर्च्छा दौर्गन्ध्यश्रमवातजित् ।
सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्णप्रीत्योजोबलवर्द्धनम् ।।४२।।

अनुलेप अर्थात् चन्दन आदि का लगाना तृषा, मूर्च्छा, दुर्गंधता, परिश्रम और वात को जीतता है और सौभाग्य, तेज त्वचा का वर्ण, प्रीति, पराक्रम, बल इनको बढ़ाता है।।४२।।

पुष्परत्नादिधारणगुणाः

कुसुमाम्बररत्नानां धारणं कान्तिकारणम् ।
पापरक्षोग्रहहरं कामौजः श्रीविवर्द्धनम् ।
पादत्रधारणं नेत्र्यमायुष्यं पादरोगनुत् ।।४३।।

फूल, वस्त्र, रत्न इनको धारण करना कान्ति को करता है, पाप, राक्षसदोष, ग्रहदोष इनको दूर करता है और काम, पराक्रम, शोभा इनको बढ़ाता है। पादत्राण अर्थात् जूता पहनना नेत्रों को हित है, आयु को बढ़ाता है और पादरोगों को दूर करता है।।४३।।

उष्णीषगुणाः

उष्णीषं शुचिदं केश्यं रजोवातातपापहम् ।।४४।।

पगड़ी का बांधना शुद्धि को देता है, बालों को हित है और धूलि, वात घाम इनको दूर करता है।।४४।।

छत्रव्यजनगुणाः

छत्रधारणमोजस्यं चक्षुष्यं हिमघर्मजित् ।
बालव्यजनमोजस्यं मक्षिकादिनिवारणम् ।
व्यजनस्यानिलः शोषमूर्च्छास्वेदश्रमापहः ।।४५।।

छत्री धारण करना बल को करता है, नेत्रों को हित है तथा वर्षा और घाम को जीतता है, चमर करना बल को करता है, मक्खी आदि को दूर करता है, पंखे की पवन शोष, मूर्च्छा, पसीना और परिश्रम को नाशती है।।४५।।

यष्टिधारणगुणाः

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यावष्टम्भवीर्यकृत् ।
रक्षःसर्पादिभयजिद्विशेषात्स्थविरे (म) हितम् ॥४६॥

लट्ठी धारण करना उत्साह, स्थिरता, गिरने न देना, पराक्रम इनको करता है, राक्षस और सांप आदि के भय को जीतता है, विशेषकर बुढ़ापे में हित है॥४६॥

चंक्रमणगुणाः

अङ्गास्थौल्यरुचिश्लेष्मसौकुमार्यसुखप्रदम् ।
यत्तु चंक्रमणं नातिदेहपीडाकरं भवेत् ।
तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥४७॥

अंगों को मोटा नहीं करता है, रुचि को उपजाता है और कफ, सुकुमारपन, सुख इनको देता है। जहाँ तक शरीर को पीड़ा नहीं होवे तहाँ तक चलना, फिरना, आयु बल, बुद्धि, अग्नि इनको देता है और इन्द्रियों को जगाता है॥४७॥

शय्यादिगुणाः

त्रिदोषशमनी शय्या तौली वातकफापहा ।
सुखशय्यासमं निद्रापुष्टीन्द्रियबलप्रदा ॥४८॥

शय्या अर्थात् पलंग त्रिदोष को शान्त करता है, बिछोना वातकफ को नाशता है, सुखशय्या में भी यही गुण हैं। विशेषकर नींद पुष्टि और इन्द्रिय बल को देती है॥४८॥

आतपादिगुणाः

आतपः स्वेदमूर्च्छास्रतृष्णादाहश्रमक्लमान् ।
कुरुते पित्तवैवर्ण्यस्वेदान् छाया व्यपोहति ॥४९॥

घाम (धूप) पसीना, मूर्च्छा, रक्त का पिघलना, तृषा, दाह, परिश्रम और ग्लानि इनको उत्पन्न करता है, और छाया पित्त, वर्ण का बिगड़ना और पसीना इनको दूर करती है॥४९॥

अग्नितापगुणाः

अग्निः शीतानिलस्तम्भकफवेपथुनाशनः ।
रक्तपित्तप्रदूषी स्यादामाभिष्यन्दपाचनः ॥५०॥

अग्नि (आग) का सेकना, शीत, वात, स्तंभ, कफ और कम्प को नाशती है, रक्तपित्त को दूषित करती है, आम को गलाती और पकाती है॥५०॥

धूमादिगुणाः

धूमः पित्तानिलौ कुर्यादवश्यायः कफानिलौ ।
ज्योत्स्ना शीतानिलस्तम्भप्रदा तृट्पित्तदाहजित् ॥५१॥

धुंआ पित्त और वात को करता है। ओस (तुषार) कफ और वात को करती है, चन्द्रमा की चांदनी शीतल है, वात और स्तभ को देती है तथा तृषा, पित्त, दाह इनको जीतती है॥५१॥

तमो भयावहं मोहकफपित्तक्लमप्रदम् ।
वृष्टिर्वृष्या हिमा निद्राभिष्यन्दलस्यकारिणी ॥५२॥

अन्धेरा भय, मोह, कफ, पित्त, ग्लानि इनको देता है, वर्षा पुष्टि करती है, शीतल है और नींद अभिष्यंद और आलस्य को करती है॥५२॥

प्रवातादिगुणाः

प्रवातं रूक्षवैवर्ण्यस्तम्भकृद्दाहपित्तनुत् ।
स्वेदमूर्च्छापिपासाघ्नमप्रवातमतोऽन्यथा ॥५३॥

बहुत पवन रूखेपन, विवर्णता और स्तंभ को करती है, दाह और पित्त को दूर करती है, पसीना, मूर्च्छा और तृषा को नाशती है। इससे विपरीत पवन विपरीत फल देती है॥५३॥

सुखं प्रवातं सेवेत ग्रीष्मे शरदि चान्तरा ।
निवातमायुषे सेव्यमारोग्याय च सर्वदा ॥५४॥

ग्रीष्म ऋतु में शरद्ऋतु में अपनी इच्छानुसार पवन का सेवन करे और अन्य ऋतुओं में आयु की वृद्धि के लिये और रोगरहित रहने के लिये अधिक वायु से रहित स्थानों में रहे॥५४॥

सद्यःप्राणदाः

सद्योमांसं नवं चान्नं बाला स्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकस्नानं सद्यःप्राणकराणि षट् ॥५५॥

तत्काल का मांस, नया अन्न, बाला अर्थात् सोलह वर्ष की स्त्री, दूध भोजन, घृत और गर्मपानी से न्हाना ये छः वस्तु तत्काल प्राण दायक हैं॥५५॥

सद्यःप्राणहराः

पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥५६॥

दुर्गन्धवाला मांस, बूढ़ी स्त्री, कन्या की राशि का अथवा प्रभात का सूर्य, तत्काल जमाई हुई दही, प्रभात में स्त्रीसंग और नींद ये छहों प्राण को शीघ्र हरने वाले होते

हैं॥५६॥

अन्नादिगुणाः

अन्नादष्टगुणं पिष्टं पिष्टादष्टगुणं पयः ।
पयसोऽष्टगुणं मांसं मांसादष्टगुणं घृतम् ।
घृतादष्टगुणं तैलमभ्यङ्गे न तु भोजने ॥५७॥

चावल आदि अन्न से आठ गुना आटा और आटे से आठ गुना दूध और दूध से आठ गुना मांस और मांस से आठगुना घृत बल कारक है, घृत से आठ गुणा तेल बलकारक है परंतु मालिश में है, भोजन में नहीं॥५७॥

लंघनगुणाः

लंघनं कफमेदोघ्नमामज्वरहरं लघु ॥५८॥

लंघन अर्थात् उपवास करना कफ मेद को नाशता है, आम ज्वर को हरता है और हलका है॥५८॥

पाचनं दीपनं वातहरं शूलातिसारजित् ।
तन्न युक्तं नवे बाले गर्भिण्यां स्थविरे कृशे ।
शोषकामभयक्रोधमार्गश्रमचिरज्वरे ॥५९॥

पाचन है, अग्नि को जगाता है, वात को हरता है, शूल और अतिसार को जीतता है, नवीन रोगी, बालक, गर्भिणी, बूढ़ा और दुर्बल मनुष्य और शोषरोगी, कामपीड़ित, भय से व्याकुल, क्रोधातुर, मार्गचलना आदि परिश्रम से थका हुआ पुराने ज्वर में कभी लंघन न करे॥५९॥

पूर्वादिपवनगुणाः

पूर्वानिलो गुरुः स्वादुः स्निग्धः पित्तास्रवर्द्धनः ॥६०॥
रोगकृद्विषजुष्टानां क्षतव्रणविलासिनाम् ।
विदाही वातलः श्रान्तकफशोफवतां हितः ॥६१॥

पूर्व दिशा का पवन भारी है, स्वादु है, चिकना है, पित्तरक्त को बढ़ाता है, और रोग को करता है, विष से युक्त हुओं को क्षत और घाववालों को बुरा है, दाह को करता है, और वात को उपजाता है, श्रांत हुओं को कफ और शोजावालों को हित है॥६०–६१॥

दक्षिणः पवनः स्वादू रक्तपित्तहरो लघुः ।
अविदाहप्रदो बल्यश्चक्षुष्यो न च वातलः ॥६२॥

दक्षिण का पवन स्वादु है, रक्तपित्त को हरता है, हलका है, दाह को नहीं करता है, बल को करता है, आंखों को हित है और वातकारक नहीं है॥६२॥

पश्चिमः पवनो रूक्षस्तीक्ष्णः स्नेहबलापहः ।
विशदः शोषणो नृणां कफमेदोहरो लघुः ।।६३।।

पश्चिम का पवन रूखा है, तेज है, स्नेह और बल को नाशता है, दिल को ताकत देता है, शोषता है, मनुष्यों के कफ और मेद को हरता है और हलका है।।६३।।

उत्तरो मारुतः शीतः स्निग्धो दोषप्रकोपकृत् ।
क्लेदनः प्रकृतिस्थानां बलदो मधुरो मृदुः ।
क्षयक्षीणविषार्त्तानां विशेषाद्गुणकारकः ।।६४।।

उत्तर का पवन शीतल है, स्निग्ध है और दोषों के प्रकोप को करता है, क्लेदकारक हैं, आरोग्य मनुष्यों को बल देता है, मीठा और कोमल है, क्षय–क्षीण और विष से पीड़ित हुए मनुष्यों को विशेषता से गुण करता है।।६४।।

मधुररसगुणाः

रसो मधुरकः शीतो धातुस्तन्यबलप्रदः ।।६५।।

मीठा रस शीतल है, धातु और स्तन के दूध और बल को बढ़ाता है।।६५।।

चक्षुष्यो वातपित्तघ्नः कुर्यात्स्थौल्यकफक्रिमीन् ।
सोऽतियुक्तो ज्वरश्वासगलगण्डार्बुदादिकृत् ।।६६।।

आंखों में हित और वातपित्त को नाशता है। मुटापा, कफ और कृमि इनको करता है, वह बहुत प्रयुक्त किया ज्वर, श्वास, गलगण्ड और अर्बुद आदिकों को उत्पन्न करता है।।६६।।

अम्लरसगुणाः

रसोऽम्लः पाचनो रुच्यः पित्तश्लेष्मकरो लघुः ।
लेखनोष्णो बहिः शीतः क्लमदः पवनापहः ।
सोऽतियुक्तः परं देहे रक्तपित्तादिरोगकृत् ।।६७।।

खट्टा रस पाचन है, रुचि उपजाता है, पित्तकफ को करता है, हलका है, लेखन और गर्म है, बाहर से शीतल है, ग्लानि को देता है, वात को नाशता है, अम्लरस अधिक प्रयोग करने से देह में रक्तपित्तादि रोगों को उत्पन्न कर देता है।।६७।।

कटुरसगुणाः

कटुकः पित्तलः श्लेष्मकृमिकण्डूविषापहः ।।६८।।
आग्नेयो वातलः स्तन्यमेदस्थौल्यहरोऽगुरुः ।
सोऽतियुक्तो भ्रमास्थौल्यतालुशोषातिदाहदः ।।६९।।

चरपरा रस पित्तकारक है। तथा कफ, कृमि, कण्डू और विष को नष्ट करता है। अग्निगुण प्रधान है। वायु को उत्पन्न नहीं करता, स्तन्य, मेद और स्थूलता के

हरनेवाला है उसका अतिप्रयोग करने से भ्रम, कृशता, तालुशोष और दाह उत्पन्न हो जाती है।।६८–६९।।

तिक्तरसगुणाः

तिक्तः शीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाञ्जयेत् ।
वातलोऽग्निकरः स्तन्यशोधनः शोषणो लघुः ।।७०।।

कड़ुवा रस शीतल है, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त और कफ इनको जीतता है, वात को करता है, अग्नि को उपजाता और दूध को शोधनकर्ता है, शोषण है और हलका है।।७०।।

सोऽतियुक्तः शिरःशूलमन्यास्तम्भभ्रमार्तिकृत् ।।७१।।

बहुत अधिक सेवन करने से कड़ुवा रस शिर में शूल, मन्यास्तंभ और भ्रम को करता है।।७१।।

लवणरसगुणाः

लवणः शोधनो रुच्यः पाचनः कफपित्तदः ।
पुंस्त्ववातहरो ज्ञेयः कायशैथिल्यकारकः ।
सोऽतियुक्तोऽक्षिपाकास्रपित्तकोष्ठाक्षितापकृत् ।।७२।।

नमकीन रस शोधन है, रुचि को जपजाता है, पाचन है, कफ और पित्त को पैदा करता है, पुरुषपने को और वात को हरता है, शरीर में शिथिलता करता है। बहुत युक्त किया सलोना रस आंख का, पक जाना, रक्तपित्त, कोष्ठ और आंख में दाह करता है।।७२।।

कषायरसगुणाः

कषायो रोपणो ग्राही शोषणो वातकोपनः ।
सोऽतियुक्तो ग्रहाध्मानहृत्पीडाक्षेपणादिकृत् ।।७३।।

कषैला रस घाव में अंकुर लाता है, मल को रोकता है, शोषण है, और वात को कुपित करता है। बहुत प्रयुक्त किया कषैला रस ग्रहरोग, आध्मान, हृदय में पीड़ा, आक्षेप आदि को करता है।।७३।।

वमनविरेचनादिगुणाः

वमनं श्लेष्मपित्तघ्नं विरेको रक्तपित्तहा ।
वस्तिर्वातहरा ज्ञेया स्वेदो मांद्याद्यकारकः ।।७४।।

वमन कफ और पित्त को नष्ट करता है, विरेचन रक्त और पित्त को शमन करता है, वस्तिकर्म वायु को शमन करता है, स्वेदकर्म (पसीना देना) मन्दाग्नि और जड़ता आदि को दूर करता है।।७४।।

प्रसन्नदृष्टिर्दृढदन्तकेशः शशाङ्कवक्त्रः पलितैर्विहीनः ।
पिकाभकण्ठःकमलास्यगन्धस्तस्योपसेवीभवतीह मर्त्यः ॥७५॥

मनुष्य वमन के कराने से साफ दृष्टिवाला, दृढ़ दंत और बालोंवाला, चन्द्रमा के समान मुखवाला, श्वेतबालों से वर्जित, कोयल के समान कण्ठवाला और कमल के समान मुख के गन्धवाला होता है॥७५॥

कासोपलेपः स्वरभेदनिद्रा तथाऽऽस्यदौर्गन्ध्यविषोपसर्गः।
कफप्रसेको ग्रहणीप्रदोषा भवन्ति जन्तोर्वमिते न नूनम् ॥७६॥

खांसी, मुख में कफ का लिपटना, स्वरभेद, नींद, मुख में दुर्गन्ध और विष के उपद्रव, कफ का पड़ना, ग्रहणी के दोष ये सब मनुष्य के वमन करने से नहीं होते हैं॥७६॥

बुद्धेः प्रसादं बलमिन्द्रियाणां धातुस्थिरत्वं बलमग्निदीप्तिम् ।
चिराच्च पाकं वयसः करोति विरेचनं सम्यगुपास्यमानम् ॥७७॥

अच्छी रीति से विरेचन किया हुआ मनुष्य की बुद्धि की प्रतन्नता इंद्रियों की ताकत, स्थिरता, बल, अग्नि की चैतन्यता इनको करता है, और जल्दी बुढ़ापा नहीं आने देता॥७७॥

बस्तिकर्मगुणाः

बस्तिर्वाते च पित्ते च कफे रक्ते च शस्यते ।
संसर्गे सन्निपाते च बस्तिरेव हितः सदा ॥७८॥

वात, पित्त, कफ, रक्तविकार इनमें बस्तिकर्म उत्तम है। दो दोषों के कोप में और सन्निपात में और सब काल में बस्ति कर्म ही हित है॥७८॥

मूले निषिक्तो हि यथा द्रुमः स्यान्नालच्छदः कोमलपल्लवाग्रः ।
काले बृहत्पुष्पफलप्रदश्च तथा नरः स्यादनुवासनेन ॥७९॥

जैसे वृक्ष की जड़ में पानी सींचने से टहनियां, छत्ते और कोमल पत्तोंवाला होके समय पर बहुत पुष्प और फलों को देता है, वैसे ही अनुवासन बस्ति से मनुष्य भी सब सुंदर अंगोंवाला हो जाता है॥७९॥

रक्तमोक्षगुणाः

त्वग्दोषा ग्रन्थयः शोफा रोगाः शोणितसम्भवाः ।
रक्तमोक्षणशीलानां न भवन्ति कदाचन ॥८०॥

त्वचा दोष, ग्रंथि, शोजा आदि रक्त से होनेवाले रोग दूषित रक्त निकाल देने से (फस्त से) नहीं होते हैं॥८०॥

वर्षासु पथ्यसेवनम्

संहर्षात्कुपिता भवन्ति हि मला वर्षासु वातादयः ।
क्लिन्नत्वाद्वपुषोऽनले कृशतरे वैद्येन देयं ततः ।
अन्नं दीपनपाचनं च मलहृत् क्लेदापहोष्णद्रवं ।
रूक्षं नातिकषायतिक्तकटुकं स्निग्धं च किंचिद्रसैः ।।८१।।

वर्षा ऋतु में वायु आदि दोष बड़े वेग से कुपित होते हैं, पृथ्वी में हरवक्त गीलापन आदि होने से मनुष्यों के अंदर क्लेद (आमाकारदोष) बढ़ जाता है तब जठराग्नि भी कम ताकत हो जाती है,इसलिये वर्षा ऋतु में वैद्य को उचित है कि दीपन, पाचन, दोषों को और मल को हरनेवाला, क्लेद के दूर करनेवाला, गरम पतला, रूखा जो अधिक चर्परा, कड़ुवा, कषैला न हो और किंचित् चिकना हो ऐसे रस भोजन देवे अर्थात् वर्षा ऋतु में यह उपरोक्त अन्न पथ्य है।।८१।।

दिव्यं चौड्ग्चमथाम्बु तप्तशिशिरं सक्षौद्रमल्पं पिबेद्
गच्छन्त्योषधयो विदाहमधिकं तारुण्ययोगात्तदा ।
व्यायामार्कमरीचिमैथुनसुखावश्यायवर्जे ततो
भूबाष्पाम्बुभुजङ्गदंशमशकैर्वर्जे शयीतालये ।।८२।।

तथा आकाश से वर्षे हुए और स्रोत के पानी को पीवे और उसको भी उबालकर ठंढ़ा करके शहद मिलाकर पीवे, क्योंकि, वह जल ताजा वर्षा हुआ होने से अधिकता से दाह आदि करता है और वर्षा ऋतु में व्यायाम, धूप, स्त्रीसंग, दिन में सोना और ओस इनको सेवन न करे तथा पृथ्वी की भांप, पानी, सांप, डांस, मच्छर रहित स्थान में शयन किया करे।।८२।।

शीतकाले पथ्यम्

शीते यत्र न वातवृष्टिरधिका साङ्गारयाने गृहे
निर्वाते क्षितिपः शयीत मधुरं किञ्चिच्च पीत्वाऽऽसवम् ।
काश्मीरागुरुलेपभूषिततनुर्नागाङ्गनाभिर्व्रजे-
द्यत्नाच्च व्यजनावगाहनरतिं स्वापं दिवा च त्यजेत् ।।८३।।

शीतकाल में जहां पवन और वर्षा बहुत न आती हो तथा अंगीठी बनी हुई हो और पवन न आती हो ऐसे स्थान में राजा किंचित् मीठे आसव को पीके शयन करे और केशर, अगर इनके लेपन से शरीर को भूषितकर सुन्दर स्त्रियों के संग को प्राप्त हो और व्यजन और जलक्रीड़ा करना, दिन में स्त्रीसंग करना तथा दिन में सोना इनको त्याग देवे।।८३।।

शरदृतुकृत्यम्

सेव्याः स्वादुकषायतिक्तविशदाऽवर्षे त्यजेज्जांगलं
द्राक्षाक्षीरसितेक्षुशालिमधुरा गोधूममुद्गाः पयः ।
नैर्मल्यादखिलं जलं लघुतरं वासः स्रजश्चन्दनं
सेवेतेन्दुकरान् प्रदोषसमये गाहेत साब्जं सरः ॥८४॥

शरदऋतु में स्वादु, कषैला और सुन्दर ऐसे रस सेवन करे और जांगल मांस को त्याग दे। दाख, दूध, मिसरी, ईख, शालिचांवल, मीठे पदार्थ, गेहूं, मूंग आदि को सेवन करे। आश्विन कार्तिक में निर्मलपन से, सब तरह के पानी हलके हो जाते हैं उनको सेवन करे तथा वस्त्र, माला, चंदन इनको सेवन करे और प्रदोष समय चंद्रमा की किरणों को सेवन करे और कमलवाले तलाबों में गोता मार के स्नान करे॥८४॥

वर्षासूपचितं विरेचविधिना पित्तं हरेद्बुद्धिमान्
युक्तं रक्तविमोक्षणेन हविषस्तिक्तस्य पानं तथा ।
रात्रौ जागरणं व्यवायमधिकं घर्मं तुषारं दधि
क्षाराम्लोष्णविदाहितीक्ष्णकटुकं निद्रां दिवा च त्यजेत् ॥८५॥

और वर्षा ऋतु में संचित हुए पित्त को बुद्धिमान् विरेचन की विधि से शरद्ऋतु में निकाल देवे तथा रक्त को निकलावे और तिक्तद्रव्यों से सिद्ध घृत को पीवे। रात्रि में जागना, बहुत स्त्रीसंग, घाम, तुषार (ओस), दही, खारा, खट्टा, गर्म, बहुत दाहकारक, तेज, कडुवा और दिन में सोना इनको त्याग दे॥८५॥

हेमन्तशिशिरयोः कृत्यम्

हेमन्ते लवणाम्लतिक्तकटुकक्षारोत्कटं बृंहणं
सर्पिस्तैलसमेतमुष्णमशनं तीक्ष्णानि पानानि च ।
सेवेतागुरुरूषिताऽम्ब्वशिशिरं गाहेत तैलप्लुतः
कौशेयास्तरणे शयीत शयने साङ्गारयाने गृहे ॥८६॥

मंगशिर पौस में सलोना, खट्टा, कडुवा, चर्परा, खारा, उत्कट, पुष्टिकारक, घृत, तेलसहित गर्म भोजन और चर्परे और पीने के पदार्थ इनका सेवन करे। तेल की मालिश कर गर्म पानी में स्नान करे और रेशमी वस्त्र से संयुक्त हुए पलंग पर अंगीठी युक्त गर्म स्थान में शयन करे॥८६॥

श्यामां पीनपयोधरोरुजघनामाश्लिष्य धन्योऽङ्गनां
बाह्लीकागुरुलेपभूषिततनुं धूपैर्व–रैर्धूपितम् ।
कामं मैथुनमप्यतर्पितवपुः सेवेत बल्यै रसैः

कर्त्तव्यः शिशिरेऽयमेव नितरां शीताधिकत्वाद्विधिः ॥८७॥

श्यामा (तरुणी) और पुष्टकुच और पुष्ट जांघोंवाली स्त्री से मिलके सोवे। केशर और अगर का लेप करे और सुन्दर धूपों से धूप लेके स्त्रीसंग करे और बलकारक रसों का सेवन करे। माघ फाल्गुन में भी बहुत शीत होने से यही विधि करनी उचित है।॥८७॥

वसन्ते पथ्यम्

तीक्ष्णक्षारकषायरूक्षकटुकं कोष्णं वसन्तेऽशनं
सन्मन्थं मधुमुद्गजाङ्गलयवप्रायं हितं वाऽऽसवम् ।
व्यायामं विपिनं च कोकिलकलालापाकुलं कामिनी-
स्नानोद्वर्त्तनचन्दनानि नृपतिः सेवेत रम्याः स्रजः ॥८८॥

चैत्र वैशाख में तेज, खारा, कषैला, रूखा, चर्परा और गर्म भोजन करना, शहद, मूंग, जांगल देश के जव विशेष करके हो वह मदिरा, कसरत, कोयलों के शब्दों से शोभायमान बगीचे और सुन्दर स्त्री तथा स्नान, उबटना, चन्दन और रमणीय माला इनको राजा सेवन करे।॥८८॥

हेमन्ते निचितः प्रकुप्यति कफो भानोः करैरावृत-
स्तस्मात्तीक्ष्णशिरोविरेकवमनैर्गण्डूषधूपादिभिः ।
तं प्रज्ञो विजयेत विश्वजलदक्वाथैरथोष्णाम्बुभिः
शीतस्निग्धगुरुद्रवाम्लमधुरं निद्रां दिवा च त्यजेत् ॥८९॥

हेमन्त ऋतुमें संचित हुआ कफ सूर्य के किरणों से आवृत होकर कुपित होता है इसलिये तेज शिरोविरेचन अर्थात् नस्य, वमन, कुल्ला, धूप आदिकों से और सोंठ नागरमोथा के क्वाथों से तथा गर्मपानी से उसको जीते। शीतल, चिकना, भारी, पतला, खट्टा और मीठा रस और दिन में सोना इनको त्याग दे।॥८९॥

ग्रीष्मकृत्यम्

ग्रीष्मे शीतगृहान्सरांसि सरितो वापीर्वनानि स्रजो
हाराञ्छीतलतालवृन्तपवनान्सेवेत निद्रां दिवा ।
वासांस्यच्छलघूयनुष्णमधुरं चान्नं ससर्पिर्द्रवं
मन्थक्षीरसुपानकानि च सितादिग्धानि शीतान्यपि ॥९०॥

ज्येष्ठ, आषाढ़ में शीतल गृह, स्नान, सरोवर, नदी, बावड़ी, माला, हार, शीतल ताड़के पंखे की पवन और दिन में सोना इनको सेवन करे। सुन्दर और हलके वस्त्रधारण करे और शीतल, मीठा, घृतसहित, पतला अन्न, मन्थ, मिसिरी आदि से युक्त दूध और सुन्दर पानक इनको सेवन करे।॥९०॥

शुभ्रे हर्म्यतले शयीत शयने प्रत्यग्रपुष्पाञ्चिते
वातैश्चन्दनचन्द्रचर्चिततनुः संस्पृश्यमानः सुखैः ।
व्यायामं परिशोषि मैथुनरतिं घर्मं तथोष्णं रसा-
नाग्नेयान्परितस्त्यजेन्मतिमतो वैद्यस्य वाक्ये रतः ॥९१॥

सुन्दर स्वच्छ मकान को छत आदि पर खिलने के लिये किंचित् खुले मुख के फूलों से रचित किये पलंग पर सुख (स्पर्श) पवन से स्पर्शित होके और चन्दन का लेप शरीर पर करके (चान्दनीका) सेवन कर शयन करे। तथा कसरत, शोषकारक द्रव्य, स्त्रीसंग में मन, घाम, गर्म, पदार्थ, अग्नि को उपजाने वाले रस इन सबको सब प्रकार से त्याग देवे और बुद्धिमान् वैद्य की आज्ञा में रहे॥९१॥

ग्रन्थकर्तृप्रशस्तिः

टीकान्वये महति भूमिभुजां विशुद्धे
काछेति[1] नाम नगरं जयति प्रसिद्धम् ।
यद्वेधसा विहितमादरतः स्वसृष्टे-
रुत्कृष्टतातिशयपुञ्जदिदृक्षयैव ॥९२॥

जो ब्रह्मा ने निश्चय ही सृष्टि की उत्कृष्टता के समूह देखने की इच्छा से रचा हुआ राजाओं का शुद्ध और उत्तम टीका वंश है उसके रहने का काछ इस नाम से प्रसिद्ध हुआ नगर सर्वोत्कर्षता से वर्तता है॥९२॥

तत्र श्रीरत्नपालः समजनि जनतानन्दवृन्दैककन्दः
कुन्देन्दुस्वच्छकीर्तिः परमदलनोद्दानदीक्षैकदक्षः ।
यस्याकर्ण्य प्रभूतं प्रथितगुणगणं कर्णसाफल्यभाजो
दैवं निन्दन्ति लोका नयनविफलताखेदमावेदयन्तः ॥९३॥

उस टीकावंश में मनुष्यों के आनन्द के समूह का कन्दरूप, कंद के फूल और चन्दमा के समान स्वच्छ कीर्तिवाला, शत्रु के मद को दलनकर बड़ी भारी दीक्षा देने में चतुर और जिसके विख्यात गुणों को समूह को सुनकर कानों की सफलता प्राप्तकर नेत्रों के न देखने के खेद में संसार के मनुष्य दैव को निंदित करते हैं अर्थात् उसके गुणों को सुनते ही सबको देखने की अभिलाषा होती है ऐसा श्रीरत्नपाल राजा उस काछ नगर में उत्पन्न हुवा॥९३॥

जननयनसुधांशुस्तस्य शुद्धस्तनूजो जगति भरणपालः
क्षोणिपालो बभूव ।

---

१ काठेरि इत्यपि पाठः ।

सकलसकलवाञ्छासिद्धिहेतोर्विधाता
सुरतरुमपि चक्रे यत्करच्छद्मनैव ॥९४॥

उस श्रीयुक्त रत्नपाल का मनुष्यों के आंखों में चन्द्रमा रूप शुद्ध पुत्र संसार में भरण पाल नाम राजा हुआ, विधाता ने सम्पूर्ण प्राणीमात्र की इच्छा पूर्ण करने के लिये कल्पवृक्ष जिसके हाथ के वेष में प्रगट किया॥९४॥

हरिश्चन्द्रस्तस्मात्समजनि जनानन्दजननो
हरिश्चन्द्रो लोके परपुरुपरीतापदलनः ।
परं विश्वामित्रेष्वहितमयमाधत्त मतिमान्
विशिष्टो नैतस्माज्जगति महितोऽन्यः सुकृतिनः ॥९५॥

उससे मनुष्यों के आनन्द उपजाने वाला और संसार में शत्रुओं के बढ़े हुए परिताप को दलन करने वाला हरिश्चन्द्र हुआ यह बुद्धिमान् विश्व के शत्रुओं को नाश करने वाला हुआ (अर्थात् दुष्टों को दण्डं देने वाला हुआ) और इस प्रकृति से विशिष्ट और जगत् में कोई नहीं हुआ ऐसा हरिश्चन्द्र राजा इस वंश में हुआ॥९५॥

तस्मादभूदद्भुतकृत्यमान्यः साधारणो भूमिपतिर्वदान्यः ।
दारिद्र्यमुन्मूल्य पुनःस्ववैरिष्वस्थापि कामं कृपयैव येन ॥९६॥

उस हरिश्चन्द्र से अद्भुत कृत्योंमें माननीय साधारण नाम का उदार चित्तवाला राजा हुआ जिसने दरिद्र को जड़ से उखाड़ कर फिर दया करके अपने शत्रुओं में पूर्णरूप से स्थापन किया ऐसा राजा हुआ॥९६॥

कामो धर्ममहेशमान्य उदयो नास्तं प्रयातः क्वचित्
नो दाने विरतः सुहृत्तनुमनःसन्तापहृच्छूरता ।
सच्चक्रातिविचित्रमित्रसुखिताबुद्धिप्रदा चन्द्रता
चातुर्येण महेन्द्रता कविमनाः किञ्चिन्न यस्माद्भुतम् ॥९७॥

जो कामदेव, धर्मराज, महादेव के समान प्रतापवाला हुआ। जिसका तेज कभी कहीं छिपा नहीं और दान देने से कभी विमुख न होने वाला अपने मित्रों के हृदय, शरीर के तथा मन के सन्ताप दूर करने वाली शूरता और विचित्र सुख बुद्धि को प्रकाश देने वाली स्वच्छता, चतुराई से महेन्द्रता और कविता आदि सब गुणों वाला ऐसा कौन कार्य होगा जो उसके लिये अद्भुत हो॥९७॥

अजनि सहजपालस्तस्य पूर्वस्तनूजः
सकलगुणनिधानं शास्त्रधर्मैकवेत्ता ।
प्रथितपुरुषरत्नं यं समालोक्य लोको
बहुविधिषु विधातुः कान्ततां मन्यते स्म ॥९८॥

उस राजा के ज्येष्ठ पुत्र सहजपाल नाम से सब गुणों का खजाना, शास्त्र और धर्म को एक जानने वाला और विख्यात पुरुषरत्न पैदा हुआ। मनुष्य जिसको अच्छी तरह देखकर बहुत विधियों में ब्रह्मा की चतुराई की प्रशंसा करने लगे।।९८।।

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण
निर्मितेऽत्र । ग्रन्थेऽस्मिन्मदविनोदनाम्नि पूर्णो वर्गोऽयं
गुणगणमिश्रमिश्रकोऽयम् ।।९९।।

जो राजाओं में बहुत प्रधान कटारमल्ल हुआ उसी मदन राजा के रचे हुए इस मदनविनोदनामक ग्रन्थ में गुणों के समूह से मिला हुआ यह मिश्रक वर्ग समाप्त हुआ।।९९।।

अब्दे ब्रह्मजगद्युगेन्दुगुणिते श्रीविक्रमार्कप्रभौ
माघे मासि महर्क्षपेन ललिते पष्ठयां सुधांशोर्दिने ।
दीनानां परितापपापशमनं ग्रन्थं निघण्टुं किल
श्रीदः श्रीमदनो व्यधत्त चतुरः सच्चक्रचूडामणिः ।।१००।।

इति मदनपालनिघण्टौ मिश्रकवर्गस्त्रयोदशः ।।१३।।

सं० १४३१ विक्रमाब्द में माघशुक्ल छठ सोमवार को दीनपुरुषों के दुःखों को दूर करने वाले इस निघण्टु ग्रन्थ को राजाऽधिराज श्रीमदनपालजी ने रचना किया।।१००।।

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ आयुर्वेदोद्धारक वैद्यरत्नपं०–रामप्रसादवैद्योपाध्याय–
विरचितभाषातत्वप्रकाशिनीहिन्दीटीकायां मिश्रकवर्गो नाम
त्रयोदशो वर्गः समाप्तः ।।१३।।

रसर्तुनवचंद्रेऽब्दे मार्गशीर्षसिते दले ।
वैद्यरामप्रसादेन नृगीर्भिः समलंकृतः ।।१।।

सो यह मदनपालनिघण्टु रामप्रसाद वैद्यरत्न ने सं० १९६६ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में हिन्दी भाषा से शोभायमान किया।।

विनीत–वैद्यराज रामप्रसाद, पटियाला

समाप्तश्चायं ग्रन्थः ।।

****
*****
****
***

आयुर्वेद सम्बन्धी हमारे कुछ विशिष्ट प्रकाशन

अष्टांग हृदय (वाग्भट्ट) सूत्रस्थान–वाग्भट्टकृत मूल, अरुणदत्त कृत सर्वांग सुन्दरा, चन्दनदत्त कृत पदार्थ चन्द्रिका, हेमाद्रि आयुर्वेद रसायन; कठिनस्थल पर राजवैद्य वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजीकृत टिप्पणी सहित

अमृतसागर–(हिन्दी में) इसमें सर्व रोगों के वर्णन और यत्न हैं। इसके द्वारा बिना गुरु वैद्य हो सकते हैं।

अनुपान दर्पण–हिन्दीटीका सहित । इसमें रस धातु बनाने की क्रिया और रोगानुसार औषधियों के अनुपान वर्णित हैं।

आयुर्वेद सूत्र–हिन्दीटीका सहित ।

इलाजुल गुर्बा–(हिन्दी अनुवाद)

कामरत्न–योगेश्वर नित्यानाथ प्रणीत और पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें कामशास्त्रादि विषय और रोगों की औषध तथा वाजीकरण औषध अनुभूत है। और वशीकरण प्रयोग भी है।

चक्रदत्त–(चिकित्सासार संग्रह) दत्तकुलोत्पन्न चरक चतुरानन श्रीमच्चक्र पाणि विरचित। श्री० पं० जगन्नाथ शर्मा वाजपेयी आयुर्वेदाचार्य द्वारा नितान्त परिशोधित सुबोधिनी टीका सहित

पारद संहिता–हिन्दी टीका सहित। इस ग्रंथ में रसविषयक सभी अवयवों का सांगोपांग वर्णन है तथा अरबी, फारसी, यूनानी, तिब्बी आदि अनेक वैद्यक ग्रंथों का सारांश लेकर विषय प्रतिपादन किया है। अतः पारद (पारे) को सिद्ध करनेवालों के लिए अतीव उपयोगी है।

बृहन्निघण्टु रत्नाकर भाग ७-८ अर्थात् शालिग्रामनिघण्टुभूषण–इसमें बनौषधियों की सम्पूर्ण जानकारी दी गयी है। इसमें औषधियों के चित्र, गुण, तथा अनेकों भाषाओं में नाम दिये गये हैं।

योग तरंगिणी–त्रिमल्ल भट्ट कृत मूल तथा पं० दत्तराम चौबे कृत हिन्दी टीका सहित–इसमें सब वैद्यक संहिताओं का सार संग्रह है।

रसेन्द्र सार संग्रह–म० म० गोपाल सिंह सूरि विरचित। वैद्यराज पं० रामप्रसादजी राजवैद्य कृत हिन्दी टीका सहित। यह प्रामाणिक व परीक्षा में नियुक्त ग्रन्थ है।

रसेन्द्र पुराण–वैद्यराज पं० राम प्रसाद पटियाला राजवैद्य कृत हिन्दी टीका सहित

लोलिम्बराजकृत वैद्य जीवन–सुखानन्द कृत संस्कृत टीका तथा पं० मिहिरि चन्द्र कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें शृंगार रस प्राधान्य से रोगों की चिकित्सा लिखी है

वैद्यक रसराज महोदधि–सम्पूर्ण पांचों भागों की एक जिल्द

शालिग्रामौषधि शब्द सागर–अर्थात् आयुर्वेदीय औषधि कोष गो० वा० लाला शालग्राम वैश्यकृत

हरीतक्यादि निघण्टु–भाव मिश्र कृत। वैद्यरत्न पं० शिवशर्माजी कृत "शिव प्रकाशिका" हिन्दी टीका सहित। इसमें अंग्रेजी तथा फारसी औषधियों के संस्कृत नाम व संस्कृत नामों के फारसी नाम भी है।

कामसूत्र–महर्षि वात्स्यायन प्रणीत पं० यशोधर विरचित मंगलाजख्य व्याख्या तथा रिसर्च स्कॉलर पं० माधवाचार्य कृत पुरुषार्थ प्रभाख्य हिन्दी टीका व टिप्पणी विभूषित। संपूर्ण ग्रन्थ मजबूत कपड़े की दो जिल्दों में।

कूट मुद्गर–संस्कृत टीका सहित

कूट मुद्गर–समन्वय (हिन्दी टीका)

कोकसार वैद्यक—नारायणप्रसाद मिश्रकृत तथा इच्छागिरिजीकृत काम कलासार सहित। वात्स्यायन कामसूत्र आदि ग्रन्थों में प्रतिपादित विषयों को सरलता से समझने के लिये उक्त ग्रन्थ दो भागों में बनाया गया है। पूर्व भाग में स्त्री पुरुषों के अनेक रोगों के निवारणार्थ उत्तम साधन बताये गये हैं, ईक्षागिरीजी ने कामशास्त्र तथा वैद्यक के अनुभव से कोकशास्त्रों में भी नहीं पाये जाने वाले साधनों का विशद रूप से संग्रह किया है।

गुणों की पिटारी—काशी निवासी स्वामी परमानन्द कृत—

चर्या चन्द्रोदय—हिन्दी टीका सहित

चरक संहिता—(महर्षिप्रवर चरक—ऋषि प्रणीत) मूलमात्र संस्कृत में सजिल्द

ज्वर तिमिर नाशक—क्या खूब चौवे रामप्रसादजीकृत हिन्दी टीका

डाक्टरी चिकित्सासार—पं० मुरलीधर शर्मा राजवैद्य संग्रहीत

त्रिंशती-(वैद्यवल्लभ) श्री शार्ङ्गधर रचित। संस्कृत टीका व हिन्दी टीका सहित

नपुंसकामृतार्णव—वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्यकृत हिन्दी टीका सहित। इसमें नपुंसकोपयोगी नाना प्रकार के तेल, लेप, घृत आदि वाजीकरण और औषधियां सर्वोत्तम हैं।

पशु चिकित्सा—(वृष कल्पद्रुम) छन्दबद्ध भाषा

पाकप्रदीप और पुष्टि प्रकाश—हिन्दी टीका सहित

बालतंत्र—हिन्दी टीका सहित

बृहन्निघण्टु रत्नाकर—पञ्चम भाग—रोगों का कर्म विपाक

बृहन्निघण्टु रत्नाकर—षष्ठ भाग—रोगों का चिकित्सा विभाग

बोपदेव शतक—हिन्दी टीका सहित

भैषज्य रत्नावली—हिन्दी टीका सहित। मूल रचयिता श्री गोविन्ददासजीसेन हिन्दीटीकाकार—स्वं० वैद्य शंकरलालजी। इसमें क्वाथ, चूर्ण, अवलेह, आसव, अरिष्ट आदि वनस्पतिजन्य प्रयोग और रस, धातु आदि के द्वारा सिद्ध किये रसायन आदि के अनेक प्रयोग हैं।

मदनपाल निघण्टु—वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्य कृत हिन्दी टीकासहित। औषधियों के नाम व गुणदोष वर्णित हैं।

महामारी विवेचन—हिन्दी टीका सहित

मानव संतति—प्रसूति शास्त्र अथवा युवतिसखा—कविराज बलवन्त सिंह मोहन वैद्यवाचस्पति कृत

योग महोदधि—(वैद्यक रत्न भंडार)

रसरत्न समुच्चय—वाग्भट्टाचार्य विरचित। भिषग् भूषण पं० शंकर लाल हर शंकर कृत हिन्दी टीका सहित। रस, भस्म आदि का अद्वितीय ग्रंथ। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की वैद्य विशारद, परीक्षा में स्वीकृत सहायक पाठ्य ग्रन्थ

वैद्य कलाधर—आरोग्य संबधी उपदेश, निदान व उपाय

वैद्य मनोरमा और धारा कल्प—भिषग्वर कालीदासजी वैद्यकृत।

वैद्यकृत विनोद संहिता—शंकर भट्ट विरचित तथा भिषग्वर गदाधर त्रिपाठी कृत हिन्दी टिप्पणी सहित

वैद्य वल्लभ— हिन्दी टीका

वैद्य मनोत्सव—हिन्दी (नैन सुख वैद्यकृत)

वैद्यक रसराज महोदधि (प्रथम भाग)—भगत भगवानदास कृत। यूनानी हिकमत, यूनानी दवा, जड़ी बूटी और संतो की पुस्तकों का संग्रह।

वैद्यक रसराज महोदधि—द्वितीय भाग (उपरोक्त विषयानुसार शरबत पाक आदि की विधि सहित।

वैद्यक रसराज महोदधि–(तृतीय भाग) जड़ी बूटी द्वारा धातु आदि का शोधन, मारण, गुण तथा अनुपान

वैद्यक रसराज महोदधि (चतुर्थ भाग) इसमें सर्व रोगों के निदान, लक्षण, चिकित्सा और पथ्यापथ्य है।

वैद्यक रसराज महोदधि–(पञ्चम भाग) इसमें प्राचीन ग्रन्थों के अच्छे अच्छे नुस्खे व औषधियों का विचार है।

वैद्यक रसराज महोदधि–चारों भाग की एक जिल्द

शरीर पुष्टि विधान भाषा

शिशुपालन–(बालकों के पालन पोषण की विधि सचित्र और नक्शोंसहित) कविराज बलवन्त सिंह मोहर वैद्य वाचस्पति कृत

शीतला परिहार अर्थात् आरोग्यमृतबिन्दु–हिन्दी में

शुभ सन्तति योग प्रकाश–हिन्दी टीका सहित। वैद्यराज पं० राम प्रसाद राजवैद्यकृत

हितोपदेश वैद्यक–हिन्दी टीका सहित। जैनाचार्य श्रीकण्ठजी कृत। इसमें ज्वरादि रोगों के विलक्षण लक्षण तथा सविस्तार चिकित्सा लिखी है।

होम्योपैथी–(हिन्दी में)–लेखक डा० मुकेश बत्रा

हिन्दी मटेरिया मेडिका–द्वितीय भाग

अपवित्र मोरस चीनी–स्वामी भास्करानन्द प्रणीत

चरक संहिता–वैद्यरत्न पं० राप्रसाद राजवैद्यकृत हिन्दीटीका एवं विद्यालंकार आयुर्वेदाचार्य पं० शिवशर्माजी द्वारा संशोधित। चरक के आठों स्थान एक से एक अपूर्व होने पर भी 'चिकित्सास्थान' तो अद्वितीय ही है। प्रथम भाग पृष्ठसंख्या ९१६ तथा द्वितीय भाग पृष्ठसंख्या ११३६ है। सुनहरे अक्षरों से मुद्रित सुंदर प्लास्टिक कवर से मंडित संपूर्ण दो जिल्दों में है।

भावप्रकाश–तीनो खण्ड भावमिश्र संग्रहीत। हिन्दीटीकासहित। हिन्दीटीकाकार गो० वा० लालाशालिग्रामजी। संशोधक–डा० कान्तिनारायणजी मिश्र आयुर्वेद विशारद। ए० एल० आई० एम० (मद्रास) डाइरेक्टर ऑफ आयुर्वेद (पंजाब)। इसमें शारीरिक निदान, नाड़ीज्ञान, रस प्रकरण और अष्टांग चिकित्सा आदि वैभव संबधी सभी विषय वर्णित हैं।

माधवनिदान–पं० दत्तरामजी चौबेकृत हिन्दीटीकासहित। इसमें संपूर्ण रोगों का कारण, उत्पत्ति, लक्षण, संप्राप्ति इत्यादि का वर्णन है।

योगचिन्तामणि–पं० दत्तराम चौबेकृत हिन्दीटीकासहित

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS